सामुद्रिक शास्त्र

(ज्योतिष विज्ञान)

लेखक
ज्योतिषाचार्य भृगुराज

पुस्तक मन्दिर
मथुरा

प्रकाशक-
पुस्तक मन्दिर,
मथुरा।

मूल्य
४)
चार रुपया

पं० पुरुषोत्तमदास शर्मा के
हरीहर मशीन प्रेस मथुरा में
मक्खनलाल शर्मा द्वारा मुद्रित।

लक्ष्मी बहिन

की

पावन

स्मृति

में,

+

सम्पादकीय

ोतिष के क्षेत्र में भारत संसार के समस्त देशों से सदा
है। आज, यद्यपि अन्य क्षेत्रों में भारत की गणना
पिछड़े देशों में होती है, किन्तु ज्योतिष के मामले में
। सैकड़ों वर्षों से संसार के समस्त देशों का नेतृत्व
ा आ रहा है। यह नगण्य सत्य है कि संसार के समस्त
ज्योतिष ज्ञान भारत के ज्योतिष ज्ञान के सम्मुख कोई
नहीं रखता। इसके साथ ही साथ यह हमारा दुर्भाग्य
रे देश में इस विद्या की धीरे २ अवनति हो रही है।
अवनति के दो मूल कारण हैं। पहला कारण तो यह है
में ऐसा कोई विद्यालय नहीं जहाँ इसकी दीक्षा का समु-
च हो। किसी भी विद्या का उत्थान जब तक सम्भव
तक शासन उसके प्रसार और खोजका पूर्णसाधन उपलब्ध
ा। देश के पाठ्य-क्रम में इसका कोई महत्व नहीं अतः
व्यक्ति भी इसके ज्ञान प्राप्ति के साधनों से वंचित रह
। उनका ज्ञान अधूरा रह जाता है और शृङ्खला-बद्ध न
कारण उनके ज्ञान का कोई महत्व ही नहीं रहता। शासन
ा जो सदियों से इस विद्या विशेष के साथ चली आ रही
पतन का मुख्य कारण हो गई है।

दूसरा कारण है जनता की इस विद्या के प्रति उपेक्षा।
। जन-समुदाय इसको केवल जन्मपत्री बनाने वाले
तथा शनिवार के दिन तेल माँगने वाले भड्डरी की विद्या
ता है। यह सच भी है कि इन दोनों श्रेणी के लोगों ने
द्र ज्ञान द्वारा जनता के अहित भी अनेकों किये हैं।
ा इस पर कोई विश्वास रह नहीं गया है। यह केवल इसे

सम्पादकीय

ज्योतिष के क्षेत्र में भारत संसार के समस्त देशों से सदा आगे रहा है। आज, यद्यपि अन्य क्षेत्रों में भारत की गणना संसार के पिछड़े देशों में होती है, किन्तु ज्योतिष के मामले में वह पिछले सैकड़ों वर्षों से संसार के समस्त देशों का नेतृत्व करता चला आ रहा है। यह नगण्य सत्य है कि संसार के समस्त देशों का ज्योतिष ज्ञान भारत के ज्योतिष ज्ञान के सम्मुख कोई अस्तित्व नहीं रखता। इसके साथ ही साथ यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे देश में इस विद्या की धीरे २ अवनति हो रही है।

अवनति के दो मूल कारण हैं। पहला कारण तो यह है कि देश में ऐसा कोई विद्यालय नहीं जहाँ इसकी दीक्षा का समुचित प्रबन्ध हो। किसी भी विद्या का उत्थान जब तक सम्भव नहीं जबतक शासन उसके प्रसार और खोजका पूर्णसाधन उपलब्ध नहीं करता। देश के पाठ्य-क्रम में इसका कोई महत्व नहीं अतः जिज्ञासु व्यक्ति भी इसके ज्ञान प्राप्ति के साधनों से वंचित रह जाते हैं। उनका ज्ञान अधूरा रह जाता है और शृङ्खला-बद्ध न होने के कारण उनके ज्ञान का कोई महत्व ही नहीं रहता। शासन की उपेक्षा जो सदियों से इस विद्या विशेष के साथ चली आ रही है, इसके पतन का मुख्य कारण हो गई है।

दूसरा कारण है जनता की इस विद्या के प्रति उपेक्षा। साधारण जन-समुदाय इसको केवल जन्मपत्री बनाने वाले पण्डितों तथा शनिवार के दिन तेल माँगने वाले भड़ारों की विद्या ही समझता है। यह सच भी है कि इन दोनों श्रेणी के लोगों ने अपने क्षुद्र ज्ञान द्वारा जनता के अहित भी अनेकों किये हैं। लोगों का इस पर कोई विश्वास रह नहीं गया है। वह केवल इसे

प्राचीन विद्या समझकर इसका आदर तो करते हैं और सर्वदा इस खोज में रहते हैं कि इस विद्या के समुचित जानकार से उनका साक्षातकार हो सके। भूत और भविष्य की गणना करके फलादेश को कहना अपना विशेष महत्व रखता है। निराक्षर भट्टाचार्य जिनके हाथों इस विद्या का प्रसार है और जो इसे अपनी जीविका का साधन बनाये हैं वह जनता के सम्मुख ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करने में सर्वदा असमर्थ ही रहते हैं कि जिनके द्वारा वह जन-साधारण की श्रद्धा और इस विद्या के प्रति उनका आदर प्राप्त कर सकें।

भारत आज प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा है। अतः यह हमारा कर्त्तव्य हो गया है कि हम सब मिलकर इस क्षेत्र में भी उचित सुधार करें। इस क्षेत्र का सुधार जब ही हो सकता है जब कि इस विद्या का प्रसार उचित रीति से हो। अतः प्रसार के उत्तर-दायित्व को लेते ही हमारा कर्तव्य हो जाता है कि हम इस विद्या को शृङ्खला बद्ध करके, उचित तर्कों के साथ ही जनता के सम्मुख प्रस्तुत करें।

ज्योतिष बहुत गहन विषय है। इसका क्षेत्र बहुत विस्तीर्ण है और यह सम्भव नहीं कि सागर को गागर में भरा जा सके। अतः इसके विभिन्न क्षेत्रों को पृथक २ करके ही उनका उत्थान किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक में हमने रेखा विज्ञान का विश्लेषण किया है।

मनुष्य के शरीर पर तीन अंग प्रधान हैं जहाँ रेखाओं का बाहुल्य होता है और उनकी गणना सनातन काल से होती चली आ रही है। मनुष्य का हाथ, पैर मस्तिष्क इस श्रेणी में आते हैं। यह तीनों अंग मानव शरीर में अपना विशेष महत्व रखते हैं तथा इनको शरीर का प्रवर्तक अंग भी कहा जाता है। यह

कठोर सत्य है कि परिवर्तन जीवन के हर क्षेत्र में अवश्यम्भावी हैं। अतः परिवर्तनों पर मनुष्य के मस्तिष्क, हाथ और पैर का अवश्य प्रभाव पड़ता है। प्राचीन अन्वेषकों ने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि अंगों की रेखायें भी मनुष्य के जीवन के परिवर्तनों के साथ ही घटती बढ़ती रहती हैं। इसी सिद्धान्त को लेकर हमारे ज्योतिषाचार्यों ने इस विद्या की आधार शिला रखी है और वही आज तक चली आ रही है।

जिस प्रकार औषधि विज्ञान के प्रवर्तकों ने विविध प्रकार की औषधियों को स्वयं भक्षण करके उनके दोषों और गुणों का वर्णन किया है उसी तरह इस विज्ञान के अन्वेषकों ने भी कर्म द्वारा रेखाओं की रद्दो बदल पर पूर्ण खोज की है। सबका मत यही है कि मनुष्य के कर्मों तथा जीवन के परिवर्तनों का प्रभाव रेखाओं पर अवश्य पड़ता है। इस विद्या के जानकारों ने अनेकों बार रेखाओं को देखकर ही मनुष्य के भूत और भविष्य का वह हाल बता दिया है जिसको जान कर संसार आश्चर्यचकित रह गया।

जब से मानव समाज का जन्म हुआ है तब से ही इस विद्या का भी जन्म हुआ। ऐतिहासिक तथ्यों द्वारा यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित कर दिया गया है कि भारतीय सभ्यता बहुत प्राचीन है। भारत की अन्य ज्ञान विज्ञान की विद्याओं के साथ ही इस विद्या का भी विकास बढ़ता रहा। भारतीय महर्षियों और सन्त-जनों ने संसार को त्याग कर वन में अपना जीवन व्यतीत करते थे इस ओर अधिक अन्वेषण किए। उन्होंने सौर मण्डल के ग्रहों की गति और मनुष्य के हाथ की रेखायें, ललाट का रेखाओं आदि का मनन किया। उनके अनुभवों और परीक्षणों से जो सार एकत्रित हुआ, आज वही ज्योतिष विद्या के रूप में विद्यमान है।

सूर्य, पृथ्वी, चन्द्र आदि ग्रह चलायमान हैं। इस बात को हमारे पूर्वज अनेकों वर्ष पहले ही प्रमाणित कर चुके हैं। यह भी प्रमाण तथ्ययुक्त है कि प्रकृति का कण २ चलायमान है। प्रगति के अनुसार ही हर वस्तु का फलादेश होता है, इस मूल तत्व पर पर रखी हुई ज्योतिष शास्त्रकी नींव आज भी अडिग है। ज्योतिष का अपना विशेष महत्व है और उसके अनुसार ही रेखाओं का ज्ञान भी अपना विशेष क्षेत्र बनाये हुए है।

प्रस्तुत पुस्तक में रेखा विज्ञान के हर पहलू पर पूर्ण प्रकाश डालने की चेष्टा की गयी है। कहीं २ अँग्रेजी में जो अंश उद्धृत किए गये हैं वह विदेशी मतानुकूल है।

विदेशी सभ्यता के प्रेमी भारतीय शास्त्रों से अधिक अधिकृत पाश्चात्य मतों को मानते हैं। सच तो यह है कि पाश्चात्य देशों में इस विद्या के क्षेत्र में अपना तो कुछ भी नहीं है। जो कुछ भी उनके पास है वह भारतीय ज्योतिष विद्या का ही झूंठा है। यह तो पहले ही हम बता चुके हैं कि इस विद्या को शृङ्खला बद्ध रूप में लाने का सौभाग्य भारत को ही प्राप्त है। इसका जन्म हो यहाँ हुआ और इसी महादेश में जन्म लेकर यह अन्य विदेशों में फैली।

भारतीय सभ्यता जब उन्नति के शिखर पर थी उस समय संसार के अन्य अधिकांश देश असभ्य ही थे। सभ्यता के दृष्टिकोण से यदि समकालीन होने की श्रेणी में संसार के अन्य देशों को किया जा सकता है तो वह हैं, चीन, यूनान और मिश्र। ब्रिटेन, जर्मनी, रूस आदि योरोपीय देशों का विकास हुये पांच सौ वर्ष से अधिक नहीं हुये।

यूनान में ज्योतिष विद्या का प्रचार लगभग पाँच हजार वर्ष पहले था। यूनान के प्रसिद्ध ज्योतिषवेत्ता पेलीगन, अलान तथा

आज भी आदर की दृष्टि से देखे जाते हैं। कहा जाता है कि जब सिकन्दर महान दिग्वजय के हेतु अपने राज्य से निकला था तो उसके साथ एक ज्योतिषी भी था। जो उसको हमला करने का समय, सेना का रूख और मार्ग पर अग्रसर होने की दिशा तक बताता था। चाहे कुछ भी रहा हो, यह तो कठोर सत्य है कि यूनान में ज्योतिष विद्या थी और वह भारतसे ही वहाँ फैली थी।

चीन महादेश के निवासी पुरातन काल से ही ज्योतिष विद्या में विश्वास करते चले आ रहे हैं। आज भी उनके देश में इस विद्या का अच्छा प्रचार है और वहाँ के निवासी इसमें विश्वास करते हैं। इतिहास कारों का मत है कि यह विद्या वहां ईसा से लगभग २५०० या ३०-० वर्ष पहले से प्रचारित है।

योरोप के अन्य भागों में ज्योतिष का प्रचार जिप्सी लोगों ने किया। जिप्सी लोग भारतीय वनजारों की भांति होते हैं। वह एक स्थान पर रहना पन्सद नहीं करते। घोड़ों तथा अन्य मवेशियों की गाड़ियों पर ही वह अपना सारा घर बार लादे फिरते हैं एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं चाकू कैंची, आदि बनाकर वेचना उसका प्रमुख व्यवसाय है और उनकी औरतें अपना रूप यौवन निखार कर जनता में जाती हैं और चाकू उस्तरे वेचती हैं। वह गाना भी गाती हैं, भीख भी मांगती हैं, और लोगों के हाथ की रेखायें आदि देखकर उससे धन उपार्जन भी करती है। जिप्सी लोगों ने इस विद्या का प्रचार योरुप के अन्य देशों में किया।

जिप्सियों की इस रेखा विज्ञान की ओर जिस देश का ध्यान सबसे पहले आकर्षित हुआ वह था जर्मनी। जर्मनी ने इस विद्या को अपनाया और योरुप में सर्व प्रथम इस विषय पर पुस्तकें भी प्रकाशित की। जर्मन लोग पिछले कई वर्षों से ज्योतिष

शास्त्र पर विश्वास करते चले आ रहे हैं। गत योरोपीय महायुद्ध के समय भी यह प्रसिद्ध था कि हिटलर अपने साथ एक ज्योतिषी रखता था जो उसको नये मोर्चा खोलने की सलाह देता, जनरलों के चयन करने में भी परामर्श देता था, और लोगों का विचार यह भी है कि जर्मनी ने युद्ध में आशातीत विजय भी ज्योतिष के आधार पर ही पायी।

धीरे २ यह विद्या योरुप के अन्य देशों में भी बढ़ गई। फ्रांस, रूस, आदि देशों में भी इसका प्रचार हुआ। इंगलैंड में कई सौ वर्षों तक इस विद्या का अनादर किया गया। इसके विरोध में कानून भी बने और इसे बहुत ही हेय दृष्टि से देखा गया। किन्तु जब से ब्रिटेन का सम्पर्क भारत के साथ हुआ, वह इसके महत्व को समझे और उन्होंने इसे सम्पूर्ण ज्ञान के रूप में स्वीकार किया। आधुनिक काल में क्रेग, फुजशाम आदि की पुस्तकों का अंग्रेजी भाषा के क्षेत्रों में अधिक महत्व है और उन्हें अधिकृत समझा जाता है।

यह अवश्य है कि ज्योतिष विद्या को, अन्य विद्याओं के देखते हुये बहुत कड़ी मुसीबतें झेलनी पड़ी हैं, किन्तु वह आज भी जीवित है और दिनों दिन उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रही है। अतः यह तो अवश्य है कि इस विद्या में सत्य है और उसी सत्य के सहारे वह जीवित है यह तो हम सब ही जानते हैं कि इस प्रकृतिके क्षेत्रमें केवल वही ज्ञान या वस्तु स्थायी रहसकतीहै जिसमें सत्य है। असत्यता का प्रकृति में कोई स्थान नहीं जिस प्रकार आग में डालने पर सोना रह जाता है और मैल धुल जाता है उसी प्रकार प्रकृति की आग में तप कर सत्य रह जाता है और असत्य का नाम निशान भी शेष नहीं रहता।

मानव हृदय की दुर्बलता कहिये, या जिज्ञासा कि प्रत्येक

मानव अपना भविष्य जानना चाहता है। यही एक विद्या ऐसी है जिसके द्वारा भविष्य की बातों का ज्ञान हो सकता है। आज भी हम देखते हैं कि हमारे ज्योतिषाचार्य हजारों वर्ष के भविष्य लिखकर रख गये हैं। पत्रा जिसे हम प्रति दिन प्रयोग करते हैं, इसका ज्वलन्त उदाहरण है। यह ज्योतिष की कृपा है जो हमारे ज्योतिषाचार्य वर्षों पहले ही ग्रहों की गणना करके घड़ी और पलके साथ सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण आदि की सही तिथि और समय तक बता देते हैं।

ज्ञान की वृद्धि जब ही सम्भव है जब विद्या को इस रूप में प्रस्तुत किया जा सके कि जन साधारण को भी उसका समुचित लाभ हो। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये इस पुस्तक को प्रकाशित करने की व्यवस्था की गई है। इस विषय पर अन्य जितनी भी पुस्तकें हैं वह बहुत गौण और गम्भीर हैं। उनका लाभ जन साधारण नहीं उठा पाता।

आशा है यह पुस्तक विद्या के क्षेत्र में इस अभाव की पूर्ति करेगी। इसकी सहायता से साधारण प्राणी भी अपनी रेखाओं द्वारा अपने जीवन की शृंखला का ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ हो सकेगा। यह तो आवश्यक है कि इस विद्या की जानकारी हासिल करने के लिये प्राणी को बहुत धैर्य रखना पड़ता है, क्योंकि रेखाओं के बनने, बिगड़ने थोड़ा बहुत रद्दो बदल तक में काफी समय लगता है। अतः मैं पाठकों से यही निवेदन करूंगा कि वह इस पुस्तक के सहारे रेखाओं का ज्ञान प्राप्त करें, उनके विकास और ह्रास पर निगाह रखें और खूब समझ बूझ कर ही फल कहने की चेष्टा करें।

भविष्य, हर प्राणी जानने का इच्छुक होता है। कहावत

भी है कि "Prevention is beefer than cure" अर्थात् बचाव कर लेना उपचार से अधिक महत्वपूर्ण है। इसके साथ ही मैं आपसे यह निवेदन करूंगा कि गलत भविष्य वाणी की अपेक्षा उसे न जानना ही हितकर है। इसलिये आपसे निवेदन है कि पुस्तक को उचित ध्यान देकर पढ़ें और हर बात के निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले उन तमाम बातों अवश्य ध्यान में रख लें जो आवश्यक हैं। यदि आपने तनिक भी जल्द बाजी की और आवश्यक बातों पर ध्यान नहीं दिया तो आपका ज्ञान अधूरा रह ही जायेगा। और साथ ही आपको क्लेश भी होगा।

आशा है विद्वान पाठक इस विद्या का ज्ञान प्राप्त करने में जल्द बाज़ी से काम कभी न लेंगे।

सम्पादक

❀ विषय सूची ❀

पहला भाग

दूसरा भाग

तीसरा भाग

भाग पहला

अगर तमाम उँगलियाँ आगे की तरफ झुकी हुई हों तो वह पुरुष चञ्चल हृदय वाला होता है उसका हृदय किसी भी कार्य में नहीं लगता। यदि जड़ सीधी हो परन्तु बीच का भाग हथेली की तरफ झुका हो तो वह चञ्चल स्वरूप और हठीला होता है। उसके हृदय में जो बात आती है उस पर जम भी नहीं पाता और जो कुछ वह सोच लेता है अगर उसके विपरीत ही उससे कुछ कहा जाय तो हठ करने लगता अपने हठ पर ही दृढ़ रहकर अपनी ही बात पूरी कराने से उसे विशेष आराम मिलता है। आगे की ओर झुकी रहने वाली उँगलियों के स्वामी को:—

चञ्चल हृदय वाला और हठीला।
मन्द बुद्धि और कम अक्ल।
साहसहीन विकट कार्यो से मुँह छिपाने वाला।

एकान्त प्रिय और सर्वदा खामोश रहने की इच्छा रखने वाला।

अपने विचारों में उलझा रहने वाला।

बताया जा सकता है। परन्तु किसी निर्णय पर पहुँचने से पहिले कु छ बातें और जान लेना जरूरी हैं। एक दम उँगलियों का झुकाव देखकर ही किसी विशेष लक्षण पर पहुँच जाना बुद्धि-मानी नहीं है।

अगर तमाम उँगलियाँ पीछे की तरफ झुकी तो वह चालक और गम्भीर होने का लक्षण है। जिसकी उँगलियों का झुकाव पीछे की तरफ होगा उसका तात्पर्य होगा कि वह चालक है। उँग-लियां जड़ पर तो सीधी और समान हों और चोटी की तरफ बढ़ती हुई ऊपर की तरफ से पीछे की तरफ झुकी हो सकती है। उनको देखकर नीचे लिखे फल कहे जा सकते हैं:—

चालाक और दृढ़ विचारक हो सकता है।

उसका हृदय विशाल और कोमल होता है। वह प्रत्येक बात का सार निकालने की चेष्टा करता है।

स्वभाव का नम्र और अन्य लोगों का आदर करने वाला होता है। वह नम्र, विचारशील और दानी होता है।

लेखक हो तो विशेष रूप से साहित्यक विषय पर लेख लिखेगा।

यदि चित्रकार है तो वह अपने इष्टदेव की प्रतिमा बनाने में विज्ञ होगा।

३ पतली परन्तु गोलाई लिये हुये—अक्सर कुछ उङ्गलियाँ देखने में ऐसी होती हैं जो कि जड़ से लेकर ऊपर तक के पर्व तक पतली ही होती हैं परन्तु वह गोलाई अवश्य लिये हुये होती हैं। हो सकता है कि उनका झुकाव आगे की तरफ हो या पीछे की तरफ हो। जिनकी उङ्गलियाँ आगे की तरफ झुकी होती हैं वह पुरुष:—

१—श्रमजीवी, परिश्रम से पैदा करके अपना तथा अपने परिवार का पालन पोषण करने वाला होता है। वह कठिन से कठिन परिश्रम करके भी अपना भरण करने की क्षमता रखता है।

२—नम्र परन्तु विचार शील कम होता है। उसमें विचार करने की शक्ति कम होती है। वह पूरी तरह से किसी विषय को गम्भीर होकर नहीं सोच सकता। शीघ्रता ही से वह एक निर्णय पर पहुँच जाता है और उस पर कार्य करने लगता है।

३—वह समझदार होता है। वह इतना समझदार नहीं समझदारी केवल इतनी होती है कि अगर कोई सलाह की बात बताई जाये तो वह शीघ्र ही उसे जान लेता है।

४—वह मृग-तृष्णा में भटकने वाला होता है। हमेशा वह निन्यानवें के फेर में पड़ा रहता है। उसे यह चिन्ता रहती है

अगर नर्मी से उसे सलाह दी जाय तो वह आसानी से मान सकता है।

वह चालाक होनेके साथ साथ अपना मार्ग स्वयं निकालने वाला होता है।

एक वस्तु को त्याग कर उससे अच्छी पाने की लालसा में भटकने वाला होता है। वह मृग-तृष्णा में भटकने के पूर्ण लक्षण रखता है।

अगर तमाम उँगलियाँ एक तरफ ही झुकी हुई हों अर्थात् तमाम उङ्गलियाँ कनिष्ठा की तरफ झुकी हुई हों तो उससे प्रत्यक्ष है कि वह एक दूसरे के लक्षण ग्रहण करती हुई होती है। कनिष्ठा की तरफ जिन उङ्गलियों का झुकाव होता है उसका फल है कि वह प्राणी—

दुष्ट प्रकृति और दुर्व्यवहारी हो सकता है।

हेकड़, अपनी बात पर अड़ जाने का लक्षण उसमें पाया जा सकता है।

शरीर में कम ताकत परन्तु क्रोध बहुत अधिक होना प्रत्यक्ष है। वह अपने शरीर की शक्ति का गलत अन्दाज लागता है। अपने को सबसे अधिक बलशाली समझ कर हरेक से लड़ने मरने को तैयार हो जाता है।

अगर तमाम उङ्गलियाँ तर्जनी की तरफ झुकी हुई हो तो वह पुरुष विचारवान् और नम्र होता है। उसका हृदय विशाल और कोमल होता है। वह प्रत्येक बातको अच्छी तरह सोचता है उस पर विचार करता है और फिर उस पर ध्यान देने के बाद उसके अनुसार ही कार्य करता है वह स्वभाव का नम्र और शीलवान होता है। जिसकी तामाम उङ्गलियों का झुकाव तर्जनी की ओर होता है, वह:—

विचारवान् और शीलवान् होता है।

उसका हृदय विशाल और कोमल होता है। वह प्रत्येक बात का सार निकालने की चेष्टा करता है।

स्वभाव का नम्र और अन्य लोगों का आदर करने वाला होता है। वह नम्र, विचारशील और दानी होता है।

लेखक हो तो विशेष रूप से साहित्यक विषय पर लेख लिखेगा।

यदि चित्रकार है तो वह अपने इष्टदेव की प्रतिमा बनाने में विज्ञ होगा।

३ पतली परन्तु गोलाई लिये हुये—अक्सर कुछ उङ्गलियाँ देखने में ऐसी होती हैं जो कि जड़ से लेकर ऊपर तक के पर्व तक पतली ही होती हैं परन्तु वह गोलाई अवश्य लिये हुये होती हैं। हो सकता है कि उनका झुकाव आगे की तरफ हो या पीछे की तरफ हो। जिनकी उङ्गलियाँ आगे की तरफ झुकी होती हैं वह पुरुष:—

१—श्रमजीवी, परिश्रम से पैदा करके अपना तथा अपने परिवार का पालन पोषण करने वाला होता है। वह कठिन से कठिन परिश्रम करके भी अपना भरण करने की क्षमता रखता है।

२—नम्र परन्तु विचार शील कम होता है। उसमें विचार करने की शक्ति कम होती है। वह पूरी तरह से किसी विषय को गम्भीर होकर नहीं सोच सकता। शीघ्रता ही से वह एक निर्णय पर पहुँच जाता है और उस पर कार्य करने लगता है।

३—वह समझदार होता है। वह इतना समझदार नहीं समझदारी केवल इतनी होती है कि अगर कोई सलाह की बात बताई जाये तो वह शीघ्र ही उसे जान लेता है।

४—वह मृग-तृष्णा में भटकने वाला होता है। हमेशा वह निन्यानवें के फेर में पड़ा रहता है। उसे यह चिन्ता रहती है

कि किस तरह उसे उसकी मन वाञ्छित इच्छा का फल मिलेगा इसी तृष्णा में वह इधर उधर भटकता फिरता है।

कहना अतिश्योक्ति न होगी कि वह मनुष्य जिसकी उङ्गलियों का झुकाव आगे की तरफ होता है यह मध्यम वर्ग का आदमी होता है उसे हमेशा अपने विचार पर कार्य करने की प्रेरणा होती है।

जिन लोगों की उङ्गलियों का झुकाव पीछे की तरफ होता है उनका स्वभाव उङ्गलियों की गति के अनुसार होता है। पीछे की तरफ झुकी हुई उङ्गलियों को देख कर सहज ही बताया जा सकता है कि:—

१—वह प्राणी मन्द बुद्धि होता है। उसमें सोचने की कम ताकत होती है। वह निरा मूर्ख ही होता है। सोचने की शक्ति तो उसमें प्रायः बिलकुल ही नहीं होती है वह किसी भी काम को करने से पहले बिलकुल नहीं सोच पाता जो कुछ भी सोच सकता है वह काम करने के बाद ही सोच पाता है।

२—सहास हीन होता है। किसी भी कामको करने से पहले ही उसकी हिम्मत टूट जाती है। उसमें साहस कम होता है। उसकी शक्ति का बाँध टूट जाता है वह कार्य करने से पहले ही हिम्मत खो बैठता है और अपना हाथ उस कार्य से खींच लेता है।

३—वह भीरु और डरपोक होता है। उसको अपनी शक्ति पर तनिक भी विश्वास नहीं होता है इसलिये वह खामोश रहना ही अधिक पसन्द करता है। खामोशी से ही वह अपनी शक्ति के ह्रास को छिपाना चाहता है।

४—काम करने की हिम्मत तो उसमें नहीं होती इसलिये वह पड़ा पड़ा सोचा करता है। उसकी काम करने की शक्ति उसे धोखा दे देती है। परन्तु वह ख्याली पुलाव ही बनाया करता है।

इन उङ्गलियों का झुकाव मनुष्य के स्वभाव और भविष्य का हाल बताने में काफी मदद देता है।

४—नीचे से तो जड़ मोटी परन्तु चोटी पतली— इस प्रकार की उङ्गलियों के कई प्रभाव होते है। जड़ तो मोटी होती है परन्तु चोटी पतली होती है। इस तरह की उङ्गली वाले मनुष्यों के बारे में नीचे लिखी बातें बताई जा सकती हैं

१—वह मनुष्य बहुत ही होनहार और किसी न किसी चतुर विद्या के कार्य में दक्ष होता है। वह किसी न किसी हुनर को अच्छी तरह जानता है। वह चित्रकारी करने वाला अथवा और किसी कलात्मक कार्य में दक्ष होता है।

२—चालाक,मक्कार या पाकिट मार होने के साथ-साथ वह खूनी भी हो सकता है।

३—वह अपने बारे में बहुत कम सोच सकता है। उसका काम बहुत ही मुशकिल और कठिन भी हो तो भी वह धनके लोभ में कर डालता है।

५—बिलकुल सीधी परन्तु मोटी उङ्गलियां— यह उङ्गलियां बिलकुल सीधी और मोटी होती हैं। उनकी जड़ भी मोटी होती हैं और उनकी चोटी भी मोटी हैं। शुरु से लेकर वह अन्त तक भारी भरकम ही दिखाई देती हैं।

इस प्रकार की उङ्गलियों वाला प्राणी दरिद्र होता है।

उङ्गलियों के अग्र भाग चार प्रकार के होते हैं। पहला चपटा दूसरा गोल तीसरा चौरस चौथा नोंकदार

अँगुलियों का पर्व

ज्योतिष शास्त्री पर्वके विषय में कहते हैं कि अँगुष्ठ के दो पेटी और अन्य अँगुलियां में तीन पेटियाँ होती हैं पेटियों

के ऊपर खड़ी रेखाओं के रहने से शुभ फल होता है। उँगुलियों का संयोग करने से छेद देख पड़े तो निर्धनत्वकारक है।

भाग्यवान और बुद्धिमान पुरुषों के हाथ की अँगुली निरंतर मिली हुई होती है और बड़ी आयु वाले पुरुषों की उँगुली सीधी और बड़ी होती हैं।

धन हीन प्राणियों की उँगली मोटी होती हैं और हथियार वाले पुरुषों की अँगुली बाहर को झुकी होती है और दासों की अँगुली छोटी और चपटी होती है।

जिसके अँगूठे में से उँगुली प्रगटे अर्थात् उंगली की संख्या पांच से छटी हो तो वह धन धान्यसे हीन और थोड़ी आयु वाला होता है।

अंगुली दो प्रकार की होती हैं। चिकनी और गठीली गठीली अंगुली वाला बुद्धिमान चतुर दूरदर्शी समझदार और जो कुछ काम करता है उसका विवरण रखता है। सामाजिक कार्य को करने में दत्त चित्त होता है।

चिकनी उंगुलियां वाले तरंगी और स्वाभाविक रूप से कार्य करने वाले होतेहैं ऐसे उंगुली वाले कार्यको बिना पूरा किये मध्य में ही छोड़ देते हैं। बिना विचारे उतावले मन से कार्य आरम्भ कर देते हैं और अपनी शक्ति पर विश्वास न होने के कारण उसे छोड़ देते हैं।

१—पहली उंगुली [तर्जनी] का स्वामी बृहस्पति है।
२—दूसरी ,, [मध्यमा] ,, शनि है।
३—तीसरी ,, [अनामिका] ,, सूर्य है।
४—चौथी ,, [कनिष्टका] ,, बुध है।

पहली उंगुली यानि तर्जनी लम्बी हो तो वह प्राणी को शासन शक्ति, भोग विलास की इच्छा और उच्च पद पाने

की अभिलाषा देती है। और जब मध्यमा यानी दूसरी अँगुली के करीब २ बराबर हो तो निष्ठुरता उपद्रव आत्म प्रशंसा और अधिकार पाने की अधिक अभिलाषा देती है। यदि वह अँगुली छोटी हो तो प्राणी शाँत स्वभाव और जुम्मेवारी से डरने वाला मनुष्य होता है। यदि टेढ़ी हो तो शासन के अयोग्य है। उद्देश्य हीन और अल्प प्रतीष्ठा वाला होता है।

यदि शनि की अँगुली की तरफ झुकी हो तो घमंडी होता है यदि वह अँगुली पतली चपटी नौकदार हो जड़ बुद्धि वाला होता है।

दूसरी अँगुली याने मध्यमा लम्बी हो तो एकांतवास अध्यन-शक्ति, और गुप्त विद्याओं में रुचि देती है। अधिक लंबी हो तो उदास चित्त, निर्बल इच्छा शक्ति और भाग्य पर भरोसा करने वाला होता है। यदि छोटी या नोकदार हो तो ओछापन विचारहीन। टेढ़ी हो तो गन्दे विचार उत्पन्न करती है और नित्य रोगी रहता है।

प्रथम पोर लम्बा होतो मृत्युकी शीघ्र अभिलाषा करता है।

यदि दूसरी पोर लम्बी हो तो गुप्त विद्या जैसे ज्योतिष वेदान्त मेसमेरिज्म आदि में प्रीति होती है।

यदि तृतीय लम्बा हो तो लोक प्रिय मितव्यी होता है।

तीसरी अँगुली अनामिका लम्बी हो तो प्राणी यश प्राप्त करने की इच्छा रखने वाला। कला कौशल दस्तकारी साहित्य इत्याद की ओर रुचि होती है। यदि अधिक लम्बी हो तो व्यापारिक-चतुरता, जूआ और धन प्राप्ती की लालसा होती

छोटी हो तो उदासीनता और कला कौशल की ओर से अरुचि पैदा करती है टेढ़ी हो तो अपयश देती है।

यदि लम्बाई मध्यमा के बराबर हो और- दूसरा पोर कुछ

भरा हो और मङ्गल का पर्वत उठा हो तो तर्क शक्ति वाला, जुये में रुचि, नीलाम, लाटरी तथा अन्य भाग्य परीक्षक खेलों में प्रेम रखने वाला होता है। यदि उपरोक्त लक्षण के साथ बुध का पर्वत ऊँचा हो तो सट्टे का व्यापार करने वाला होता है।

चौथी अँगुली कनिष्ठा लम्बी हो तो ज्ञान-शक्ति, व्याख्यान देने की शक्ति और भाषाओं के ग्रहण करने की योग्यता प्रदान करती है। अधिक लम्बी हो तो छल चतुरता और तीव्र बुद्धि देती है। यदि छोटी हो तो मन्द बुद्धि कार्य में असफलता और बात आसानी से समझना इत्यादि गुण उत्पन्न करती हैं। यदि टेढ़ी हो तो चुपचाप रहने की आदत दूसरों के कहने में आसानी से आ जाना और विचारों का निर्बल होना इत्यादि होता है। उत्तम गुणों तथा नैतिक ज्ञान की कमी होती है और आया हुआ लाभ का अवसर हाथ से निकल जाने का योग देती है। जिनसे सहायता मिलेगी। प्राणी उनकी ओर ध्यान न देगा। यदि अग्र-भाग की नौक चौरस हो तो उत्तम शिक्षक होता है।

अँगुलियाँ लम्बाई में हथेली के समान होनी चाहिये। ऐसा होने से बुद्धि और दिमागी शक्ति विशेष रूप से होती है और यह भाग्यवानी का चिन्ह है। अँगुलियाँ अधिक लम्बी हों तो वह मनुष्य विरह वेदना से व्याकुल अपने ध्यान में मग्न रहने वाला और प्रायः वहमीयाने शक्की होता है। ऐसा पुरुष आस्तिक और हर बात को बिना अनुसन्धान किये विश्वास नहीं करता है। बोलने तथा काम करने में सुस्त होते हैं शीघ्र निर्णय नहीं करते हैं।

छोटी अँगुली वाला मनुष्य चालाक सादगी संकुचित स्वभाव तुरन्त काम में लग जाने वाला और बहुत जल्द सीखता है। लेखन शैली संक्षेप में तात्पर्य समझाने वाली गम्भीर होती

है। आसानी से उभाड़ा जा जकता है। लम्बी मोटी अँगुलियों वाला कठोर होता है। संक्षेप में मतलब समझ लेता है। बाहरी दिखावे की परवा नहीं करता। यदि छोटी अँगुलियाँ पुष्ट हों तो निर्दयता सूचक हैं।

छठा अध्याय

नाखून

जितना महत्व सामुद्रिक शास्त्र में उँगलियों का है उतना और उससे अधिक महत्व नाखूनों का है। असल बात यह है कि नाखूनों द्वारा प्राणी, प्राणी की मानसिक क्रियाओं को आसानी से समझा जा सकता है। नाखून से जन्म से ही पैतृक रूप में पायी हुई दुर्बलताओं और मानसिक समस्याओं को जाना जा सकता है। एसा अक्सर देखा गया है कि यही दुर्बलतायें आगे चलकर भयंकर रोग का रूप धारण करके प्राणी के प्राणों तक को हर लेती हैं।

चित्र नं० ३

नाखूनों की बनावट से आदमी के पिछले समय का हाल मालूम होता है, और साथ ही इसकी तन्दुरुस्ती के बारे में भी हाल मालूम होता है। इस तमाम हाल को जानने के लिए नाखूनों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

नाखून चार प्रकार के होते हैं।—लम्बे, तंग छोटे. और चौड़े।

लम्बे नाखून वालों का सीना, फेफड़ा कमजोर होता है खास कर जब उनमें रेखायें पड़ी हों। यदि कोई रोग न हो तो भी शरीर कमजोर और नाजुक होगा।

तंग नाखून वालों की रीढ की हड्डी कमजोर होती है। मुड़ी हुई और बहुत पतली होती है। यह रीढ़ की हड्डी के झुकाव और शरीर की नाजुकता का द्योतक है। यह कायर होने का लक्षण है।

छोटे नाखून दिल की कमजोरी बताते हैं। खास कर जब अर्ध चन्द्र नाखून में बहुत छोटे हों और मुश्किल से दिखाई देते हों।

यदि चन्द्र, आकार में बड़े हों तो हृदय की चाल तीव्र और रुधिर का प्रवाह शीघ्रता से होता है।

चौड़े नाखून ऊपर को उठने वाले हों, या बाहर की तरफ हों तो लकवे का भय है और खास कर जब वह कौड़ी की तरह दिखाई देते हैं।

श्वेत रङ्ग के नख सुपारी की आकृति के हों तो क्रोध तुरन्त नहीं आता है। जब आता है तब वह जल्दी नहीं भूलता है। स्त्री के नख श्वेत होंगे तो वह चालबाज व ढीठ होगी।

चौड़े नाखून वालों को, हँसी उड़ाना, व्यंग, कटु स्वर से बोलना और चिढ़ाना खूब आता है। इस तरह के लोगों को

क्रोध देर तक रहता है, जल्द शान्त नहीं होता है।

छोटे चौड़े नाखून वालों को बहस करना खूब आता है। और अधिक छोटे चौड़े हों तो दमा, शीत और अन्य गले के रोग होते हैं।

नाखून बहुत चपटे और धँसे हुए हों तो स्नायु सम्बन्धी रोगों के सूचक हैं। नख भूसी के समान (लम्बे छोटे) हों तो वह पुरुष हिजड़ा होता है और चपटे या फटे हों तो धन हीन, जिनके नख कुत्सित हों वे कुदृष्टि से निहारने वाले और जिनके नख लाल ताम्रवर्ण के हों वे धनी होते हैं।

छोटे पीले नाखून वाले दगाबाज स्वभाव के होते हैं। उनका शरीरिक और आत्मिक बल कमजोर होता है।

छोटे और लाल नाखून वाले उग्र स्वभाव के होते हैं। छोटे. समकोण और नीले नाखून वालों को दिल की बीमारी होती है।

लम्बा पतला मुड़ा हुआ नख गले में जख्म की बीमारी का चिन्ह है यदि इस पर रेखायें हों तो तपेदिक होती है।

स्वभाव

अगर नाखून चौड़ाई में लम्बे हों तो स्वतंत्रता और निश्चयात्मक बुद्धि की सूचना है। स्वभाव कोमल, सभ्यतायुक्त, आसानी से समझने वाला होता।

छोटे गोल तथा बहुत श्वेत रङ्ग के नख वाला क्रोधी स्वभाव का होता है।

बहुत चमकीले नाखून वाला मानसिक कल्पना करने में तीव्र होता है।

स्वच्छ सफेद व काले नख होने से मनुष्य दुष्ट, जिद्दी

विश्वासघती और खेती के काम में होशियार होना है।

छोटे व फीके नख वाला लुच्चा व लफंगा होता है।

लम्बे सफेद रंग के नख वाला नीतिमान् होता है।

गोल नख होने से आनन्द सुख भोगने वाले स्वभाव का होता है।

कठोर नख होने से लकवा, पक्षघात, रोग का डर रहता है।

नखों पर श्वेत रङ्ग के धब्बे होने से पाचन शक्ति में दोष होता है।

ऊँचे झुके हुए नख से राज्यक्ष्मा रोग होने का सन्देह रहता है।

छोटे अर्ध चंद्र के समान श्वेत धब्बे होने से रुधिर की क्रिया में दोष होता है।

पीले नाखून वाले निर्दयी और कड़े स्वभाव के होते हैं।

नखों का तल भाग नोकीला हो तो जल्द नाराज होने वाला और जल्द अपमानित होने वाला होता है। लम्बे और सफेद रङ्ग के नख होने से प्राणी नीतज्ञ होता है।

नाखून पर सफेद दाग स्नायुविक कमजोरी का लक्षण है।

कुछ विद्वानों का मत है कि सफेद दाग शुभ-सूचक है, और काला दाग नाखून पर अशुभ सूचक है। नीचे लिखे हुए चक्र से नाखून के दागों का लक्षण समझना चाहिए।

विभिन्न प्रकार के नाखूनों के लक्षण और उनका ज्ञान करने के लिए इस चक्र को गौर से देखो।

नाखूनों के ऊपर वाले दागों के फल

नाखून	सफेद दाग	काला दाग
तर्जनी	सम्मान, यश,	अपयश, नीच प्रवृति
मध्यमा	देश विदेश भ्रमण	मृत्यु, भय
अनामिका	लाभ, कीर्ति, श्रद्धा	हार, अपकीर्ति
कनिष्ठा	लाभ, विश्यास	हानि, दुराशा
अगूँठा	प्रेम, लाभ	हानि, अपराध

यदि दाग नाखून के अगले हिस्से में हों तो भूतकाल के सूचक होते हैं। मध्य में होने पर वह वर्तमान काल के द्योत्तक हैं। सब से नीचे अर्थात् जड़ में होने से भविष्य के परिणामों की सूचना देते हैं।

पश्चात्य मत

अँगुलियों के नाखूनों द्वारा स्वास्थ्य और व्यापार के सम्बन्ध में ज्ञात होता है अतः उनकी परीक्षा आवश्यक है। नाखून चिकने, सुडौल और गुलाबी रङ्ग के होने चाहिये। ऊपर से नीचे की ओर धारियों से स्पष्ट होता है कि शरीर में कष्ट है और जैसे २ रोग बढ़ता जाता है वैसे २ नाखून भी उंगलियों से ऊपर की ओर उठने लगते हैं।

नाखूनों पर सफेद दाग इस बात के द्योत्तक होते है कि रोग निकट ही है और जैसे २ रोग बढ़ता जाता है यह सफेद दाग बढ़ते जाते हैं और घने होकर नाखून पर छाने लगते हैं। उसके बाद नाखून उँगली पर के मास से उपर की ओर उठने लगता है और स्पष्टतया उठा हुआ प्रतीत होता है। इस तरह उठ

कर वह पीछे की तरफ मुड़ता हुआ प्रतीत होता है और अपना स्वभाविक रूप छोड़ देता है। इस समय यह एक खतरा बताता है और रोग की विषमता का अनुमान लगाया जाता है और इसी समय लकवे का भी भय हो सकता है।

चित्र नं० ४

तंग नाखून वाला प्राणी यद्यपि गठीले शरीर का नहीं होता मगर उसमें स्फुर्ति और कार्य करने की अटूट शक्ति होती है। दर असल यह मनोवैज्ञानिकता का द्योतक होता है और यह नम्र स्वभाव को स्पष्ट करता है। चौड़ा नाखून स्वस्थ [illegible] हुए शरीर का द्योतक होता है। तंग नाखून या तो श्वेत, पीले, नीले और गुलाबी होते हैं। यह कभी भी लाल नहीं देखे गये. यद्यपि

तले में वह नीले देखे गये हैं जिनके द्वारा रक्त संचार की गति क्षीण होने का अनुमान किया जा सकता है।

छोटे नाखून मस्तिष्क की उलझनों के द्योतक होते हैं यदि नाखून अधिक छोटे न हों तो वह अन्वेषणों की ओर लगाने वाली प्रकृतियों के सूचक होते हैं। अति अधिक छोटे नाखून, चपटे और जिनके ऊपर मांस भी निकल आता है वह रोग की सूचना देते हैं। यदि छोटे नाखूनों के साथ ही, अँगूठा बड़ा हो, हाथ कड़े हों और उँगलियों की गठन हों तो वह प्राणी विरोधी भावना प्रधान होता है।

खुले हुए और स्वच्छ नाखूनोंवाला प्राणी, जिनके ऊपर के सिरे चौड़े हों, गोलाकार उँगलियों के ऊपर हों और नीचे की ओर चौरस हों और रङ्ग के गुलाबी हों, वह स्पष्ट करते हैं कि इस प्रकार के नाखून वाला प्राणी विचारों का स्पष्ट और साफ बात कहने वाला होता है। उसमें ईमानदारी का गुण प्राकृतिक होता है। नाखूनों की चौड़ाई और गोलाकार अवस्था उनके हृदय और खुले विचारों को स्पष्ट करती है। गुलाबी रङ्ग उनके निरोगी शरीर को स्पष्ट करता है।

लम्बी उँगलियों पर अक्सर चौकोर नाखून देखे गये हैं और इस प्रकार के नाखून हृदय रोग के सूचक होते हैं। अक्सर इस प्रकार के नाखून हर तरह की उँगलियों पर पाये जाते हैं। इस प्रकार के नाखून अक्सर तले में गहरे नीले रंग के होते हैं और उनकी गठन हृदय की कमजोरी के द्योतक होते हैं।

सातवाँ अध्याय

ग्रह ज्ञान

सामुद्रिक शास्त्र में गणना करते समय ग्रहों पर विशेष

कर वह पीछे की तरफ मुड़ता हुआ प्रतीत होता है और अपना स्वभाविक रूप छोड़ देता है। इस समय यह एक खतरा बताता है और रोग की विषमता का अनुमान लगाया जाता है और इसी समय लकवे का भी भय हो सकता है।

चित्र नं० ४
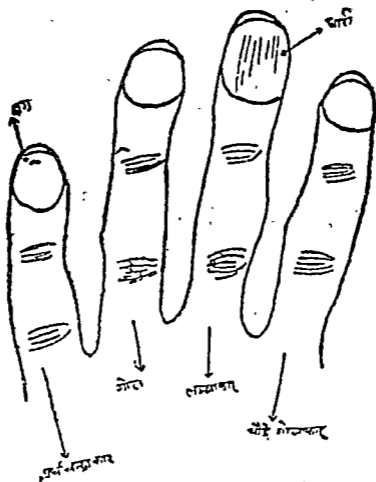
तंग नाखून वाला प्राणी यद्यपि गठीले शरीर का नहीं होता मगर उसमें स्फूर्ति और कार्य करने की अटूट शक्ति होती है। दर असल यह मनोवैज्ञानिकता का द्योतक होता है और यह नम्र स्वभाव को स्पष्ट करता है। चौड़ा नाखून स्वस्थ उठे हुये शरीर का द्योतक होता है। तंग नाखून या तो श्वेत, पीले, नीले और गुलाबी होते हैं। यह कभी भी लाल नहीं देखे गये, यद्यपि

तले में वह नीले देखे गये हैं जिनके द्वारा रक्त संचार की गति क्षीण होने का अनुमान किया जा सकता है ।

छोटे नाखून मस्तिष्क की उलझनों के द्योतक होते हैं यदि नाखून अधिक छोटे न हों तो वह अन्वेषणों की ओर लगाने वाली प्रकृतियों के सूचक होते हैं। अति अधिक छोटे नाखून, चपटे और जिनके ऊपर मांस भी निकल आता है वह रोग की सूचना देते हैं। यदि छोटे नाखूनों के साथ ही, अँगूठा बड़ा हो, हाथ कड़े हों और उँगलियों की गठन हों तो वह प्राणी विरोधी भावना प्रधान होता है।

खुले हुए और स्वच्छ नाखूनोंवाला प्राणी, जिनके ऊपर के सिरे चौड़े हों, गोलाकार उँगलियों के ऊपर हों और नीचे की ओर चौरस हों और रङ्ग के गुलाबी हों, वह स्पष्ट करते हैं कि इस प्रकार के नाखून वाला प्राणी विचारों का स्पष्ट और साफ बात कहने वाला होता है। उसमें ईमानदारी का गुण प्राकृतिक होता है। नाखूनों की चौड़ाई और गोलाकार अवस्था उनके हृदय और खुले विचारों को स्पष्ट करती है। गुलाबी रङ्ग उनके निरोगी शरीर को स्पष्ट करता है।

लम्बी उँगलियों पर अक्सर चौकोर नाखून देखे गये हैं और इस प्रकार के नाखून हृदय रोग के सूचक होते हैं। अक्सर इस प्रकार के नाखून हर तरह की उँगलियों पर पाये जाते हैं। इस प्रकार के नाखून अक्सर तले में गहरे नीले रंग के होते हैं और उनकी गठन हृदय की कमजोरी के द्योतक होते हैं।

सातवाँ अध्याय

ग्रह ज्ञान

सामुद्रिक शास्त्र में गणना करते समय ग्रहों पर विशेष

तीसरा अध्याय

स्वास्थ्य रेखा

जीवन की सार्थकता स्वास्थ्य पर विशेष होती है। प्राचीन कहावत है—

प्रथम् सुख निरोगी काया । द्वितिय सुख पल्ले में माया ॥
तृतिय सुख पुत्र आज्ञा कारी । अन्तिम सुख सुलक्षणी नारी ॥

अतः इस कहावत के अनुसार जो जीवन के कठोर सत्य पर निरधारित है अगर हम मनन करें तो हमें सहजही ज्ञात होगा गा कि शरीर का निरोग होना कितना आवश्यक है। क्योंकि अगर प्राणी स्वस्थ है तब ही वह जीवन को सुचारू रूप से व्यतीत कर सकता है अगर वह रोगी है तो हमेशा खीझता रहेगा और परेशान रहेगा।

मनुष्य अपने जीवन को स्वयम् ही निर्माण करता है और इस लिये उसे उच्च कर्म करने चाहिये। बिना अच्छे कर्म किये वह कुछ नहीं कर सकेगा और हमेशा परेशान तथा निर्धन ही रहेगा।

'कर्म प्रधान विश्व कर राखा, जो जस कीन्ह सोतस फलचाखा॥'

इस लोकोक्ति के अनुसार भी मनुष्य का कर्म-ही प्रधान माना गया है। इस वास्ते प्राणी मात्र का धर्म है कि वह अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दे और जहां तक हो सके अपने स्वास्थ्य को ठीक रखें।

पाश्चात्य विद्वानों ने भी कहा है—A H·altv Soo Lives in a Healthy body अर्थात स्वस्थ शरीरमें ही स्वस्थ आत्मा निवास करती है। यह सत्य कठोर सत्य है और इन तमाम

विचारों को ध्यान में रखते हुये हर प्राणी को आवश्यक है कि वह अपने स्वास्थ्य के विषय में सतर्क रहें।

स्वास्थ्य रेखा से प्राणी को अपने आगामी जीवन के स्वास्थ्य के विषय में ज्ञान हो जाता है। यदि आगामी जीवन में स्वास्थ्य को खतरा है तो बुद्धिमानी तो यही होगी कि प्राणी आगामी जीवन के लिये तैयार हो जाये और आने वाली आपदाओं से अपनी रक्षा करने का प्रयास करे।

स्वास्थ्य रेखा के निकास के सम्बन्ध में अनेकों मतभेद हैं। इसके विषय में सबसे पहली बात तो यह है कि अनेकों प्राणियों के हाथ में स्वास्थ्य रेखा बिलकुल ही नहीं होती है। बहुत सों के हाथ में होती है तो भी अस्पष्ट सी और बहुत सों के हाथ में होती है तो गहरी लम्बी और स्पष्ट होती है। (चित्र नं० १ में नं० २ को देखो)

वैसे तो देखा जाय तो स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा का माप है और यह अक्सर बदला करती है। जब मनुष्य रोग ग्रस्त होता है तो यह गहरी और भयानक होती है और जैसे २ प्राणी निरोग होता जाता है वैसे २ यह गायब होती जाती है।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार स्वास्थ्य रेखा मणि बन्ध रेखा के ऊपर से प्रारम्भ होती है और बुध के स्थान की ओर अग्रसर होती है। सबसे अच्छा स्थान इसका तब है जब यह नीचे की ओर स्पष्ट हो और जीवन रेखा को बिलकुल भी न छुये। (चित्र नं० १ में १–१ वाली रेखा)

जिन प्राणियों के हाथों में स्वास्थ्य रेखा बिलकुल ही नहीं होती वह निरोग और बलिष्ट होते हैं। जिनके हाथ में स्पष्ट स्वास्थ्य रेखा होती हैं उसका प्रभाव होता है कि उनके शरीर में धीरे २ रोग घर करने लगा है अतः उन्हें सचेत हो जाना चाहिए। जिनके

हाथ में यह स्वास्थ्य रेखा गहरी होती हैं वह भयानक रोग में फंस जाते हैं और जिनके हाथ में स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा से मिल जाये उसी स्थान पर आयु की अवधि आने से प्राणी मृत्यु को प्राप्त होता है।

स्वास्थ्य रेखा की एक विशेषता है कि यह रेखा आरम्भ से अन्त तक सीधी होती है। इसमें हेर फेर नहीं होता है और न इसमें मोड़ तोड़ ही होता है।

जिस प्राणी के हाथ में स्वास्थ्य रेखा हो और वह मणिबन्ध रेखा या उसके ऊपर से प्रारम्भ होकर कनिष्ठा उंगली की ओर अग्रसर होती हुई हृदय रेखा से मिल जाये तो उसका फल यह होता है कि इस रेखायुक्त हाथ वाला प्राणी हृदय रोगों का अवश्य शिकार होता है।

हृदय धड़कने की उसे बीमारी होती है और इससे बचने के लिए सहज उपाय है कि उसे चाहिए कि वह व्यायाम, चिन्ता, मादक वस्तुओं का सेवन आदि बन्द कर दे तब ही उसके जीवन की रक्षा हो सकती है। (चित्र नं० २ में न० १ वाली रेखा को देखो)

यदि किसी प्राणी की स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा के अन्त होने वाले स्थान से प्रारम्भ होकर ऊपर की ओर चलती है तो उसे प्राणी को गुर्दे का रोग होता है। यदि स्थान २ पर यह रेखा टूट गयी हो तो उस प्राणी की पाचन शक्ति कमजोर हो जाती है और फेफड़ों में विकार उत्पन्न हो जाने से वह तपेदिक या दमे का शिकार हो जाता है। (चित्र न० २ में न० २ से प्रारम्भ होने वाली रेखा को देखो)

यदि स्वास्थ्य रेखा जंजीर-दार होती है उसका फल यह होता है कि प्राणी को पेट के अनेकों रोग सताते रहते हैं। वाय-

गोला, जिगर, जलन्धर आदि रोग उसे सताते रहते हैं। एसी रेखा वाले प्राणी के यदि हाथ के नाखून चौड़े हों और उन पर लाल रंग के साथ ही साथ सफ़ेद दाग भी हों तो प्राणी भयंकर रोगों से पीड़ित रहता है। उसका स्वास्थ्य कदापि अच्छा नहीं रह सकेगा। (चित्र न० ३ में १-१ वाली रेखा को देखो)

जिन प्राणियों की हाथ की उंगलियों के नाखून चौड़े हों और उनके हाथ की स्वास्थ्य रेखा में स्थान २ पर द्वीप विद्यमान हों तो एसी दशा में उन प्राणियों को गले रोग अवश्य सतायेंगे और वह हमेशा गले की बीमारियों में ही घिरे रहेंगे। इसके साथ ही जिन लोगों के नाखून लम्बे हों और हाथ की स्वास्थ्य रेखा में द्वीप हों तो एसे प्राणी सीने के रोग से दुखी होंगे। उन्हें गुर्दे का दर्द, दिल धड़कने की बीमारी आदि सताती रहेंगी। (चित्र न०३ में २-२ वाली रेखा को देखो)

स्वास्थ्य रेखा मनुष्य के हाथ में केवल बचपन और युवावस्था ही में रहती है जैसे २ वह प्रौढ़ता की ओर बढ़ता है यह रेखा उसके हाथ में से लुप्त सी होती जाती है। इसका एक मात्र कारण यही है कि जब आदमी प्रौढ़ता की ओर पदार्पण करता है तब वह अपने शरीर का ध्यान रखता है और अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने के कारण वह बहुत ही कम बीमार पड़ता है।

जिस प्राणी के हाथ में स्वास्थ्य रेखा का सर्वथा अभाव रहता है वह पूर्णतया स्वस्थ होता है। जिनके हाथ में स्वास्थ्य रेखा होती है मगर वह निर्दोष होती है वह विलक्षण स्मरण शक्ति वाले होते हैं और व्यवहार कुशल भी होते हैं। जिन प्राणियों की स्वास्थ्य रेखा लम्बी और साफ़ होती है वह प्रसन्न चित्त होते हैं। वह अच्छे आचरण वाला होगा। उसकी बुद्धि कुशाग्र होगी, वह कुशल कारीगर होगा और अगर उसे व्यापार का चस्का है तो

वह निपुण व्यापारी भी होगा। अपने पराक्रम से वह उन्नति करेगा और धर्म के प्रति भी उदार होगा। उसके हाथ की, उसकी लम्बी स्वास्थ्य रेखा इस बात का प्रमाण है कि उसकी आयु भी लम्बी होगी।

अक्सर देखा गया है कुछ प्राणियों के हाथ में स्वास्थ्य रेखा के सामान्तर एक और रेखा उसी तरह की होती है। इस रे को हम सहायक स्वास्थ्य रेखा कहते हैं। इस प्रकार की सहाय स्वास्थ्य रेखा बहुधा देखने में नहीं आतीं। हजारों हाथों में से ए दो हाथ में ही यह होती हैं। इस सहायक स्वास्थ्य रेखा का सबं अच्छा प्रभाव यही होता है कि अगर स्वास्थ्य रेखा में कोई अव गुण भी हैं तो उस अवगुण को स्वास्थ्य रेखा की सहायक रेख नाश कर देती है और शुभ फल देती है। (चित्र न० ४ में १-१ तथा -२ वाली रेखाओं को देखो)

यदि किसी प्राणी के हाथ की स्वास्थ्य रेखा सीधी लम्बी और साफ है तो उसका फल शुभ होता है। मगर इसके साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि यह रेखा या इसकी कोई सहायक रेखा जीवन रेखा को न स्पर्श करे और काटे भी नहीं। दैवगति से यदि किसी प्राणी की जीवन रेखा किसी स्थान पर टूटी है और उस टूटी हुई जगह ही से स्वास्थ्य रेखा काटती हुई आगे चली गई है तो एसी दशा में उस प्राणी की मृत्यु अवश्य होगी। (चि: न० ४ में १-३ वाली बिन्दुदार रेखा का न० ३ वाला स्थल देखो)

यदि स्वास्थ्य रेखा किसी प्राणी की जीवन रेखा को किसी स्थान पर छूती है तो गणना करके आयु का समय निकाल लेना चाहिए क्योंकि उसी आयु में वह प्राणी किसी भयानक रोग का शिकार होगा और हो सकता है कि वह रोग प्राणों का भी हरण कर ले।

इसके विपरीत यदि स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा के सामान्तर तो चलती रहे मगर मणिबन्ध रेखा की ओर आकर धनुषाकार हो जाये और जीवन रेखा का स्पर्श न करे तो एसी दशा में वह प्राणी भयंकर रोगों का शिकार होने के बाद भी पूर्ण आरोग्यता को प्राप्त होगा और उसकी उमर भी अधिक होगी। (चित्र न० ५ में १-१ वाली रेखा को देखो)

जिन प्राणियों के नाखून गोलाकार हों और लम्बे भी हों और उनकी स्वास्थ्य रेखा हाथ की मस्तक रेखा के आस पास द्वीप बनाती हो तो उस प्राणी को राजयक्ष्मा अर्थात तपेदिक होने का योग है। (चित्र न० ५ में न० ७ वाला द्वीप का चिह्न देखो)

जब स्वास्थ्य रेखा अपने स्थान पर यथा स्थान हो और हृदय रेखा तथा मस्तक रेखा को स्पर्श तो कर रही हो और इन रेखाओं के मध्य भाग में कोई चिन्ह भी आंकित कर रही हो तो एसी दशा में यह गले के रोग को व्यक्त करती है। (चित्र न० ५ में न० ३ वाला तारा चिन्ह देखो)

जो प्राणी आयुपर्यन्त रोगी रहते हैं उनके हाथ को देखने से हमेशा यह पता लगा है कि उनकी जीवन रेखा जंजीरदार होती है और उनकी स्वास्थ्य रेखा गहरी और चौड़ी होती है। इस तरह की रेखा वाले प्राणी हमेशा रोग में लिप्त हीं रहते हैं और उनको हमेशा तकलीफ ही होती है।

अनेकों प्राणियों के हाथ की स्वास्थ्य रेखा गहरी होती है मगर साथ ही रङ्ग में लाल भी होती हैं। इस प्रकार की रेखाओं वाले प्राणी प्रायः रोगों का शिकार बने रहते हैं। जुकाम, खांसी और बुखार कभी उनका पीछा नहीं छोड़ते हैं। वह हर मौसम में रोग के शिकार हो जाते हैं।

———

चौथा अध्याय

हृदय रेखा

"राज़ दिल का जानना कोइ खेल नही है" यह बात हर आदमी जानता है। मगर हम उन तमाम आदमियों को बता देना चाहते हैं कि ज्योतिष में यह गुण है कि ज्योतिष के जान कार के आगे बैठ कर "राज़ उल्फत का पता चलने में कुछ भी देर नहीं है।"

यह हम पहले ही बता चुके हैं कि ज्योतिष में यह गुण है कि वह भूत, भविष्य और वर्त्तमान तीनों काल का हाल स्पष्ट कर देती है। हाथ की रेखायें गुजरे हुये समय की दास्तान और आने वाले समय की घटनाओं को स्पष्ट कर देती हैं। वर्तमान तो मनुष्य स्वयम् जानता ही है।

हाथ की रेखायें समयानुसार अर्थात् कर्मानुसार बनती बिगड़ती ही रहती हैं। आदमी भूत काल में जैसे कर्म करता है उसके हाथ की रेखायें वही वर्णन करती हैं।

कहावत है कि एक बार एक विद्वान ज्योतिषी के सामने एक भिखारी ने हाथ पसारा। हाथ पर एक सरसरी निगाह डाल कर ज्योतिषी ने उसके हाथ में एक अशर्फी रख दी। अशर्फी लेकर वह चला गया।

पास बैठे हुये लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने ने ज्योतिषी महाराज से इस बात को पूछा कि "महाराज आपने एक साधारण से भिखारी को बिना मांगे एक अशर्फी क्यों दे दी।"

तब विद्वान ज्योतिषी ने कहा कि भाईयों वह भिखारी भी साधारण नहीं था। वह कोइ धनी व्यापारी है और किसी ही के

प्रेम में पड़ कर ही पथ का भिखारी बन गया है। यही सोच कर मैंने उसे एक अशर्फी दे दी।

लोगों के पूछने पर ज्योतिषी महाराज ने बताया कि उसके हाथ की रेखायें स्पष्ट करती थीं कि वह सम्पन्न परिवार का है और उस की प्रेम गाथा मैंने उसकी हृदय रेखा से जान ली। हृदय रेखा प्रेम कथा को ज्यों का त्यों व्यक्त कर देती है।

तमाम ज्योतिष शास्त्री इस बात पर एक मत हैं कि हृदय रेखा से मनुष्य की मानसिक दशा और प्रेम लीला का ज्ञान हो सकता है। यही रेखा एसी है जिसके द्वारा प्राणी के प्रेम सम्बन्ध और उसके प्रेम सम्बन्धी तत्वों का निर्देशन किया जाता है। मित्र, सम्बन्धी, स्त्री, माता, पिता, पुत्र, पौत्र, आदि के प्रति प्राणी का बर्ताव कैसा होगा या रहेगा इस रेखा द्वारा ही स्पष्ट किया जा सकता है।

इस रेखा का रूप तीन तरह देखा जाता है।

१—तर्जनी उंगली अर्थात बृहस्पति के स्थान से जो रेखा प्रारम्भ होकर मस्तक रेखा के सामान्तर कनिष्ठ के मूल में मंगल के स्थान पर जाकर समाप्त होती है। (चित्र न० १ में न०१ वाली रेखा)

२—मध्यम उंगली के मूल में शनि के स्थान से प्रारम्भ होकर अर्ध गोलाकार मस्तक रेखा के सामान्तर चलकर मंगल के स्थान पर जाकर समाप्त होती है। [चित्र न० १ में न० २ वाली रेखा]

३—शनि और बृहस्पति के ग्रह स्थानों के मध्य से प्रारम्भ होकर मस्तक रेखा के अर्ध सामान्तर चलती हुई मंगल के स्थान पर जाकर समाप्त होती है। [चित्र न० १ में न० ३ वाली रेखा]

वैसे तो हृदय रेखा हर प्राणी के हाथ में होती है। जिन लोगों के हाथ में हृदय रेखा नहीं होती वह लोग हृदय रोग से दुखी और उनका जीवन विलास पूर्ण होता है । इस प्रकार के प्राणी विशेषतया कुकर्मी, लफंगे, कठोर हृदया और कपटी होते हैं। वैसे तो इस तरह के प्राणी बहुत ही कम देखने में आये हैं जिनके हाथ में यह रेखा नहीं होती है। जिनके हाथ में यह रेखा नहीं हुई है वह इसी आचरण के पाये गये हैं।

स्पष्ट रूप से ज्योतिष के आचार्यों का कथन है कि यदि यह रेखा बृहस्पति के स्थान से प्रारम्भ होती है और मंगल तथा बुध के स्थान के मध्य में जाकर समाप्त होती है तो एसे प्राणी अपने प्रेम-मय जीवन तथा आकांक्षाओं में अधिकतर सफल नहीं होते देखे गये हैं। वह प्रेम के पीछे उतावले तो होते हैं मगर उनका प्रेम बिना छल का नहीं होता और यही कारण है कि वह कभी अपने प्रेम में सफल नहीं हुए हैं। [चित्र न० १ में न० १ और न० ४ के मिलकर बनी रेखा को देखो/

यद्यपि इस तरह की रेखा वाले प्राणी बहुत भावुक और प्रेमोन्मत होते हैं। वह जब कभी किसी से प्रेम डोर बांधते हैं तो उसके पीछे पागल से हो जाते हैं हमेशा अपने प्रेमी के विषय ही में सोच विचार किया करते हैं मगर इतना सब कुछ होते हुये भी वह कभी सफल प्रेमी नहीं देखे गये हैं। उनका प्रेम और उनकी भावुकता क्षणिक ही सिद्ध हुई हैं। जब वह प्रेम डोर में बंधते हैं तो क्षण प्रतिक्षण प्रेमी के लिये तड़फते रहते हैं मगर जैसे २ समय बीतता जाता है उनके हृदय की प्यास कम होती जाती है और वह प्रेमी से ऊब जाते हैं।

यदि किसी प्राणी की हृदय रेखा शनि के स्थान से प्रारम्भ होकर बुध और मंगल के मध्य स्थान में जाकर समाप्त

होती है तो ऐसा प्राणी अपने प्रेम सम्बन्धों तक में अपना ही स्वार्थ देखेगा। वह जब भी किसी से प्रेम करेगा तो अपना स्वार्थ पहले देखेगा। यदि ऐसा प्राणी पुरुष है तो वह यही इच्छा करेगा कि उसे ऐसी कोई प्रेमिका मिले जो धनी हो और उसे धन खिला सके। वह प्रेमिका के हृदय को नहीं वरन् उसके धन को देखेगा। (चित्र नं० २ में नं० १ वाली रेखा)

यदि उसकी निगाह में कोई अतीव सुन्दर स्त्री आती है तो वह स्त्री के साथ केवल इतनी ही देर तक प्रेम का नाटक करेगा जब तक कि वह उसके सुन्दर शरीर के साथ खेलकर अपनी कामपिपासा को शान्त नहीं कर लेता। जैसे ही इसकी काम-पिपासा शान्त हो जायेगी वैसे ही वह उससे अपना सम्बन्ध तोड़ लेगा और उसकी प्रेम लीला वहीं समाप्त हो जायगी।

इस तरह की रेखा वाले प्राणी प्रेमी नहीं वरन सच्चे शब्दों में विलासी होते हैं। वह रूप, धन, यौवन और अपनी काम-पिपासा की शान्ति को देखते हैं और इसे अधिक मान देते हैं। अपनी काम पिपासा को शान्त करने के लिये वह अपनी मान मर्यादा तथा अपने प्रेमी तक की मान मर्यादा की तनिक भी परवाह नहीं करते।

इस प्रकार की हृदय रेखा का स्पष्ट फल ही यह है कि इस तरह की रेखा वाले प्राणी अपना जीवन रास रंग में ही बिताना अधिक पसन्द करते हैं। इस तरह वह समाज की नजरों में भी गिर जाते हैं मगर तब भी इन लोगों को इसकी परवाह नहीं होती इसका एक मात्र कारण यही है कि काम पिपासा के कारण इनका स्वाभिमान रहता ही नहीं और वह गहरे गर्त में गिर जाते हैं। इसके साथ ही एक बात का ध्यान रखना

वैसे तो हृदय रेखा हर प्राणी के हाथ में होती हैं। जिन लोगों के हाथ में हृदय रेखा नहीं होती वह लोग हृदय रोग से दुखी और उनका जीवन विलास पूर्ण होता है। इस प्रकार के प्राणी विशेषतया कुकर्मी, लफंगे, कठोर हृदया और कपटी होते हैं। वैसे तो इस तरह के प्राणी बहुत ही कम देखने में आये हैं जिनके हाथ में यह रेखा नहीं होती है। जिनके हाथ में यह रेखा नहीं हुई है वह इसी आचरण के पाये गये हैं।

स्पष्ट रूप से ज्योतिष के आचार्यों का कथन है कि यदि यह रेखा बृहस्पति के स्थान से प्रारम्भ होती है और मंगल तथा बुध के स्थान के मध्य में जाकर समाप्त होती है तो एसे प्राणी अपने प्रेम-मय जीवन तथा आकांक्षाओं में अधिकतर सफल नहीं होते देखे गये हैं। वह प्रेम के पीछे उतावले तो होते हैं मगर उनका प्रेम बिना छल का नहीं होता और यही कारण है कि वह कभी अपने प्रेम में सफल नहीं हुए हैं। [चित्र न० १ में न० १ और न० ४ के मिलकर बनी रेखा को देखो।

यद्यपि इस तरह की रेखा वाले प्राणी बहुत भावुक और प्रेमोन्मत होते हैं। वह जब कभी किसी से प्रेम डोर बांधते हैं तो उसके पीछे पागल से हो जाते हैं हमेशा अपने प्रेमी के विषय ही में सोच विचार किया करते हैं मगर इतना सब कुछ होते हुये भी वह कभी सफल प्रेमी नहीं देखे गये हैं। उनका प्रेम और उनकी भावुकता क्षणिक ही सिद्ध हुई हैं। जब वह प्रेम डोर में बंधते हैं तो क्षण प्रतिक्षण प्रेमी के लिये तड़फते रहते हैं मगर जैसे २ समय बीतता जाता है उनके हृदय की प्यास कम होती जाती है और वह प्रेमी से ऊब जाते हैं।

यदि किसी प्राणी की हृदय रेखा शनि के स्थान से प्रारम्भ होकर बुध और मंगल के मध्य स्थान में जाकर समाप्त

होती है तो ऐसा प्राणी अपने प्रेम सम्बन्धों तक में अपना ही स्वार्थ देखेगा। वह जब भी किसी से प्रेम करेगा तो अपना स्वार्थ पहले देखेगा। यदि ऐसा प्राणी पुरुष है तो वह यही इच्छा करेगा कि उसे ऐसी कोई प्रेमिका मिले जो धनी हो और उसे धन खिला सके। वह प्रेमिका के हृदय को नहीं वरन् उसके धन को देखेगा। (चित्र नं० २ में नं० १ वाली रेखा)

यदि उसकी निगाह में कोई अतीव सुन्दर स्त्री आती है तो वह स्त्री के साथ केवल उतनी ही देर तक प्रेम का नाटक करेगा जब तक कि वह उसके सुन्दर शरीर के साथ खेलकर अपनी कामपिपासा को शान्त नहीं कर लेता। जैसे ही उसकी कामपिपासा शान्त हो जायेगी वैसे ही वह उससे अपना सम्बन्ध तोड़ लेगा और उसकी प्रेम लीला वहीं समाप्त हो जायगी।

इस तरह की रेखा वाले प्राणी प्रेमी नहीं वरन सच्चे शब्दों में विलासी होते हैं। वह रूप, धन, यौवन और अपनी कामपिपासा की शान्ति को देखते हैं और उसे अधिक मान देते हैं। अपनी काम पिपासा को शान्त करने के लिये वह अपनी मान मर्यादा तथा अपने प्रेमी तक की मान मर्यादा की तनिक भी परवाह नहीं करते।

इस प्रकार की हृदय रेखा का स्पष्ट फल ही यह है कि इस तरह की रेखा वाले प्राणी अपना जीवन रास रंग में ही बिताना अधिक पसन्द करते हैं। इस तरह वह समाज की नजरों में भी गिर जाते हैं मगर तब भी उन लोगों को इसकी परवाह नहीं होती इसका एक मात्र कारण यही है कि काम पिपासा के कारण उनका स्वाभिमान रहता ही नहीं और वह गहरे गर्त में गिर जाते हैं। इसके साथ ही एक बात का ध्यान रखना

अति आवश्यक है कि उनके हाथ में शनि का स्थान किस अवस्था में है ?

यदि शनि का स्थान दबा हुआ है तो वह रोमांस प्रिय होंगे और यदि शनि का स्थान उठा हुआ है तो निराला अर्थात अकेला पन चाहेंगे और उन्हें सामाजिक जीवन के प्रति रुचि नहीं होगी। एकान्तप्रिय होने के साथ वह डरपोक भी होंगे उनका हृदय शक्तिहीन ही होगा और हमेशा उनके हृदय में दुराशायें घर किये रहेंगी तरह तरह के मन्सूबे वह बाँधते रहेंगे मगर उनका ध्यान कभी अच्छी बात पर जायेगा ही नहीं।

कुछ प्राणी ऐसे होते हैं कि उनके हाथ की हृदय रेखा शनि और बृहस्पति के मध्य के स्थान से प्रारम्भ होती है और बुध तथा मंगल के स्थानों के मध्य में जाकर समाप्त होती हैं। इस तरह की रेखा वाले प्राणी प्रेम के विषय में बहुत समझदार होते हैं। उनके लिये प्रेम तथ्य की वस्तु है। वह इसे केवल आडम्बर ही नहीं समझते हैं। बनावट उन्हें पसन्द नहीं होती और वह अपनी प्रेम लीला को प्रकाश में लाना पसन्द नहीं करते वह कभी यह नहीं चाहते कि उनकी प्रेम लीला किसी और प्राणी पर तनिक भी स्पष्ट हो जाये। चित्र नं० २ में नं० २ वाली रेखा)

यह प्राणी एक बार जिसे प्रेम करते हैं वह सच्चा प्रेम करते हैं और हमेशा अपने प्रेम को निवाहना चाहते हैं। उनका प्रेम आदर्श होता है वह प्रेमी के दोषों और गुणों को भी नहीं देखते। वह तो केवल प्रेम करते हैं और प्रेम को निवाहना जानते हैं। उनका प्रेमी उनके प्रति कैसी भावना रखता है और कैसा व्यवहार करता है। वह यह भी नहीं जानना चाहते हैं।

उनके अपने विचार होते हैं और वह उन पर ही दृढ़ रहते हैं। दूसरा प्राणी अपना कर्त्तव्य अपनी ओर से पालन ठीक तरह

कर रहा है अथवा नहीं? यह सब कुछ जानने की वह कोई जरूरत नहीं समझते और न इस विषय पर जानने या सोचने की चिंता ही करते हैं। उनका स्वभाव मृदु, वाणी कोमल, महत्वाकांक्षायें, हिम्मत के निर्भीक और क्षमादान करने वाले होते हैं।

वह अपने गुणों को देखते हैं और दूसरे के गुणों को न तो वह देखते हैं और यदि दूसरे में कोई अवगुण देख भी लें तो वह उसका जिक्र तक नहीं करते हैं। वह यह नहीं चाहते कि उनके मुख से कोई भी ऐसी बात निकले जिसके कारण उनके प्रिय के हृदय को किसी तरह की कोई ठेस पहुंचे।

वह भावुक होते हैं। उनकी भावनाओं को यदि तनिक भी ठेस लगती है तो वह दुःखी हो जाते हैं। वह कामुक नहीं होते। विलास की इच्छा उनमें नहीं होती। प्रेमी को केवल भोग विलास की सामिग्री नहीं समझते वरन उसे अपना सच्चा, परम प्रेमी और हितैषी के रूप में चाहते हैं।

समाज की मान प्रतिष्ठा का ध्यान उन्हें हर समय रहता है। वह ऐसा कोई कदम नहीं उठाना चाहते जिसके कारण उनको या उनके प्रेमी को किसी भी तरह नीचा देखना पड़े। प्रेम की राह में आये हुये कष्टों को देखकर वह हिम्मत नहीं हारते और कभी मुसीबत देखकर भी घबराते नहीं हैं।

मस्तक रेखा के समानान्तर ही अर्ध चन्द्राकार आकार में हृदय रेखा चलती है अतः इन दोनों रेखाओं का प्रभाव आपस में जरूर पड़ता है। जिनकी मस्तक रेखा अधिक गहरी, स्पष्ट और लाल रंग की होती है और हृदय रेखा हलकी, अस्पष्ट और सफेद रंग की होती है तो ऐसे प्राणी के जीवन पर मस्तक रेखा का प्रभाव अधिक होता है। वह प्रेम के मामले में अपना अस्तित्व नहीं भुला देता। वह पहले अपने कर्त्तव्य को देखता है और

बाद में अपने प्रेममय जीवन का वही स्थान देता है जो उसके लिये उचित है। अधिकतर ऐसे प्राणी विवाहित जीवन से दूर ही देखे गये हैं। (चित्र नं० ३)

अनेकों प्राणियों के हाथ में समानान्तर रूप से चलती हुई दो मस्तक रेखायें भी देखी गयीं हैं। यदि किसी प्राणी के हाथ में इस प्रकार दो हृदय रेखायें हों और साथ ही मस्तक रेखा लम्बी और झुकी हुई हो तो इस प्रकार की रेखाओं युक्त हाथ वाला प्राणी मानवता से अधिक उठा हुआ होता है। परोपकार और जन सेवा करने में उसे सबसे अधिक आनन्द प्राप्त होता है। वह सदैव समाज, जाति, राष्ट्र के उद्धार और उन्नति में रत रहते हैं। किसी को तनिक भी दुःखी देखकर उनका हृदय सहज ही द्रवीभूत हो जाता है। वह जहाँ तक सम्भव होता है परोपकार में अपना सर्वस्व तक निछावर करने को वाध्य हो जाते हैं। (चित्र नं० ४)

कुछ प्राणियों के हाथ में हृदय रेखा गहरी और साफ हो और उसके निकलने का स्थान गुरू ग्रह का स्थान भी अधिक ऊंचा हो और साथ ही अनेकों छोटी २ रेखायें उसमें मिल रही हों तो ऐसी दशा में वह प्राणी प्रेम को उत्तम रीति से करने वाले होते हैं। उनका प्रेम उत्कृष्ट होता है। वह प्रेम के पीछे पागल रहते हैं और अपने प्रेममयी जीवन में इतने आतुर रहते हैं कि उनके सामने केवल प्रेम की ही चर्चा रहती है। इस प्रकार की रेखा आमतौर से उन लोगों के हाथ में पायी जाती हैं जो प्रेम में तन्मय रहते हैं। शृंगार रस की कविता करने वाले कवि, संगीतज्ञ तथा पति प्रेम में रत रहने वाली स्त्री के हाथ में वह रेखा अधिकतर देखी गई है। सारांश यह है कि इस प्रकार

की रेखा युक्त प्राणी अधिक भावुक और कला प्रेमी होता है। (चित्र न० ४)

यदि किसी प्राणी के हाथ की हृदय रेखा पतली, चमकदार और साफ हो तो ऐसा प्राणी प्रेम के विषयों में अधिक भावुक होता है। उसका प्रेम अधिक स्थायी और विलक्षण होता है। यह उत्तम लक्षण है।

जब किसी प्राणी के हाथ की हृदय रेखा छोटी हो, कम चमकदार, और धुंधली हो तो इस प्रकार की रेखा वाला प्राणी स्वभाव का उदासीन होता है। उसका व्यवहार रूखा होता है। उसके साथ जितने भी प्राणी सम्पर्क में आते हैं। वह सब यही सोचते हैं कि यह प्राणी हृदय से शुष्क है मगर असल में यह बात नहीं होती। वह व्यवहार से भले ही शुष्क हो मगर प्रेम की मात्रा उसमें होती है मगर वह उसे स्पष्ट नहीं कर पाता।

अक्सर देखा गया है कि बहुत से प्राणियों के हाथ में हृदय रेखा स्थान २ पर टूट गयी हो तो ऐसी दशा में उसका फल निम्न होता है।

मध्यमा-उंगली के नीचे टूट गयी हो तो ऐसा प्राणी विधाता की गति से अपने प्रेम में असफल होता है। जब वह प्रेम करता है और सफलता प्राप्त नहीं होती तो इसमें दोष प्राणी का नहीं होता वरन उसके भाग्य का दोष होता है। विधाता की ही मर्जी से उसके प्रेम में नाना बाधायें उपस्थित होती हैं। (चित्र न० ५)

अनामिका उँगली के नीचे यदि हृदय रेखा टूट रही हो तो ऐसी रेखा वाला प्राणी अपने अभिमान द्वारा ही प्रेम में विफल होता है। यह व्यवाहिक नियम भी है कि प्रेम में अभिमान नहीं चलता और जो प्राणी प्रेम में अभिमान या दर्प से

कार्य करता है वह कदापि सफल नहीं हो सकता है ऐसा पाश्चात्य मत है। भारतीय ज्योतिष शास्त्री भी इस मत से सहमत ही हैं। अतः यह सत्य हो चुका है कि जिस प्राणी की हृदय रेखा अनामिका के नीचे आकर टूट जाये वह कभी प्रेम में सफल नहीं हो सकता है। (चित्र न० ५)

चौथी उंगली के नीचे यदि हृदय रेखा टूट जाये तो ऐसे लक्षण वाला प्राणी स्वयम् ही अपनी मूर्खताओं के कारण ही अपनी प्रेम लीलाओं में बाधायें उत्पन्न कर लेता है। उसकी मूर्खताओं के कारण ही उसका प्रेम मय जीवन निराशा जनक और अनेक बाधायुक्त हो जाता है। (चित्र न० ५)

इन तमाम कारणों से यही उचित है कि हृदय रेखा को गौर से देखना चाहिये और टूटे हुये स्थान को ध्यान में रखकर उसका फल कहना चाहिये। अक्सर यह भी देखा गया है कि एक ही हाथ में एक ही या एक से अधिक जगह भी हृदय रेखा टूट जाती है।

ऐसी दशा में जब हृदय रेखा एक स्थान के बजाय कई स्थानों पर टूट जाये तो जहां २ वह टूट गयी है और उसका टूटना जिस ग्रह की तरफ होता है उस ग्रह का स्वामी अवश्य ही अपना फल डालता है ऐसी रेखा प्रायः मस्तक रेखा की ओर झुककर शनि की उंगली के नीचे टूटती है और वह टूटी हुई शाखा मस्तक रेखा को पार करके जीवन रेखा की ओर बढ़ती है। और उसके टूटने का दूसरा स्थान होता है अनामिका के नीचे, सूर्य के स्थान के समीप जाकर और यहाँ से टूटकर वह अंगूठे की ओर बढ़ती है। और यह शाखा भी मस्तक रेखा की ओर आगे बढ़ती है और जीवन रेखा को पार करके मङ्गल रेखा की ओर आगे बढ़ती है।

जिन प्राणियों की हृदय रेखा उपर कहे हुये लक्षणों के अनुसार दो स्थानों पर टूटती हैं उनके फल निम्न होते हैं—

१—जब रेखा शनि के स्थान पर टूटती है तो उसका फल यह होता है कि दोनों प्राणियों में अत्याधिक प्रेम तो होता है और दोनों एक दूसरे के साथ विवाह सूत्र में बंधने के लिये अपना सर्वस्व तक न्यौछावर करने को तैयार होते हैं मगर अनजाने ही उन लोगों से ऐसा कोई कार्य हो जाता है कि वह अलग कर दिये जाते हैं और लाख चेष्टायें और प्रयत्न करने पर भी वह लोग कभी एक दूसरे के नहीं हो सकते हैं। सौ फी सदी ऐसा देखा गया कि है वह विभिन्न स्त्री पुरुषों के विवाह सूत्र में बंध गये हैं। प्रेमिका को प्रेमी से या प्रेमी को प्रेमिका से विलग करने में हाथ शनि देवता का होता है। शनि के प्रभाव के कारण ही वह लोग एक दूसरे के साथ विवाह सूत्र में नहीं बंध पाते हैं। (चित्र न० ५ स्थल ४)

२—जब हृदय रेखा दूसरे स्थान पर भी टूटती है तो उसका फल स्पष्ट होता है कि प्रेमी को प्रेमिका से सच्चा और उतना अटूट प्रेम नहीं होता जितना पहली प्रेमिका से होता है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि संयोग ही से उसकी मुलाकात उस स्त्री से हो जाती है और यह मुलाकात आगे चलकर प्रेम का रूप धारण कर लेती है। धीरे २ उनका प्रेम मय सम्बन्ध गहरा होने लगता है और उन दोनों प्रेमियों का खिचाव-वासनायुक्त होता है। ऐसा देखा गया है कि इस प्रकार के लक्षण वाला प्राणी शीघ्र ही अपनी प्रेमिका के प्रेम से विरक्त हो जाता है। उसे अपने कुल और मान मर्यादा का विचार होने लगता है और वह धीरे २ प्रेयसी की ओर से खिचने-लगता है। मान मर्य्यादा का विचार करके वह अपना झुकाव कम करने लगता है और शीघ्र

ही एक समय ऐसा भी आ जाता है जब वह उसे तिरस्कार पूर्वक छोड़ कर अलग हो जाता है। इस मनोविकार में सूर्य का प्रबल हाथ होता है। सूर्य ग्रह यश चाहता है और इसी कारण वह प्राणी को अपयश के कार्य से दूर हटाता है।

हृदय के रेखा के पास ही ऊपर की ओर जाने वाली छोटी २ स्पष्ट रेखायें इस बात की द्योतक हैं कि इस प्रकार की रेखाओं वाला प्राणी प्रणाय और प्रेम लीलाओं में कितनी बार डूब और उतरा चुका है। उन रेखाओं में जो हृदय रेखा को काटती हैं उनसे यह स्पष्ट होता है कि इस प्रकार की रेखा वाले प्राणी की प्रेम लीलायें सुखदायी रहीं हैं और जो हृदय रेखा को नहीं काटतीं उनसे स्पष्ट होता है कि उस प्राणी की प्रेम लीलायें दुःखदायी रहीं हैं। कुछ लोगों की हृदय रेखा पर कुछ बिन्दु पाये जाते हैं। यह बिन्दु इस बात के प्रतीक हैं कि प्राणी का हृदय शीघ्र ही अस्थिर होने की प्रकृति वाला होता है। इस प्रकार बिन्दु युक्त प्राणी को कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिये कि जिसल हृदय की धड़कन अर्थात् Pulpitati-on of Heart बढ़ जाये। दौड़ना, भागना, अधिक चिन्ता आदि करना उसे सर्वथा वर्जित है। (चित्र न० ६ में क्रमशः न० १,२,३ स्थालों को देखो)

देखा गया है कि कई प्राणियों के हाथ में लाल रङ्ग के बिन्दु या सामान्तर रेखा वाले (=) चिन्ह या तिल होते हैं। यह सब चिन्ह जिस प्राणी के हाथ में एक साथ या अलग २ हों तो ऐसे चिन्ह वाला प्राणी प्रेम के मार्ग में सर्वदा निराश ही रहता है।

———

पांचवा अध्याय

मस्तक रेखा

जीवन रेखा के बाद जिस रेखा का प्राणी के जीवन में सबसे अधिक महत्व होता है वह है मस्तक रेखा। यह रेखा मनुष्य की बुद्धि और मनुष्य की ज्ञान सम्बन्धी सभी बातों की परिचारिका होती है। इस रेखा के द्वारा प्राणी की मानसिक-शक्ति, उसके ज्ञान, बुद्धि विकास आदि समस्त बातों का पता लगाया जा सकता है। "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ आत्मा निवास करती है।" यह एक कठोर सत्य है। उसी प्रकार यह भी कठोर सत्य है कि स्वस्थ मस्तिष्क में स्वस्थ विचार पनपते हैं। स्वस्थ विचार और मानसिक शक्ति को सन्तुलित रखने वाला ही प्राणी संसार के विभिन्न क्षेत्रों में अपना उज्ज्वल भविष्य बना सकता है। ज्ञानवान प्राणी ही संसार में श्रेय के अधिकारी होते हैं। इन्हीं तमाम कारणों से इस रेखा के महत्व को सही रीति से समझना अति आवश्यक है और यही उचित है कि उसके समस्त फलादेशों का पूर्ण रूपेण विचार किया जाये।

मस्तक रेखा की स्थिति को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। यह रेखा विभिन्न स्थानों से प्रारम्भ होती है और अपने गन्तव्य स्थान तक पहुँचती है।

अंगूठे की जड़ में जीवन रेखा के नीचे जहां मंगल का स्थान होता है वह उसी स्थान से प्रारम्भ होकर जीवन रेखा को काटती हुई हथेली की दूसरी ओर को जाती है। इस प्रकार की रेखा वाला प्राणी स्वभाव का चिड़चिड़ा और तनिक देर ही में क्रोधित हो जाने वाला होता है। इस प्रकार के प्राणी को अपना आगा पीछा कुछ नहीं दिखाई देता और तनिक सी बात पर क्रुद्ध

होकर अपने आवेश में चाहे कुछ कर सकता है वह अपनी इस प्रकार की आवेश युक्त आदत के कारण ही झगड़ालू प्रकृति का होता है और बिना आगा पीछा देखे ही लड़ बैठता है और अक्सर अपने मित्रों को भी शत्रु बना लेता है। अपनी इस आदत के कारण ही वह लोक प्रिय नहीं हो सकता और वह अच्छा व्यवहारी कभी नहीं माना जाता है। [चित्र नं० १ में स्थल के नीचे वाली रेखा का निकलना देखो]

इस प्रकार की रेखा वाला प्राणी कभी किसी का प्रिय नहीं बन पाता और वह उग्र स्वभाव होने के कारण जीवन में अनेकों शत्रु उत्पन्न कर लेता है। उसका कोइ मित्र नहीं होता और जो इने गिने मित्र होते भी हैं सो उसके स्वभाव के कारण उसके शत्रु बन जाते हैं। संक्षेप में इतना ही पर्याप्त है कि इस प्रकार की रेखा अशुभ होती है।

अक्सर मस्तक रेखा जीवन रेखा के निकलने के स्थान से ही प्रारम्भ होती है और जीवन रेखा को स्पर्श करती हुई कुछ दूर तक तो चलती है मगर आगे बढ़ कर अपने गन्तव्य स्थान की ओर बढ़ जाती है। इस प्रकार की रेखा जो जीवन रेखा को स्पर्श करती हुई साथ २ चले और आगे जाकर विलग हो जाये शुभ फल देने वाली होती है। इस प्रकार के लक्षण वाली मस्तक रेखा जितनी साफ़ स्पष्ट और गहरी होगी वह उतना ही अच्छा फल देगी ऐसा ज्योतिष शास्त्रियों का मत है। [चित्र नं० २ में स्थल नं० १]

इस प्रकार की रेखा वाले प्राणी सदैव अपने हित के विषयों में सजग और सतर्क रहते हैं। जहां उनके लाभ का प्रश्न होता है वह ऐसे स्थान पर सतर्कता से काम लेते हैं और अवसर को हाथ से नहीं जाने देते। अपनी स्मरण-शक्ति और सतर्कता के कारण

वह नुकसान में कभी नहीं रहते और लाभ के अवसर को कभी हाथ से नहीं जाने देते हैं।

जिन प्राणियों के हाथ में इस प्रकार की रेखायें पायीं जाती हैं उनमें लज्जा का भाव अधिक पाया जाता है। ऐसी रेखाओं वाले युवक अथवा युवतियां लज्जाशील होते हैं। उन्हें खुल कर बोलना नहीं आता और वह अपने व्यवहारों में भी विशेष रूप से सतर्क रहते हैं और सदैव भय खाते रहते हैं कि उनके वर्ताव से उनके बड़े लोगों को उनके प्रति कोई शिकायत नहीं रहे। संकोच उनके जीवन के हर कार्य क्षेत्र पर इतना छा जाता है कि वह कोई भी कार्य दिल खोलकर न तो कर ही पाते हैं और न कुछ कह ही पाते हैं। सम्पर्क में आ जाने के बाद भी वह अपना संकोच नहीं छोड़ पाते और उनके व्यवहार को देखकर बुद्धिमान आदमी सहज ही कह सकता है कि निःसंकोच व्यवहार दिखाने के बाद भी उनके हृदय से लज्जा और संकोच का भाव क्षीण नहीं हुआ है। मैंने एक आदमी की हस्त परीक्षा करते समय मस्तक रेखा को जब इस तरह का पाया तो चौंका और तब मैंने उसे ऊपर लिखा हुआ फलादेश बताया। पहले तो वह आदमी कुछ नहीं बोला किन्तु धीरे २ जब कुछ दिनों में वह मुझसे खुलने लगा तो उसने स्पष्ट रूप से बताया कि उसका मुँह संकोच के मारे अपने इष्ट, मित्र, यहाँ तक कि अपनी विवाहिता स्त्री के सामने तक नहीं खुलता है।

पाश्चात्य-मत, के अनुसार इस प्रकार की रेखा वाले प्राणी सदा Inferiority complex महसूस करते रहते हैं। यद्यपि वह सजग होने के कारण अपने हानि लाभ को सोच सकते हैं मगर दूसरों के सन्मुख अपने को उनसे हीन समझने के कारण वह सदा ही संकोच के मारे कुछ कह सुन ही नहीं पाते हैं। उनकी

लज्जा उनके मुख पर एसा ताला लगा देती है कि वह लाख चाहने पर भी अपने भाव व्यक्त नहीं कर पाते हैं।

इस प्रकार की रेखा वाले प्राणी हर बात को शीघ्र ही समझ लेते हैं। उनकी मानसिक चेतना और शक्ति इतनी विलक्षण होती है कि वह जिस कार्य को भी देखते हैं उसे तत्क्षण समझ लेने की क्षमता रखते हैं। मगर इसके साथ ही उनका हृदय इतना दुर्बल होता है कि सब कुछ समझ लेने के बाद भी उन्हें अपनी शक्ति पर तनिक भी विश्वास नहीं होता है। जो अज्ञानी है और अपनी अज्ञानता के कारण कुछ नहीं जान सकता वह क्षम्य है मगर जो शीघ्र ग्राही है और अपनी तीक्ष्ण बुद्धि द्वारा ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी जो अपनी शक्ति पर विश्वास नहीं कर पाता उसे क्षमा नहीं किया जा सकता। स्थिर बुद्धि के अभाव के कारण वह आगे नहीं बढ़ पाते। पाश्चात्य मतानुसार एसे प्राणियों को Lack of Confidence वाली श्रेणी में आवध्य किया जाता है।

अक्सर देखा गया है कि बहुत से लोगों के हाथ में यह दोनों रेखायें—जीवन और मस्तक एक दूसरे को स्पर्श करती हुई हथेली के मध्य भाग तक जा पहुँचती हैं। इस प्रकार स्पर्श करती हुई अधिक लम्बी होने का फल होता है कि वह प्राणी भटक कर रह जाता है। बुद्धि का तीक्ष्ण होते हुए भी वह सहज ही अपना कार्य स्थिर नहीं कर पाता फलःस्वरूप वह अपने ही विचारों में भटक कर रह जाता है। कभी वह कुछ करना चाहता है मगर सहज ही अन्य बात पर दृष्टि पड़ते ही वह उसे करने की कामना करने लगता है। शीघ्रग्राही होने के कारण वह हर बात को सहज ही समझ लेता है। इसी कारण दुविधा में पड़ा रहता है और अपने जीवन में कम उन्नति कर पाता है। उसका चित्त कभी स्थिर नहीं हो पाता। अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक ने कहा भी है—"It is

always dangerous to be wise Enough" [चित्र न०२ में न० २ का'स्थल देखो]

प्रायः यह भी देखा गया है कि कुछ लोगों के हाथ में मस्तक रेखा को निकालने का स्थान जीवन रेखा से अलग होता है और वह अपने निकलने के स्थान से निकल कर ऊपर की ओर बृहस्पति के स्थान की ओर अग्रसर होती है। इस प्रकार की रेखा अपना विशेष महत्व रखती है। मगर इसके गुणों का वर्णन करने से पहले कुछ महत्वपूर्ण बातों को जान लेना आवश्यक है। कई प्रकार से मस्तक रेखा जीवन रेखा से विलग होकर बृहस्पति के स्थान की ओर जा सकती है। [चित्र न० ३ न० १ वाली रेखा]

यदि मस्तक रेखा जीवन रेखा से बिलकुल ही अलग हो तो इसका आशय यह होता है कि एसी रेखा वाला प्राणी लापरवाही बर्तने वाला होता है। एसे प्राणी को महत्वपूर्ण से भी महत्वपूर्ण काम की चिन्ता नहीं होती। उसका जीवन बेपरवाही में ही बीतता है। वह किसी भी कार्य की चिन्ता नहीं करता चाहे वह उसके लिए कितने ही महत्व का क्यों न हो। इस प्रकार की लापर-वाही उसके जीवन में एक प्रकार की शिथिलता ला देती है। उससे उस प्राणी को ही सबसे अधिक हानि होता है। [चित्र न० ३ में न० २ वाली रेखा]

यदि मस्तक रेखा स्पष्ट, स्वच्छ, गहरी हो और इसके साथ ही साथ मंगल ग्रह का स्थान भी हथेली में अन्य ग्रहों के स्थानों की अपेक्षा उभरा हुआ हो तो एसी दशा में प्राणी में असीम उत्साह होता है। वह काम में उत्साह रखता है और उसको हर कार्य करने के लिए अति उत्साह होता है। मगर इसके साथ ही साथ उसमें एक दुर्गुण और हो जाता है कि वह अपनी उत्साह-वर्द्धक आदत के कारण अर्थात उत्साह के आवेश में इतना डूब

जाता है कि उसे यही नहीं ध्यान रहता कि अमुक कार्य के करने से उसे हानि होगी अर्थात् लाभ। अक्सर देखा गया है कि इस प्रकार की रेखा वाले अति-उत्साही प्राणी अपनी शक्ति से भी कठिन कार्य में हाथ डाल देते हैं और उसका परिणाम बिना सोचे ही उसे प्रारम्भ कर देते हैं। कार्य का फल लाभदायक कम होता है और हानिकारक अधिक होता है। क्योंकि यह तो एक साधारण सी बात है कि जो भी कार्य शक्ति के परे होता है उसमें लाभ की कम और हानि की अधिक सम्भावनायें होती हैं।

इसके विपरीत यदि मस्तक रेखा जीवन रेखा से अलग हो और वह कम गहरी, धुंधली और अस्वच्छ हो तो ऐसी रेखा वाला प्राणी वैसे तो बेपरवाह होता है मगर साथ ही साथ उसके स्वभाव में क्रोध और जलन का भी समावेश रहता है। चालाकी उसके स्वभाव का अङ्ग बन जाती है इसी कारण ऐसी रेखा वाले प्राणी अक्सर इरादों के कच्चे, क्रोधी, ईर्षा, द्वेषयुक्त होते हैं। उनके स्वभाव में जल्दबाज़ी भी आ जाती है और अपने इन दुर्गुणों के कारण वह किसी भी कार्य में सहज ही सफलता प्राप्त नहीं कर पाते हैं। वह अपना काम अपने ही क्रोध और जल्दबाज़ी से बिगाड़ लेते हैं।

अक्सर यह भी देखा गया कि मस्तक रेखा और जीवन रेखा का अन्तर बहुत से हाथों में अधिक हो जाता है। यह अन्तर जितना कम होता है उतने ही कम दुर्गुण मनुष्य के जीवन पर असर डाल पाते हैं मगर जैसे २ यह अन्तर बढ़ता जाता है उतने ही अधिक यह दुर्गुण मनुष्य के जीवन पर असर डालने लगते हैं। जब यह अन्तर अधिक होता है तो उसका परिणाम होता है कि प्राणी के स्वभाव में चिड़चिड़ापन भी आ जाता है। बिना किसी बात को बिना सोचे विचारे करने में वैसे ही दुःख होता है

इसके साथ ही जब लापरवाही, जल्दबाजी, चिड़चिड़ापन भी प्राणी के स्वभाव में आ जाये तो वह अपने किसी कार्य में भी सफलता प्राप्त नहीं कर पाता और उसमें हानि उठाने के कारण मूर्ख और कहलाता है। बहुधा जब इस प्रकार की रेखा स्त्रियों के हाथ में पायी जाये तो अक्सर देखा जाता है कि इस प्रकार की रेखा वाली स्त्री विना सोचे विचारे हर काम को करने के लिए तैयार हो जाती है और इस कारण अन्त में नुकसान उठाती है। जितना २ यह अन्तर बढ़ता जाता है प्राणी उतना ही अधिक कच्चे विचारों वाला और बेपरवाह होता जाता है। वह विना सोचे, समझे, अपने उग्र स्वभाव के आवेश में आकर अपने कार्य को कर डालता है और उसे हानि लाभ की तनिक भी परवाह नहीं रहती। जल्दी में किये हुए काम का परिणाम सदा से ही हानिकारक ही रहा है।

पाश्चात्य मतवाले ऐसे प्राणी को Headless creature कहते हैं। उनके यहाँ यह भी प्रसिद्ध है—"one who plunges without caring to know the depth always sinks" अर्थात् जो विना थाह की परवाह किये डुबकी लगाता है सदा डूब जाता है। यह कहावत अक्षरशः सत्य भी है।

इसके विपरीत यदि मस्तक रेखा जीवन रेखा से दूर निकल कर बृहस्पति ग्रह के स्थान की ओर झुकाव लिये होती है और साथ ही साथ वह जीवन रेखा को स्पर्श भी कर लेती है तो ऐसी रेखा वाला प्राणी खूब समझदार होता है। वह किसी भी कार्य को हाथ में लेने से पहले उसको अच्छी तरह सोच लेता है और फिर परिणाम को विचार कर ही कार्य को प्रारम्भ करता है। वह कार्य में पूरी दिलचस्पी लेता है और पूरी चिन्ता और परवाह के साथ उसमें जुट जाता है। हो सकता है कि उसमें

बुद्धि कम हो मगर तब भी उसमें जितनी भी अधिक से अधिक बुद्धि होती है वह उसमें लगा देता है और कार्य को पूर्ण परवाह के साथ करने की चेष्टा करता है। इस प्रकार के लक्षण वाले प्राणी कार्य कुशल और अपने कार्य में बहुत दक्ष देखे गये हैं। उनमें शासन करने की योग्यता होती है और वह एक सफल अधिकारी भी होते हैं। उनमें विशेपता तो यह होती है कि वह अपने अधिकारों का दुरुपयोग नहीं कर पाते हैं। उनकी कभी इच्छा नहीं होती कि उनके कृत्यों से कभी किसी को दुःख पहुँचे और वह अपने अधिकारों के आधार पर किसी को कष्ट दें।

पाश्चात्य मतानुसार ऐसे प्राणियों को "Born Rulers in true sense" कहा जाता है। इसका अभिप्राय है कि वह जन्मजात से ही शासक पैदा होते हैं और शासक भी वह जो न्याय प्रियता को अधिक महत्व देते हैं। इस प्रकार के प्राणी अपने गुणों के कारण सर्व प्रिय और अपने क्षेत्र में विशेप मान तथा श्रद्धा के पात्र होते हैं। (चित्र न० ४ का स्थल न० १)

यदि मस्तक रेखा प्रारम्भ से ही जीवन रेखा से विलग होने के साथ ही साथ अन्त तक कुछ गोलाई जीवन रेखा के ऊपर की ओर लिये हुए हो तो ऐसी रेखा वाला प्राणी ललित कलाओं का प्रेमी होता है। इस प्रकार की झुकावदार रेखा संगीतज्ञ, साहित्य सेवियों, कवियों, लेखकों, चित्रकारों, शिल्पियों आदि कलाकारों के हाथ में पायी जाती हैं। यह ध्यान रखने योग्य बात है कि रेखा का झुकाव अधिक नहीं होता। केवल वह चन्द्राकार सी प्रतीत होती है। (चित्र न० ५ में न० १-२ वाली रेखा)

अक्सर देखा गया है कि बहुत से प्राणियों की मस्तक रेखायें जीवन रेखा से अलग होती है। वह स्पर्श भी नहीं करती। उसका फासला भी कम होता है। वह स्पष्ट, स्वच्छ और सामान्य

रूप से गहरी होती है। जहां से वह प्रारम्भ होती है और जहां जाकर समाप्त होती है सबजगह एक सी ही होती है वह गोलाकार नहीं होती वरन् प्रारम्भ से अन्त तक सीधी ही होती है। ऐसी रेखा वाला प्राणी अत्याधिक प्रकृति प्रेमी होता है। उसे शान्त वातावरण प्रिय होता है। कोलाहल उसे नहीं भाता वह हमेशा एकाग्रचित्त होकर कोलाहल से दूर प्रक्रितिक सोन्दर्य को देखने में दत्तचित्त हो जाता है। परिणाम यह होता है कि वह अपना समय उपवनों, नदी किनारे, सागर के किनारे, पर्वतों आदि स्थलों पर विताना अच्छा समझता है। (चित्र न० ५ में १-२ वाली रेखा)

मगर इसके साथ ही यदि रेखा अन्त में जाकर नीचे ओर झुक जाती है तो प्राणी के जीवन पर इसका दूसरा ही फल निकलता है। अन्त में झुकी हुयी रेखा वाला प्राणी विचार शील होता है। वह दूरदर्शी होता है। मनन करना उसका स्वभाव हो जाता है। तनिक २ सी बातों पर उसका ध्यान सोच में लग जाता है और वह उनके फल और परिणामों पर पूर्ण विचार करने लगता है। (चित्र न० ६ में १-१ वाली रेखा)

पाश्चात्य ज्योतिष शास्त्री इस प्रकार के प्राणियों को Deep thinkers कहकर पुकारते हैं। उनका मत है कि इस प्रकार की रेखायें दार्शनिकों और राजनितिज्ञों के हाथों ही में पायी जाती हैं। उनके यहाँ कहावत भी है–" One who thinks deep always mediates for the grod of others" अर्थात् जो अधिक गहरायी में बैठकर सोचता है वह प्राय: दूसरो की भलाई के लिये ही मनन करता है। यह सत्य भी है क्योंकि मानव जाति के प्रयोगों का नाम ही ज्ञान है और सोचने का सार भी ज्ञान होता है। अत्याधिक मनन करने से जो सार निकलता है वह ज्ञान की वृद्धि ही करता है।

अक्सर देखा गया है कि जीवन रेखा से दूर अलग स्थान से निकलने वाली मस्तक रेखा बिना जीवन रेखा का स्पर्श किये चन्द्र ग्रह के स्थान तक गोलाकार होती हुई चली जाती है। ऐसी रेखा रखने वाला प्राणी मन्सूबों का कच्चा होता है। वह केवल कल्पना ही किया करता है। हवाई किले बनाना उसकी आदत होती है। अपने मन्सूबों को पूर्ण करने की क्षमता उसमें नहीं होती। कल्पनाओं के महल वह बनाता रहता और उनमें ही खोया रहता है। कल्पना शक्ति निश्चय ही उसकी बढ़ जाती है मगर संसार में प्राणी को सफल उस समय तक कभी नहीं कहा जा सकता जब तक कि उसके मन्सूबे कार्य रूप में परिणित नहीं होते हैं। असल में जहां तक इस बात की खोज की गयी है तो यही देखा गया है कि ऐसी रेखा वाले प्राणी में अपने मन्सूबों को कार्य रूप में परिणित करने की क्षमता ही नहीं होती है। (चित्र न० ६ में १-२ वाली रेखा)

पाश्चात्य मतानुसार ऐसे प्राणी को "An Idle Dreamer" कहा गया है। जिसका आशय है। कि थोथे मन्सूबे बांधने वाला प्राणी केवल कल्पनाओं के सहारे जीता है। मगर कर कुछ नहीं पाता। सच तो यह है कि अगर वह अपने मन्सूबों का कार्य रूप में परिणत करने की यदि चेष्टा भी करे तो उसे उसमें सफलता प्राप्त नहीं होती है।

इसका एक कारण यह भी है कि हर प्राणी में उसके शरीर के अन्दर शक्ति की एक निश्चित मात्रा होती है। जो प्राणी अपने शरीर की निश्चित मात्रा का अधिकांश भाग कल्पनायें करने में गंवा देता है तो उसके पास कार्य को पूरा करने की शक्ति ही कहां बचती है। इसी कारण वह कार्य को पूरा नहीं कर पाता है। शक्ति की भी सीमा है और जीवन के

हर क्षेत्र में शक्ति की आवश्यकता होती है। निश्चित शक्ति को प्राणी जहाँ चाहे लगा सकता है। चाहे वह कल्पना करने में ही शक्ति को समाप्त कर डाले या चाहे तो उसको कार्य रूप में परिणित करके उसका सदुपयोग कर डाले।

पहले ही बताया जा चुका है कि हाथ छः प्रकार के होते हैं। उनमें से हर प्रकार के हाथ पर इस रेखा की इस आकृति का भिन्न प्रभाव पड़ता है। सूक्ष्म में यह है कि—

१—दार्शनिक हाथ में यदि यह रेखा पायी जाती है तो इस रेखा की आकृति का परिणाम यह होता है, कि प्राणी अपनी कल्पना करते २ एक ऐसी कल्पना पर पहुंचता है जिसकी कल्पना स्वयम् ही एक पहेली होती है। फिर उसके साथ ही वह उस कल्पना को पूर्ण करने के लिये चेष्टा करता है इसका अभिप्राय: यह होता है कि जब वह उसको पूरा नहीं कर पाता तो परेशान हो जाता है और अन्त में वह इतना निराश हो जाता है कि अपने जीवन तक का मोह त्याग देता है और निराशा के दुःख से कातर होकर आत्महत्या करके अपने प्राण तक गँवाने की सोचता है।

२—जिस प्राणी का हाथ सूच्याकार श्रेणी का हो और उसके हाथ की मस्तक रेखा झुककर चन्द्र स्थान की ओर जाने का प्रयास कर रही हो तो ऐसी दशा में वह कोरा काल्पनिक ही होता है। वह वैसे तो बहुत ऊंची उड़ानें भरता है मगर उसके किये धरे होता कुछ नहीं है। वह विचार अधिक करता है मगर उन्हें पूर्ण न तो कर ही पाता है और न उन्हें पूरा करने की सोच ही सकता है। वह अपनी समस्त शक्ति सोच विचार में गँवा देता है और यदि ऐसे प्राणी की मस्तक रेखा झुकती हुई मणि बन्ध रेखा तक पहुंच जाती है तो वह पागल हो जाता है। उसका दिमाग उसकी कल्पना-शक्ति और आत्यधिक सोचने के कारण

अपरिपक्क हो जाता है और वह जीवन से दुःखी होकर आत्म हत्या भी कर लेता है।

३—जिस प्राणी का हाथ विपम श्रेणी का हो और उसके हाथ की मस्तक रेखा भी इसी आकृति की हो तो ऐसी दशा में उस प्राणी की दशा भी उपर्युक्त ही हो जाती है। वह सोचा विचारी ही में अपना बहुत सा समय काटता है और एक दिन ऐसा आता है कि निराशा उसके जीवन का मुख्य अङ्ग बनकर रह जाती है और वह निराशा से दुःखी होकर जीवन त्याग देता है।

४—जिस प्राणी का हाथ अनुपयोगी श्रेणी का होता है उसका जीवन नैराश्यपूर्ण रहता है। निराशा उनकी सहचरी हो जाती है और नैराश्य के कारण जीवन की सर्वश्रेष्ठ निधि चातुर्य और स्फुर्ति उनके जीवन से सदा के लिये विदा हो जाती हैं। नैराश्य से आलस्य का जन्म होता है और आलस्य की देन है उदासीनता। जीवन को सार रहित समझना और सदा यही सोचते रहना कि अब क्या होगा? संसार निःसार है, जीवन में धरा ही क्या है? आदि उनकी गम्भीर समस्यायें हो जाती हैं।

५—यदि निकृष्ट प्रकार के हाथ में यह रेखा पायी जायें तो उसका स्पष्ट तात्पर्य समझना चाहिये कि ऐसे प्राणी की मृत्यु अवश्यम्भावी है। वह अपनी मृत्यु से नहीं वरन आत्म-हत्या, पागलपन, मृगी आदि द्वारा अकाल मृत्यु को अवश्य ही प्राप्त होगा।

६—यदि समकोण श्रेणी के प्राणी के हाथ में इस प्रकार की रेखा हो तो वह इतनी कष्ट दायक नही होती जितनी कि अन्य हाथों में। इसका साधारण सा उत्तर है। समकोण-दत्त प्रकृति

वाला प्राणी गम्भीर, शान्त और बुद्धिमान होता है। इस कारण वह अपने विचारों पर सन्तुलन रख लेता है और अपनी बुद्धि के सहारे अपनी विचार शक्ति को काबू में रख भी सकता है। इसी कारण वह मस्तक रेखा की इस प्रकार की आकृति के अव-गुणों से बचा रहता है। या यह कहना चाहिये कि मस्तक रेखा की इस आकृति का समकोण हस्त वाले प्राणी पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ पाता।

विद्वान ज्योतिष शास्त्री हमेशा इस बात पर जोर देते हैं कि इस प्रकार की बनावट वाली मस्तक रेखा का फल कहने से पहले हाथ की बनावट को अच्छी तरह गौर से देख लेना चाहिये और पूर्ण रूप से हाथ की श्रेणी का निश्चय हो जाने पर ही फलादेश को कहना चाहिये।

पाश्चात्य—मत वाले इस विचार से सहमत नहीं होते। उनका कथन है कि रेखा जिसका फल बुरा है और वह चाहे कैसे ही हाथ में क्यों न हो उसका फल एक सा ही होता है। मानव जीवन पर उसका समान असर होता है या कम यह बात ज्योतिषी के निर्णय करने की नहीं है। जो प्राणी हिम्मत वाले होते हैं और अपने दिल और दिमाग़ पर काबू रखते हैं उन पर असर कम होता है और हिम्मत के कमजोर होते हैं और उनका काबू उनके दिल और दिमाग़ पर नहीं होता उनके लिये उसका कुछ मतलब रखता है "Those who have greater senar∍ so f‹ r their each ‹hought c‹re much and there o‹hers wh› tak‹ thing‹ lightly saves the‹ ‹e lves from mental perturbation for this coun" अर्थात् जो हर बात पर गम्भीरता से विचार करते हैं उनके जीवन पर इसका गहरा असर होता है मगर जो अधिक ध्यान नहीं

देते वह इस प्रकार की व्याख्या सुनकर भी अधिक दुःखी नहीं होते।

यदि किसी प्राणी की मस्तक रेखा नियत स्थान से प्रारम्भ होकर जीवन रेखा को स्पर्श करती हुई चन्द्र स्थान की ओर सीधी जायें और अन्त में जाकर चन्द्रस्थान के समीप वह सर्प जिह्वाकार आकार प्राप्त कर ले तो ऐसी रेखा प्राणी के लिये लाभदायक सिद्ध होगी। विचार शक्ति ऐसे आदमी की संतुलित होगी और जो बात वह सोचेगा उसके पूर्ण करने के साधनों को भी सोचकर उन्हें शीघ्र ही पूर्ण करने की चेष्टा करेगा और यदि ऐसे प्राणी की इस रेखा पर अगर भाग्य से कोई दाग या तिल होगा तो वह प्रखर बुद्धिमान और विचारशील होगा। (चित्र न० ७ में न० १ स्थल)

ऐसा अक्सर देखा गया है कि चन्द्रग्रह के स्थान से अनेकों छोटी २ रेखायें निकल कर मस्तक रेखा को छूती हैं। यदि यह छोटी २ रेखायें स्पष्ट हैं और वह मस्तक रेखा पर अपना पूर्ण स्पर्श कर रही हैं तो ऐसे गुणों वाला प्राणी सफल कवि, चित्रकार, लेखक, साहित्यकार, विचारक, धर्माचार्य, व्याख्यानदाता आदि अवश्य होता है। प्रकृति के प्रति ऐसे प्राणी का विशेष अनुराग होता है और वह अपने शान्त स्वभाव के सहारे रूप, सुन्दरता, मोहकता, प्रकृति माधुर्य, आदि का विशेष प्रेमी होता है।

(चित्र न० ७ में २—२ वाली रेखा)

पाश्चात्य विद्वानों का इसके विषय में कहना है कि ऐसी रेखा वाला प्राणी जन्म जात ही से कलाकार होता है। सङ्गीत उसकी वाणी और सौन्दर्य उसकी आराधना होती है। "Music is his voice and Beauty remains his theme of life" मगर ऐसे भाग्यशाली विरले ही होते हैं जो

इस प्रकार की रेखायें लेकर संसार में जन्म लेते हों ? जितने भी जन्मजात कवि, संगीतज्ञ, चित्रकार, कलाकार और प्रेमी पैदा हुये हैं उनके हाथ में ऐसा योग पाया गया है ।

एक पाश्चात्य ज्योतिषी ने लिखा है—There are few who born as poets, prophets and masters, yet there are many who died as poets, prophets and kings, oaphatever they thought proper they achived after their birth, therefore there can be no hard and fast rule to determine the factor or the line of fate by seing their. past or present.

अर्थात, संसार में बहुत कम प्राणी ऐसे हैं जो कवि, अवतार या राजा पैदा हुये हैं मगर ऐसे बहुत से हैं जो कवि, अवतार और राजा होकर मरे हैं। जो कुछ भी उन्होंने ठीक समझा अपने जीवन ही में चुना इसलिये ऐसा कोई भी नियम या रेखा उपलब्ध नहीं जो पक्की तौर से उनके भूत अथा वर्तमान को बिना देखे उनके जीवन के सार को प्रगट कर सके। इस विद्वान के मत के अनुसार यह कहना पड़ेगा कि प्राणी की प्रवृति के साथ ही इस प्रकार की रेखा का निर्माण होता है यही पाश्चात्य विद्वानों का मत है। कुछ यूनानी ज्योतिष शास्त्रियों का कथन है कि सुकरात Socrates के हाथ में जन्मजात ही यह रेखा थी और प्लेटो Plato के हाथ में यह रेखा उसकी युवावस्था के बाद पड़ी। मगर इसका कोई यथार्थ प्रमाण प्राप्त नहीं है।

सर्प-जिह्वाकार मस्तक रेखा शुभ तो होती है जैसा कि ऊपर देख चुके हैं। मगर अब उन स्थितियों को भी जान लेना आवश्यक है जिनमें वह अशुभ हो जाती है—

१–जब मस्तक रेखा दो शाखों में विभक्त हो जाये और, उसकी एक शाखा बुध के ग्रह स्थान की ओर अग्रसर हो और बुध के स्थान से निकलने वाली अन्य छोटी २ रेखायें उसे काट रहीं हों। जो रेखायें बुध से निकल कर मस्तक रेखा को काटती हैं वह अपना हानिकारक प्रभाव अवश्य डालती हैं। उसका असर यह होता है कि इस प्रकार के गुण वाला प्राणी नीयत का साफ नहीं रह पाता। वह भ्रष्ट होता है। पराये धन पर उसकी हमेशा नीयत लगी रहती है और बेईमानी करने में वह नहीं चूकता। चालाकी उसके जीवन में मुख्य अङ्ग बनकर रह जाती है। धोखा, विश्वासघात्, बेईमानी आदि की प्रवृति उसमें पायी जाती है। (चित्र न० ८ में १-१ वाली रेखा)

२–यदि किसी प्राणी की मस्तक रेखा की सर्प-जिह्वाकार शाखाओं में से एक शाखा नीचे चन्द्रग्रह की ओर दूसरी ऊपर बुध ग्रह की ओर चली गयी हो तो ऐसा प्राणी विचारक होता है। उसकी विचार शक्ति प्रबल होती है। प्रखर प्रतिभा और उन्नत विचार शक्ति होने के कारण जो भी वह सोचता है वह साधारण मनुष्य की कल्पना से भी परे की बात होती है। उसके विचारों की उड़ान अपना एक प्रथक स्थान रखती हैं। राजनीतिक नेता, सफल व्यवसायी, कलाकार और चतुर कारीगर की यह परिचायक होती हैं। (चित्र न० ९)

मगर इस भाग्यशाली रेखा का सारा प्रभुत्व उस समय समाप्त हो ज ता है जब दुर्भाग्य से मस्तकरेखा के साथ कहीं हृदय रेखा का किसी स्थान पर भी मिलाप हो जाये। हृदय रेखा द्वारा कटते ही इस रेखा के समस्त गुण समाप्त हो जाते हैं और इसका प्रभाव यह होता है कि प्राणी विश्वासघाती और अभिमानी हो जाता है। लोक व्यवहार में वह आवश्यकता से अधिक चतुराई

करने लगता है और उसके साथी उसे अच्छी तरह समझ लेते हैं और उस पर विश्वास करना भी छोड़ देते हैं। (चित्र न० ६)

प्रसिद्ध पाश्चात्य ज्योतिष शास्त्री का मत है—".........such a man having such line develops himself to a mean, cruel and unreliable creature." अर्थात इस प्रकार की रेखा वाला प्राणी कमीना, क्रूर और अविश्वासी हो जाता है। इस रेखा का इतना भयङ्कर प्रभाव प्राणी पर पड़ता है।

३–अधिक झुकने पर यदि मस्तक रेखा चन्द्र स्थान पर पहुँच कर अन्य रेखाओं के साथ मिलकर यदि लहरदार स्थिति में बदल गयी हो तो उसका प्रभाव मस्तिष्क पर गहरा पड़ता है। जजीरदार मस्तक रेखा वाले प्राणी अक्सर पागल, सनकी और मृगी रोग के शिकार होते देखे गये हैं। मस्तिष्क की अवस्था विकृत हो जाने के कारण उनके शरीर पर पक्षाघात् भी देखा गया है। पक्षाघात् का प्रभाव यह होता है कि प्राणी के शरीर का कोई अङ्ग बेकार हो जाता है। शरीर का नियन्त्रण जाता रहता है। यह वैसे तो एक तरह की बीमारी होती है जो शरीर में वायु के विकारों के कारण उत्पन्न होजाती है अंग्रेजीमें इस घातक रोग को Paralysis और हिन्दी में पक्षाघात कहते हैं। (चित्र न० १० में रेखा का अन्तिम भाग)

४–जब सर्प-जिह्वाकार रेखा झुककर चन्द्र स्थान के आस-पास वाली रेखाओं के साथ मिलकर गुणक अथवा नक्षत्र का चिन्ह अङ्कित करे तो ऐसे लक्षण वाला प्राणी अधिक चिन्ता करने वाला होता है। वह चिन्ताओं से इतना परेशान हो जाता है कि उसका मस्तिष्क भी विकृत हो जाता है और वह पागल हो जाता है। (चित्र न० १० न० १-१ स्थल)

ऊपर कहे हुये इन फल, गुणों आदि को कहने में अधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आपको चाहिये कि हाथ की पूर्ण परीक्षा करलें गुण अवगुणों का पूर्ण निर्णय करलें। रेखाओं की स्थिति को अच्छी तरह समझ लें और तब खूब समझ सोच कर ही लाभ, हानि, फल, का वर्णन करें। तनिक सी भूल प्राण तक ले सकती है।

यदि किसी प्राणी के हाथ की मस्तक रेखा का झुकाव नीचे की तरफ़ न होकर ऊपर की तरफ़ हो तो उसका प्रभाव भी अलग ही होता है। मगर दोनों ओर अधिक झुकाव हमेशा दुखदायी होता है। वैसे भी मस्तक रेखा का अधिक झुकाव अच्छा नहीं। (चित्र नं० ११ रेखा १-१ तथा १-२)

जिस प्राणी की मस्तक रेखा ऊपर की ओर उठकर कनिष्ठा उंगली के नीचे वाले ग्रह बुध से स्थान पर जाती है तो ऐसा प्राणी स्वभाव का तेज होता है। उसकी मनोदशा में जिद्दीपन की छाप लगी होती है। पैसा खर्च नहीं कर पाता और हमेशा धन को संचय करता रहता है। वह जिधर भी अपनी मनोभावनाओं को पलटता है उधर ही अवगुणों को अपनाता है। गुण ग्राहकता मानो उसमें होती ही नहीं। (चित्र ११ रेखा १-१)

यदि इस प्रकार की मस्तक रेखा पर यदि किसी २ स्थान पर द्वीप आंकित हो जायें तो वह और भी अधिक हानिकारक होते हैं। ऐसे प्राणी की स्मरण-शक्ति का नाश हो जाता है। वह किसी बात को याद नहीं रख सकता है और हमेशा सिर के दर्द का शिकार रहता है। सिर का दर्द मस्तिष्क के लिये बहुत हानि-कारक होता है। (चित्र ११ स्थल ३)

पाश्चात्य विद्वानों ने शरीर वैज्ञानिकों का समर्थन करते हुये लिखा है—"Headache is the meanest disease

for a human being because it not only des r ys the physical strength of man but also produce certain obstacles in making his fut ire carjeer.

अर्थात सिर दर्द मानव के लिए केवल एक भयानक रोग ही नहीं, जो शरीर की शक्ति का ह्रास करता हो वरन् यह एक ऐसा रोड़ा है जो उसके उज्जवल भविष्य का मार्ग भी रोक लेता है।

यदि किसी प्राणी की मस्तक रेखा कनिष्ठा उंगली की ओर झुकी हो और बृहस्पति के क्षेत्र से निकल कर अन्य छोटी २ रेखायें शाखाओं के रूप में मस्तक रेखा का स्पर्श कर रही हों तो ऐसी दशा में वह प्राणी भाग्यशाली होता है। वह भोग-विलास और आनन्द तथा हर्ष से परिपूर्ण जीवन की कामना करता है और उनकी प्राप्ति करने के बाद जीवन को चैन से यापन करता है। (चित्र न० ११ रेखा १-१ तथा स्थल ४)

प्रसिद्ध पाश्चात्य ज्योतिषी ने लिखा है—"Jupitor is the best planuet so far the good effects of life are concerned and as it touches through its off-shoors this particular line, the effect is always the best. Such type of persons always enjoy the best of their life and they get all whatever they aspire. It is a clear indication of healthy and prosqe-ous life".

अर्थात् जहाँ तक जीवन पर प्रभाव का प्रश्न है गुरू समस्त नक्षत्रों में श्रेष्ठ है और यदि इसके क्षेत्र से निकलने वाली छोटी२ रेखायें इस रेखा अर्थात् मस्तक रेखा को छूती हैं तो इसका प्रभाव सदा अति उत्तम होता है। इस प्रकार के प्राणी हमेशा अपने

जीवन में सर्वोत्तम आनन्दों का उपभोग करते हैं और अपनी समस्त कामनाओं को पूर्ण कर सकने की क्षमता भी रखते हैं। इस प्रकार की रेखा स्वस्थ और वैभव पूर्ण जीवन का प्रतीक होती है।

इसके साथ यह भी याद रखना चाहिये कि रेखा स्पष्ट स्वच्छ और गहरी हो। जिन प्राणियों की मस्तक रेखा स्थान २ पर कटी हुई होती है उनके विचारों की श्रङ्खला कायम नहीं रहती वह अपने निश्चय पर अटल नहीं रह पाते हैं और दूसरे लोगों के बहकावों में आकर कोई न कोई काम ऐसा कर बैठते हैं जिनके कारण उन्हें सदा कष्ट उठाने पड़ते हैं।

कुछ प्राणी ऐसे भी देखे गये हैं जिनके हाथ की मस्तक रेखा कई स्थान पर कटी होती हैं। उनके विषय में फल कहते समय विशेष ध्यान रखना चाहिये कि वह रेखा किस २ नक्षत्र के क्षेत्र में कटी हैं। क्योंकि जिस ग्रह के क्षेत्र में रेखा कटती है वह उस रेखा पर अपना असर डालता है।

यदि रेखा शनि ग्रह के क्षेत्र में कटती है और रेखा का झुकाव भी कटने से पहले शनि ग्रह के क्षेत्र की ओर ही हो तो ऐसी रेखा वाला प्राणी धन प्राप्त करता है। उसे अनायास ही कहीं से धन प्राप्त हो जाता है। उसका निकट सम्बन्धी धन उसे दे दे, उसे दान में धन प्राप्त हो जाये।' गरज यह है कि चाहे किसी भी अवस्था में उसे धन अवश्य ही प्राप्त होता है।
(चित्र १२ स्थल २)

जिस प्राणी की मस्तक रेखा बुध ग्रह के क्षेत्र की ओर झुकी हो और तब टूटती हो तो उसका फल होता है कि ऐसा प्राणी कुशल व्यवसायी होगा। उसका मस्तिष्क व्यापारिक कार्यों में पूर्ण कार्य करेगा और उसका दृष्टि कोण इस क्षेत्र में दृढ़,

विस्तृत होगा। प्राणी अपने व्यापार में दिनों दिन उन्नति करेगा। (चित्र १२ स्थल ४)

जो प्राणी कलाकार होता है अर्थात् उसकी जीविका ही केवल कला कौशल के उद्योगों द्वारा चलती है उसके हाथ की मस्तक रेखा सूर्य के ग्रह की ओर झुकी होती है। सूर्य उन्नति चाहता है और कलाकार ही उन्नति के क्षेत्र का सफल नायक होता है। ऐसे प्राणी विशेषतः शिल्पी, चित्रकार, चतुर कारीगर आदि देखे गये हैं। (चित्र १२ स्थल ३)

इन तमाम विवरणों को जान कर हमें पाश्चात्य ज्योतिष शास्त्री के कथन की पुष्टि करनी ही पड़ती है। वह लिखता है— "A healthy soul remains in a healthy body. Health is wealth therefore where is health a souhd mind must remain in that body, when a sound mind and healthy constitution are put to-gether to work, wealth must rain in eats & does and also the man possessiug im mense we lth must enjoy higher status in the oriety where he lives"

अर्थात्—स्वस्थ शरीर ही में स्वस्थ आत्मा निवास करती है। स्वास्थ्य ही धन है अतः जहाँ स्वास्थ्य है वह स्वस्थ मस्तिष्क भी अवश्य रहता है। जब स्वस्थ मस्तिष्क और सुगठित शरीर का साथ हो जाये और वह दोनों उन्नति के पथ की ओर कदम बढ़ायें तो लक्ष्मी उनके चरण चूमती है। लक्ष्मीवान् मनुष्य संसार में तथा उस समाज में जहाँ वह रहता है विशेष सम्मान पाता है।

अक्सर दो मस्तक रेखाएं एक ही हाथ में बहुत कम देखीं

गयी हैं। मगर दो मस्तक रेखाओं का होना लाभदायक ही होता है। जिस प्राणी के हाथ में दो मस्तक रेखा होती हैं वह विलक्षण शक्ति वाला होता है। वह अपने मस्तिष्क से उत्तम खोज करेगा और जब भी उन योजनाओं को कार्यान्वित करेगा तो उसका ढंग बहुत विकसित और सन्तुलित होगा। सफलता उसको अवश्य प्राप्त होगी। मगर यह रेखा इस रूप में बहुत कम देखी गयी है। [चित्र न० १२]

मस्तक रेखा का लाभ और दोप कहते समय यह बहुत ही आवश्यक है कि उसके प्रत्येक कार्य पर पूर्ण दृष्टि रखी जाये और सूक्ष्म से सूक्ष्म उलट-पलट को भी ध्यान में रखा जाये।

छठा अध्याय

भाग्य रेखा

भाग्य रेखा हाथ की महत्व पूर्ण रेखा है जिसके द्वारा हम अपने जीवन की महत्व पूर्ण स्थिति को समझ सकते हैं। हर प्राणी अपने भाग्य की बातों को जानने के लिए उत्सुक होता है। भूत हर प्राणी जानता है, वर्तमान उसके सम्मुख प्रस्तुत होता है अतः भविष्य ही वह जानने की कामना करता है। भाग्य रेखा प्राणी के प्रारब्ध अर्थात् भविष्य की बातें बताने की पूर्ण क्षमता रखती है। वैसे भी हर प्राणी को पहली जिज्ञासा जीवन की अर्थात् यह बात जानने की आयु कितनी है? और दूसरी जिज्ञासा होती है में सुख और शान्ति तथा वैभव पूर्ण जीवन की। अतः दूसरी जिज्ञासा इसी रेखा को देख कर इस ही फल को बताकर शान्त की जा सकती है।

भाग्य रेखा को विविध नामों से पुकारा जाता है। धन रेखा, प्रारब्ध रेखा, शनि रेखा, उर्ध्व रेखा आदि। इस रेखा के द्वारा भविष्य की उन तमाम उथल, पुथल, उन्नति, पतन, बाधायें, सुविधायें, हानि, लाभ आदि की सूचना मिलती हैं जो प्राणी के जीवन में उपस्थित होकर उसे उन्नति अथवा अवनति के मार्ग पर ले जाती हैं।

यह देखा गया है कि भाग्य रेखा सदा अपनी एकसी दशा में नहीं रहती। वह भविष्य की ओर संकेत करती रहती है और जैसे २ प्राणी जीवन पर अग्रसर होता है उसके हाथ की भाग्य रेखा उसी प्रकार घटती, बढ़ती सी रहती है। वैसे तो प्राणी का कर्त्तव्य है कि वह भाग्य रेखा पर निगाह रखे, जैसा संकेत हो वैसा ही आचरण करे। अर्थात् जब भाग्य रेखा सुख और समृद्धि की दशा की ओर सङ्केत करती हो तो प्राणी को उचित है कि वह उत्साहित होकर पुरुषार्थ करता रहे और जब इस रेखा का संकेत अवनति की ओर हो तो प्राणी को उचित है कि वह सजग रहे और अपने हर कार्य में पूर्ण दिलचस्पी ले ताकि उससे कोई भी कार्य ऐसा न हो जाये जो उसकी अवनति का कारण बने।

ज्योतिष शास्त्रियों के दूसरे दल का कहना है कि यह रेखा मनुष्य के कर्म से ही बनती है। जो प्राणी अपने उत्थान के लिए पुरुषार्थ करता है उसकी भाग्य रेखा प्रखर होती जाती है, जो प्राणी अवनति की ओर गिरने लगता है उसकी भाग्य मन्द होने लगती है और उसमें अनेकों दोष आने लगते हैं।

तर्क के हिसाब से दूसरा मत उत्तम समझ में आता है। क्योंकि यह तो हर प्राणी जानता है कि मनुष्य के कर्म ही उसके जीवन की सफलता और अवनति को प्रत्यक्ष करते हैं। मगर पहला मत उन लोगों के हिसाब से अधिक प्रभावशाली है जो

प्रारब्ध को दैवी शक्ति अर्थात् भगवान् की महिमा समझते हैं। भारत में दैव को हर कार्य में सम्मलित करने की पुरानी प्रथा है अतः सनातन दैवगति के विचारों के मानने वाले पहले मत से अधिक प्रभावित होते हैं।

हमारे हिसाब में कोई फर्क नहीं पड़ता। प्राणी चाहे जिस मत को अपनावे। ज्योतिष, रेखाओं की भाषा को पढ़कर प्राणी के जीवन के सत्य तत्व को प्रगट करती है। ज्योतिषी का कार्य यह जानने का नहीं कि रेखायें प्राणी के हाथ में कैसे बनी और बनती हैं। जो कुछ रेखा हाथ देखते समय स्पष्ट करे, उसी के अनुसार फल बताना चाहिए। यही ज्योतिषी का कर्तव्य है। क्योंकि यदि प्राणी को यह ज्ञात हो जाये कि उसके ऊपर आपदायें आने वाली हैं तो वह सजग होजाता है और अपनी समस्त शक्ति लगाकर अपनी अवनति को रोक सकता है। किसी भी आपदा का मुकाबला करने के लिए यह आवश्यक होता है कि प्राणी की इच्छा शक्ति प्रबल हो और वह अपनी पूरी शक्ति से आपदा को रुकने की क्षमता रखता है।

मुझे एक व्यापारी का हाल ज्ञात है कि सन् १६४२ में लड़ाई के दिनों ही में उन्हें चान्दी के सट्टे खेलने का शौक हो गया। उन्होंने मुझसे अपनी व्यापारी स्थिति स्पष्ट करते हुये इस विषय में मेरी राय जाननी चाही। उस समय उनकी भाग्य रेखा प्रखरता पर थी अतः मैंने उन्हें केवल इतना ही कहा कि "आपके दिन इस समय तो ऐसे चल रहे हैं कि आप जिस कार्य में भी हाथ डालोगे वहां सफलता प्राप्त होगी।" निदान वह सट्टा खेलने लगे। थोड़े ही दिनों में उन्होंने चार पांच लाख रुपया पैदा कर लिया। इसी बीच एक दिन मेरा और उनका फिर साक्षात्कार हो गया तो मैंने देखा कि उनकी भाग्य रेखा मन्द पड़ गयी है और

उसमें विभिन्न प्रकार के दोष आगये हैं। उनकी भाग्य रेखा लुब्द सी होने लगी थी। अतः मैंने उनसे कहा—"आपको हानि होने की सम्भावना है अतः अब तो यही उचित है कि आप जो कार्य भी करें बहुत सावधानी के साथ ही करें।" मगर उन्होंने शायद मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया और शायद ध्यान भी दिया हो तो वह परिस्थतियों के कारण कुछ कर न सके। लगभग छः महीनों ही में मैंने देखा कि वह दिवालिया हो चुके थे। दुर्दैव की दशा से दुखी होकर एक दिन वह फिर मेरे पास आये तो उनके हाथ को देखने पर ज्ञात हुआ कि भाग्य रेखा उनके हाथ से बिलकुल ही लुप्त हो चुकी थी। कुछ दिनों बाद मालुम हुआ कि वह नशा करने लगे, स्त्री को जब भोजन वस्त्र न मिल सका तो वह दुःखी होकर मायके चली गयी। सारा व्यापार नष्ट होगया भोजन की जब कोइ समस्या नहीं हल हो सकी तो वह अपने द्वारा ही बनवाये हुये मन्दिर में जा पड़े और देव पूजा में आया हुआ भोग प्रसाद और चन्द पैसों पर जीवन यापन करने लगे।

भाग्य रेखा के फल को स्पष्ट रूप से कहना और उसकी सही व्याख्या करना ज़रा टेढ़ी खीर है क्योंकि संसार के जितने भी प्राणी होते हैं उनके मस्तिष्क में एक विभिन्न प्रकार की सी सनक अवश्य रहती है कहने का तात्पर्य यह है कि कुछ विचारशील मर्म की बात को सुनकर उस पर सोचा विचारी करते हैं, कुछ हर बात में यह कह देते है कि "जो कुछ भाग्य में है। वह अवश्य होगा। उसे विधाता भी नहीं रोक सकता" और इस विचार के आधार पर वह अपनी चेष्टाओं को सुधारने के बदले अवनति की ओर अग्रसर होने लगते हैं। कुछ प्राणी ऐसे होते हैं जो जरा सी भी आपत्ति को देखकर घबरा जाते हैं, यदि उन्हें ज्ञात हो जाये कि उनकी अवनति निकट है. तो वह जीवन से

उकता जाते हैं और अपने हृदय की शक्ति को बिलकुल गंवा देते हैं। वह आत्म हत्या तक के लिये तैयार हो जाते हैं।

अतः ज्योतिषी को यह आवश्यक है कि प्राणी की मनोदशा को अच्छी तरह समझकर ही फल कहे। ताकि प्राणी उससे लाभ उठा सके। हर प्राणी को यह बात अच्छी तरह समझा देनी चाहिये कि मनुष्य के कर्म और पुरूषार्थ उसके भाग्य को बदल सकते हैं। गीता में स्वयम् भगवान ने भी कहा है—

"कर्म प्रधान विश्व कर राखा।
जो जस कीन्ह सो तस फल चाखा॥"

इसके अर्थ पर विद्वानों का मत भेद हो सकता है मगर मानव जाति का इतिहास यह पूर्ण रूपेण स्पष्ट करता है कि मनुष्य का पुरुषार्थ चलती हुयी हवा के रूख को भी बदलने में सफल सिद्ध हो चुका है। जो पुरुष समय की चिन्ता करता है। वह अपने भाग्य को उन्नत करता है और जो दुराग्रह करके समय की चिन्ता नहीं करता और उचित कर्मों की उपेक्षा करता है कष्ट भोगता है।

मनुष्य के हाथ में भाग्य रेखा कई स्थानों से प्रारम्भ होती इसका ध्यान अवश्य रखना चाहिए। कुछ प्राणी जो हाथों द्वारा कठिन महनत करते हैं उनके हाथ का चमड़ा काम करने के कारण काला और भद्दा तथा कटा-फिटा हो जाता है अतः उनकी भाग्य रेखा स्पष्ट दिखाई नहीं पड़ती है तो ऐसी अवस्थामें उनकी आर्थिक दशा का ध्यान रखना चाहिए। यदि वह धनी हैं तो उनके हाथ में भाग्य रेखा है और यह जानकर पता लगाना चाहिए। यदि वह गरीब हैं तो उनके हाथ में भाग्य रेखा का अभाव भी हो सकता है। ऐसी दशा में भाग्य रेखा को ज्ञात करने का एक ही साधन है कि ऐसे प्राणियों का बायां हाथ देख कर भाग्य रेखा के

विषय में निश्चय किया जाय। उनके बांये हाथ की भाग्य रेखा को देखकर फल को कहने की सम्मति ज्योतिष शास्त्र देता है।

१--प्रायः भाग्य रेखा प्राणी की मणिबन्ध रेखा के मध्य भाग से प्रारम्भ होती है और आगे बढ़कर शनि के पर्वत तक अर्थात् मध्यमा उँगली के मूल भाग तक जाती है। जिस प्राणी की भाग्य रेखा मणिबन्ध रेखा या उसके समीप से प्रारम्भ होकर स्वच्छ और गहरी स्थिति में पूर्ण स्पष्टता के साथ शनि ग्रह के क्षेत्र की ओर अग्रसर होती है तो वह प्राणी भाग्यशाली होता है। वैसे तो हर प्राणी के जीवन में उथल पुथल आती हैं मगर ऐसी रेखा युक्त प्राणी उन तमाम मार्ग में आने वाली बाधाओं का विनाश करता हुआ अपने जीवन की सफलता तक अवश्य पहुँ-चता है। स्वच्छ और स्पष्ट रेखा मान प्रतिष्ठा और सौभाग्य को बढ़ाने वाली होती है। ऐसे प्राणी यशस्वी, विद्वान्, धनाढ्य, धार्मिक, वीर, कर्मठ आदि देखे गए हैं। (चित्र न० १ रेखा १)

भाग्य रेखा अधिक लम्बी नहीं होनी चाहिए। जब तक वह केवल शनि ग्रह के क्षेत्र को ही स्पर्श करती है तब तक ही वह भाग्यवान होती है और अच्छा फल देने वाली समझी जाती है। मगर जब वह अधिक लम्बी होकर उँगली को स्पर्श करने लगे तो वह अशुभ हो जाती है।

सर्प-जिह्वाकार भाग्य रेखा भी अशुभ मानी जाती है। शनि का प्रभाव है कि जो भी उसके नियन्त्रण को मानता है वह उसे सफल फल देता है और जहाँ उसके निय-न्त्रण से किसी ने आगे बढ़ने की चेष्टा की तो वह उसको विनाश की ओर ले जाता है। अतः लम्बी भाग्य रेखा अच्छी नहीं होती है।

जिस प्राणी की हृदय रेखा मध्यमा उङ्गली के पास हो

उकता जाते हैं और अपने हृदय की शक्ति को बिलकुल गंवा देते हैं। वह आत्म हत्या तक के लिये तैयार हो जाते हैं।

अतः ज्योतिषी को यह आवश्यक है कि प्राणी की मनोदशा को अच्छी तरह समझकर ही फल कहे। ताकि प्राणी उससे लाभ उठा सके। हर प्राणी को यह बात अच्छी तरह समझा देनी चाहिये कि मनुष्य के कर्म और पुरूषार्थ उसके भाग्य को बदल सकते हैं। गीता में स्वयम् भगवान ने भी कहा है—

"कर्म प्रधान विश्व कर राखा।
जो जस कीन्ह सो तस फल चाखा॥"

इसके अर्थ पर विद्वानों का मत भेद हो सकता है मगर मानव जाति का इतिहास यह पूर्ण रूपेण स्पष्ट करता है कि मनुष्य का पुरुषार्थ चलती हुयी हवा के रूख को भी बदलने में सफल सिद्ध हो चुका है। जो पुरुष समय की चिन्ता करता है। वह अपने भाग्य को उन्नत करता है और जो दुराग्रह करके समय की चिन्ता नहीं करता और उचित कर्मों की उपेक्षा करता है कष्ट भोगता है।

मनुष्य के हाथ में भाग्य रेखा कई स्थानों से प्रारम्भ होती इसका ध्यान अवश्य रखना चाहिए। कुछ प्राणी जो हाथों द्वारा कठिन महनत करते हैं उनके हाथ का चमड़ा काम करने के कारण काला और भद्दा तथा कटा-फिटा हो जाता है अतः उनकी भाग्य रेखा स्पष्ट दिखाई नहीं पड़ती है तो ऐसी अवस्थामें उनकी आर्थिक दशा का ध्यान रखना चाहिए। यदि वह धनी हैं तो उनके हाथ में भाग्य रेखा है और यह जानकर पता लगाना चाहिए। यदि वह गरीब हैं तो उनके हाथ में भाग्य रेखा का अभाव भी हो सकता है। ऐसी दशा में भाग्य रेखा को ज्ञात करने का एक ही साधन है कि ऐसे प्राणियों का बायां हाथ देख कर भाग्य रेखा के

विषय में निश्चय किया जाय। उनके बांये हाथ की भाग्य रेखा को देखकर फल को कहने की सम्मति ज्योतिष शास्त्र देता है।

१—प्रायः भाग्य रेखा प्राणी की मणिबन्ध रेखा के मध्य भाग से प्रारम्भ होती है और आगे बढ़कर शनि के पर्वत तक अर्थात् मध्यमा उँगली के मूल भाग तक जाती है। जिस प्राणी की भाग्य रेखा मणिबन्ध रेखा या उसके समीप से प्रारम्भ होकर स्वच्छ और गहरी स्थिति में पूर्ण स्पष्टता के साथ शनि ग्रह के क्षेत्र की ओर अग्रसर होती है तो वह प्राणी भाग्यशाली होता है। वैसे तो हर प्राणी के जीवन में उथल पुथल आती हैं मगर ऐसी रेखा युक्त प्राणी उन तमाम मार्ग में आने वाली बाधाओं का विनाश करता हुआ अपने जीवन की सफलता तक अवश्य पहुँ-चता है। स्वच्छ और स्पष्ट रेखा मान प्रतिष्ठा और सौभाग्य को बढ़ाने वाली होती है। एसे प्राणी यशस्वी, विद्वान्, धनाढ्य, धार्मिक, वीर, कर्मठ आदि देखे गए हैं। (चित्र न० १ रेखा १)

भाग्य रेखा अधिक लम्बी नहीं होनी चाहिए। जब तक वह केवल शनि ग्रह के क्षेत्र को ही स्पर्श करती है तब तक ही वह भाग्यवान होती है और अच्छा फल देने वाली समझी जाती है। मगर जब वह अधिक लम्बी होकर उँगली को स्पर्श करने लगे तो वह अशुभ हो जाती है।

सर्प-जिह्वाकार भाग्य रेखा भी अशुभ मानी जाती है। शनि का प्रभाव है कि जो भी उसके नियन्त्रण को मानता है वह उसे सफल फल देता है और जहाँ उसके निय-न्त्रण से किसी ने आगे बढ़ने की चेष्टा की तो वह उसको विनाश की ओर ले जाता है। अतः लम्बी भाग्य रेखा अच्छी नहीं होती है।

जिस प्राणी की हृदय रेखा मध्यमा उङ्गली के पास हो

हृदय रेखा

और साथ ही शुक्र ग्रह का स्थान अधिक ऊँचा हो और ऐसी दशा में भाग्यरेखा भी बढ़ती हुयी मध्यमा के मूल से भी आगे बढ़ने की चेष्टा करे तो ऐसा प्राणी अवश्य जेल जाता है। वह व्यभिचारी होगा और व्यभिचार के अभियोग में उसे जेल जाना पड़ेगा। उसके पाप कर्मों की अन्य व्याख्या मस्तक रेखा, हृदयरेखा, और भाग्यरेखा के गुणों और अवगुणों को देख कर करनी चाहिये। (चित्र २ स्थल ३)

इसी प्रकार यदि भाग्यरेखा नीचे की ओर अधिक लम्बी होकर मणिबन्ध रेखा को काटकर आगे बढ़ती है तो वह भी अशुभ होती है। जिस प्रकार गहरी, स्वच्छ और स्पष्ट दिखाई देने वाली भाग्यरेखा अच्छे भाग्य का प्रतीक होती है उसी प्रकार अस्वच्छ, मलीन और अस्पष्ट भाग्यरेखा यह व्यक्त करती है कि इस प्रकार की रेखा वाला प्राणी बल, वीर्य, शक्तिहीन होता है। दुर्दिनों ही में उसका जीवन-यापन होता है। (चित्र २ स्थल २)

२—यदि भाग्यरेखा, जीवन रेखा के मणि-बन्ध रेखा के पास वाले भाग से प्रारम्भ हो और वह जीवन रेखा को स्पर्श हुयी सीधी, गहरी और स्पष्ट दशा में आगे की ओर बढ़ती है तो उसका स्पष्ट अभिप्राय है कि ऐसा प्राणी अपने परिश्रम और अपनी बुद्धि के समावेश ही से अपने भाग्य की उन्नति करता है। उसके जीवन और भाग्य का समावेश होता है। उसकी सकल चेष्टायें उसकी उन्नति करती हैं। वैसे हर प्राणी के जीवन में कुछ न कुछ नई आपदायें आती हैं मगर इस रेखा वाला प्राणी अपनी इस रेखा के बल पर उन समस्त आपदाओं पर विजय प्राप्त कर लेता है। उसकी निरन्तर उन्नति होती है। (चित्र नं० ३)

यदि भाग्यरेखा प्रारम्भ से अन्त तक कटी हुयी न हो और अन्य कोई चुटपुट रेखा उसको न काटती हो तो ऐसी रेखा वाले

प्राणी का उन्नति-मार्ग निष्कंटक रहता है। वह निर्विरोध उन्नति के पथ पर आगे बढ़ता ही चला जाता है।

अक्सर ऐसा भी देखा गया है कि भाग्यरेखा मणिबन्ध रेखा या उसके पास वाले स्थान से प्रारम्भ होकर आगे चलती है और थोड़ी ही दूर चलकर जीवन-रेखा में विलीन हो जाती है। ऐसी दशा में ऐसी रेखायुक्त प्राणी के विषय में यह निश्चय रूप से कहा जा सकता है कि उसके जीवन का आरम्भ ही गृह-सम्बन्धी उलझनों से प्रारम्भ हुआ और वह बन्धु-बाधवों द्वारा प्रस्तुत किये उपद्रवों में ऐसा फँस गया कि अपनी उन्नति करने का अवसर ही प्राप्त नहीं कर सका। उसकी उन्नति रुक जाती है। (चित्र३स्थल३)

साथ ही यदि उसकी भाग्यरेखा पुनः जीवन-रेखा से विलग होकर यदि शनिग्रह के क्षेत्र की ओर अग्रसर होने लगी हो तो यह निश्चय ही है कि वह आगे निकट भविष्य ही में अपने ही पुरुषार्थ द्वारा अपने जीवन को उन्नति के पथ पर ले जाने में सफलता प्राप्त कर सकेगा। सफलता के विषय में शनि के गुणों को भी ध्यान में रख लेना आवश्यक है।

३—जब भाग्यरेखा हथेली के मध्य भाग से जो मंगलग्रह का क्षेत्र माना जाता है प्रारम्भ होकर आगे बढ़ती है तो उससे स्पष्ट होता है कि प्राणी का पिछला जीवन आपत्तियों से पूर्ण क्लेशयुक्त रहा है। उस प्राणी ने कभी अपनी उन्नति की चिन्ता भी नहीं की है और अगर की भी है तो भी कर नहीं सका है। यदि यह रेखा आगे बढ़ती हुयी स्पष्ट और स्वच्छ-दशा में शनि के क्षेत्र की ओर जाती है तो प्राणी को समझना चाहिये कि उस के जीवन के उत्तरार्द्ध-काल में उसका भाग्य अवश्य चमकेगा। वह अपने जीवन के मध्य भाग में उन्नति के पथ पर अग्रसर हो

१
२
३
४
५
६
७
८
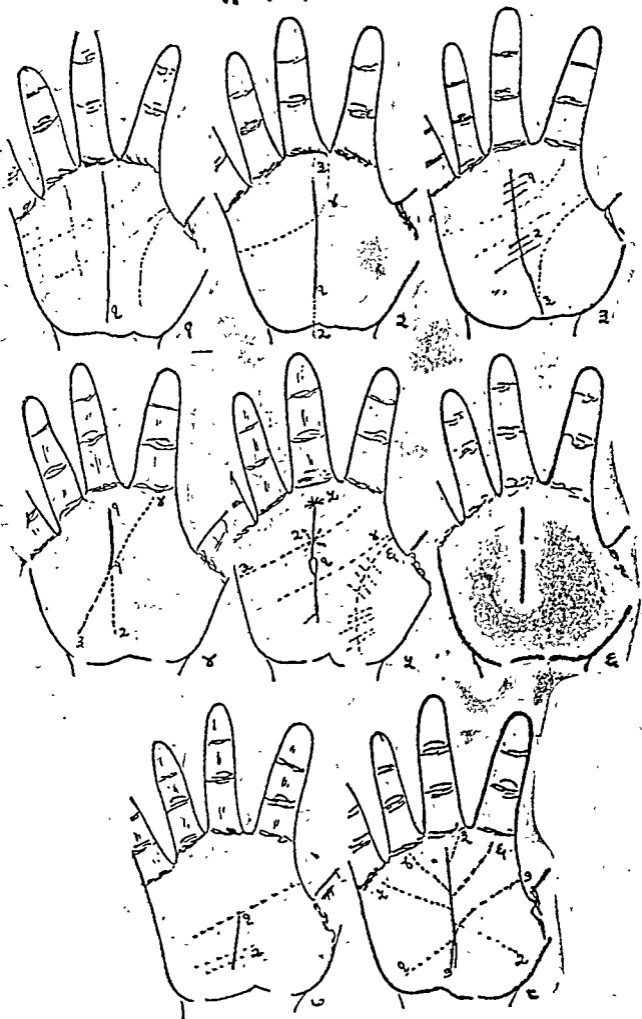
सकेगा। [चित्र न० ४ रेखा १–१]

४—यदि भाग्य रेखा उच्च दशा अर्थात् स्वच्छ, गहरी और स्पष्ट दशा में चन्द्रस्थान से प्रारम्भ होकर शनि के स्थान की ओर बढ़ती है तो ऐसे प्राणी उन्नति की ओर बढ़ने का प्रयास तो करते हैं मगर उनके विचारों में स्थिरता नहीं होती। जिस प्रकार चंद्रमा की कलायें घटती-चढ़ती रहती हैं उसी प्रकार ऐसे प्राणियों की मनोदशा भी घटती बढ़ती रहती है। वह कभी चञ्चल हो जाते हैं और कभी स्थायत्व धारण करने की चेष्टा करते हैं मगर कुछ भी हो उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हो पाती। इसका एकमात्र कारण है उनकी चंचल प्रकृति। (चित्र न० ४ रेखा १–३)

उनके जीवन पर स्त्रियों का प्रभाव विशेष रूप से पड़ता है। वह कामुक होते हैं और स्त्रियों के ऊपर मर मिटने वाले होते हैं। इसी कारण उनकी उन्नति और अवनति में स्त्रियों के सहयोग का निर्देशन पाया जाता है। यदि यह रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर जाकर समाप्त होती है तो उसका अभिप्राय है कि प्राणी का विवाहित जीवन सुखद होता है। उसे स्त्री से प्रेरणा मिलती है और विवाहिता स्त्री के सहयोग ही से वह उन्नति कर पाता है।

अक्सर देखा गया है कि अन्य रेखा ऐसी रेखा से चन्द्र स्थान पर आकर मिल जाती है। ऐसी सम्मलित रेखा का प्रभाव यह होता है कि उस प्राणी के जीवन में यदि इसी प्रकार की रेखा वाले प्राणी का समागम हो जाये तो उसके जीवन में एक तरह उथल-पुथल मच जाती है। जब दो चन्द्र प्रकृति वाले जीव एक ही स्थान पर मिल जायें तो उनकी चंचल प्रकृति जो असर दिखा सकती है उसको हर प्राणी समझ सकता है।

इस प्रकार की भाग्य रेखा जो चन्द्र के पर्वत से निकलती है पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों के हाथ में विशेषतया पायी जाती है।

भाग्य रेखा के विभिन्न रूप ऊपर बताये जा चुके हैं। मगर अब हम उनके विषय में पूर्ण जानकारी देंगे कि उनका विभिन्न रेखाओं से मिल कर क्या असर होता है। पहले ही कहा जा चुका है कि हाथ की हर रेखा अपना असर डाले बिना नहीं छोड़ती है। इसलिये रेखा के निकलने के साथ ही यह भी जान लेना आवश्यक है कि रेखा पर अन्य रेखाओं के संसर्ग का क्या असर पड़ता है। यह पहले ही बताया जा चुका है कि एक रेखा का दूसरी रेखा पर कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य पड़ता है।

भाग्य रेखा का प्रभाव प्राणी के सामाजिक, व्यवहारिक और धनोपार्जन की दिशाओं पर अवश्य पड़ता है। यह रेखा मणिबन्ध रेखा, जीवन रेखा के निकट, मङ्गल क्षेत्र तथा चन्द्र क्षेत्र से प्रारम्भ होकर हथेली के मध्य से प्रारम्भ होकर मध्यमा उँगली के नीचे स्थित, शनि ग्रह के क्षेत्र तक जाती है। भाग्य रेखा का सीधा, स्वच्छ और गहरा होना सौभाग्य सूचक है, फीकी अस्पष्ट और कान्तिहीन भाग्य रेखा दुखमय जीवन की द्योतक है।

कुछ पूर्वी ज्योतिष शास्त्रियों का मत है कि भाग्य रेखा पर द्वीप अथवा क्रूश अर्थात् नक्षत्र का चिन्ह होना अच्छा नहीं। परन्तु कुछ का कहना है कि यह दोनों चिन्ह उतने अशुभ नहीं होते जितना कि रेखा का टूट जाना अशुभ होता है। हम इस बात से तो अवश्य सहमत हैं कि यह दोनों चिन्ह मनुष्यकी उन्नति में बाधक तो अवश्य होते हैं मगर उतने घातक नहीं होते जितने रेखा का टूट जाना होता है।

जिस प्राणी की भाग्य रेखा टूट जाती है उसकी उन्नति में सन्देह होता है क्योंकि उन्नति एकदम तो होती नहीं। वह निम्न-स्तर से ही प्रारम्भ होती है और जब उन्नति का बिन्दु अथवा समय आता है तो उसमें विराम हो जाता है एसी दशा में उन्नति

जहाँ की तहाँ रह जाती है। इस कारण भाग्य रेखा का टूटना अच्छा नहीं होता। (चित्र ४ रेखा २-१ पर बीच वाला १)

यदि किसी प्राणी की भाग्य रेखा पर द्वीप का चिन्ह है और हृदय रेखा मस्तक रेखा से अधिक बलवान् है तो एसा प्राणी प्रेम में इस तरह बन्ध जाता है कि उसको अपने इस प्रेम के कारण कलंकित होना पड़ता है। अपमान सहना पड़ता है और हो सकता है कि इस प्रेम बन्धन के कारण उसे दुःखी होकर आत्म-हत्या का प्रयत्न भी करना पड़े। (चित्र ५ स्थल १)

यदि द्वीप का चिन्ह भाग्य रेखा पर उस प्राणी के हाथ पर पड़ता है जिसका हाथ उपयोगी श्रेणी का है तो ऐसी दशा में इस द्वीप का महत्व बिलकुल बेकार हो जाता है। उपयोगी हाथ ही स्वयम् इतना उच्च लक्षणयुक्त माना जाता है कि भाग्य रेखा पर स्थित द्वीप का अवगुण एसे हाथ में बिलकुल ही बेकार समझा जाता है। उपयोगी हाथ वाले प्राणी सिद्धांत के प्राणी होते हैं। उनके निश्चय दृढ होते हैं और उनकी रुचियाँ सदैव उत्कृष्ट होती हैं। एसे प्राणी जो अपने भाग्य के स्वयं निर्माता होते हैं उनकी भाग्य रेखा पर द्वीप का चिन्ह या तो मिलता ही नहीं या अगर स्थिर पाया भी जाता है तो उसका महत्व नष्ट हो जाता है।

जिन विवाहित प्राणियों के हाथ में द्वीप का चिन्ह उनके विवाह सम्बन्ध हो जाने के बाद पड़ता है वह इस बात को स्पष्ट करता है कि उस प्राणी का प्रेम स्थायी होगा। यदि एसे प्राणी की हृदय रेखा अधिक स्वच्छ और स्पष्ट है तो निश्चय कर लेना चाहिए कि उस प्राणी का दम्पति-प्रेम उत्कृष्ट है। मगर यदि कहीं दुर्भाग्य से नक्षत्र या गुणक का निशान हाथ में आगया हो तो उसे नेष्ट फल देने वाला समझना चाहिए। (चित्र ५ स्थल २ और स्थल ५)

१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
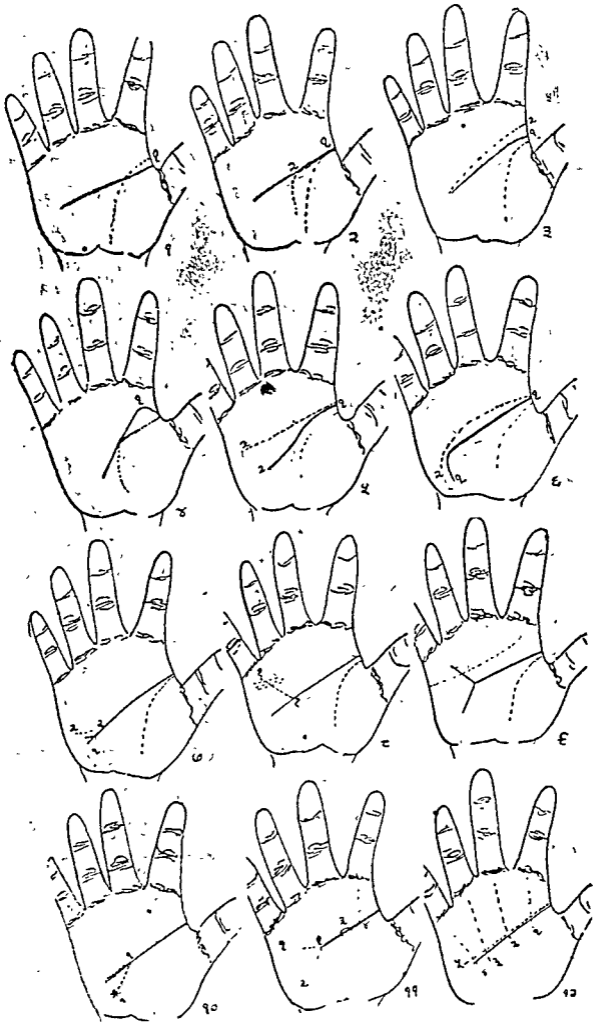
यह भी देखा गया है कि अनेकों प्राणियों के हाथ में भाग्य रेखा निकलने के स्थान पर ही सर्प–जिह्वाकार हो जाती है। एसी दशा में यह रेखा हानि पहुंचाने वाली होती है। इस प्रकार की रेखा वाले प्राणी का मन अस्थिर रहता है। उसके चित्त को शान्ति नहीं होती और वह अपने माता, पिता, बन्धु, बान्धव आदि प्रियजनों को सदैव धन की हानि पहुँचाता रहता है। (चित्र ५)

यदि इस प्रकार की रेखा वाले प्राणी की जीवन रेखा भी त्रुटिपूर्ण अर्थात् लहरदार या कटी–फंसी अस्पष्ट सी हो तो यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि एसा प्राणी अल्पआयु, दुर्बल, रोगी और छोटी २ बात पर नाराज़ होने वाला होता है। इस प्रकार के निश्चय पर पहुंचने से पहले यह आवश्यक है कि जीवन रेखा पर अधिक ध्यान दिया जावे।

यदि मस्तक रेखा के आ जाने के कारण भाग्य रेखा मार्ग ही में रुक गयी हो और आगे उसका कोई निशान ही न हो तो इसका फल यह होता है कि इस प्रकार की रेखा वाले प्राणी उन्नति तो करते हैं मगर उनकी उन्नति पूर्ण विकसित नहीं रह पाती। उसका मस्तिष्क ही उनकी उन्नति पथ पर कांटा बन कर रह जाता है उनके पागलपन, मूर्खता, क्रोध, विचारों की अनिश्चतता, काल्पनिकता आदि मस्तिष्क सम्बन्धी दोष उनकी प्रगति के मार्ग में में आकर बाधक हो जाते हैं। (चित्र ७ स्थल १)

अक्सर देखा गया है कि चन्द्रमा के स्थान पर आकर कुछ चुटपुट रेखायें भाग्य रेखा से मिलती हैं अथवा उसे काटती है उन रेखाओं का प्रभाव यह होता है कि प्राणी के जीवन पर अन्य प्राणियों का प्रभाव अवश्य पड़ता है। इस प्रकार की चुटपुट रेखाओं के काटने से अक्सर देखा गया है कि यदि भाग्य रेखा स्वच्छ, सीधी और गहरी होती है तो उन्नति को आगे को बढ़ाने

में कुछ लोगों का हाथ अवश्य होता है। यदि रेखा फीकी और अस्वच्छ होती है तो अवनति के मार्ग पर ले जाने में कुछ लोगों का हाथ अवश्य होगा। (चित्र ७ स्थल २)

पाश्चात्य ज्योतिषियों का मत है—"Various ff-hoc-ts which meet the line of Fate some where near the middle of palm denote that the destiny of the being lie under the effect of others. It must also be borne in mind that the fate line should he clear & distinct. If the line is faint and indistnct the effect will be adverse."

अर्थात्—प्राय: यह देखा गया है कि भाग्य रेखा को चुट-फुट रेखायें हथेली के मध्य या उसके आस पास यदि स्पर्श करें और भाग्य रेखा स्वच्छ तथा स्पष्ट हो तो एसे प्राणी की उन्नति के मार्ग में अन्य प्राणियों का भी हाथ रहेगा। मगर यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि यदि भाग्य रेखा अस्वच्छ और अस्पष्ट है तो उसका प्रभाव उल्टा ही होगा।

यदि किसी प्राणी की भाग्य रेखा में से ही शाखायें उत्पन्न होकर इधर-उधर जाने लगें तो उनका प्रभाव उस ग्रह के अनुसार होता है जिधर जाकर वह शाखायें विलीन हो जाती हैं। यदि भाग्य रेखा से निकलने वाली शाखा चन्द्र स्थान में जाकर विलीन हो जाती हैं तो उसका मतलब होता है कि एसा प्राणी जुये, सट्टे आदि में उन्नति करेगा मगर उसकी उन्नति अस्थायी रहेगी। (चित्र ८ शाखा १)

यदि यह शाखा शुक्रके स्थान की ओर जाकर समाप्त होती है तो उसका प्रभाव होगा कि एसा प्राणी देशाटन के द्वारा ही उन्नति कर सकेगा। घूम फिरकर वह अपने ज्ञान के भण्डार को

चढ़ाने में सफल होगा और इसी प्रकार वह लाभ भी उठा सकेगा। ऐसा प्राणी व्यापार में दक्ष होगा मगर उसकी उन्नति भी अधिक दिन तक स्थायी न रह सकेगी। शुक्र का प्रभाव है कि वह पहले तो उन्नति करता है मगर फिर उसका हृदय चचंल हो जाता है और उन्नति अवनति में परिणित हो जाती है। [चित्र ८ शाखा २]

यदि इस प्रकार की शाखा भाग्य रेखा से निकल कर शनि के क्षेत्र में जाकर विलीन हो जाती हैं तो उसका तात्पर्य है कि एसी रेखा वाला प्राणी सकल सिद्धियाँ प्राप्त करेगा। उसके मार्ग की तमाम बाधाओं का नाश हो जायेगा और उसकी उन्नति होगी। सफलता उसके चरणों की दासी होगी। इसके साथ ही यदि भाग्य रेखा स्वयं भी शनि के क्षेत्र के पास आकर अधिक स्पष्ट हो गयी हो तो एसा प्राणी अपनी हर मनोकामना को पूर्ण करने की क्षमता रखने वाला होता है। ऐसे प्राणी के हाथ में चाहे जितने अशुभ चिन्ह क्यों न हों मगर सफलता उसको अवश्य मिलती है। यह शनि का प्रभावहै। [चित्र ८ शाखा ३]

यदि भाग्य रेखा से निकलने वाली शाखा सूर्य के क्षेत्र में जाकर विलीन हो गई है तो एसी रेखा वाला प्राणी यश और कीर्ती पाता है। उसका नाम अमर रहता है। वह सूर्य के समान तेजस्वी होता है और उसकी ख्याति उसके सार्वजनिक कार्यों के कारण दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती है। वह कविता, साहित्य, चित्रकला का प्रेमी होता है और सफल कलाकार कवि, नेता या अभिनेता बनकर चमकता है। [चित्र ८ शाखा ४]

जिस प्राणी की भाग्य रेखा से निकली हुई शाखा बुध नक्षत्र के क्षेत्र में जाकर विलीन हो जाती है उसकी विद्वता और बुद्धिमता की सराहना होती है। एसा प्राणी ज्ञान, विज्ञान, कलाकौशल

जीवन रेखा
१
२
३
४
५
६
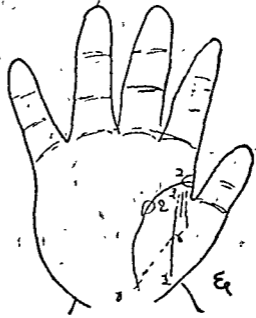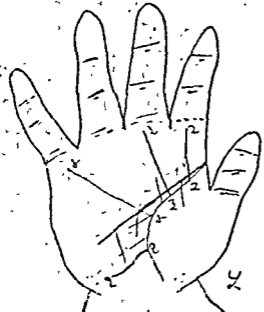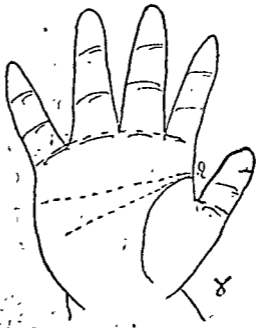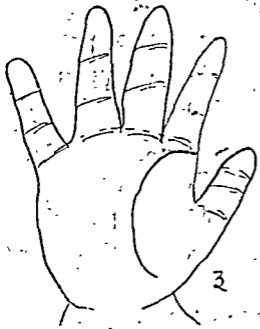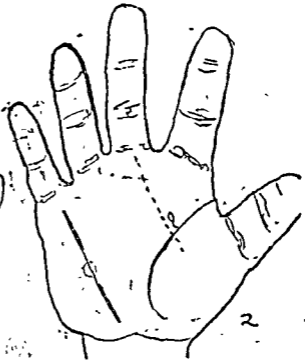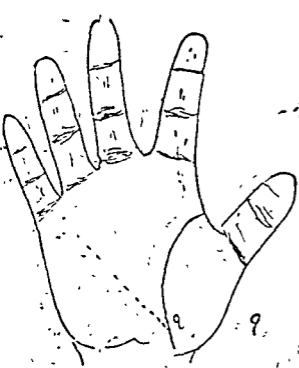
चित्रकार, संगीतकार,गणितज्ञ, ज्योतिषी, व्यापारी आदि होते हैं। इसका सीधा उत्तर यही है कि उनके हाथ में सूर्य रेखा मस्तक रेखा से प्रारम्भ होती है इस कारण उनकी मानसिक शक्ति प्रखर होती है और वह अपनी निजी योग्यता से जो उन्होंने अपनी साधना और दिमाग़ी ताक़त के फल स्वरूप प्राप्त की है यशपाते हैं। वह जीवन भर उन्नति करते रहते हैं। (चित्र १ बिन्दुदार रेखा ३)

४—कुछ प्राणियों के हाथ में सूर्य रेखा हृदय रेखा से प्रारम्भ होती है। ऐसे प्राणी का हृदय निष्कपट होता है। वह धोखा धड़ी, जालसाजी और विश्वास घात नहीं कर सकता। एसे प्राणी प्रायः हृदय के स्वच्छ होते हैं जो कुछ उनके मन में होता है वही वह अपने शब्दों से स्पष्ट कर देते हैं। मगर एसे प्राणियों का पूर्व जन्म चाहे कैसा ही क्यों न बीते मगर उनके जीवन के अन्तिम दिन शान्तिपूर्वक, बाधारहित रहते हैं। उन्हें अपनी वृद्धावस्था में कोई चिन्ता नहीं करनी होती है। वह शांतिमय ढङ्ग ही से अपना जीवन यापन कर लेते हैं। (चित्र१ बिन्दुदार रेखा ४)

५—कुछ प्राणियों के हाथ में सूर्य रेखा प्राणी की हथेली के मध्य भाग अर्थात् मंगल ग्रह के स्थान से प्रारम्भ होकर आगे बढ़ती है। इस रेखा के ऊपर ग्रह देवता अर्थात मंगल का प्रभाव पड़ता है। मंगल देवताओं का सेनापति है इस कारण हथेली के समस्त ग्रह देव उसकी प्रभुता से दबते हैं। इसी कारण जिस प्राणी के हाथ में सूर्य रेखा मंगल ग्रह के स्थान से निकलती है वह अपने उन्नति पथ पर आगे बढ़ने में सफल हो जाता है। उसके मार्ग में चाहे कितनी भी व्याधायें क्यों न हों मगर वह उन सब को विजय करता हुआ बढ़ता ही चला जाता है। (चित्र २बिन्दु-दार रेखा ५)

यह कुछ काल तक रूकने के बाद अपनी उन्नति के पथ पर अग्रसर होकर अपने लक्ष्य तक पहुंच सकेगा। मगर साथ ही यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि यदि रेखा टूटते समय भी अस्पष्ट हो गयी है और पुनः प्रारम्भ होते समय भी वह अस्पष्ट और फीकी है। तो यह लाभदायक नहीं। उसकी उन्नति में तो बाधायें होंगी हीं और वह उन बाधाओं को पार करके भी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकेगा। (चित्र ७)

जिस प्राणी की भाग्य रेखा हथेली के मध्य भाग से प्रारम्भ होती है उसका जीवन बड़े परिश्रन से व्यतीत होता है। यदि उसकी भाग्य रेखा आगे जाकर शनि के क्षेत्र तक पहुंच जाती है तो वह प्राणी उन्नति को अपने परिश्रम से प्राप्त कर लेता है और अन्त में वृद्धावस्था को सुख से काट सकता है। यदि वह रेखा शनि के क्षेत्र तक नहीं पहुँच पाती तो वह लाख प्रयत्न करने पर भी सफलता प्राप्त नहीं कर पाता।

यदि हथेली के मध्य में आकर भाग्य रेखा पर द्वीप का चिन्ह आ गया है तो उसका प्रभाव होता है कि ऐसा प्राणी अपने जीवन के मध्य काल में विपत्तियों का सामना करने को बाध्य हो जायेगा और अगर वह चिन्ह हट गया तो उसका बाधाओं से छुटकारा भी हो जायेगा। जिस समय तक वह चिन्ह रहेगा तब तक उसकी उन्नति के मार्ग में बाधायें आती ही रहेंगी।

यह सब कुछ होते हुये भी हर प्राणी को उचित है कि इस रेखा के ज्ञान को प्राप्त करके अपने भविष्य को तो जान ले और अपने मन में दृढ़ निश्चय करके अपनी उन्नति के पथ पर अग्रसर हो जाये। क्योंकि अगर प्राणी जीवन में समस्त बाधाओं को विजय करना चाहता है तो उसका केवल एक मूल मन्त्र है। पुरुषार्थ।

पुरुषार्थ में ऐसी शक्ति है और क्षमता है कि वह रेखाओं के विकारों का नाश कर देगी और जीवन में प्राणी को उन्नति के शिखर पर ले जाकर बिठाने का प्रयास करेगी।

कर्म करना प्राणी के हाथ में है और फल भगवान देता है इस बात पर पूर्वी और पश्चिमी ज्योतिष शास्त्री एक मत हैं। पाश्चात्य विद्वानों ने पूर्वी विद्वानों की राय से सहमत होकर कहा है—"Aotion is thy uty reward is not thy concern"

कर्तव्य करते रहना चाहिये।

सातवां अध्याय

सूर्य रेखा

भाग्य रेखा को तेजोमय बनाने का सौभाग्य सूर्य रेखा को प्राप्त है। सूर्य रेखा का प्रभाव ही यह है कि वह भाग्य रेखा के गुणों को चमका देती है। जिस प्राणी के हाथ में भाग्य रेखा के साथ ही साथ उत्तम सूर्य रेखा पड़ी हो तो उसका फल यह होता है कि ऐसे प्राणी का भाग्य खूब चमकता है। सूर्य उसकी यश और कीर्ति में चार चांद लगा देता है। बलवान् भाग्य रेखा के साथ बलवान सूर्य रेखा बहुत कम प्राणियों के हाथ में देखी जाती है और जिस प्राणी के हाथ में होती है वह दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करता है। राजा, महाराजा, बड़े व्यापरियों, नेताओं आदि के हाथ में यह दोनों रेखायें प्रखर रूप से दिखाई देती हैं।

यह आवश्यक नहीं कि सूर्य रेखा हर प्राणी के हाथ में अवश्य हो। ऐसे भी बहुत से हाथ देखे गये हैं जिनमें सूर्य रेखा

सूर्य रेखा
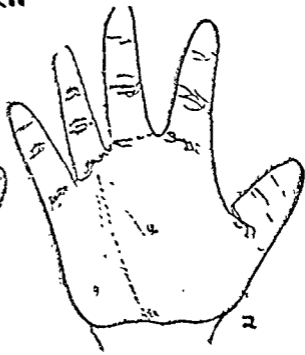
के उद्गम अर्थात् निकलने के कई स्थान होते हैं जिनका विवरण निम्न है।

१—कुछ प्राणियों के हाथ में सूर्य रेखा जीवन रेखा से प्रारम्भ होती है। ऐसी रेखा भविष्य में प्राणी को उन्नति पथ पर ले जाती है और उसकी कीर्ति को बढ़ाती है। ऐसे प्राणी कला के पुजारी होते हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य में उनकी विशेष रुचि होती है। वह अपने ही परिश्रम और साधना से सफल कलाकार होते हैं। किसी भी बात को केवल इशारे मात्र से ही समझ लेने का गुण उनमें विद्यमान् होता है। (चित्र १ बिन्दुदार रेखा न० १)

२—कुछ प्राणियों के हाथ में सूर्य रेखा भाग्य रेखा से ही प्रारम्भ होती है। ऐसे प्राणी अपने जीवन में उत्तरोत्तर उन्नति करते हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि भाग्य रेखा में ही सूर्य रेखा का जन्म होने कारण सूर्य रेखा भाग्य रेखा के अवगुणों को दबा देती है और उसके गुणों को प्रकाश में लाकर प्राणियों को उन्नति पथ पर चलने की शक्ति प्रदान करती है। भाग्य रेखा के साथ यदि सूर्य रेखा के गुण भी मिल जाते हैं तो सोने में सुहागे का काम होता है। स्वच्छ, स्पष्ट और गहरी सूर्य रेखा अमर कीर्ति का फल देने वाली होती है। (चित्र १ बिन्दुदार रेखा २)

३—कुछ प्राणियों के हाथ में सूर्य रेखा मस्तक रेखा से प्रारम्भ होती है। इसका फल यह होता है कि प्राणी की मस्तिष्क शक्ति प्रखर होनी चाहिये। वह अपनी दिमागी शक्ति से ऐसे कार्य करता है जो बड़े २ बुद्धिमान पुरुष सोच भी नहीं पाते। अक्सर ऐसे लोग भी देखे गये हैं जो शिक्षा के नाम पर एक अक्षर भी नहीं जानते मगर वह बहुत ही कुशल इन्जीनियर,

व्यापार, आदि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण स्थान पाता है और अपने विचारों को अपने सहयोगियों के सम्मुख प्रगट करने की क्षमता रखता है। वह प्रतिभा शाली व्याख्यान दाता होता है और उसको यश प्राप्त होता है। (चित्र ८ शाखा ५)

यदि प्राणी की भाग्य रेखा से निकली हुई शाखा वृहस्पति अर्थात् गुरू ग्रह के क्षेत्र में जाकर विलीन हो जाती है तो ऐसा प्राणी नौकरी में उन्नति करता है वह अच्छी पदवी पाता है। उसके अधिकारी उसके कार्य से प्रसन्न रहते हैं और उसके कथन को मान देते हैं। उसमें शासन की योग्यता होती है। उसकी सलाह लाभकारी होती है और इन्ही कारणों से वह दिनों दिन उन्नति करता चल जाता है। उसका प्रभाव यह भी हो सकता है कि है कि वह कुशल व्यापारी, सम्पादक या लेखक होकर सफलता को प्राप्त करे (चित्र ८ शाखा ६)

६. यदि भाग्य रेखा जीवन रेखा के आस पास से ही प्रारम्भ हो और आगे चलकर जीवन रेखा को स्पर्श करती हुयी आगे वढ़े तो यह निश्चय है कि ऐसे प्राणी के जीवन पर किसी स्त्री का हाथ रहेगा। वह प्राणी यदि पुरुष है तो स्त्री की सलाहों पर चलने वाला होगा। यदि अविवाहित है तो उन्नति के मार्ग में उसकी प्रेमिका वाधक होगी। वह प्रेमिका के प्रेम में इतना डूब जायेगा कि काम आसक्त होकर वह अपनी उन्नति को स्वयम् ही रोक देगा। उसके जीवन का अधिक प्रभाव उसकी उन्नति पर पड़ेगा। (चित्र ८ स्थल ७)

७. वैसे भाग्य रेखा का टूटा होना अशुभ है मगर टूटते समय यदि भाग्य रेखा गहरी है और फिर जव वह पुनः प्रारम्भ होती हो तव भी गहरी और स्पष्ट हो तो वह यह स्पष्ट करती है कि प्राणी के उन्नति मार्ग पर यकायक कोई वाधा उत्पन्न हो जायेगी और पुनः

६—कुछ प्राणियों के हाथ में सूर्य रेखा मणिबन्ध रेखा या उनके पास ही से प्रारम्भ होती है और ऊपर की ओर चलती है। एसी दशा में यह जानना आवश्यक है कि सूर्य रेखा भाग्य रेखा के समीप ही सामान्तर दशा में अग्रसर हो रही है। यदि सूर्य रेखा भाग्य रेखा के समीप ही है और सामान्तर दिशा ही में अग्रसर हो रही है तो वह बहुत सुन्दर लक्षण है। एसी रेखावाला प्राणी जिस कार्य में भी हाथ डालता है वह उसमें ही सफलता पाता है। उसके सहयोगी उससे प्रेम करते हैं, अधिकारी उसकी प्रशंसा करते हैं, समाज में उसका मान होता है। (चित्र २ बिंदुदार रेखा ६)

७—कुछ प्राणियों के हाथ में सूर्य रेखा चन्द्र गृह के स्थान से प्रारम्भ होती है और अनामिका की ओर अग्रसर होती है। सूर्य और चन्द्र में पुराना वैर है। इस पर चन्द्रदेव की प्रकृति तो सदा ही चचंल है। इस कारण चन्द्रमा के प्रभाव के कारण इस प्रकार की रेखा वाले प्राणी की उन्नति में सदेह होता है। एसे प्राणी यद्यपि उन्नति करके नाम और धन कमाना चाहते हैं मगर वह अपने विचारों की चचंलता के कारण स्थिर नहीं रह पाते हैं। वह प्रयत्न भी करते हैं मगर क्योंकि उनके संकल्प कमजोर होते हैं उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हो पाती है। (चित्र ७ बिंदुदार रेखा ७)

पाश्चात्य विद्वान का मत है:—

"Success line, which is often called the line of Apollo or sun line has no fixed starting point, nor it is to be found on all hands; whenever it exists, it will run to-wards the mount of Apollo. It may rise from Various points of

the hand and may terminate at the bottom of the third finger or may not even reech the same. Yet its presenoe on the hand is bound to influence the success of the man. Its qualifioations are to indicate capability, accomplishment of Virtuous status in life and sooiety etc, without this line, the prospeots of rising to fame, however olever & talented are more or less remote."

अर्थात् उन्नत रेखा जिसे अक्सर अपोलो रेखा या सूर्य रेखा भी कहते हैं हाथ के किसी एक निश्चित स्थान से प्रारंभ नहीं होती है और न यह प्रत्येक हाथ में ही पायी जाती है। मगर जब भी वह हाथ में मौजूद होती है यह सदैव अनामिका उँगली के नीचे स्थिर सूर्य ग्रह के स्थान की ओर अग्रसर होती है। यह हाथ के विभिन्न स्थानों से प्रारम्भ होती है और तीसरी उँगली के नीचे पहुँचने के पहले ही समाप्त हो जाती है। तो भी उसके हाथ पर प्रगट रहना जीवन पर प्रभाव अवश्य डालता है और आदमी की की कीर्ति को बढ़ाता है। इसके गुण हैं कि यह कर्मशीलता, गुणों का प्रगट होना और जीवन तथा समाज में मान पाना बताता है। इस रेखा के बिना प्राणी चाहे कितना भी चतुर, कारीगर या बुद्धिमान क्यों न हो कीर्ति कदापि प्राप्त नहीं कर सकता है।

सीधी, सुंदर, स्पष्ट, गहरी और स्वच्छ सूर्य रेखा यदि भाग्य रेखा के सामान्तर ही मणिबन्ध रेखा से प्रारम्भ होकर चले तो वह सर्वोत्तम होती है। जिस प्राणी के हाथ में यह रेखा पायी जाती है उसे सकल सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं और वह यश को प्राप्त होता है। इसके विपरीत, हल्की, अस्पष्ट, अस्वच्छ सूर्य रेखा कीर्ति के स्थान पर अपकीर्ति तो नही लाती परन्तु प्राणी की उन्नति

में बाधक अवश्य होती है। (चित्र ३)

अक्सर देखा गया है कि सूर्य रेखा के साथ ही साथ अन्य छुट-पुट रेखायें उसके साथ २ जाकर अन्त में विलीन हो जाती हैं। ऐसी रेखाओं का सूर्य रेखा पर प्रभाव पड़ता है। जिस ग्रह के क्षेत्र से वह रेखायें प्रारम्भ होती हैं वही प्रभाव वह सूर्य रेखा पर डालती है और उसका असर यह होता है कि वह ग्रह देव उसकी उन्नति में सहायक होते हैं। मगर यदि इनमें से कुछ रेखायें सूर्य रेखा को स्थान २ पर काटने लगें तो उसका असर हो जाता है प्राणी की उन्नति उन रेखाओं के प्रारम्भ होने वाले ग्रहों के प्रभाव से रुक जाती हैं। उन्नति में विभिन्न बाधायें उत्पन्न होने लगती हैं। ऐसी अवस्था में ऐसी रेखा वाले प्राणी को उचित हैं कि वह अपना संयम् स्थिर रखे और सच्ची लगन के साथ अपने कार्य में रत हो जाये। सफलता उसके चरणों में होगी। [चित्र ३]

यह भी देखा गया है कि सूर्य रेखा समाप्ति के स्थान पर जाकर सर्प जिह्वाकार हो जाती है। ऐसी रेखा का फल यह होता है कि प्राणी का हृदय चञ्चल हो जाता है। वह अपने प्रयासों को सफलता पूर्वक संचालित नहीं कर पाता। उसके सामने लोभ प्रलोभन आ जाते हैं और उसकी एकाग्र साधना कई भागों में विभाजित हो जाती है और इसका फल यह होता है कि लगन के विभाजन होने के कारण वह अपनी उन्नति पथ पर पूर्ण निश्चय के साथ अग्रसर नहीं हो पाता और परिणाम स्वरूप अपकीर्ति नहीं तो कीर्ति भी नहीं पाता। (चित्र ४ रेखा १)

जब सूर्य रेखा जीवन रेखा से प्रारम्भ होती है तो उसका अभिप्राय है कि प्राणी के जीवन से ही सम्बन्धित किसी आधार को पाकर ही प्राणी उन्नति कर सकता है। ऐसी दशा में सम्भव

है कि किसी निर्धन का धनवान से विवाह हो जाये। उसका कोई धनवान सम्बन्धी मरते समय उसे धन दे जाये आदि। इस प्रकार धन प्राप्त कर लेने के बाद ही वह उन्नति के पथ पर चल सकता है! यही इस रेखा का गुण है। (चित्र ४ बिन्दुदार रेखा २)

जब सूर्य रेखा में से विभिन्न शाखायें निकलती हों और वह अन्य ग्रह देवता के क्षेत्र में जाकर विलीन होती हैं तो उसका फल अन्य ग्रह देवता के प्रभाव से बदल जाता है।

जब सूर्य रेखा की शाखा सूर्य के क्षेत्र में जाकर विलीन होती है तो उसका फल होता है कि ऐसा प्राणी यश और कीर्ति पाता है। वह राजनैतिक नेता, धर्मोपदेशक, व्याख्यानदाता आदि होकर सार्वजनिक कार्यों में रुचि लेने वाला होता है सार्वजनिक जीवन ही में उसे सफलता प्राप्त होती है। (चित्र ३ स्थल १)

जब सूर्य रेखा से निकलने वाली शाखा गुरुदेव के क्षेत्र अर्थात् बृहस्पति के क्षेत्र में जाकर विलीन होती है तो उसका फल यह होता है कि ऐसी रेखा वाला प्राणी शासक वर्ग में स्थान पाता है और वह अपने अधिकारों का उचित प्रयोग करके अपने शासित जनों का कृपा पात्र और प्रेम पात्र बनकर सम्मान और यश को पाता है उसकी प्रजा उसे प्रेम करती है और वह शासन के कार्यों में उच्च अधिकार पाकर उन्नति करता है। (चित्र ३ स्थल २)

जब सूर्य रेखा से प्रारम्भ होने वाली शाखा बुध देव के क्षेत्र में जाकर विलीन हो जाती है तो ऐसे प्राणी की उन्नति कलात्मक कार्यों में ही हो पाती है। वह अच्छा कलाकार, चित्रकार, लेखक, संगीतज्ञ, नाट्यकार, अभिनेता आदि होकर अपने कार्य में दक्षता प्राप्त करता है। लोग उसकी कला से प्रभावित

होते हैं और वह अपनी कला के कारण यश और कीर्ती पाता है। (चित्र ३ स्थल ३)

जब सूर्य रेखा से प्रारम्भ होने वाली शाखा शनि देव के ग्रह क्षेत्र में जाकर विलीन होती है तब भाग्य उन्नति के शिखर पर पहुँच जाता है मगर शर्त यह है कि ऐसी रेखा के साथ ही साथ प्राणी के हाथ में उच्च भाग्य रेखा भी पड़ी हो। शनि देव सूर्य का पुत्र है अतः पिता और पुत्र दोनों सहयोग देकर प्राणी को सुखी, और समृद्धिशाली बनाने में पूर्ण सहायता देते हैं तथा उसकी कीर्ती और यश को फैलाते हैं। (चित्र ३ स्थल ४)

यदि इस रेखा के साथ २ अन्य बहुत सी चुट पुट रेखायें हथेली के मध्य भाग से प्रारम्भ होकर सूर्य के क्षेत्र में जाकर विलीन हो जाती हैं तो उनका प्रभाव भी अच्छा ही होता है यह तमाम सूर्य रेखा की सहायता ही करती हैं। और प्राणी की उन्नति तथा कीर्ति में सहायक ही होती हैं। इन सबको सूर्य रेखा का सहायक ही माना जाता है।

यदि सूर्य रेखा किसी स्थान पर टूट जाती है तो वह स्थान प्राणी के अपयश और अप कीर्ति का द्योत्तक होता है। सूर्य रेखा का टूटा होना श्रेयकर नहीं होता। इसके टूटने से उन्नति रुक जाती है, बदनामी होती और प्राणी की उन्नति की दिशा बदल जाती है और वह अवनति के पथ पर चलने लगता है। इन तमाम कारणों से सूर्य रेखा का टूट जाना अच्छा लक्षण नहीं समझा जाता है। (चित्र ४ रेखा नं० ३)

यदि किसी प्राणी के हाथ सूर्य रेखा के ऊपर ही द्वीप का चिन्ह पड़ा है तो उसका फल विशेष नहीं समझा जाता। द्वीप का होना वैसे तो बुरा लक्षण है मगर उसका असर सूर्य रेखा पर विशेष नहीं पड़ता। जो भी असर सूर्य रेखा पर पड़ता है।

वह न के वरावर होता है । द्वीप युक्त रेखा की तुलना में टूटी हुई सूर्य रेखा अधिक वुरी होती है । (चित्र ४ में रेखा न० १)

जब किसी प्राणी के हाथ में सूर्य रेखा मङ्गल के स्थान से प्रारम्भ होकर ऊपरओरकी वढ़ते समय आगे जाकर धुंधलीहोजाये और सूर्य के क्षेत्र में जाकर विलीन होने के पहले ही गायव हो जाये तो ऐसी दशा में तो ऐसी रेखा वाले प्राणी के जीवन में विविध प्रकार की वाधायें, आपत्तियां, निराशायें आदि आ जाती हैं। उसकी उन्नति का भविष्य अन्धकार में होता है। (चित्र ५ रेखा न० २)

यदि सूर्य रेखा के ऊपर वर्ग का चिन्ह पाया जाय तो वह वहुत शुभ माना जाता है वर्ग का चिन्ह सूर्य रेखाके तमाम अशुभ लक्षणों के प्रभाव को समाप्त कर देता है और अपने लक्षणों के प्रभाव से प्राणीके जीवन में नवीन शक्ति, उत्साह और कर्मरायता को जन्म देकर उसे उन्नति के पथ पर चलने की प्रेरणा देता है। और उसकी यश कीर्ति को वढ़ाने में सहावता देता है। (चित्र ५ रेखा ३)

यदि दस्तकार के हाथ में सूर्य रेखा हो तो उसका प्रभाव होता है कि उसकी कीर्ति उसके जीवन काल में नहीं फैलेगी। हस्तकार के हाथ की सूर्य रेखा का प्रभाव होता है कि उसकी कीर्ति तो उसकी मृत्यु के वाद ही फैलाती है। वैसे दस्तकार और व्यापारी के हाथ में सूर्य रेखा पायी ही नहीं जाती। इसी कारण इन लोगों को जीवन यापन के लिये कठिन परिश्रस और निरंतर साधना करनी पड़ती है। कभी २ उच्चकोटि के दस्तकार को अपने जीवन निर्वाह के लिये धन जुटाने में अथक परिश्रम भी करना पतड़ा है। मगर सूर्य रेखा वाले प्राणी प्रतिष्ठा और गौरव

अवश्य प्राप्त करते हैं और वह उनको जीवन के अन्तिम दिनों में या मरने के पश्चात् ही प्राप्त होता है।

यदि सूर्य रेखा स्वच्छ, स्पष्ट और गहरी है और उसके साथ ही चंद्र नक्षत्र का ग्रह क्षेत्र तथा शुक्र नक्षत्र का ग्रह क्षेत्र उभरा हुआ है तो ऐसा प्राणी साहित्य में विशेष रूचि रखता है और साहित्यिकक्षेत्र में अपनी कीर्ति को बढ़ाता है। उसकी गिनती साहित्य कारों तथा आलोचकों में की जाती है।

वैसे तो नक्षत्र अर्थात् तारा अन्य दशाओं में अच्छा लक्षण नहीं माना जाता परन्तु सूर्य रेखा पर यदि नक्षत्र का चिन्ह पड़ा हो तो वह सौभाग्य में वृद्धि करके यश और कीर्ति के बढ़ाने वाला होता है। इस को सूर्य रेखा पर बहुत ही शुभ लक्षण माना जाता है। (चित्र ५ रेखा न० ३ परि स्थित तारा)

हृदय रेखा से प्रारम्भ होने वाली रेखा यह प्रमाणित करती है कि ऐसी रेखा वाला प्राणी अपने स्वच्छ और सरल हृदयता के कारण अपने साथियों और सहयोगियों की श्रद्धा और आदर का पात्र होता है और वह प्रकृति ही से सरल हृदय, उदार, कर्मठ, निष्कपट, प्रिय होता है। उसके साथी उसका सम्मान करते हैं और उसको प्रेम करते हैं। उसकी उन्नति उसके उपर्युक्त गुणों के कारण ही होती है।

पाश्चात्य विद्वानों का कहना है कि—"The length of this line determines the extent and duration of its influence the longer the line the more effect it will have, while shorter the less will be its importance. This line while starting from the wrist, running through the hand and reaching the mount, will indicate the possession of great

tale it and fame If the line starts low in the hand, and runs only for a short distance the creature having these found possessing talents but they will not be productive of great results

अर्थात्—सूर्य रेखा की लम्बाई से प्राणी की उन्नति और कीर्ति के प्रभाव की अवधि ज्ञात होती है-यदि रेखा लम्बी है तो वह प्राणी के जीवन पर अधिक समय तक उन्नत प्रभाव डालेगी और यदि यह रेखा छोटी है तो इसका प्रभाव थोड़ी ही देर तक रहेगा। मणिबन्ध रेखा के समीप से प्रारम्भ होने वाली सूर्य रेखा हाथ के मध्य से गुजरती हुई सूर्य के क्षेत्र में जाकर विलीन होने वाली रेखा का प्रभाव अति शुभ होता है। यदि रेखा आगे से निकलती है और छोटी ही होती है तो वह प्राणी की उन्नति पर कम प्रभाव डालती है। (चित्र न० ६)

"If the line rises higher in the hand and covers the space between Head and Heart lines thus forming a Quadrangle, the special talents of the subject will operate during the period it remain a part of the set. If the line runs on to the mount, he will be well endued with Apollonian character, and in which-ever world he brilliant and acquire reputation."

यदि यह रेखा हाथ के उच्च स्थान में होकर हृदय रेखा मस्तक रेखा से मिलकर त्रिभुज को बनाती हैं। तो ऐसी रेखा वाला प्राणी अपने गुणों का सदुपयोग अपनी उन्नति के कार्यों में करके यश और कीर्ति को पाता है। उसकी उन्नति का समय

१
२
३
४
५
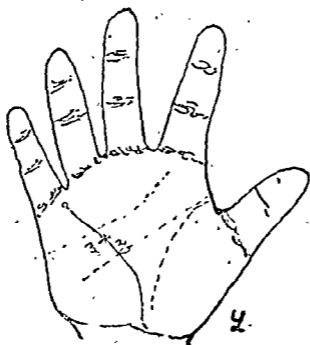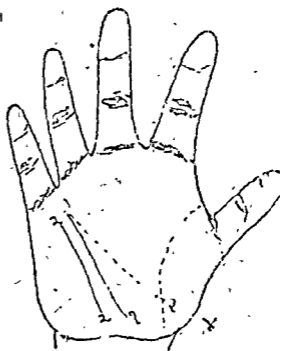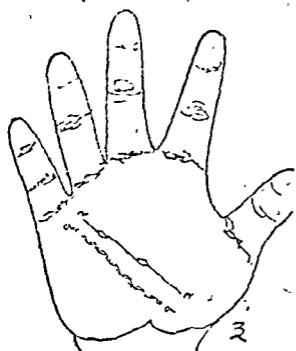
लगभग नहीं होता है जब कि सूर्य रेखा हृदय और मस्तक रेखा के साथ सहयोग करती हुयी देखी जाती है। यदि रेखा उच्च होकर ग्रह क्षेत्र तक पहुँचती है तो उसका प्रभाव यह होता है कि रेखा वाला प्राणी सूर्य के सर्वगुणों से अच्छादित होकर संसार में महान् उन्नति करके यश और कीर्ति को पाता है। (चित्र १ पर त्रिभुज)

सूर्य रेखा उन्नति की दिशा में चलने की प्रेरणा देने वाली और कीर्ति के देने वाली होती है।

आठवां अध्याय

विवाह रेखा

संसार के हर प्राणी का जोड़ा होता है। प्रकृति ने नियत्रंण रखा है कि हर नर के साथ एक मादा हो ताकि संसार में उत्पत्ति हो सके और प्राणी अपने जीवन यापन में सलंग्न हो सके। इसी कारण हर प्राणी अपनी युववस्था पर पहुँच कर अपनी सहयोगी की कामना करता है। विवाह रेखा प्राणी को यह बताती है कि उसका सहयोगी कैसा होगा ? अर्थात् उसके जीवन में आने पर उसके अपने जीविन पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

वैसे तो विवाह रेखा की गणना छोटी रेखाओं में की जाती है मगर उसका महत्व कम नहीं होता। क्योंकि प्राणी मात्र कामदेव के वशीभूत होता है और उसके काम की शान्ति देने वाला उसका सहयोगी प्राणी उसके जीवन पर कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य डालता है। इसी कारण से इस रेखा का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

विवाह रेखा
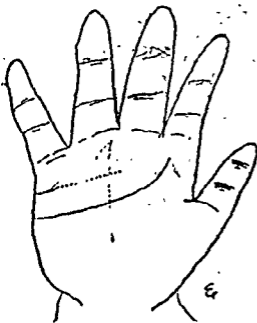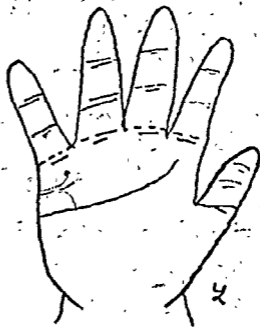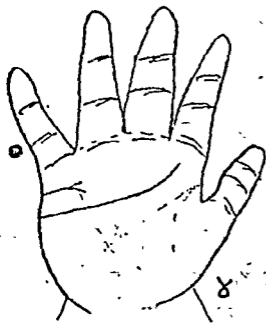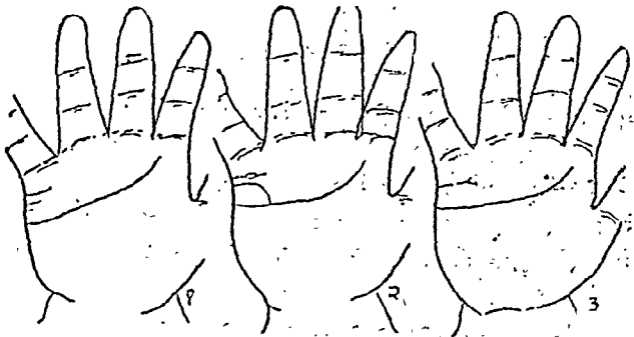
विवाह रेखा सबसे कम लम्बी होती है। यह हथेली की दूसरी ओर से बुध की उंगली के नीचे और हृदय रेखा से ऊपर आती हुई गुरू के क्षेत्र ही में समाप्त हो जाती है। ऐसा नहीं कि यह रेखा हाथ में केवल एक ही हो? एक हाथ में कई विवाह रेखायें इसी स्थान पर थोड़े २ अन्तर से भी हो सकती है। (चित्र नं० ५ में हृदय रेखा ऊपर वाली छोटी २ रेखायें)

पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि—"Th se lines of marriage may be called the lines affection because it has been noticed in many a hands that a beautiful line occurs in hand and yet the being dies unmarried. The effect of line is not unproductive yet, though the creature remains unmarried in his life but he must have fa len in love and had been affectionate to his lover till last. Therefore, it is not necessary that the mere possession of a goad line means suitable marriage, it also mean affection & love:—"

अर्थात् विवाह रेखा को प्रेम रेखा भी कहा जाता है क्योंकि बहुत से हाथों में यह देखा गया है कि हाथ में सुन्दर विवाह रेखा के होते हुये भी प्राणी अविवाहित ही मर जाता है। यद्यपि इस रेखा के होते हुये भी प्राणी का विवाह नहीं हुआ मगर उस प्रभाव कम नहीं होता, ऐसा प्राणी अविवाहित चाहे रहा हो मगर वह किसी से जीवन भर प्रेम करता रहा होगा और उसने वह प्रेम मृत्यु पर्यन्त तक निवाहा होगा। इस कारण यह आवश्यक नहीं अच्छी विवाह रेखा विवाह की ओर ही इंगित करती है वरन् प्राणी के प्रेम को भी स्पष्ट करती है।

वैसे भी समाज का स्तर बदल चुका है। विवाह का अर्थ आर्यों द्वारा लगाये गये अर्थ से आगे बढ़ गया है दो प्राणियों के प्रणय को सूत्र को ही विवाह नहीं कहा जाता है। दो मुहब्बत भरे दिलों के मिलन और उनकी प्रेम लीला को भी विवाह से कम महत्व नहीं दिया जाता। गृहस्थ धर्म के पालन हेतु विवाह नहीं होते वरन् आज कल के विवाह प्रेम को कायम रखने, वासना पूर्ती, धन पाने, उच्च नौकरी प्राप्त करने के लिये आदि होते हैं। विभिन्न मनोवृतियों के कारण ही विवाह रेखा प्रत्येक हाथ में मनोवृती के अनुसार ही पायी जाती है।

विवाह रेखा अपने उद्गम् स्थान से निकल कर कनिष्ठा उंगली के नीचे वाले बुध देव के ग्रह में जाकर विलीन होती है। यदि यह रेखा स्वच्छ, स्पष्ट और गहरी है तो प्राणी का विवाहित जीवन सुख, शान्ति से पूर्ण होता है। दम्पति में आपस में प्रेम होता है और वह कोई ऐसा कार्य नहीं करते जिसके लिये उन्हें दुःख हो या उसके प्रेमी अर्थात् सहधर्मी को दुःख पहुँचे। (चित्र न० १ में सबसे ऊपर वाली गहरी विवाह रेखा को देखो)

यदि विवाह रेखा विलीन होने के स्थान पर पहुँचते समय ऊपर की ओर चलने लगे तो उसका फल होता है कि प्राणी अपने प्रेम में अकेला ही रह जाता है। उसका विवाह नहीं होता। सारी आयु उसे अविवाहित ही रहना पड़ता है। विवाह की योजनायें होती हैं, रिश्ते आते हैं मगर उनमें बाधायें आ जाती हैं और प्राणी आजन्म कुआंरा ही रहता है।

यदि विवाह रेखा विलीन के स्थान पर पहुँचने के पहले गोलाकार होकर नीचे की ओर मुड़ जाये और हृदय रेखा को आकर स्पर्श करके उसमें ही विलीन हो जाये तो दम्पति में से एक की मृत्यु हो जाती है। उनका दम्पति सुख अधिक दिनों तक नहीं

चल पाता। वैसे तो संसारकी मर्य्यादा के अनुसार हर प्राणी की मृत्यु होती है मगर इस रेखा के प्रभाव से जीवन का अपूर्ण सुख उठाकर ही प्राणी काल कलवित हो जाता है। यदि किसी प्राणी के हाथ की विवाह रेखा पर द्वीप हो तो उसका प्रभाव भी उसके जीवन पर उपर्युक्त ही होता है। [चित्र न०२]

जब विवाह रेखा सर्प जिह्वाकार होती है तो उसका अर्थ होता है कि दम्पति के विवाहित जीवन में कटुताओं का प्रारम्भ हो जाता है और वह एक दूसरे से इतने खिन्न हो जाते है कि अलग रहना ही पसन्द करते हैं। वह अपने सम्बन्ध विच्छेद कर लेते हैं। उनमें से एक विवाहित जीवन से उबकर आत्म-हत्या तक कर सकता है, नदी में डूब सकता है, आग लगा कर प्राण गंवा सकता है, विष-वमन कर सकता है। मगर यह सब वह जब ही करता है जब उस प्राणी की हृदय रेखा और मस्तक रेखा एक दूसरे को छू रही हों और विवाह रेखा की सर्प जिह्वाकार शाखा का झुकाव हृदय रेखा की ओर हो। चित्र न०३)

यदि किसी प्राणी के हाथ की विवाह रेखा सर्प जिह्वाकार हो और एक चुट पुट रेखा मस्तक रेखा को काटती हुई विवाह रेखा को स्पर्श करती हो तो ऐसी रेखा वाले प्राणी का जीवन अशान्ति में बीतता है। दम्पति में नित्य नये झगड़े होंगे और गृहस्थी नर्क की तरह यातना पूर्ण प्रतीत होगी इस प्रकार की रेखा वाले दम्पति की आपस में कभी नहीं बन सकती है। कलह पूर्ण जीवन बीतता है। [चित्र न० ४]

यदि सर्प जिह्वाकार विवाह रेखा नीचे की ओर जाकर या उसके स्पर्श में आने वाली कोई चुट पुट रेखा शुक्र ग्रह के क्षेत्र में जाकर विलीन हो जाती है तो ऐसी रेखा वाले प्राणी का

अनेकों जगह विवाह सम्बन्ध तो उठता है पर उसका विवाह कभी नहीं हो पाता है। यदि किसी तरह से विवाह सम्बन्ध तय हो भी जाये तो वह विच्छेद हो जाता है।

पाश्चात्य विद्वानों का मत है :—A break in the line of affection indicates the sudden death of the partner. When the line of affection after going straight and with out breaking, takes a turn and thus touches the heart line clearly indicates a miserable life of the couple and ends into widowhood. Widowhood is evident when the line of Affection terminates in a star on the Mount of Mercury."

अर्थात् विवाह रेखा यदि किसी स्थान पर टूट जाये तो दम्पति में से एक की मृत्यु हो जाती है। जब विवाह रेखा सीधी और बिना टूटे हुये मुड़कर हृदय रेखा को स्पर्श करे तो यह प्रत्यक्ष है कि दम्पति का जीवन क्लेश पूर्ण बीतेगा और उसका अन्त वैधव्य में होगा। वैधव्य अनिवार्य अर्थात् प्रत्यक्ष ही होता है जब विवाह रेखा बुध के क्षेत्र में जाकर नक्षत्र अर्थात् तारा पर जाकर समाप्त होती है। (चित्र न० ५)

विवाह रेखा में से निकल कर यदि कोई अन्य रेखा जो सूर्य रेखा से जाकर मिले और वह सुन्दर तथा स्पष्ट हो तो ऐसी दशा में विवाह सम्बन्ध भाग्य को बढ़ाने वाला होता है। इस प्रकार की रेखा वाला प्राणी विवाह में धन, सम्मान, जायदाद और यश भी पाता है। (चित्र न० ६)

मगर जब विवाह रेखा स्वयम् सूर्य रेखा को काटकर आगे बढ़ जाये तो ऐसी दशा में प्राणी विवाह के पश्चात् अपने धन,

सम्मान, परिवार, यश और कीर्ति का मान देखता है। अक्सर यह कहते सुना होगा कि ऐसी लक्ष्मी आई जो घर को चमका दिया और इसके विपरीत यह भी सुना जाता है कि ऐसी चाण्डाल आई कि घर का विध्वंस ही कर डाला। धन गया तो गया मगर आदमी भी गये। (चित्र न० ६)

इस विषय में पाश्चात्य विद्वानों का कहना है—

"Line of Affection which get forked at the end if turns into an island, in that case the matrimony becomes a cause of defamation, illreputation, and thus ends into divorce or seperation. If the forked line of Affection ends into × just above the line of Fate, then it clearly indicates a illfated life which ends in gallows.

अर्थात् यदि विवाह रेखा सर्प जिह्वाकार होते हुये द्वीप बनाती है तो ऐसी दशा में विवाह सम्बन्ध अपमान, अपयश का कारण होता है और उसका अन्त तलाक अथवा विच्छेद ही में होता है। यदि सर्प जिह्वाकार विवाह रेखा गुणक का चिन्ह बनाती हुई भाग्य रेखा पर मिलती है तो यह निश्चय समझना चाहिये कि यह चिन्ह बदकिस्मत विवाह सम्बन्ध का है और इसका अन्त फांसी पाकर ही होता है (चित्र न० ७)

विवाह रेखा के बारे में निश्चयपूर्ण कुछ भी लाभ और हानि बताने से पहले उत्तम तो यही होता है कि हाथ की अच्छी तरह बनावट तथा उसमें पड़ने वाली अन्य रेखाओं के गुणों और अवगुणों को देखा जाये। विवाह रेखा का प्रभाव अपना तो कुछ नहीं मगर इसके साथ अन्य रेखाओं के मिल जाने के

कारण यह भयानक फल देने वाली हो जाती है। ऐसी दशा में हाथ की समस्त रेखाओं को अवश्य ध्यान से देखना चाहिये।

लोगों को "विवाह किस अवस्था में होगा" जानने की हमेशा उत्कंठा होती है। इसका मूल कारण यह होता है कि विवाह योग्य प्राणियों की अवस्था युवा होती है और युवावस्था में ही इस तरह के भाव मन में आ जाने साधारण ही बात हैं। वैसे तो कई ज्योतिषी गणना करके विवाह की आयु बताते हैं। मगर वह गणना सदैव सत्य ही हो ऐसा नहीं सोचा जा सकता है। इस प्रश्न का सही उत्तर देने का कोई अकाट्य प्रमाण तो नहीं दिया जा सकता वरन इतना सा इशारा ही बताये देते हैं। कि विवाह रेखा हृदय रेखा के जितनी पास होगी उतनी ही जल्दी विवाह होगा।

हाथ देखते २ ज्योतिषियों को इतना मुहावरा हो जाता है कि वह इस दूरी से अवस्था का अनुमान लगा लेते हैं और उन का अनुमान साधारण तया सत्य ही बैठता है। वैसे तो 'सप्त वर्षीय' नियम भी आयु की गणना करने में काम आता है मगर इतना समय लगाना और गणना करना सहज नहीं। इस लिये दूरी का अनुमान करके ही विवाह की आयु बतायी जाती है।

पाश्चात्य मतवाले विद्वानों का कथन है कि—

There are no hard and fast rules to calculate the marriagable age. As a rule one must judge it through the distance between the line of Affection and Heart line. The only way to ac-

quire correct judgement is one's own power of judgement."

अर्थात् विवाह किस अवस्था में होगा? यह बताने के लिये कोई निश्चय बात नहीं है वैसे नियमके तौर पर विवाह रेखा और हृदय रेखा के अन्तर द्वारा आयु निश्चित करनी चाहिये। इस प्रकार निश्चय तक पहुंचने के लिये प्राणी को अपने अनुभव की शक्ति का ही सहारा लेना पड़ता है।

नवां अध्याय

सन्तान रेखायें

सन्तान रेखाओं का महत्व बहुत कम है मगर प्राणी जीवन की समस्त समस्याओं के विषय में ज्ञान प्राप्त करना चाहता है इस कारण वह सन्तान के विषय में भी जानने की उत्कंठा रखता है। इन रेखाओं की अजीब दशा होती है। आम तौर से यह रेखायें पुरुषों के हाथ में नहीं पाई जाती वरन् इनको स्त्रियों के हाथों में देखा जाता है। मगर यह बात नियम के तौर पर नहीं कही जा सकती कि पुरुषों के हाथ में सन्तान रेखायें होती ही नहीं हैं।

सन्तान रेखायें वह छोटी २ रेखायें होती हैं जो या तो विवाह रेखा से प्रारम्भ होकर ऊपर की ओर कनिष्ठा उंगली के मूल की तरफ जाती हैं या यह रेखा मनुष्य की हृदय रेखा पर से निकल कर ऊपर की ओर जाती हैं। (चित्र न० १)
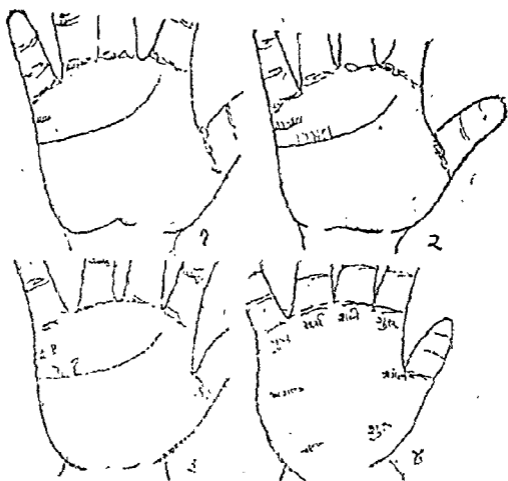
सुन्दर स्वच्छ, और सीधी रेखायें चाहे वह विवाह रेखा पर हों या हृदय रेखा पर हों पुत्र होने की सूचक होती है। कुछ कम गहरी, मुड़ी हुयीं रेखायें कन्याओं की संख्या की सूचक होती हैं। जैसे किसी प्राणी के हाथ में विवाह रेखा या हृदय रेखा पर कुल मिलाकर सात रेखायें हैं। उनमें से चार वो सीधी, सुन्दर और गहरी हैं वह यह सिद्ध करतीं हैं कि प्राणी को चार पुत्रों का योग है। तीन रेखायें उथली, झुकी हुई हैं वह यह सूचना देतीं हैं कि प्राणी के तीन कन्यायें जन्म लेंगीं। (चित्र न० २)

साधारणतया देखा गया है कि यह रेखायें समान लम्बी नहीं होती वरन छोटी बड़ी होती हैं। उनसे स्पष्ट होता है कि लम्बी और साफ रेखायें यह व्यक्त करती हैं कि सन्तान माता पिता को सुख देने वाली होगी। जो रेखायें छोटी और दोष

युक्त होती हैं वह यह सिद्ध करती है कि सन्तान माता पिता को कम सुख देगी वरन् दुःखी ही करती रहेगी।

प्रायः बहुत से हाथों में देखा गया है कि हृदय रेखा से उठने वाली सन्तान रेखायें विवाह रेखा को जाकर छूती हैं। ऐसी दशा में ऐसी रेखा वाले प्राणियों के हृदय में सन्तान के प्रति विशेष प्रेम पाया जाता है।

यदि सन्तान रेखायें बुध नक्षत्र के ग्रह पर साफ़ दिखाई दें तो प्राणी के शीघ्र ही सन्तान होती है और यदि वह अन्दर की ओर दिखायी दें तो सन्तान जीवन के मध्य काल अर्थात् ३० वर्ष की आयु के उपरान्त ही होगी।

यदि यह रेखायें स्वच्छ, सुन्दर, गहरी और स्पष्ट होती हैं तो सन्तान निरोग और सुख देने वाली होती है। ऐसी सन्तानें माता पिता तथा अन्य सम्बन्धियों का आदर करेंगी और घर में सुख चैन की वर्षा करेंगी और यदि यह रेखायें टेढ़ी मेढ़ी या लहरदार, अस्वच्छ और अस्पष्ट हों तो वह रोगी होंगी और माता पिता तथा अन्य सगे सम्बन्धियों के साथ बुरा बर्ताव करेंगी।

यदि किसी सन्तान रेखा के प्रारम्भ में द्वीप पड़ा है मगर वह आगे जाकर समाप्त हो गया तथा रेखा अपनी पूर्व स्थिति में आकर पुनः स्वच्छ होकर आगे जाती है तो उसका अर्थ है कि सन्तान पहले रोगी हो सकती है मगर आगे जाकर वह निरोगी और माता पिता को सुख देने वाली होगी। (चित्र न० ३)

यदि किसी सन्तान रेखा के अन्त में द्वीप का चिन्ह पड़ा है। तो उसका अर्थ है कि ऐसी सन्तान माता पिता को रोगीवस्था में दुःखी करेगी और अन्तमें मर जायेगी सन्तान की

सुन्दर, स्पष्ट, और सीधी रेखायें चाहे वह विवाह रेखा पर हों या हृदय रेखा पर हों पुत्र होने की सूचक होती है। कुछ कम गहरी, झुकी हुयी रेखायें कन्याओं की संख्या की सूचक होती हैं। जैसे किसी प्राणी के हाथ में विवाह रेखा या हृदय रेखा पर कुल मिलाकर सात रेखायें हैं। इनमें से चार तो सीधी, सुन्दर और गहरी हैं वह यह सिद्ध करती हैं कि प्राणी को चार पुत्रों का योग है। तीन रेखायें उथली, झुकी हुई हैं वह यह सूचना देती हैं कि प्राणी के तीन कन्यायें जन्म लेंगी। (चित्र न० २)

साधारणतया देखा गया है कि यह रेखायें समान लम्बी नहीं होती वरन छोटी बड़ी होती हैं। उनसे स्पष्ट होता है कि लम्बी और साफ रेखायें यह व्यक्त करती हैं कि सन्तान माता पिता को सुख देने वाली होगी। जो रेखायें छोटी और दोष

युक्त होती हैं वह यह सिद्ध करती है कि सन्तान माता पिता को कम सुख देगी वरन् दुःखी ही करती रहेंगी।

प्रायः बहुत से हाथों में देखा गया है कि हृदय रेखा से उठने वाली सन्तान रेखायें विवाह रेखा को जाकर छूती हैं। ऐसी दशा में ऐसी रेखा वाले प्राणियों के हृदय में सन्तान के प्रति विशेष प्रेम पाया जाता है।

यदि सन्तान रेखायें बुध नक्षत्र के ग्रह पर साफ दिखाई दें तो प्राणी के शीघ्र ही सन्तान होती है और यदि वह अन्दर की ओर दिखायीं दें तो सन्तान जीवन के मध्य काल अर्थात् ३० वर्ष की आयु के उपरान्त ही होगी।

यदि यह रेखायें स्वच्छ, सुन्दर, गहरी और स्पष्ट होती हैं तो सन्तान निरोग और सुख देने वाली होती है। ऐसी सन्तानें माता पिता तथा अन्य सम्बन्धियों का आदर करेंगी और घर में सुख चैन की वर्षा करेंगी और यदि यह रेखायें टेढ़ी मेढ़ी या लहरदार, अस्वच्छ और अस्पष्ट हों तो वह रोगी होंगी और माता पिता तथा अन्य सगे सम्बन्धियों के साथ बुरा वर्ताव करेंगी।

यदि किसी सन्तान रेखा के प्रारम्भ में द्वीप पड़ा है मगर वह आगे जाकर समाप्त हो गया तथा रेखा अपनी पूर्व स्थिति में आकर पुनः स्वच्छ होकर आगे जाती है तो उसका अर्थ है कि सन्तान पहले रोगी हो सकती है मगर आगे जाकर वह निरोगी और माता पिता को सुख देने वाली होगी। (चित्र न० ३)

यदि किसी सन्तान रेखा के अन्त में द्वीप का चिन्ह पड़ा है। तो उसका अर्थ है कि ऐसी सन्तान माता पिता को रोगीवस्था में दुःखी करेगी और अन्तमें मर जायेगी सन्तान की

मृत्यु का भी दुःख माता पिता को सहन करना होगा।
(चित्र न० ३)

सन्तान रेखाओं के विषय में कोई भी बात निश्चय पूर्वक नहीं कही जा सकती। इसका उत्तर देते समय चाहिये कि खूब सोच विचार कर और रेखाओं आदि के दोष, गुणों को ध्यान में रखने के बाद तथा तथा अपने अनुभव को भी काम में लाते हुये देना चाहिये।

पाश्चात्य विद्वानों मत है—

"It is very difficult to judge the number of children throug the language of lines only. The lines indicating children are so insignificant and tidious that it takes lot of labour and use of one's common sense to arrive at certain result. Generally it has been noticed that these lines very seldom appear in masculine hands. Females possess these lines and they also eaferly wish to know about them.

अर्थात् "केवल रेखाओं के द्वारा ही यह बताना बहुत कठिन है कि प्राणी के कितनी सन्तानें होंगी। यह रेखायें इतनी जटिल और सूक्ष्म होती हैं कि इनको देखना, पढ़ना तथा अपनी योग्यता से किसी विशेष परिणाम तक पहुँचना आसान नहीं होता है। आम तौर से यह रेखायें पुरुषों के हाथ में कम पायी जाती हैं। हयरेखाये स्त्रियों के हाथ में होती हैं और वह इनके विषय में जानने की उत्कंठा रखती हैं।"

सन्तान रेखाओं के विषय में अपनी ही बुद्धि काम में लेनी चाहिये।

दसवां अध्याय

मणिबन्ध रेखायें

प्रायः पुरुषों के हाथ में तीन और स्त्रियों के हाथ में दो रेखायें जो हथेली के नीचे कलाई को घेरती हैं उन्हें मणिबन्ध रेखायें कहते हैं। पुरुषों के हाथ की तीन रेखाओं को १, धन रेखा, २, व्यापार रेखा, ३ धर्म रेखा कहलाती है। स्त्रियों की १, सौभाग्य रेखा और २, सन्तान-सुख रेखा कहलाती है।

जिस पुरुष के हाथ में तीनों रेखायें होती हैं वह उत्तम है। यदि केवल दो रेखा हैं तो मध्यम है, और यदि एक ही रेखा है तो निकृष्ट है। यदि स्त्री के हाथ में दो रेखायें हैं तो पूर्ण सौभाग्य भोगती है और सन्तान का सुख प्राप्त करती है। जिसके हाथ में केवल एक ही रेखा होती है वह सौभाग्य सुख तो प्राप्त करती है परन्तु सन्तान सुख उसके प्रारब्ध में नहीं होता है। (चित्र न० १)

जिस प्राणी की मणिबन्ध रेखायें मजबूत, चिकनी, और स्पष्ट होती हैं वह शुभ फल देने वाली होती हैं। जिसकी मणि-बन्ध रेखायें अस्पष्ट हों और स्थान २ पर कटी हुयी हों वह दरिद्रता की सूचक होती हैं। (चित्र न० २)
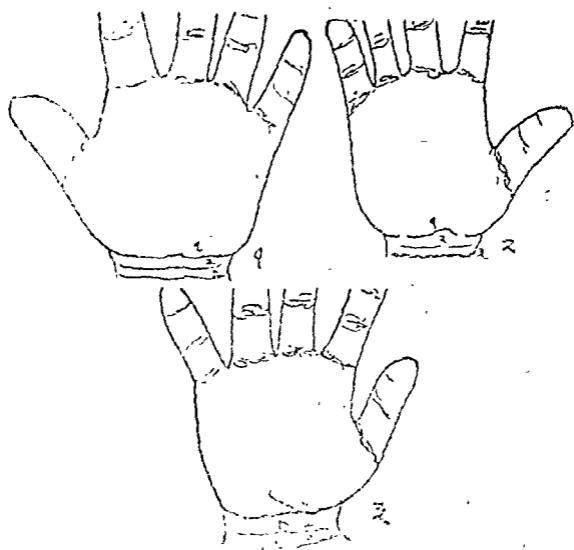
स्वच्छ और पूर्ण रेखायें तन्दुरुस्ती, शांति और भाग्य-धान होने की सूचक होती हैं।

जंजीरदार मणिबन्ध गरीबी और लड़खड़ाता हुआ जीवन व्यतीत करने की सूचना (चित्र न० २ रेखा न० ३)

मणिबन्ध के ऊपर त्रिकोण हो या कोण हो तो वृद्धावस्था में सम्मान के साथ धन प्राप्त होता है। (चित्र न० ३ रेखा २)

यदि तारा का चिन्ह है तो अजनबी मनुष्य से धन प्राप्त सूचना होती है। (चित्र ३ रेखा २ पर तारा)

यदि एक रेखा यहीं से निकल कर गुरु स्थान तक जाये तो विशेष उम्र वाले के साथ विवाह सम्बन्ध होने का सूचना

है। यदि सूर्य स्थान को जावे तो किसी प्रकार धनी पुरुष की विशेष कृपा होने का लक्षण है। यदि एक रेखा बुद्ध के स्थान को जावे तो एकाएक धन प्राप्त करने की सूचना है।

मणिबन्ध से आयु का भी ज्ञान होता है। हर रेखा ३० वर्ष की आयु की सूचना है। यदि तीनों रेखा पूर्णरूप से स्वच्छ हों तो ६० वर्ष के लगभग आयुष्मान होने का लक्षण है। यदि चार मणिबन्ध रेखा हों तो २० वर्ष की आयु होती है। मध्य में कोई खण्डित हो तो आधी या चौथाई आदि हो तो अनुमान से अवस्था जानी जाती है। जैसे आधी से १५ डेढ़ से ४५ वर्ष आयु इत्यादि।

मणिबन्ध रेखा से यदि रेखायें निकलकर चंद्र स्थान को जावे तो समुद्र यात्रा होने की सूचना है। यदि यह रेखायें जीवन रेखा में समाप्त हो तो यात्रा में मौत होना बताती है।

यदि प्रथम मणिबन्ध रेखासे ऊपरको उठकर वृताकार होतो आंतरिक कमजोरी का लक्षण है। स्त्री के हाथमें हो तो गर्भाशय में बाधा और समय से पहिले गर्भ खण्डन होना बतलाती है। तीन से अधिक रेखायें हों और शनि के पर्वत के ठीक नीचे टूटी हुई हो तो शेखी और झुठाई उत्पन्न करती हैं।

यदि मणिबन्ध के ऊपर गुणा का चिन्ह हो तो मुसीबतों का सामना होता है। परन्तु जीवन आराम और शान्ति से समाप्त होता है।

पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि —

"The Rascettes or Bracellets are the lines wlich cross the wrist below the palm. In many hands, they are three in number, but in others there may be oney two or even one. The first

Rrrcttote, if deep and clear will indicate rcssrsion of strong laws ti tutiow. If the Rasoette is poorly marked, broad, and shallow or chainea the constitution will be weak."

अर्थात् "मणिवन्ध या दस्तबन्द रेखायें हथेली से नीचे कलाई पर होती हैं। प्रायः यह तीन होती हैं, कुछ में केवल दो होती हैं और एक भी होती हैं। पहली मणिवन्ध रेखा यदि गहरी, स्पष्ट होती है तो वह स्वस्थ गठे हुये शरीर की सूचक है। यदि मणिवन्ध अस्पष्ट, चौड़ी, उथली या लहदार होती है तो शरीर कमजोर गठन वाला होता है।"

"A Straight line from the Rasoette, rising high to the mount of mercury indicates a sudden and unexpeoted inorease in the finances a similer line rising to the mount of Saturn will in dicate return of a dear one after a long interval."

अर्थात् "मणिवन्ध से जब कोई एक रेखा उठ कर मंगल के स्थान को जाती है तो अनायास धन प्राप्ति का योग होता है। इसी प्रकार यदि शनि के क्षेत्र को छूती है तो उसका अर्थ होता है कि दीर्घकाल का बिछुड़ा हुआ प्रेमी पुनः आकर मिलेगा।" (चित्र ३ रेखा—१-१)

ग्यारहवां परिच्छेद

फुटकर रेखायें

शुक्र मुद्रिकाः—यह रेखा तर्जनी और मध्यमा उंगली के मध्य से प्रारम्भ होकर कनिष्ठा और अनामिका उंगली के मध्य

वाले भाग में जाकर समाप्त हो जाती है। (देखो चित्र न० १ रेखा न० १)

इस रेखा का प्राणी की काम शक्ति पर गहरा असर पड़ता है। इस रेखा वाला प्राणी अधिक कामी होता है। उसके प्रभाव के कारण मनुष्य चाहे जितना क्यों न बचे मगर अपनी रुचि काम क्रीणा से ही नहीं हटा पाता है। उसके विचार चचंल हो जाते हैं। काम शक्ति के कारण वह स्त्रियों अर्थात् पुरुषों की ओर अधिक ध्यान देता है।

अन्य रेखाओं के योग द्वारा उसमें जो भी शक्ति ह्रास या ओज आता है उसका नाश हो जाता है। यह तो हम सब ही जानते हैं कि अत्याधिक काम शक्ति प्राणी की विचार शृंखला को तोड़ देती है। काम पिपासा के लिये प्राणी कुछ भी करने में नहीं चूकता है।

यदि कही दुर्भाग्य से विवाह रेखा शुक्र रेखा को छू लेती है तो विवाहित जीवन नरक बन जाता है। दम्पति में काम शक्ति पर विवाद होता है और नित्य प्रति की खटपट जीवन में एक प्रकार का विष घोल देती है जिसके कारण प्राणी दुःखों से कातर हो उठता है। दिमागी कमजोरी के कारण प्रायः प्राणी मृगी रोग, हिस्टीरिया आदि का शिकार भी हो जाता है।

यदि शुक्र मुद्रिका का रङ्ग फीका होता है तो ऐसा प्राणी व्यभिचारी होता है और व्यभिचार द्वारा ही अपनी जिविका प्राप्त करता है। जैसे वेश्या आदि।

चाहे किसी भी दशा में शुक्र मुद्रिका क्यों न हो उसका फल हमेशा बुरा ही होता है।

शनि मुद्रिका

मध्यमा उंगली के नीचे शनि के क्षेत्र को गोलाकार में घेरती हुई रेखा को शनि मुद्रिका कहते है। (देखो चित्र न० १ रेखा न० २)

क्योंकि यह रेखा शनि ग्रह को काटती है इसके कारण इसका फल नेष्ट है। ऐसी रेखा वाला प्राणी दुर्भाग्य पूर्ण होता है। जीवन में कहीं भी वह सफलता प्राप्त नहीं कर पाता। इसका मूल कारण यह होता है कि अनेकों व्याधायें उसको घेरे रहती हैं, जिसके कारण उसका मन हमेशा चचंल बना रहता है और वह किसी भी कार्य को एकाग्र चित्र होकर नहीं कर पाता है।

जब कार्य एकाग्रचित्त होकर नहीं किया जाता है तो उसमें सफलता का प्रश्न ही नहीं उठता है। जीवन भर उसे असफलताओं ही में बिताना पड़ता है।

बृहस्पति मुद्रिका

शनि मुद्रिका की भांति ही तर्जनी के निचले भाग में गुरू ग्रह के क्षेत्र को अर्ध चन्द्राकार अवस्था में यह रेखा घेरती है। (देखो आकृति न० १ रेखा न० ३)

यह रेखा बहुत कम पायी जाती है। यह रेखा प्राणी को मोक्ष की ओर ध्यान दिलाती है। ऐसी रेखा वाले प्राणी जीवन के बाद लोक परलोक की सोचते हैं। वह धर्म चिन्तन में समय देते हैं, तप, यज्ञ आदि में अपना ध्यान लगाते हैं और हर प्रकार मोक्ष की चेष्टा करते हैं।

अक्सर यह भी देखा गया गया है ऐसी रेखा वाले प्राणी गुप्त विद्याओं, भूत विद्या, प्रेत विद्या, मिस्मैरेजिम, जादूगरी,

आदि विद्याओं में अधिक दिलचस्पी रखते हैं और उनको सीखते हैं तथा सिद्ध हस्तता प्राप्त करते हैं।

निकृष्ट रेखा

यह रेखा चन्द्र के स्थान से प्रारम्भ होकर शुक्र के स्थान की ओर जाती है। यह नीचे की ओर धनुषाकार होती है। और जीवन रेखा आदि रेखाओं को काटती है। (देखो आकृति न० १ रेखा न० ४)

जिस प्रकार के इसके गुण होते हैं वह तो इसके नाम से ही प्रगट होते हैं। ऐसी रेखा वाला प्राणी नशेबाज होता है। नशे के पीछे पागल रहने वाला आदमी काम पिपासा शान्त करने के लिये बड़े से बड़ा दुराचार करता है। नशे के लिये धन की आवश्यकता होती है तो वह चोरी करता है, बेईमानी करता है और जब नशे में मदहोश हो जाता है तो मारपीट, फौजदारी करता है।

इन तमाम कामों का अन्त होता है। मानसिक क्लेश, समाज में मान हानि, और अदालत में जेल।

बारहवां परिच्छेद

रेखाओं का महत्व

अनुभवों द्वारा यह देखा गया है कि विभिन्न रेखा वाले प्राणी अपने एक विशेष व्यवसाय में सफल होते हैं। उनको सफलता किस रेखा के लक्षण से मिली है उसका सारांश हम नीचे दे रहे हैं।

१. चिकित्सक

जिसके हाथ में बुध का पर्वत उठा हो, अँगुली लम्बी हों और सूर्य की रेखा साफ हो तो चिकित्सा करने वाला होता है।

छोटी छोटी तीन खड़ी रेखायें हों, अँगुलिया लम्बी हों और और प्रथम गाँठें पुष्ट हों शुक्र, पर्वत उत्तम हों, तो वैद्य हकीम डाक्टर होवे।

२. जानवरों का वैद्य

हथेली कड़ी अँगुलियों के सिरे मोटे हों। पर्व अच्छे सुन्दर हो।

३. धाय

हाथ मजबूत पतया या चपटा, बुध पर रेखायें हों शुक्र चन्द्र के पर्वत उठे हुए हों।

४. रसायन-वेत्ता अर्थात कीमियागर

दो या तीन छोटी खड़ी रेखा बुध के पर्वत पर होवें।

५. मन्त्रज्ञ

यदि एक सीधी रेखा कनिष्ठा के तमाम पोरों पर दौड़ी हो, त्रिभुवन या सफेद दाग मस्तक रेखा पर बुध के पर्वत के नीचे हो।

६. रङ्ग करने वाला

शुक्र और बुध का पर्वत उठा हो।

७. नाटक में दुखान्त पार्ट लेने वाला

यदि मस्तक रेखा की शाखायें बुध पर्वत की ओर गई हों।

यदि भाग्य रेखा के आखीर में दो विभाग हों, शनि की अँगुली प्रधान हो और पर्वत सूर्य की तरफ झुका हो।

८. नाटक में सुखान्त पार्ट लेने वाला

जब मस्तक रेखा बुध की तरफ खड़ी हो, और मस्तक रेखा जीवन रेखा से जुड़ी हो, बुध का पर्वत ऊँचा हो और बुध की उंगुली का नख छोटा हो।

९. सूत्र धार

सुन्दर, गोल, पतली, चपटी, सूर्य की उँगुली हो और अंगुलियां करीब करीब एकसी हों और अलग हों, लम्बी हों अंगूठा बाहर को निकला हो।

१०. जुआरी

अनामिका मध्यमा के बराबर हो और सूर्य रेखा साफ हो या मस्तक रेखा नीचे को मुड़ी हो।

११. व्यापारी

एक शाखा मस्तक रेखा के सिर से बुध के पर्वत पर गई हो।

एक रेखा भाग्य रेखा से बुध के पर्वत पर गई हो।
एक रेखा सूर्य पर्वत पर जीवन रेखा से गई हो।

१२. दलाल या ठेकेदार

जब एक शाखा जीवन रेखा से सूर्य के पर्वत पर जाये।

१३. व्यापारी जूट लकड़ी और खान के पदार्थ

जीवन रेखा से एक शाखा उठे हुये शनि पर्वत पर जावे।

१४. धर्माचार्य

गुरु का पर्वत उठा हो और वहीं एक खड़ी रेखा गुरु शनि के बीच में लम्बी-हृदय रेखा गई हो।

१५. ब्रह्मज्ञानी, वेदान्ती

गुरु की अंगुली प्रधान हो, चन्द्र का पर्वत पुष्ट हो, बुध की अँगुली नुकीली हो, मस्तक-रेखा लम्बी ढलवां हो।

१६. गंधी

बुध और शुक्र का पर्वत उठा हो।

१७. दर्जी

लम्बी अँगुलियां और सूर्य की अँगुली का पहला पोर अच्छा हो।

१८. शराब बेचने वाला

बुध और शुक्र के पर्वत उठे हों।

१९, हस्त रेखा ज्ञाता तथा ज्योतिषी

स्वच्छ सोलोमनरिंग हो।
बुध, शुक्र, शनि के पर्वत उठे हो।

२०. ज्योतिषी

जिसके हाथ की अँगुलियां चौकोर तथा पोर लम्बी हों। बुध शनि का स्थान ऊँचा और चन्द्र और रवि के स्थान दोष रहित, युग्म, मातृ और उर्ध्व रेखा सबल हो तथा त्रिकोण इत्यादि शुभ रेखाओं से युक्त हाथ वाला ज्योतिषी होता है।

२१. अन्तर्ज्ञानी व दिव्यदृष्टि वाला

अँगुलियाँ अलग अलग हों।
बुध का पर्वत उठा हो तो उसकी उँगुली नुकली हों।
गुरु की उँगुली नुकली हों।
आन्तरिक बुद्धि की रेखा हो।

२२. सेवक

उँगुली छोटी हों।
भाग्य रेखा गायब हों।
हथेली उँगुलीयों से लम्बी हों।

२३. राजा

सूर्य की उँगुली लम्बी, सीधी तथा प्रथम पोर लम्बा हो।
मस्तक रेखा सीधी और शनि की उँगुली लम्बी हो।
शुक्र की उँगुली नुकीली हो, गुरु की रेखा लम्बी तथा गुरु का पर्वत उठा हो तो रणशूर होता है।

२४. राज दूत

गुरु का पर्वत ऊंचा, मस्तक-रेखा द्विशाखी हो।
बुध की उँगुली लम्बी नुकीली हो और नख चमकते हों।

२५, सेनापति

मङ्गल शनि का पर्वत उठा हो उँगुली कोमल हो तो सेनापति होता है।

मङ्गल का पर्वत उठा हो बुध की उंगुली छोटी हो तो सैनिक होता है।

२६. कारीगर

गुरु का पर्वत ऊंचा हो, सूर्य की उंगली सीधी लम्बी और उच्च पर्वत हो, सूर्य रेखा उत्तम हो, चन्द्र पर्वत उठा हो, गुरु व शनि की उंगलियों में कुछ फर्क होवे।

२७. गवैया

सूर्य रेखा और सूर्य की उंगली नुकीली हो और शुक्र पर्वत पुष्ट होवे।

२८. गाने बजाने वाला

स्वच्छ सूर्य रेखा हो और शुक्र के गुण हों, शुक्र पर्वत ऊंचा हो उंगलियां कोमल हों, बड़े हाथ वाला छोटा बाजा और छोटे हाथ वाला बड़े बाजे का शौक करता है।

२९. अभिनेता

उंगली और अंगूठे का अग्रभाग नुकीली हो और शुक्र पर्वत का उठा हो तो अभिनेता होता है।

३०. हुंडीवाला

शनि व सूर्य की उंगली करीब २ बराबर हो हाथ गोल पतला, चपटा हो और मस्तक रेखा सीधी हो।

३१. खेती करने वाला

लम्बी मोटी उंगली सूर्य शुक्र और चन्द्र पर्वत उठे होवें, हथेली चौड़ी हो शनि की उंगली लम्बी और दूसरा पोर लम्बा होवे।

३२. जादूगर

चन्द्र पर्वत पर त्रिभुज हो या शनि का पर्वत उठा हो और उस पर भी त्रिभुज होवे।

३३. गणितज्ञ

उंगलियां चौकोनी लम्बी दोहरी गांठें और पहला दूसरा पोर पुष्ठ हो हथेली पतली हो और मस्तक रेखा सीधी लम्बी शनि की उंगली भारी हो और दूसरा पोर ज्यादा लम्बा हो या शुक्र के पर्वत पर त्रिभुज होवे।

३४. तत्वज्ञानी

बुध की उंगली इतनी लम्बी-हो कि अनामिका उंगली के नख तक होवे।

३५. साहित्यक

अच्छी मजबूत बुध की उंगली हो और प्रथम पोर लम्बा हो और मस्तक रेखा अच्छी होवे, उंगलियां चौकोर और सिरे मुलायम होवें।

साहित्य—समालोचक का नख छोटा गुरु की उंगली प्रधान और चन्द्र-पर्वत बहुत कम पुष्ट होवे।

३६. उपदेशक

गुरु की उंगली प्रधान हो और अँगूठा लम्बा तथा उत्तम होवे।

३७. हुनरमंद

सूर्य की उँगली नुकीली हो या सूर्य के पर्वत पर नक्षत्र होवे।

३८. चित्रकार

चन्द्र मङ्गल छुट कर मणि वन्ध रेखा को दबा रहा हो मस्तक रेखा लम्बी सूर्य की उंगली मोटी हो तो चित्रकार होता है।

३९. वकील

मस्तक रेखा लम्बी शाखा युक्त सिरे पर हो, मस्तक रेखा जीवन रेखा अलहिदा हो, बुध का पर्वत उत्तम होवे उंगली अंगूठा लम्बा होवे।

४०–मुखतार

शनि की उँगली लम्बी हो और गुरु की उंगली सीधी होवे तो किसी की तरफ से मुखतार होता है।

४१–अधिकारी

तर्जनी और कनिष्टका उंगली अति उत्तम हो और मङ्गल का मैदान ज्यादा ऊँचा न होवे।

४२–बाबू

सूर्य का पर्वत अधिक उठा हो और अनामिका उंगली के नीचे को, हटा हुआ हो।

४३–लेखक

सुन्दर मस्तक रेखा हो, या शुक्र के कण हों, सूर्य रेखा दोनों हाथ में उत्तम हो पर्वत भी ऊँचा होवे और मस्तक रेखा शाखा दार चन्द्र पर्वत पर झुकी हो।

४४–शिक्षक

गुरु सूर्य बुध शनि के पर्वत उठे हों, तो शिक्षक होता है उंगलियां लम्बी हो और आगे का हिस्सा मोटा हो, मध्यमा का दूसरा पर्वत लम्बा हो और सूर्य की रेखा अच्छी होवे।

यदि शुक्र का पर्वत उठा हो तो गाना बजाना रङ्गसाजी माली, घड़ीसाजी, जौहरी, बाजों को बनाने इत्यादि का कार्य करेगा।

जैसे लड़कों के हाथ देखकर पता चलता है वैसे लड़कियों का भी हाथ देखकर निश्चय किया जा सकता है और फल कहने में सफलता प्राप्त होगी।

४५–ऐडीटर

नाखून लम्बे होते हैं और चौड़े कम होते हैं।

एडीटर के हाथ में शुक्र के कण होते हैं।

४६–व्याख्यानदाता

लम्बी मस्तक रेखा।

बुध के पर्वत पर त्रिभुज।

बुध की उंगली लम्बी होती है, अनामिका उंगली के नाखून तक पहुँचती है।

४७--जज, न्यायाधीश

हथेली बड़ी, उँगलियों की गांठें लम्बी, गुरु की उँगली सीधी और बुध का पहला पोर लम्बा होता है।

४८--मजिस्ट्रेट

लम्बी गाँठदार उँगलियाँ, बुध का पहला पोर लम्बा और मङ्गल का पर्वत उत्तम होता है।

४९--बैरिस्टर

मस्तक रेखा लम्बी शाखायुक्त हो अथवा मस्तक रेखा जीवन रेखा से जुदा हो, सूर्य-रेखा लम्बी होवे ।

५०--मल्लाह

चन्द्र पर्वत ऊँचा हो, पहला पोर अँगूठे का उत्तम हो, हथेली चौड़ी होवे।

५१--सैनिक

मङ्गल का पर्वत बुध के पर्वत के नीचे अधिक उठा हो और वहीं पर त्रिभुज होवे ।

उंगली अक्सर छोटी, उंगलियाँ गोल, पतली चपटी वा चौरस हों, गुरु की उँगली लंबी व प्रधान होवे, अँगूठा भारी हो बुध का पर्वत पुष्ट होवे ।

फौजी सिपाही के हृदय की रेखा छोटी होती है और शनि का पर्वत प्रधान होता है ।

५२ इन्जीनियर

स्वच्छ मस्तक रेखा हो और मङ्गल, सूर्य व बुध के पर्वत उठे हों।

५३ शस्त्र क्रिया वाला

सुन्दर सूर्य रेखा का होना ।

कुछ लम्बी खड़ी रेखा का बुध पर्वत पर होना। मङ्गल पर्वत पर बुध के पर्वत के त्रिभुज होवे ।

मङ्गल और बुध का पर्वत जोरदार हो या उठा हो, उंगलियाँ लंबी पतली और चपटी और दूसरी गांठें मजबूत हों।

५४—वैद्य

उत्तम मस्तक रेखा और सुन्दर सूर्य रेखा हो, कुछ रेखायें बुध के तीसरे पर्व से दूसरे पर्व पर हों, बुध का पर्वत अच्छा हो और उस पर छोटी रेखा हो।

अन्य रेखायें और उनका फल

१. अनायास धन पाना

चन्द्र स्थान से कोई एक टेढ़ी रेखा लाल रङ्ग की बुध स्थान को जाय तो गढ़ा हुआ या किसी खान इत्यादि से विशेष धन प्राप्त होता है।

कोई रेखा मस्तक रेखा से निकल कर सूर्य के पर्वत पर आवे तो अकस्मात् धन मिलता है।

२. शराबी

चन्द्र पर्व अधिक उठा हो तो मद्यपी होता है।

जीवन रेखा में से कोई रेखा शुक्र पर्वत की ओर जावे तो मनुष्य ऊंचे स्थान पर से गिरता है।

३. सांसारिक वासनाओं से मुक्ति

शुक्र पर्वत पर कोई चिन्ह न हो तो मनुष्य वासना विहीन होता है।

४. नीतिवान्

मस्तक रेखा सीधी और स्पष्ट होवे, और साथ ही अँगूठा सीधा और उठा हुआ होवे तो मनुष्य न्याय-प्रिय होता है।

५. वाल्यावस्था में माता पिता की मृत्यु

भाग्य रेखा के शुरू में त्रिकोण या द्वीप हो तो माता या पिता में से किसी की मृत्यु होती है।

६. अनुचित प्रेम

दोनों हाथों में हृदय रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो तो नाजायज प्रेम का चिन्ह है जो प्रायः कष्टदायक होता है।

७. रिश्तेदार या निकट सम्बन्धी से प्यार

हृदय रेखा पर वुध पर्वत के नीचे द्वीप का चिन्ह हो तो किसी सम्वन्धी से प्रेम होना वताती है।

८. मुकदमेबाज़ी में जायदाद का बर्बाद होना

दोनों हाथों में मंगल पर्वत पर काला धब्बा, तिल का होना या अन्य चिन्ह हो, तो मुकद्मावाज़ी में जायदाद वर्बाद होती है।

९. अकस्मात् धन की हानि

बुध पर्वत पर काला दाग (तिल) हो तो एकाएक धन की हानि होती है।

१०. विवाह में धन प्राप्त

गुरू के पर्वत पर गुणक या तारा का चिन्ह हो तो व्याह में धन मिलता है और व्याह सुखमय होता है।

११. प्रेम में सुख

गुरु के पर्वत पर गुणक या तारे का चिन्ह हो और स्त्री के हाथ में मंगलरेखा हो, तो प्रेम में सुख होता है।

१२. दीर्घायु

जीवन रेखा गहरी, लम्बी, स्वच्छ गुलाबी रंग की हो और तीनों, मणिबन्ध रेखायें अच्छी तरह विकसित हों तो मनुष्य दीर्घायु होता है ।

१३. शान्त जीवन

सुन्दर भाग्यरेखा गुरू और शनि पर्वत के बीच में पूर्णरूप से हो तो जीवन शान्तप्रिय होता है ।

१४. रोजगार में लाभ और यश

यदि अनामिका उंगली से कनिष्ठा उंगली में ज्यादा ऊर्ध्व रेखा हो तो रोजगार से लाभ तथा बड़े ही यश वाला मनुष्य होता है ।

१५–जेल

यदि शुक्र और मंगल के पर्वत पर चतुष्कोण हो या शनि के स्थानमें जंजीर हो या उंगलीमें चौथा पर्व हो तो जेल होती है ।

१६–प्रेम हो पर विवाह न हो

प्रभाविक रेखा चन्द्र पर्वत पर हो और भाग्यरेखा में न मिले तो प्रेम होता है परन्तु व्याह नहीं होता है ।

१७–धन नाश

लगातार धन हानि के लक्षण ये हैं । मंगल का मैदान खोखला, सूर्य रेखा आड़ी रेखा से कटी हो या कई जगह टूटी हो या द्वीप सूर्य रेखा पर हो, स्वास्थ्य रेखा पर द्वीप हो या भाग्य रेखा पर द्वीप हो या जीवन रेखा से रेखायें नीचे की ओर गई हों तो धन नाश होता है ।

१८—प्रेम में जीवन बर्बाद होने का लक्षण

भाग्य रेखा टूटी या नक्षत्र वाली हृदय रेखा में शनि के पर्वत के नीचे मिले, लहरदार मस्तक रेखा हृदय रेखा के आखिर में मिले, दुर्बल या नक्षत्रयुक्त भाग्य रेखा या सूर्य रेखा हो, या दो हृदय रेखा हों।

१९—अन्य स्त्रियों से प्रेम

अँगूठे की जड़ और पितृ रेखा के भीतर जितनी आड़ी रेखायें हो उतनी स्त्रियों से कष्ट होगा और नाजायज प्रेम की सूचना है।

२०—खूनी के लक्षण

मंगल का पर्वत उठा हो, उस पर तारा का चिन्ह हो। शनि के नीचे मस्तक रेखा पर नीले रंग की रेखा होवे।

२१—शस्त्र से मृत्यु

मध्यमा उँगली के तीसरे पोर पर नक्षत्र हो तो शस्त्र से मृत्यु होती है।

२२—मृत्यु की सजा

तर्जनी उंगली से रेखा निकल कर यदि अंगुष्ट से प्रथम सन्धि के साथ जाकर मिले तो कसूर साबित होने पर मृत्यु की सजा होती है।

२३—धर्म की ओर रुचि

गुरु की उँगली सीधी नुकीली हो और बुध की उँगली का प्रथम पोर लम्बा हो, तो धर्म की ओर मनुष्य की प्रवृति होती है। धर्मिष्ठ होता है।

२४—चोर या चोर कर्म की ओर प्रवृत्ति

कनिष्ठा उँगली गठीली हो और उस पर गोलाकार चिन्ह हो तथा उँगलियों के सिरे चपटे हों तो चोरी के कर्म की तरफ प्रवृत्ति होती है।

२५—झूँठ बोलने वाले के लक्षण

चौथी उँगली टेढ़ी,बुधकी ओर उठे चन्द्रपर्वत या रेखाओं से युक्त या बुध के पर्वत पर गुरू का चिन्ह, या गुरू के पर्वत का प्रभाव मस्तक रेखा झुकी हुई और चौड़ी फाँक होवे।

जिसका हाथ बहुत छोटा हो या माँसयुक्त हो या कनिष्ठा उँगली के तीसरे पर्व पर बाँकी टेढ़ी रेखा होकर क्रॉस का चिन्ह हो या बुध का पर्वत ऊँचा उठा होकर कनिष्ठा उँगली की नोंक मोरुमय या मोटी हो या मस्तक रेखा टेढ़ी होकर लालरंग की हो या बुध पर्वत पर तारा का सा चिन्ह हो या कनिष्ठा के जोड़ मोटे हो तो चोर होता है। जितने लक्षण अधिक मिलें, उतने ही प्रमाण से वह चोर होता है।

२६—प्रेम में भोनप्रल

शुक्र और शनि पर्वत के बीच में एक बड़ा द्वीप हो, तो लोभी होता है।

२७—धन का कष्ट

भाग्य रेखा श्रृङ्खलाबद्ध हो, जीवन रेखा में से छोटी २ नीचे जाने वाली रेखायें निकली हों तो आर्थिक कठिनाई होती है।

२८--अति आत्म विश्वास

जीवन रेखा और मस्तक रेखा के शुरू में ज्यादा फ़र्क हो तो आत्म-विश्वासी होता है।

२६--मानसिक शक्ति

बुध की उँगली बड़ी हो और अँगूठे का पहला पोर बड़ा हो और मस्तक रेखा अच्छी हो तो मानसिक शक्ति प्रबल होती है।

३०--पृथ्वी की यात्रा

जीवन रेखा में से छोटी छोटी रेखायें निकल कर शुक्र पर्वत की ओर जावें तो खुश्की पर सफ़र करने वाला होता है।

३१--जल यात्रा

मणिबन्ध रेखा से एक रेखा शुक्र पर्वत की ओर निकल कर चन्द्र पर्वत की ओर जावे तो जलयात्रा नहीं होती है।

३२--भलाई के लिये परिवर्तन

भाग्य रेखा टूटी हो और दूसरी स्वच्छ भाग्य रेखा उसके टूटने से पहले शुरू हो, तो भाग्य में उन्नति होती है।

३३—स्त्री की शुद्ध चरित्रता

स्त्री के हाथ में मंगल रेखा हो तो शुद्ध चरित्र वाली स्त्री होती है । अनामिका के पहले पोर में क्रॉस हो, गुरु का पर्वत ऊँचा हो तो पतिव्रता होती है।

३४-विदेश में मृत्यु

जीवन रेखा अन्त में दो हिस्सों में बंटी हो और उसमें से एक शाखा चन्द्र स्थान पर जावे तो विदेश में मृत्यु होती है।

३५-अकाल मृत्यु

जीवन रेखा दोनों हाथ में छोटी हो या टूटी हो या मस्तक

रेखा तथा हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे आपस में मिली हों तो अकाल मृत्यु होती है।

३६-व्यभिचार का आरोप

दोनों हाथो में भाग्य रेखा पर द्वीप हो तो व्यभिचारी होने का लक्षण है तथा अन्य व्यक्ति से लुभाये जाने का चिन्ह है।

३७-अविवाहित जीवन

विवाह रेखा ऊपर यानी कनिष्ठका उँगली की ओर झुकी हो तो विवाह नहीं होता।

३८. दीर्घायु

जिसकी उँगली में पर्व (पोर) से भिन्न स्थान में पर्व हो और लाल रंग की उँगलियाँ हों, वह मनुष्य दीर्घजीवी होता है।

हस्त परीक्षा द्वारा रोगों का भी पता चलता है, इसके गुप्त भेद भी जाहिर हो जाते हैं। जैसे हाथ में बहुत रेखा हों चन्द्रका पर्वत बहुत नीचा हो, उँगली टेढ़ी हो तो रोगी वहमी होगा और कष्ट कम हो तो उसको अधिक बतलावेगा, अँगूठा छोटा हो, बुध पर्वत न हो, बुध की उंगली कमजोर हो या छोटी हो तो फिर तन्दुरुस्ती का लौटना कठिन होगा। ऐसे रोगी को कितना उत्साहित करो कि अच्छे हो जाओगे, परन्तु वह निरुत्साही वाक्य कहेगा कि मैं अच्छा नहीं हो सकता हूं। यदि बुध का पर्वत उत्तम हो तो शीघ्र अच्छा होगा क्योंकि आशा और प्रसन्नता उसमें रहती है। यह एक साधारण बात है कि जो लोग प्रसन्नचित्त रहते हैं वे तन्दुरुस्त रहते हैं। इसलिये सदा प्रसन्न रहने की ओर वह विश्वास करो कि अच्छा हो जाऊंगा, ऐसी सलाह हमेशा देनी चाहिये।

जिस पुरुष के मंगल का पर्वत उत्तम होता है और अंगूठा मजबूत होता है उसमें साहस अधिक होता है और हर तरह के कष्ट बर्दास्त करता है।

इसके द्वारा वंश-परम्परा की बीमारी का भी पता लग जाता है, जिस रोग का डाक्टर पता नहीं लगा सकते इस विद्या द्वारा वैद्य को रोगों के पता लगाने में सहायता मिल सकती है। इसके द्वारा यह भी मालूम होगा कि बीमार विषयी है अथवा बद परहेज है।

एक हाथ पर रोग का चिन्ह और दूसरे पर न हो तो उसका नतीजा संदेहात्मक समझना चाहिये। जैसे किसी मनुष्य के हाथ में रेखाओं से अल्प मृत्यु से मरने का योग है लेकिन दूसरे हाथ पर न हो तो उसको अनिष्ठ समझना चाहिये, परन्तु मृत्यु न होगी।

किसी मनुष्य की रेखा पर काला बिन्दु हो तो उसकी मृत्यु जहर देने से होगी, लेकिन यदि यह चिन्ह दूसरे हाथ में न हो तो जहर चढ़ जायगा मृत्यु न होगी। जब दोनों हाथ में ऐसा ही चिन्ह हो तभी मरेगा।

१—आँख में रोग

मस्तक रेखा या हृदय रेखा पर सूर्य पर्वत के नीचे द्वीप का या काला दाग या बिन्दु हो तो आँखों में रोग होता है।

२—गले का रोग

गुरु पर्वत के नीचे मस्तक रेखा पर द्वीप हो तो गले में कष्ट होता है।

३—हिस्टीरिया

हथेली नरम हो, जंजीर के समान सूचक रेखायें हों हाथ का बाहरी भाग सिकुड़ा होवे।

४—बदहज़मी

नखों पर धब्बे हों और चन्द्र पर्वत बहुत उठा होवे।

५—बुख़ार

हाथ का मध्य भाग गर्म या शुष्क होवे या अनामिका उंगली के पिछले भाग के किसी पोर पर काला निशान हो।

६—जलन्धर

चन्द्र पर्वत पर नक्षत्र चिन्ह हो।

चन्द्र पर्वत के नीचे का हिस्सा उठा हुआ हो, कई रेखाओं से कटा हुआ हो, उसी जगह एक नक्षत्र हो, तो जलन्धर रोग होगा।

७—फोड़ा फुन्सी

स्वास्थ्य रेखा पर द्वीप हो और मस्तक रेखा घूमी हो।

८—पसली, छाती में शूल

आयु रेखा पर टापू हो और उसमें से शाखा निकलकर गुरु पर्वत पर जावे, तो पेट या पसली में दर्द होवे।

९—रीढ़ का दर्द

आयु की रेखा पर शनि के नीचे टापू होवे।

१०—पागलपन

चन्द्र पर्वत पर क्रॉस हो या मस्तक रेखा लम्बी ढालू हो, शनि का पर्वत न हो या शनि की उंगली टेढ़ी हो।

११—मृगी रोग

उंगली टेढ़ी नोंकीली हो और नीचे के पर्वत दबे हों।

१२—खून की खराबी

लाल नख हों या छोटे अर्धचन्द्र हों।

१३—वंश परम्परागत रोग

आयु रेखा पर यव हो।

१४—आँत का रोग

मुलायम हाथ हों, धब्बेदार नाखून हो या स्वास्थ्य रेखा टूटी हो।

१५—हृदय रोग

हृदय पर काले दाग हों या बड़ा द्वीप हो या पीली दागदार हो।

१६—दाँत में कष्ट

शनि का पर्वत अधिक उठा हो या इस पर्वत पर अधिक रेखायें हों। भाग्य रेखा या स्वास्थ्य रेखा लम्बी लहरदार हो और दूसरे पोर सब उंगलियों में लम्बे हों, तो दाँत में कष्ट होता है।

१७—टाँग में कष्ट

शनि पर्वत अधिक उठा हो, या रेखायें अधिक हों, मस्तक रेखा शनि पर्वत के नीचे टूटी हो।

१८—कमल

बुध का पर्वत अधिक उठा हो या अधिक रेखायें हों। एक दाग या नक्षत्र चन्द्र पर्वत पर हो आरोग्य रेखा पर तारा या टापू हो और वहीं काला दाग हो।

१६—आत्म हत्या करने वाला

जिस व्यक्ति के चन्द्र पर्वत पर क्रास हो और रेखा के अन्त में भी क्रास तो, तो वह आत्म हत्या करता है।

मस्तक रेखा और आरोग्य रेखा मिली हों और जीवन रेखा दूसरी रेखाओं से कटी हो और शनि का पर्वत ऊँचा हो,तो आत्म हत्या करता है।

बीच की उङ्गली का पहिला पर्व लम्बा होकर चौकोर हो और बुध या मङ्गल के पर्वत पर क्रास हो, तो आत्म हत्या करेगा।

उपरोक्त लक्षणोंमें से कोई भी लक्षण दिखाई पड़े तो समझ जाना चाहिये कि यह व्यक्ति आत्म हत्या करेगा या अपने दोष से किसी के द्वारा शस्त्र से मारा जायगा।

२०—फिजूल खर्च वाला

अँगूठे का पहिला पोर पीछे मुड़ा हुआ,उँगलियाँ लचीली हों। अक्सर जीवन और मस्तक रेखायें ज्यादा चौड़ी हों और मस्तक रेखा झुकी हो। सूर्य रेखा और भाग्य रेखा अच्छी न हों और सूर्य रेखा के पर्वत साफ न हों, तो ऐसे चिन्ह वाला फिजूल खर्च होता है।

२१—नाम और कामयाबी

यदि गुरू के पर्वत पर नक्षत्र हो और दूसरे नक्षत्र पर उम्दा सूर्य रेखा के आखीर में एक साफ भाग्य रेखा मणिबन्ध से शनि के पर्वत तक या गुरू के पर्वत तक या सूर्य के पर्वत पर खतम हो। एक साफ रेखा हो या छोटी भगिनी रेखा सूर्य के पर्वत पर हों, मस्तक और हृदय रेखा साफ और लम्बी हो, सिवा शनि

और चन्द्र के अन्य पर्वत उठे हुये हों तो नाम और कामयाबी होती है।

२२—स्त्री जन्म दुःख

मङ्गल का मैदान चन्द्र की तरफ नीचा हो, चन्द्र पर्वत के नीचे का हिस्सा उठा हो, या ज्यादा रेखा हों या एक गुणा का चिन्ह इसी पर्वत पर हो या जीवन रेखा चन्द्र पर्वत के नीचे तक गई हो तो उसको स्त्री जन्म-दुःख होता है।

जीवन रेखा पर नीचे दाग़ हो या स्वास्थ्य रेखा बहुत तङ्ग रंगी हुई अक्सर टूटी हुई या मस्तक रेखा पर काले दाग हों या हृदय रेखा पर काले या नीले दाग हों तो ऐसा व्यक्ति बुखार से ग्रसित होता है।

मणिबन्ध की पहिली रेखा पर नक्षत्र हो या त्रिभुज या कोणके भीतर गुणाका चिन्ह हो तथा एक लंबी दूसरी रेखा मस्तक रेखा की हो तो ऐसे व्यक्ति को धन किसी वसीयत से मिलता है।

यदि पहिली अँगुली अधिक लम्बी हो लम्बे सख्त नाखून अँगूठे का पहिला पोर उभड़ा हो, गुरू का पर्वत अधिक उठा हुआ गहरी सीधी मस्तक रेखा हाथ के इस पोर से उस पोर तक या हृदय रेखा गायब हो. इनमें से कोई लक्षण हो तो वह व्यक्ति निर्दय स्वभाव वाला होता है।

यदि किसी के छोटे पीले नाखून, हृदय रेखा गायब हो या अँगुलीयाँ टेढ़ी खासकर चौथी अँगुली हो तो वह व्यक्ति दगा-होता है।

यदि हथेली पतली मुलायम हो लम्बी गठीली अँगुली भीतर झुकी हुई, मङ्गल, बुध, गुरू के पर्वत नीचे हो।

भाग्य रेखा, ऊर्द्ध रेखा, हाथ के मध्य भाग में होकर शनि के स्थान को स्पर्श करती है इससे भाग्य का ज्ञान होता है।

सूर्य रेखा, विद्या रेखा नीचे से चलकर अनामिका अँगुली की ओर जाती है। उसमें प्रसिद्धी और विद्या का ज्ञान होता है।

शुक्र मुद्रिका या शुक्र के कारण हृदय रेखा के ऊपर शनि और सूर्य के स्थान को घेरती है।

शरीर में तिल होने के शुभ—अशुभ फल

यदि स्त्री की दांये तरफ तिल हो तो उसका पति उससे खुश रहेगा।

माथे पर वांई ओर हो तो वांये पेट या वाहु पर भी तिल होगा। परन्तु फल इसका स्त्री, पुरुष दोनों को अशुभ है। वांई भौं पर हो तो वांई छाती पर भी तिल होगा और दोनों को यात्रा करनी होगी।

दोनों भौं के बीच में हो तो पेट के बीच में होगा और ऐसी स्त्री घमण्डी होगी।

यदि नाक पर हो तो नाभि पर तिल होगा, इससे प्रेम होगा और विवाह अच्छी जगह होगा।

कनपटी पर हो तो कुच पर होगा, दाहिनी ओर हो तो पुरुष प्रसन्न रहे। स्त्री के हो तो रांड होती है। वांई ओर हो तो रोगी होता है।

कान के पास हो तो पेट में भी तिल होगा। यह तिल स्त्री पुरुष दोनों को कष्टदायक है।

नाक के नोंक पर तिल हो तो गुदा पर होगा। पुरुष अल्पायु हो और स्त्री खुदकुशी करती है।

गाल पर हो तो कूल्हे पर होगा; यह तिल दाहिने तरफ हो तो शुभ और वाँये ओर हो तो अशुभ होगा।

होठ पर हो तो गुदा पर तिल होगा। लोभी होगा, फल अशुभ है।

नीचे के होठ पर हो तो घुटने पर तिल होगा, ब्याह दूर होगा।

ठुड्ढी पर हो तो पुट्टे पर तिल होगा या पाँव पर होगा, दांये शुभ बांये से अशुभ है।

तर्जनी अँगुली पर तिल हो तो शत्रु का नाशक, धनी और द्वेष का करने वाला होता है।

मध्यमा में तिल होता है, तो धन देता है और शान्त सुखी करता है।

अनामिका में होतो यशी, पराक्रमी, सुखी और लक्ष्मी विद्या युक्त होता है।

कनिष्टका उँगली पर हो तो धन पुत्र से युक्त अस्थिर चित्त तथा पर धन से धनी होगा।

अँगुष्ठ पर हो तो निपुण और अधिक चलने वाला होता है।

तिल बांये भौं पर हो तो किसी स्त्री द्वारा कष्ट हो और दाहिनी आँख के भीतर हो तो अतितीव्र बुद्धि वाला हो और यदि स्त्री के दाहिनी आँख के कोने हो तो धनी होवे तो चढ़ती जवानी में बहुत कष्ट हो बांये कोर के ऊपर हो तो डूबने का ऊँचे पर से गिरने और चाल चलन पर धब्बा लगेगा।

गर्दन में दाहिनी तरफ हो तो भक्त और बुद्धिमान हो और यदि बांई ओर हो तो पानी में डूबे या ऊँचे से गिरेगा। ठुड्डी पर तिल हो तो जनाखपन बतलाता है।

दाहिने पाँव पर तिल हो तो अच्छा ज्ञानी, स्त्री सुखी, बांये पर अशुभ फल होता है।

जिस स्त्री की नाक के आगे वाले हिस्से में लाल मस्सा हो तो रानी होती है। काला हो तो व्यभिचारिणी और विधवा होती है।

कान कपोल और कण्ठ के वांये तरफ तिल हो तो प्रथम गर्भ में पुत्र होता है। पुरुष के दाहिने तरफ हो तो पुत्र होता है, और अगर वांये तरफ हो तो कन्या प्रथम होवे और कई होती हैं।

जिस स्त्री के वांये गाल पर लाल तिल हो वह सौभाग्य वती धन-पुत्री से सम्पन्न होकर आनन्द से जीवन व्यतीत करती है।

माथे पर तिल हो तो मालिक के काम में अयोग्य होगा और मालिक का रुख देखेगा।

नेत्रमें तिल हो तो परिश्रम करने वाला होगा। कानमें तिल हो तो सवसिद्धी प्राप्त होवे, नाक में तिल हो तो दुष्ट होवे।

गाल पर तिल हो शोभा से युक्त हो होट पर हो तो लोभी, हृदय के उपर तिल हो तो सौभाग्य, वाहु में तिल हो तो धनी, लिङ्ग में तिल हो तो स्त्री में आसक्त हो।

जङ्घा में तिल हो तो रसिक हो, पैर में हो तो राजा की सवारी प्राप्त होवे, हथेली के वीच में हो तो धन वरावर मिले। पीठ कमर गुप्त इन्द्रियों में तिल हो तो वेकार होता है कोई फल नहीं होता।

जिन २ हाथ की रेखाओं पर लाल या काला तिल हो तो, उनके फल को और भी वढ़ाता है। और दुष्ट रेखाओं का फल नहीं होने पाता है।

माथे पर हो तो धनवान हो। मत्थे के दाहिनी तरफ हो तो प्रतिष्टा वढ़ती, है मत्थे के वांई तरफ हो तो परेशानी में उम्र वीते।

ठुड्डी में हो तो स्त्री से मेल न रहे दोनों भौंहों पर—यात्रा होती रहे दाहिनी आँख पर हो स्त्री से प्रेम रहे। बांई आँख पर परेशानी बनी रहे। दाहिने गाल पर—धनवान हो। बांये गाल पर—गरीबी रहे। होठ के ऊपर—ऐय्याश हो। होठ के नीचे—गरीबी बनी रहे। कान पर—अल्पायु हो। गरदन पर—आराम मिले दाहिनी भुजा पर—इज्जत मिले। बांई बाजू—झगडालू हो। नाक पर—यात्रा होती रहें। दाहिनी छाती पर—स्त्री से प्रेम रहे। बांई छाती पर स्त्री से झगड़ा रहे। कमर पर—परेशानी में उम्र बीते। बगल में—दूसरों को हानि पहुँचावे। दाहिनी छाती पर—परेशान रहे। बांई छाती पर—कामी पुरुष हो। छातियों के बीच—आराम से बसर हो। दिल पर—बुद्धिमान हो। पसली पर—डरपोक बना रहे। पेट पर—उत्तम भोजन का इच्छुक। पेट के बीच में—डरपोक हो। पीठ पर—सफर में रहे। दाहिनी हथेली पर—धनवान। दाहिने हाथ पर—खजान्ची हो। बांई हथेली पर—फिजूल खर्च। दाहिने हाथ की पीठ पर—कम खर्च करे। बांये हाथ की पीठ पर—बुद्धिमान हो दायीं हथेली पर—सफर में रहें। दाहिने पैर में—बड़ा बुद्धिमान हो। बांये पैर में-खर्चा ज्यादा करे।

हाथ की शक्ल उतारने की तरकीब

प्रथम एक लकड़ी का मोटा टुकड़ा रंदा करके साफ बनवाओ, जो बीच में कुछ ऊँचा उठा हुआ हो जिसे हाथ पर रखने से अँगूठा अंगुलियां तथा हाथ की रेखाएं साफ साफ आसानी से आ सकें उस लकड़ी के टुकड़े पर कपड़ा ढक कर और उस पर नरम कागज रख कर एक छोटा रूल सरेस याजिलेटाउन का बनवालो। अब उस रूला से एक छोटे चौरस मोटे कांच, लोहा,

रबड़ या लकड़ी, पत्थर के टुकड़े पर छापने की स्याही थोड़ी सी डालकर खूब घोटना जब रूलर से घोटते २ स्याही का चड़ चड़ बोलने का शब्द न हो तब उस रूलर पर लगी स्याही को हाथ पर इस तरह लगना कि उस पर की सब रेखा अंगुली अंगूठा मणीबन्ध आदि समूचे हाथ की छाप पूरी आ सके उसके बाद उपरोक्त लकड़ी के टुकड़े पर हाथ को धीरे से रख कर दबाना कि किसी अवयव की रेखा बाकी न रहे। और पेंसिल से हाथ के चारों तरफ की आकृति या निशान बनाले। और हाथ को धीरे से उठा लेना।

कपूर के धूएँ से छाप लेने की तरकीब

पहिले एक कागज पतला जैसा टाइप राइटिंग में स्तेमाल होता है लेलो, फिर एक टुकड़ा कपूर का एक तस्तरी में रखो। कपूर को जला दो और उस पर कागज को जल्दी जल्दी घुमाओ, जब तक कि खूब काला कागज न हो जावे। ध्यान रखो कि कागज जले नहीं न उस पर पीले धब्बे ज्यादा देर रखने से पड़े। एक छोटी गद्दी बनाओ जो कागज की हो लचीली हो और बहुत मुलायम न हो या एक लकड़ी का मोटा टुकड़ा रंदा करके ऐसा बनाओ जो बीच में उठा हुआ हो। एक छोटी गद्दी जो अंडे की शक्ल की हो कागज की बनी हो उसके ऊपर रखो, इससे हथेली की खाली जगह भर जायगी।

उस कागज को रखो जो कपूर से तैयार किया है। और देखो कि गद्दी कहाँ है। तब इसके ऊपर हाथ को रखो, अंगुलियाँ फैली हों, मुलामियत से लेकिन मजबूती से दबाओ।

हाथ उठाने के पहिले एक नुकीली पेंसिल से हाथ के चारों तरफ निशान लगा दो।

हाथ जल्दी से उठालो ताकि धब्बे कागज पर न पड़ें। ब्लो पाइप या ब्रेपोरीजर से फिक्सेट दूर से छिड़को ताकि छाप जो लिया है पक्का हो जावे।

दोनों हाथों का छाप लो और जब तक छाप साफ न उतरे इसको फिर दुहराओ।

भाग-३

पैर की रेखायें

भाग ३.

पहला अध्याय

शारीरिक लक्षण

भुजायें

जिस पुरुष के बाहु लम्बे, घुटने के नीचे तक हों वह अजानु बाहु होता है। इसके फलस्वरूप वह महापुरुष होगा। जिसके बाहु कमर तक के हों वह क्षुद्र और नीच प्रकृति का होगा जिसके बाहु कटी के नीचे और जांघों के बीच तक के हों वह कार्यशील व्यवसायी और सिद्धि हस्त होगा। जिसके बाहु घुटनों से कुछ ही ऊपर रहें वह समृद्धिशाली होगा, परन्तु लोभी तथा बेईमान होगा। कभी-कभी वह पुरुष हिंसक भी हो सकता है। जिसके बाहु कमर से नीचे और जांघ के मध्य से ऊपर ही तक हों वह दीन होता है।

जिसके बाहु की कुहनी के नीचे का भाग ऊपर के भाग से बड़ा हो, वह कार्यशील और आस्तिक भक्त होता है। जिसका ऊपर का भाग बड़ा हो वह क्षुद्र और दस्यु प्रकृति का होता है। यह मनुष्य अत्यन्त विषयी और विलासी होता है। जिसके दोनों भाग बराबर हों (यह अपने ही उँगलियों से नापे जाते हैं। बाहु का आदि भाग कांख के ऊपर से और अन्तिम भाग पहुँचे तक होता है) वह व्यवसायी एवं परिश्रमी होता है। उसे पैतृक सम्पत्ति प्राप्त नहीं होती है वह अपने बल से ही सब कुछ करेगा।

जिसका हाथ लम्बा और भद्दा होता है वह दरिद्री होता है। जिसका हाथ लम्बा परन्तु देखने में सुडौल होता है और

गठीला होता है वह आलसी होता है। वह अधिक धनी नहीं होता है। जिसका हाथ लंबा मसीला और सुन्दर होता है वह मनुष्य भाग्यशाली होता है। पान के आकार वाला हाथ समृद्धि-शाली और कीर्तिमान होता है। भद्दी यानी बुरी आकृति वाला हाथ नीच का होता है, चौकोर हाथ दस्यु का होता है। गोल हाथ व्यवसायी का होता है, बन्दर की आकृति वाले हाथ यानी जिस की हथेली कलाई की त्वचाके समानान्तर हों वह मनुष्य क्षुद्रबुद्धि और कुविचारी, विषयी तथा मूर्ख होता है, परन्तु आस्तिक होता है।

गहरी-हथेली वाले को सदैव धन लालसा लगी रहती है। जिसकी उँगलियां लम्बी व हथेली छोटी हो वह मनुष्य मूर्ख होता है जिसकी हथेली बड़ी हो वह मनुष्य चतुर और भाग्यवान होता है, जिसके दोनों भाग बराबर हों वह व्यवसायी और धनी होता है।

जिसकी उँगलियाँ मोटी लम्बी और गठीली हों वह परिश्रम करने से सुखी रहेगा वह भाग्यशाली भी होगा। जिसकी उँगलियों के पैरों की कुल रेखायें मिलाकर १५ हों वह नीच, दस्यु और विश्वघातक होता है। ऐसे मनुष्य को मित्र न बनावे। सोलह रेखा वाला मध्यम, पिता के समान। अठारह रेखा वाला सुपुत्र और १६ वाला पिता तथा स्वकुल की कीर्ति को बढ़ाता है और धनवान होता है। बीस रेखा वाला धनी परन्तु क्रूर होता है। इक्कीस बाईस वाला उद्यमी एवं विचारवान होता है। तथा प्रतिभाशाली भी होता है। इससे अधिक वाला दरिद्री तथा मूर्ख होता है। अंगूठे की पौर की रेखाएं नहीं गिनी जाती।

जिसके नखों की बनावट बिलकुल गोल हो और नख छोटे हों वह व्यवसायी होता है। जिसके नख छोटे गोल और

अर्द्ध चन्द्रकार कटे हों वह राज प्रतिनिधि वैद्य अथवा आकाश-वृत्ति को प्राप्त करने वाला होता है।

जिसके नख लम्बे और गोल कटे हों वह आदमी दीन होता है। जिसके लम्बे परन्तु अर्द्ध चन्द्रकार कटे हों वह उद्यमी और विद्वान तथा विश्वासनीय होता है।

जिसकी अंगुलियाँ टेढ़ी और मिलाने पर झिकरी हों वह अच्छा नहीं होता। जिसकी उंगुली हाथ के विचार से गढी हुई सुदृढ़ एवं सुन्दर हो वह अच्छा होता है। जिसका अगूंठा लम्बा और वीच की गांठ की चौड़ाई के आगे की तरफ पतला और गोल हो वह मनुष्य भक्त और शान्त चित्त होता है। जिसका अंगूठा गांठ के समान चौड़ा और छोटा तथा अर्द्ध चन्द्रकार हो वह मनुष्य मध्यम रहता है, जिसका अंगूठा पीछे की ओर झुका हुआ हो, वह अच्छा होता है।

छाती और पेट

जिसके उरस्थल पर रोम यानी वाल नहीं होते वह मनुष्य देखने में सीधा परन्तु कलुषित हृदय का होता है। यह मनुष्य प्राय; वेईमान और विश्वास-घाती होता है। इसके साथ ही साथ यह मनुष्य कार्यशील तथा अध्यवसायी होता है। जिसने उस उर-स्थल से नाभितक की वालों की एक सुन्दर वीचों वीच में एक लकीर सी भली भाँति वनी हो और वह प्रत्यक्ष हो तो वह मनुष्य देखने में सीधा परन्तु रसीला होता है। दो व्यक्तियों को लड़ाकर उसका आनन्द अनुभव करता है। कम वालों वाला सामान्य होता है। अधिक वालों वाला विषयी होता है। सुनहले वालों वाला भाग्यवान परन्तु व्यसनी होता है। जिसकी मूछें सुनहली हों वह अधिक भाग्यशाली होता है। लम्बे पेट वाला वह आहारी क्रोधी परन्तु सच्चरित्र व भाग्यवान होता है।

है। छोटे व मोटे पेट वाला दरिद्री होता है। मोटी कटि वाला आदमी अधिक विलासी तथा पतली कटि वाला आदमी साहसी तथा वीर है। पतली कटि की स्त्री प्रायः सच्चरित्र एवं सुन्दर होती है।

दो कटी फटी रेखाओं वाला आकर्मण्य होता है। जिसके भाल में एक ही रेखा हो और वह भी कटी फटी हो तो वह कुविचारी होता है। जिसके भाल में इन तीनों रेखाओं के समान अन्य अनेक रेखायें हों वह त्यागी होता है।

ग्रीवा

जिसके गले में तीन रेखायें (क्रमानुसार समानान्तर बड़ी रेखायें तीन) हों, वह राजा होता है। रेखायें छिन्न भिन्न नहीं होनी चाहिये। दो रेखाओं वाला भाग्यवान किंतु आलसी होता है, एक रेखा वाला कुविचारी और नास्तिक होता है। विना रेखा वाला भक्त और दृढ़ प्रतिज्ञ होता है।

जिसकी गर्दन में खड़ी रेखायें हों वह धनी और प्रतिभा सम्पन्न होता है, कटी फटी रेखाओं वाला सदैव विपत्ति के चक्कर में रहता है।

उदर

जिसके उदर में तीन रेखायें सामानान्तर पड़ी हों वह विलासी एवं भाग्यवान होता है। जिसके दो हों वह परिश्रमी औ सिद्ध हस्त होता है। एक वाला दरिद्री होता है, चार वाला लोलुप और अधिक वाला अभागा होता है। जिसके उदर में खड़ी रेखायें हों, वह चक्रवर्ती होता है।

चित्र — नं० २
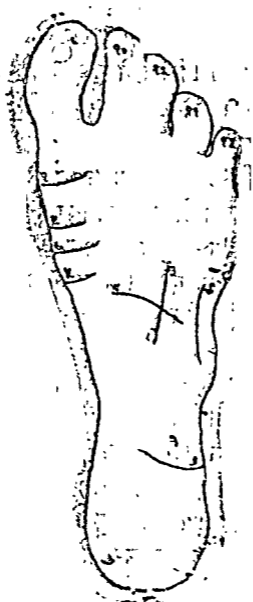
पैर की रेखाओं का वर्णन जो अगले पृष्ठों पर किया गया है इसका पूर्ण आशय समझने के लिये उपर्युक्त दिये हुये चित्र की रेखाओं की जानकारी आवश्यक है।

फर सकता,वह धनवान होगा जिसकी बीचकी रेखा कटी फटी हो वह अपनी स्त्री का सुख नहीं भोग सकेगा, परन्तु वह कुविचारी व विलासी होगा। जिसकी नीचे की रेखा कटी हो वह अत्यन्त दीन होगा।

जिसके भालमें यह एक ही रेखा हो वह दरिद्र होगा। विपत्ति बहुत उठावेगा। दो रेखाओं वाला सीधा और परिश्रमी होगा तथा भाग्यशाली होगा। जिसकी भृकुटी के ऊपर अर्द्ध चंद्राकार रेखायें हों वह महात्मा होता है। जिसकी दोनों भृकुटी के बीच में और नाक के ऊपर ⌒

इसी प्रकार का चिन्ह हो प्रायः भाग्यशाली होता है। इस चिन्ह वाली स्त्री प्रायःविधवा होती है अथवा जीवन में विपत्तियां बहुत उठाती हैं। इस चिन्ह वाला सिद्धहस्त होता है यदि इस चिन्ह की केवल एक ही रेखा दाहिनी तरफ हो तो उसकी स्त्री पतिव्रता होगी। यदि यह बांई तरफ हो तो उसकी स्त्री कर्कशा होगी।

जिसके भालमें उक्त स्थान पर भौंहों के बीच में दो समांतर रेखायें ॥ हो तो वह आदमी अध्यव्यवसायी परिश्रमी तथा अपनी धुन का पक्का होता है। यदि रेखा दाहिनीं ओर हो तो वह सरल और विश्वासी व चतुर होता है। जिसके बांई तरफ हो वह आदमी झूठा और क्रूर होता है। जिसकी भृकुटी के अन्त से उठ कर ऊपर की ओर रेखायें हों वह आदमी बुद्धिमान होता है।

भाल की यह तीनों रेखायें न० १, २, ५, जिसकी टूटी फूटी हो वह अभागा होता है।

३. यह रेखा दोहरी होती है। वह पुत्रवान होता है।

४. यह भी दोहरी होती हैं, यह आदमी विचारवान व सफल यात्री होता है।

५. यह आदमी दरिद्री होता है।

६. यह आदमी अखण्ड विद्वान, प्रतिभाशाली तथा धनवान होता है और केवल अपने ही बल और बुद्धि से उन्नति करता है।

७. यह गज रेखा होती है इस रेखा वाला पुरुष धनी, भाग्यशाली प्रसन्नचित्त और आस्तिक होता है, परन्तु बुद्धि का दृढ़ नहीं होता। क्षण-क्षण में विचार बदलेगा।

८. यह रेखा दीन पुरुष के होती है।

९. यह गदा रेखा यदि सीधी हो तो आदमी शूरवीर होगा। यदि इसी प्रकार अर्थात् उलटी होगी तो रण में शत्रु के सामने भागेगा और हार कर प्राण देगा।

१०. ध्वजा रेखा को धारण करने वाला पुरुष चक्रवर्ती राजा होता है।

११. त्रिशूल धारण करने वाला प्रधान और राज्य में मान प्राप्त करता है।

१२. यह धारण करने वाला संसार में पुरुषोत्तम होगा। यह आदमी रोग ग्रसित होकर नहीं मरेगा वह सिरके फटने अथवा सिर पर आघात होने से मरेगा।

१३. यह रेखा विद्वान के होती है।

१४. यह धनी होता है।

१५. यह रेखा वाला पुरुष पुत्रवान होता है।

१६. यह दरिद्री होगा यदि सबकी रेखा भी इसके साथ हों तो वह अत्यन्त दरिद्री होगा।

१७. यह रेखा वाला अनन्य भक्त होगा।

१८. यह शोक रेखा धारण करने वाला योगीश्वर होगा।

१९. यह रेखा वाला स्वभाग्योदय में प्रसन्न होगा; यह पहली रेखा से प्रथक् और अधिक गहरी होगी।

२०. मच्छ रेखा को धारण करने वाला महा प्रतिभाशाली और मनोनीत फल प्राप्त करने वाला होगा।

२१. यह आड़ी रेखा यदि बीच तलवे तक जाती है यह पुरुष परम विद्वान होगा।

२२. यह स्वस्तिक रेखा धारण करने वाला बाहरी शत्रुओं को क्षण में परास्त करेगा। परन्तु पांच भूतों के वश में होगा। साथ ही साथ संसार का महापुरुष भी होगा।

२३. यह रेखा दरिद्र के होती है।

२४. यह रेखा वाला पुरुष दूसरे का धन हरण करेगा।।

२५. यह रेखा वाला दूसरे की एकत्रित सम्पति प्राप्त करेगा।

२६—यह रेखा वाला शीलवान होता है, और शीघ्र ही दरिद्र हो जाता है।

२७—यह रेखा वाला विदेश में अकाल मौत से मरता है।

२८—यह रेखा वाला कूटनीतिज्ञ होता है।

२९—यह रेखाये दो प्रकार की होती हैं। एक की रेखा टूट कर कनिष्ठका की ओर जाती है, यह पुरुष पैतृक सम्पत्ति कुछ न पावेगा और दरिद्र से धनवान, यशवान और कीर्तवान होगा तथा शुद्ध और स्पष्ट चित्त का होगा, परन्तु भोगी व विलासी अधिक होगा दूसरी भांति वह जिससे एक रेखा निकल कर अंगूठे की ओर जायेगी, वह पुरुष अत्यन्त सुयोग्य प्रतिष्ठित वंश का और कीर्तिवान व धनवान होगा। लोभी अवश्य होगा।

३०—यह आदमी धनी होगा। अचानक माया मोह छोड़ कर बैरागी होगा और सिद्ध पुरुष होगा।

३१—यह आदमी परस्त्री गामी और सदैव विषयतृष्णा से प्रेम रहेगा।

३२—यह अल्पायु होगा, अखण्ड यशवान होगा तथा अपने समय का महा पुरुष होगा।

३३—यह आदमी झूठा और पाखण्डी होगा।

३४—यह मनुष्य आत्महत्या करेगा।

३५—यह मनुष्य पूर्ण योगी होगा अथवा राजा होगा।

३६—यह रेखा अपने ऊपर की रेखाओं से सब से नीचे होगी। इस रेखा वाला अपने वंश में एक मात्र पुरुष होगा।

३७—यह आदमी सज्जन और उदार होगा।

३८—यह आदमी सत्यप्रिय होगा।

३९—यह कूटनीति विशारद होगा।

४०—यह झूठा और विश्वासहन्ता होगा।

४१—यह आदमी धनी और उदार होगा।

४२—यह आदमी प्रखर ज्योतिषी या वेदज्ञ होगा ऐसी स्त्री वेश्या या कुटनी होगी।

४३—यह आदमी अल्पआयु परन्तु सच्चरित्र होगा।

४४—यह माया से सम्पन्न होगा।

४५—यह आदमी चंचल होगा।

४६—त्रिकोण वाले आदमी पेटके लिये परदेश में घूमेंगे।

४७—यह आदमी तार्किक होगा और नास्तिक अथवा वेदान्ती होगा।

४८—यह रेखा जो कोण बनावे तो वह आदमी अत्यन्त चतुर होता है, गणित में दक्ष होता है।

४९—यदि यह रेखा उक्त कोण को काट कर त्रिभुज बनावे तो वह आदमी निश्चय कारावास में जावेगा।

५०—यह चतुर्भुज यदि किसी के पैर में इसी प्रकार

हो तो वह मठाधीश होगा, यदि केवल चतुर्भुज मात्र हो तो व
आदमी किसी का राज्य, धनादि सम्पत्ति पावेगा।

५१—यह रेखा इसी प्रकार टेढ़ी हो तो वह राजसी सु
भोगे और अचानक पददलित किया जावे।

५२—यह आदमी आडम्बरी और पाखण्डी होता है।

५३—यह रेखा वाला चतुर और छोटे से बड़ा होता है
अपनी समझ में वह अपने को सर्वश्रेष्ठ समझेगा।

५४—यह रेखा वाला भाग्यशाली होगा।

५५—यह आदमी दरिद्री होगा।

जिस प्रकार हाथ की रेखायें एक दूसरे से काटे जाने
अपने कार्य में कुछ खटाई कर देते हैं उसी प्रकार पैर की रेखाओं
का फल होता हैं। इसलिये उनकी स्थितियों का पूर्ण ज्ञान कर
की अधिक आवश्यकता है।

५६—इस प्रकार की टेढ़ी रेखा वाला मीमाँसा करने
आयुर्वेद का ज्ञाता होगा।

५७—यह विदेशी प्रतिभा का भक्त होगा।

५८—यह अत्यन्त ही उदार और राजसी प्रवृति होगा।

५९—यह आदमी सदैव भक्त होगा और देव दर्शन प्रा
करेगा।

६०—यह रेखा वाला पाखन्डी और क्रूर तथा ईर्ष्या
होगा।

६१—यह आड़ी रेखा दोहरी होती है। यह बड़ी सम्पत्ति क
अधिकारी होगा।

६२—यह रेखा दोहरी होने से विदेश में मौत होगी।

६३—यदि यह दोहरी रेखा कोण बनावे तो वह निर्वासि
किया जायगा। यदि यह रेखा ६२ वीं रेखा से मिले तो वह लौ
कर कभी न आये।

चित्र—नं० ३
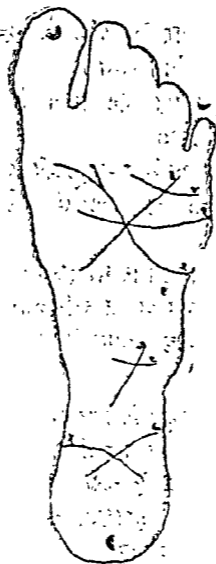
जिसप्रकार हाथ की रेखायें एक दूसरे से काटे जाने से अपने कार्य में कुछ खटाई कर देती हैं उसी प्रकार पैर की रेखाओं का फल होता है। इसलिये उनकी स्थितियों का पूर्ण ज्ञान करने की अधिक आवश्यकता होती है।

६४–यह रेखा वाला बड़ा यशस्वी होता है यदि वह इकहरी रेखा हो तो वह बड़ा कीर्तिवान होगा। इसे सुअवसर कार्य करने को बहुत मिलेंगे। वह कामी अधिक होगा।

६५–यह तुला रेखा है। व्यवसाय में अधिक लाभ उठायेगा।

६६–यह चार के अंक के सदृश होती है यह आदमी वेदाध्ययी और पारंगत होगा।

६७–चतुरकोण यदि बीच में कटा हो तो वह अपनी सम्पत्ति को खो बैठेगा।

६८–यदि यह रेखा अंगूठे की ओर से चल कर पड़ी की ओर जाकर पैर को दो भागों में बांटे तो वह आदमी गिरकर मरेगा।

६९–यह पुरुष विरागी होगा।

७०–नेत्र रेखा यह आदमी दूसरे के नेत्रों से देखेगा।

७१–यह आदमी आलसी होगा और अपने पूर्वजों के मान को मेटेगा।

७२–इसके उदय होने पर आदमी बीमार होगा। यदि चार मास में न मर गया तो बाद में अच्छा होकर यह अधिक कीर्ति प्राप्त करेगा। परन्तु आगे चलकर मार काटसे मृत्यु होती है।

७३–यह अर्द्ध चन्द्रकार रेखा उदय होने पर परदेश ले जाती है। और धनवान करती है। यह जन्म से हो तो वह अत्यन्त भाग्यशाली होगा।

७४–वह आदमी धर्म विवेकी होकर सदैव भ्रममें रहेगा और उसकी सन्दिग्ध बुद्धि होगी।

७५–यह जिसके होगी अत्यन्त धन उपार्जन करेगा परन्तु यह व्यसनी भी होगा।

७६–यह दोहरी रेखा धर्म रक्षक के होती है।

७७–यह रेखा वाला पुरुष कुटिल होता है।

७८–यह रेखा उदय होने पर कीर्ति व यश बढ़ाती है।

७९–यह रेखा पद तथा मान बढ़ाती है यदि जन्म से हो तो वंश की वृद्धि और कीर्ति की दाता होती है।

८०–यह पुरुष कुचक्री होता है।

८१–यह रेखा अखण्ड विद्वान के होती है।

८२–यह आजकल वाले सुधारकों के होती है।

८३–इसके उदय होने पर आदमी को हानि होगी और रोगी होगा।

८४.यह उदय होने पर रोगी आदमीको स्वस्थ्य भी रखती है और साधारणतया पुत्र उत्पन्न कराती है। जन्म से होने पर भाग्यशाली होता है।

८५–यह रेखा धर्म सुधारकों के होती है। यह लोग सनातन प्रथाओं को मेटते हैं।

८६–यह रेखा पतली लम्बी तथा सीधी होती है यह आदमी सरल चित्त तथा दूसरों के कानों से सुनने वाला होता है।

८७–यह आदमी पाखण्डी और वात का रोगी होता है।

८८–वृश्चिद रेखा युक्त आदमी जल में डूब कर मरेगा और अधिक धनी होगा।

८९–सर्प बैठा हुआ-यह आदमी विश्वासहन्ता और कुटिल होता है।

९०–सर्प खड़ा हुआ यह आदमी प्राय भेदिया होता है।

९१–यह आदमी सरल चित्त अतः अस्थिर, स्त्री जाति से घृणा करेगा।

९२–यह रेखा उदय होने पर माता पिता आदि वंश में सबसे बड़ेको घातक सिद्ध होती है यदि जन्म से हो तो वहव्यक्ति उत्तम पद पावेगा।

चित्र—नं० ४
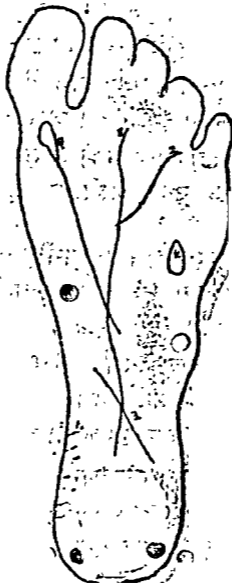
ऊपर के दिये हुये पैर में रेखाओं ने अपनी स्थिति बदल दी है। अतः इसके बारे में पूरा हाल जानने के लिये इनका विवरण, अधिक आवश्यक है।

अगले पृष्ठों में दिये गये विवरण को पढ़ कर आप इन रेखाओं के सम्बन्ध में जान सकते हैं।

९३–यह आदमी साधु होगा।

९४–यह कुकर्मी होगा।

९५–यह सज्जन परन्तु विलासी होगा।

९६–यह दोहरी रेखा वाला व्यक्ति नेता होगा।

९७–यह रेखा उदय होने पर विपत्ति लाती है।

९८–यह आदमी विरागी होगा। साथ ही माया को छोड़ कर पुन माया में पड़ेगा।

९९–यह पुरुष सत्य की खोज जन्म भर करता रहेगा।

१००–यह पुरुष नया धर्म चलायेगा।

१०१–यह प्रत्येक वस्तु को सुधार और शंका की दृष्टि से देखेगा।

१०२. यह पुरुष निपुण होगा।

१०३. यह पुरुष जीर्ण-काय और रोगी होगा। परन्तु धनी होगा।

१०४. यह आदमी सद्भावी और प्रभु का भक्त होगा।

१०५. यह आदमी मूर्ख और नीच होगा।

१०६. यह आदमी सदैव कर्कश रहेगा।

१०७. यह आदमी दयालु और आस्तिक होगा।

१०८. यह सभी कामों को सूक्ष्म रुप में चाहेगा और कुछ न कर सकेगा। आधोगति को प्राप्त होगा।

१०९. यह आदमी अत्यन्त विलासी होगा और अनाचार करेगा।

११०. यह अत्यन्त सुशील और वर्णोचित धर्म अनुयायी तथा अपने कुल में श्रेष्ठ होगा।

१११. यह आदमी निहित प्रेमी तथा अन्वेषक होगा।

११२. यदि यही एक मात्र रेखा हो (११, ११) आदि न हो तो वह आदमी अत्यन्त दरिद्री होगा।

११३. व ११४ बारह के साथ होने से इस रेखा वाला आदमी शान्ति-प्रिय होगा।

११५. इसके भी होने से अक्षय कीर्तिवान् होगा।

११६. यह रेखा वाला बड़ा प्रतिष्ठित होगा और उसके यहां सम्पत्तियाँ रहेगी और सदैव प्रतिष्ठित रहेगा।

११७. यह आदमी असाधारण पुरुष होगा।

११८. यह आदमी तर्क शास्त्र का ज्ञाता होगा।

११९. यह आदमी अभागा होगा।

१२०. यह आदमी छली और आक्रमण-कारी होगा।

१२१, यह सर्वप्रिय होगा।

१२२. यह विवादी अर्थात् झगड़ालू होगा।

१२३. यह आदमी रसवादी अर्थात दो आदमियों को लड़ाकर स्वयं मजा देखेगा।

१२४. यह धनाढ्य होगा।

१२५. वह आदमी अत्यन्त दीन-स्वभाव, मृदुभाषी और आस्तिक होगा।

१२६. यह आदमी अत्यन्त उदार होगा।

१२७. यह पाखण्डी होगा।

१२८. यह आदमी विवेकी होगा।

१२९. यह आदमी या तो सेनापति होगा अथवा प्रसिद्ध दस्यु होगा।

नोट—१२५ से १२९ तक की यदि सभी रेखायें हों तो ऐसा आदमी अत्यन्त धनी और असाधारण होगा, सैकड़ों आदमी उसके पीछे चलेंगे।

१३०–यह आदमी बड़ा विचारवान और सात्विकी होगा।

१३१–इस तरह आदमी प्रायः नहीं होते। यदि कोई हों तो वह महा-पुरुष होगा।

चित्र—नं० १
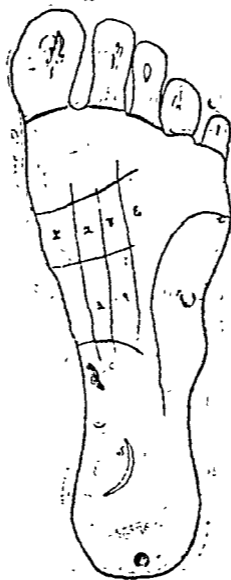
यह चित्र बांये पैर से समानता रखने वाली रेखाओं के क्रम के लिये बनाया गया है इसकी रेखाओं का क्या असर होता है उनका हाल जानने के लिये इसको समझ लेना आवश्यक है।

१३२-यह आदमी अत्यन्त चतुर और कुटनीतिज्ञ होते हैं।

१३३-यह आदमी सुहृद होते हैं।

१३४-यह सरल और उदार होता है।

१३५-यह जिज्ञासु और मुमुक्षु होता है।

१३६-इस आदमी की सभी सद इच्छायें पूर्ण होती रहेंगी।

१३७-यह आदमी देखने में भोले परन्तु बड़े कुविचारी विलासी और रक्षक बन कर भक्षक होते हैं।

१३८-यह अत्यन्त उदार और संयमी होते हैं।

१३९-यह आदमी अत्यन्त धनवान और स्त्री हीन परन्तु विद्वान् होगा।

१४०-यह रेखाऐं यदि दो हों तो धनी, तीन हों तो कुविचारी, चार हों तो चोर और यदि एक हो तो योगी, पाँच हो तो राजा और छः हो तो सिद्ध होता है।

१४१-यह आदमी चतुर और प्रखर बुद्धि का होता है।

१४२-यह रेखायें यदि दो हों तो दानी एक हो तो लोभी, तीन हो तो विलासी और चार हों तो धनी होता है।

१४३-यह रेखा वाला दीर्घजीवी तथा विचारवान होता है। वह आदमी विरक्त होना चाहेगा, परन्तु न हो सकेगा।

१४४-यह रेखायें यदि तीन हों तो वह अत्यन्त भाग्यशाली एक हो तो साधारण और यदि दो हों तो दूरदर्शी होगा।

१४५— यहआदमी तीन रेखा वाला उदार, दो वाला कुटिल और एक वाला कामी होगा।

१४६—इस तरह की तीन रेखा वाला क्रोधी, दो वाला धनी, एक वाला व्यवसायी व सिद्ध हस्त होगा।

१४७—यह आदमी अत्यन्त प्रतिभाशाली होता है।

१४८—उँगली व पैर के जोड़ पर एक रेखा होना अच्छा है यवाकारहै तो अति उत्तम और यदि जंजीरेदार हो तो दरिद्रता का चिन्ह है।

१४९—यह आदमी बड़ा विद्वान् होगा।

१५०—यह आदमी कामातुर होकर सभी कुछ कर सकता है।

१५१—यह आदमी अत्यन्त आस्तिक परन्तु प्रायः कामी होते हैं।

१५२—यह आदमी सदैव व्यर्थ की उधेड़बुन में पड़कर जीवन नष्ट करते हैं।

१५३—यह आदमी घर या बाहर सुखी रहेगा।

१५४—यह आदमी दरिद्री होगा।

१५५—यह आदमी जिसकी यह रेखा गज रेखा से जाकर मिले और वहाँ समाप्त हो जाय तो उसका भाग्योदय उसकी स्त्री के भाग्य पर निर्भर है। उसका विवाह प्रायः भाग्यवान स्त्री से होता है।

१५६—जिसकी यह रेखा ऊँची उठकर गज रेखा से मिल जाये और समाप्त हो जाये तो वह आदमी धनी गुणग्राही और सौहार्द्र होगा।

तीसरा अध्याय

बाँया पैर

१५७ व १५९ रेखायें यदि दोनों हों तो अच्छा है। इसी तरह १५८ व १६० रेखायें अच्छी होती हैं।

बांये पैर के चित्र में रेखाओं का क्रम १६ नं० १ से प्रारंभ

किया गया है नं० १ से लेकर १५ तक की रेखाओं का वर्णन अलग से किया गया है, इनका चिन्ह से सम्बन्ध नहीं है।

१. यदि बांये पैर और दाहिने पैर में एक सी रेखायें हों तो वह आदमी साधारण रहेगा।

२. यदि दाहिने पैर की अपेक्षा बाँये पैर में अधिक रेखायें हों तो वह प्राणी स्त्रैण होगा तथा अपनी स्त्री अथवा अन्य स्त्री के कारण यश धनादि पावेगा। यह उक्ति अपनी माता व प्रमाता के नैहर से पाई हुई सम्पत्ति पर भी लागू होगी।

३. यदि राज्य चिन्ह जैसे शङ्ख, चक्र गदा, पद्म, पताका आदि बांये पैर में हो तो वह ठीक नहीं। वह प्राणी पद्दलित किया जावेगा।

४. यदि पाम बाद यव त्रिकोण हो तो वह भाग्यशाली होता है।

५. बांये पैर में यदि चतुष्कोण हो तो वह अभागा होता है। वह अपनी पैत्रिक सम्पत्ति बेचकर परदेश निकल जावेगा।

५. बांये पैर में यदि गज रेखा हो तो उसे गृहस्थी में शान्ति नही मिलती, जीवन कलह पूर्ण रहता है।

७. बांये पैर में यदि उलटी गदा रेखा हो तो वह दुश्मन से कभी न दबे और बड़ा वीर हो, परन्तु धोखे से मारा जायगा।

८. बांये पैर में यदि मच्छ रेखा हो तो उसकी मनोकामनायें बहुत बड़ी हों और वह कभी पूर्ण न हो।

९. इस बांये पैर में यदि वृश्चिक रेखा हो तो उसकी स्त्री अपने मामा अथवा पितृ भगिनी के हाथों द्वारा पाली पोसी गई होगी और वहाँ से धन पावेगी।

१०. यदि सर्प रेखा हो तो वह आदमी अत्यन्त उदार परन्तु क्रोधी भी अधिक हो। वह प्राणी सर्प द्वारा काटा जावे अथवा स्त्री के षड्यन्त्रों द्वारा मारा जावेगा।

११. जिसके बांये पैर की उँगुली टेढ़ी हो वह प्राणी अपनी स्त्री से कभी सुख न पावेगा।

१२. जो प्राणी अपने बांये पैर को लथेड़ कर चले वह प्राणी धनवान होगा।

१३. जिसके पैर में नेत्र रेखा हो वह प्राणी पर स्त्री गामी होगा।

१४. जिसके पैर में गोल शून्य हो वह आदमी अत्यन्त धनी मानी हो परन्तु अन्त समय में सब कुछ खो बैठेगा।

१५. बांये पैरमें यदि मीन रेखा उलटीहो और उसका मुख एड़ी की तरफ होतो वह प्राणी अत्यन्त विलासी औरसदैव कामना में रत रहेगा।

१६ रेखा वाला प्राणी अत्यन्त निर्धन होगा।

१७. यह प्राणी धर्म कार्यों से चित्त शान्त करेगा।

१८. यह प्राणी सदैव दुष्टता करेगा।

१९. यह प्राणी हिंसक होगा।

२०. यह प्राणी अत्यन्त सीधा और कोमल तथा मृदुभाषी होगा।

२१ से २५ तक की रेखायें यदि सब हों तो वह अत्यन्त धनी और प्रतिष्ठित हो। यदि तीन हों तो पुत्र हीन हो, एकाध हो तो अभागा होगा।

२६—से ३० तक की सभी रेखायें हों तो वह भाग्यवान हो, जो कार्य भी करना चाहे वही कार्य पूर्ण हो। इसके साथ ही साथ वह बड़ा कूटनीतिज्ञ होगा।

३१—रेखा वाला मनुष्य अत्यन्त नास्तिक होता है।

३२—यह घोर कुकर्मी होगा।

३३—कुमार्ग गामी के यह रेखा होती है।

३४—यह पहले नास्तिक रहेगा बाद में सद्धर्म पालन करेगा।

३५—यह दोहरी रेखा वाला आदमी सदैव कपोल कल्पनायें किया करेगा। व्यर्थ के तर्क और बात २ पर शंका करेगा, सदैव नई चालें सोचा करेगा।

३६—यह आदमी अत्यन्त श्रेष्ट होगा।

३७—यह आदमी ऋण लेने में सिद्धहस्त होगा तथा दूसरे की चीजों की ताक में रहेगा।

३८—यह आदमी सदैव सतकर्मों का पालन करेगा लेकिन ईर्ष्यालू होगा।

३९—यह आदमी उदार, पुत्रवान और कीर्तिवान होगा।

४०—यह आदमी अत्यन्त ही कामी परन्तु दीनवन्धू होता है।

४१—यह आदमी स्त्रियों के पास वैठने योग्य नहीं हैं। यदि यह अवकाश पावेगा तो पूज्य स्त्रियों से भी विहार करेगा, यदि यह रेखा स्त्री के दाहिने पैर में हो तो वह भी कुलटा होगी।

४२—यह आदमी आस्तिक होता है लेकिन मन चाहने पर प्रभु सेवा करता है आलसी बहुत होता है।

४३—यह आदमी समय का मूल्य जानने वाला होता है।

४४—यह आदमी सदैव दूसरों को कुमार्ग में ढकेलने वाला होता है।

४५—यह आदमी दूसरों के वैभव को न देख सकेगा, उसे हड़पने की घात में रहेगा।

चित्र—नं० ६
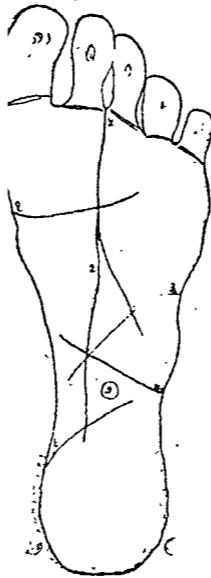
घूल का पैर में होना जीवन सम्बन्धी कार्यों से कितनी समानता रखता है इसे जानने के लिये इस पैर को देखकर उनकी दशा को जानना अति लाभदायक है।

४६—यह आदमी सदैव मनमोदक खायेगा और सफली-भूत किसी कार्य में न होगा सदैव आलस में रत रहेगा, विलासी अधिक होगा।

४७—यह तीर्थाटन करेगा।

४८—यह दो नगर देखेगा।

४९—यह स्थिर चित्त न होगा, कार्य आरम्भ करके छोड़ देगा।

५०—इसकी रेखायें यदि ४६ वी रेखा को काट कर चतुष्कोण बनावेतो यह मनुष्य अत्यन्त भाग्यवान और कुलदीपक होगा।

५१—यह आदमी तर्कशास्त्र का ज्ञाता होगा और सुन्दर स्त्री पावेगा।

५२—यह श्रेष्ट कुल की स्त्री पावे तथा साथ साथ सम्पत्ति भी पावे।

५३—यह आदमी सदैव दूसरे की आंखों से देखेगा और दूसरों के कानों से सुनेगा।

५४—यह आदमी सदैव क्रूर चालें सोचेगा और अपने समीपवर्त्तियों को उन में फंसावेगा।

५५—यह दूसरों के कहने में आकर अपना सर्वस्व स्वाहा करेगा।

५६—यह रेखा वाला सदैव गम्भीर, दूरदर्शी समय को न छोड़ने वाला और चालाक होता है।

५७—यह आदमी लड़ाका होगा।

५८—यह आदमी छलिया होगा।

५९—यह मनुष्य घर से बाहर ही अधिक सुख पावेगा।

६०—यह मनुष्य सुन्दर स्त्री पावेगा।

६१-यह सुन्दर पुत्रवान होगा।

६२-इसका पुत्र कुकर्मी होगा।

६३-यह ऊँचा पद पावेगा।

६४-यह मनुष्य प्रायः सौदागर होते हैं ऊंचा व्यापार करते और बड़े २ उच्चपदाधिकारियों के कृपा पात्र होते हैं।

६५-यह आदमी प्रायः रोगिणी स्त्री पाता है।

६६-यह मनुष्य संक्रामक रोगों से ग्रसित रहता तथा निम्न श्रेणी की स्त्रियों से प्रेम करता है।

६७-यह आदमी प्रायः स्त्रियों का क्रय विक्रय करके धनोपार्जन करता है।

६८-यह मनुष्य बड़े उदार और भगवत भक्त होते हैं।

६९-यह आदमी सदैव पराया अन्न खाता है।

७०-यह दूसरों की कमाई खाते हैं और आलसी होते हैं।

७१-यह झूंठा लबार होता है।

७२-यह दूसरों की स्त्रियों को बुरी दृष्टि से सदैव देखेगा।

७३-यह कुलटा स्त्रियों के कुचक्रों पकड़कर अपना सर्वनाश कर लेता है।

७४-यदि यह आदमी ब्राह्मण हो तो वंश का कलंक होगा यदि अन्य वर्ण हों तो अच्छा होता है।

७५-यह आदमी प्रायः कामी होते हैं।

७६-यह आदमी सदैव पराई सम्पदा को ताकते हैं और अभागे होते हैं।

७७-यह मनुष्य पुत्र हीन होगा।

७८-यह मनुष्य अनेकों विद्याओं का जानकार होता है।

७९-यह मनुष्य सदैव दूसरों के बल पर गरजता है बुरे धन

ग्रहण करने में आगा पीछा कुछ न सोचेगा।

८०-यह मनुष्य प्राय: योगी होते हैं।

८१-यह मनुष्य इस रेखा के उदय होने पर ऊँचा पद पावेगा।

८२-इसके उदय होने पर कहीं से गिरेगा वा पदच्युत होगा।

८३-इसके उदय होने धन गड़ा हुआ धन मिलेगा।

८४-इसके उदय होने पर पुरुष अपने मित्र या स्त्री से और यदि स्त्री हो तो पति से मिलेगी।

८५-यदि यह यवाकार पाँचों उंगलियों में हो तो वह आदमी राजसी सुख भोगेगा।

८६-यह आदमी शरीरिक परिश्रम करके धन पैदा करेगा।

८७-यह कवि होगा।

८८-यह विद्वान होगा।

८९-यह विचारवान होते हुये भी स्त्रैण अधिक होगा।

९०-यह सौन्दर्य का उपासक, कवि या चित्रकार होगा।

९१. वह जिस कार्य को करे पूर्ण ही कर के छोड़ेगा।

९२. यह मनुष्य न्यायाधीश होगा।

९३. यह आदमी परम भागवत होगा।

९४. यह तांत्रिक होगा।

चित्र--नं० ७

रेखा जाल अर्थात् जंजीर का पैर में होना आदमी के लिये किस अवस्थामें लाभदायक या हानिकारक है इसका महत्व जानने के लिये इसके लक्षण और स्थिति का ज्ञान परम आवश्यक है।

चित्र—नं० ८
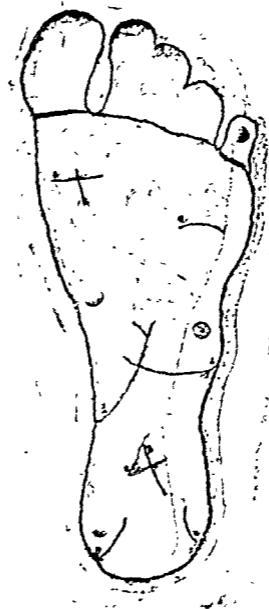
पैर में सीधी रेखायें जीवन पर किस तरह का प्रभाव डालती है इसका विवरण तो अगले पेजों पर है परन्तु उसकी स्थिति का ज्ञान इस चित्र से करना बहुत ही आवश्यक है।

९५. यह आदमी प्रेतों का भक्त होगा।

९६, यह उच्च पद पावेगा।

९७ यह दीर्घ जीवी होगा।

९८. यह स्त्री के कारण प्राण देगा। इसे जल से बचना चाहिये।

९९ यह बड़ा भाग्यशाली होगा।

१००. यह बड़ा धनवान होगा परन्तु कुपुत्रवान होगा।

१०१. यह रेखा वाला अपने भाइयों को नेष्ट है।

१०२. यह आदमी बड़ा ही कीर्तिवान परन्तु ईर्षालु होगा।

१०३. इसके कन्यायें अधिक होंगी।

१०४. इसके पुत्र व कन्याये बराबर होंगी।

१०५ यह आदमी दूसरे की स्त्रियों को वीर्य दान देकर दूसरों के पुत्रोत्पति करेगा तथा स्वयं निपुत्र रहेगा।

१०६. यह आदमी विकारी दूसरे वंश के वीर्य से उत्पन्न हुआ होगा।

१०७. यह आदमी श्रद्धालु धनी भगवत भक्त परन्तु कामी होगा।

१०८. यह आदमी तुरन्त दण्ड देने वाला, कठोर हृदय होगा। इसके मित्र कम होंगे।

१०९. बड़े बड़े उच्चपदाधिकारियों का कृपा पात्र तथा समाज में प्रतिभाशाली व्यक्ति होगा।

११०. इसके दुशमन बहुत होंगे परन्तु शीघ्र ही नष्ट होते जाँयगे।

१११. यह आदमी भिखारी होगा।

११२. यह दुर्व्यसनी होगा।

११३-यह कुलकलंक होगा। यह आदमी चतुर और गुण ग्राहक होगा।

११५-यह चतुर परन्तु ईर्षालु होगा।

११६-यह उपकार के बदले तिरस्कार और बदी करेगा।

११७-यह कंगाल से धनी नम्र होगा।

११८-यह बड़ा ही घमण्डी होगा तथा हानि उठायेगा।

११९-यदि यह श्वेत वस्तु का व्यापार करे, तो लाभ उठायेगा।

१२०-यह आदमी सरल चित्त तथा योगी होगा।

१२१-यह सदैव प्रपंचों से निकलने की कोशिश करेगा परन्तु और फसता जायेगा।

१२२-यह आदमी बात बात पर विवाद करे और सदैव युद्ध के हेतु तत्पर रहेगा।

११३-यह स्वतन्त्र विचार के होते हैं। दूसरे की प्रभुता स्वीकार नहीं करते।

१२४-यह आदमी सदैव दूसरे के कहने में चलकर अपना सर्वनाश कर बैठते हैं यद्यपि यह स्वयं उन्नतिशील होते हैं पर तो भी इनके मित्र व उपदेष्टा कुकर्मी होते हैं।

१२५-यह आदमी विद्वान और गान विद्या के प्रेमी होते हैं।

१२६-यह निशाचर प्रकृति के होते हैं।

१२७-यह आदमी दूसरे और नीच वंशीय वीर्य के उत्पन्न होगा।

१२८-यह उद्यमी होगा।

१२९-यह सदैव अपनी प्रभुता बखान करने वाला और कामी होता है।

१३०—यह सदैव दूसरे की बुराई करने में रात रहेगा।

१३१—यह पहले वैरागी रहेगा, परन्तु फिर गृहस्थ बन जावेगा।

१३२—यह कृपालु होगा।

१३३—यह सदैव रोगी रहेगा।

१३४—यह स्वगृहणी को छोड़ पराई स्त्री से प्रेम करेगा।

१३७—यह बहुत ही विद्वान होगा।

१३८—यह आदमी बड़ा परिश्रमी और चतुर होगा।

१३६—यह सदैव परमुखापेक्षी रहेगा।

१४०—यह सरल चित्त तथा उदार होगा।

१४१—यह मनुष्य उदार, कीर्तिवान तथा रूपवान् होगा।

१४२—यह संयमी परन्तु नास्तिक रहता है।

१४३—यह संयमी और निरन्तर प्रभु सेवक रहता है।

१४४—तीन दोहरी आड़ी रेखाओं से मिलने पर यदि त्रिकोण बने तो तीन सुयोग्य बेटे हों। तीनों सिद्ध हस्त होंगे। मध्य का कुछ लबार होगा।

१४५—यह ईर्षालु होता है।

१४६—यह विद्वानों को देखकर प्रसन्न होने वाला तथा चार बेटों वाला होता है।

१४७—यह स्त्रैण और अधिक कन्याओं वाला होता है।

१४८—यह धनी मानी और उच्च अभिलाषाओं वाला होता है।

१४९—यह अपने कुटम्बियों को आपस में लड़ा कर उनका नाश करता है। देखने में गम्भीर परन्तु बड़ा कुचक्री होता है। और बड़ा धनी भी होता है।
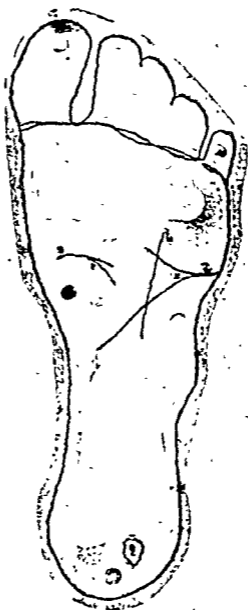
चित्र—नं० ९

रेखा द्वीप के चित्र नं० २ की रेखा से ज्ञात हो सकता है। इसे देखकर इसकी स्थिति तथा उसके परिणाम को जान लेना जरूरी है।

१५०–यह मृदु स्वभाव वाला, धनी होता है। यदि अकेला हो तो धन संचय न कर पावेगा।

१५१—केवल यही चक्र हो तो बड़ा मितव्ययी होगा।

१५२—केवल यही चक्र होगा तो अपव्यय करेगा।

१५३—केवल यही चक्र हो तो दूसरों से शत्रुता करावे और विजय करेगा।

१५४—केवल यही चक्र हो तो दूसरे को अश्रित बना देगा।

१५५—यदि अँगूठा व पहली उङ्गली में दो चक्र हों तो धनी होगा। यदि अँगूठे व दूसरी अँगुली में दो चक्र हों तो धनी। यदि अँगूठे व तीसरी अँगुली में दो चक्र हो तो सुन्दर स्त्री मिले। यदि अँगूठे व चौथी उंगली में दो चक्र हो तो हठी हो। यदि पहली अँगुली व दूसरी में दो चक्र हो तो सुन्दरी स्त्री वाला व पुत्रों के लिये नेष्ट है। यदि पहली व तीसरी उँगली में चक्र हो तो हठी और मदान्ध रहेगा। यदि पहली उँगली व चौथी में चक्र हो तो कीर्तिवान तथा यदि केवल पहली में हो चक्र हो तो सुन्दर योग है। यदि दूसरी अंगुली ही में चक्र हो तो ठीक नहीं। यदि तीसरी में हो या चौथी में भी हो तो वह सुपुत्रवान होगा। यदि तीसरी में ही चक्र हो तो धनी और यदि चौथी के साथ है तो राज कर्मचारी होगा। यदि केवल चौथी में में ही हो तो विलासी होगा।

१५६—से १५६ तक यदि पाँचों शङ्ख हो तो मनुष्य साधू प्रकृति का होता है। चार होने से दुःखी तीन सुखी, दो से पुत्रहीन और यदि एक हो तो धनी परन्तु पुत्रहीन होता है।

१६७– यदि इसमें तीन रेखाऐं हो तो धनी, एक या चार (तीन से अधिक) ठीक नहीं होती।

१६७—इस रेखा वाले आदमी हमेशा अपने जीवन को दूसरों की भलाई में व्यतीत कर देते हैं।

१६८—यह आदमी कभी दूसरों के धन की आशा न करेगा व व्यापार में सन्तुष्ट रहेगा।

१६९—यह आदमी कभी अपनी स्त्री से सुखी न रहेगा।

१७०—यह आदमी अत्यन्त विषयी परन्तु अविवाहित रहेगा।

१७१—यह शिल्पजीवी होगा।

१७२—यह बड़ा ही कौतुकी,हँस मुख तथा विदूषक होगा।

१७३—इसे बन्दीगृह में जाना होगा।

१७४—इसके उदय होने पर शारीरिक कष्ट हो, अच्छा होने पर पुत्र उत्पन्न कराती है। यदि जन्म से ही है तो पुत्रवान जानो।

१७५—इससे पुत्र शोक मिलता है।

१७६—इसमें स्वसुर से सम्पत्ति मिलती है।

१७७—इससे बन्दीगृह में जाना पड़ता है।

१७८—इसके विवाह बहुत हों पर स्त्रियाँ मर जांय।

१७९—इसे समय समय पर दैवी मदद मिलती रहेगी।

१८०—यह स्वतन्त्र धर्म और नीति का मानने वाला होता है।

१८१—यह दो प्रकार की होती हैं। एक की शाखा फूटकर अँगूठे की ओर जाती है, और एक की कानिष्टका की ओर पहली कटी हुई वाली धन तो खूब अर्जन करे परन्तु सञ्चय न कर सकेगा। दूसरा आदमी सुन्दर परन्तु कर्कशा स्त्री वाला होगा।

१८२—यह रेखा यदि उदय हो तो दो मास तक कठिन आपत्ति अथवा रोग रहे। जन्म से होने पर रेखा इधर-उधर

भटकाती है। पहली दशा में बीमारी के बाद शान्ति देती है।

१८३ – यह तीन मास तक रुग्ण रख कर मौत करे, यदि कोई अच्छे ग्रह हों तो भले ही बच्चे जन्म से होने पर कर्कशा स्त्री मिले व पुत्र शोकादि पड़े।

१८४—यह आदमी तत्वज्ञानी और विरक्त होता है।

१८५—वह आदमी इसके उदय होते ही विरक्त हो जाता है।

१८६–यह आदमी मोक्ष चाहने वालों में परम पद को प्राप्त होता है।

१८७—यह आदमी अत्यन्त लम्पट होगा। इसके उदय होने पर अन्न का दुख पड़े।

१८८—यह आदमी कर्कश होगा, स्वयं दूसरों को लड़ायेगा तथा सदैव लड़ने व लड़ाने की युक्तियाँ सोचेगा।

१८९—यह आदमी अधिक दयार्द्र होता है इसके उदय होने पर इसके पुत्री उत्पन्न होगी।

१९०—यह मनुष्य दीन, प्रेमी परन्तु विलासी अधिक होगा। उदय होने पर पुत्र व धन देगी, अन्त होने पर शारीरिक पीड़ा देगी।

१९१–यह अत्यन्त ही विलासी तथा शृङ्गार रस का प्रेमी व गान विद्या का विशारद होगा।

१९२–यह कोमल व मृदु स्वभाव का अति धनी होगा इसके उदय होने पर बड़ा भारी वज्रपात सम दुःख पड़े।

१९३–यह अत्यन्त कृपण होगा व इसके पुत्र जीवित न रहेंगे।

१९४–यह प्रेत भक्त और हिंसक होगा।

१९५–यह अत्यन्त सुशील होगा। उदय होने पर स्त्री की मौत होगी।

चित्र—नं० १०
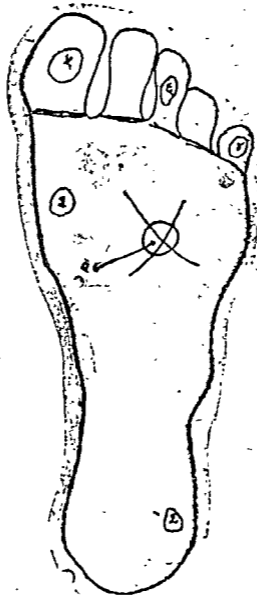
वृत में यदि दो रेखायें आकर एक दूसरे को काटे तो उनका क्या परिणाम होती है इसे पूरी तरह से जान लेना बहुत जरूरी है ।

१९६—यह अत्यंत ही निष्ठुर होगा। उदय होने पर इसकी चोरी व अन्त होने पर इसकी मौत होगी।

१९७—उदय होने पर मनुष्य को बड़े कष्ट देगी। यह मनुष्य अल्पायु और अभागा होगा। यह रेखा स्त्री को अटल सौभाग्दायनी है।

१९८—यह मनुष्य पीले रंग की चीज का व्यापार उठायेगा।

१९९—यह कुचक्री, कुचाली होगा। उदय होने पर अपने कुचक्र से धन पावेगा, अस्त होने पर सर्वनाश होगा।

२००—यह अत्यन्त चतुर व उन्नतिशील होगा, परन्तु झूठ अपराध से जेल जायगा।

२०१—यह व्यापार में हानि उठायेगा। इसके उदय होने पर हानि ही हानि होगी। (स्त्री के नामसे व्यापार करे तो लाभ हो)

२००—यह स्वाभिमानी क़ानूनी होगा, विश्वासघाती व अस्थिर बुद्धि का होगा।

२०३—यह कुकर्मी होगा।

२०४—यह अत्यन्त गुणवान और सभा चतुर राजकर्मचारी होगा। उदय होने पर उच्चपदस्थ राजकर्मचारी हो। पहिले तो यह अस्त ही नहीं होती, यदि हो तो अनिष्ट नहीं करती।

२०५—यह मनुष्य धनवान होगा। यह अपने कर्म के फल स्वरूप किसी से सम्पत्ति पावे, परन्तु मिलने के समय कोई उसमें से आधा भाग बटवाले, अतः उसे आधा भाग मिले।

२०६—यह अत्यन्त ही चतुर और व्यवसाय में उन्नतिशील होगा। इसके उदय होने पर कोई अच्छा रोजगार हाथ लगे। यह अस्त नहीं होती, यदि हो तो अनिष्ट नहीं करती।

२०७—यह सरल चित्त और अधिक कन्याओं वाला होता है। इसके उदय होने पर पुत्र की मौत होती है।

२०८—यह आदमी सुन्दर-सुन्दर स्त्रियों से रमण करे धनीमानी हो तथा राजचिन्हधारी हो।

२०९—यह सरल विश्वासी होगा। यदि यह दोनों पैर में हों तो निश्चय देव दर्शन प्राप्त करे।

२१०—यह आदमी सङ्गीत व धनुर्विद्या का ज्ञाता होग इसके उदय होने पर इसे कोई कोप प्राप्त हों।

२११—यह आदमी कठोर प्रकृति का होता है तथ सन्दिग्धचित्त होता है।

२१२—सरल विश्वासी और अनेकों जन्म से भक्त होता है। इस जन्म में भी भक्त ही रहे देव दर्शन की आशा ही नहीं, आगे हरि इच्छा।

२१३—यह भक्त और देव दर्शन का लालची रहे सत्कर्म करे। इस रेखा के उदय होने पर कहीं से इसे धन मिले।

२१४—यह आदमी दुर्व्यसनी और वेश्या प्रेमी रहे।

२१५—सुन्दर स्त्री वाला और सुन्दर विचारों वाला होत है इसके उदय होने पर इसे कुछ दैवी अनुभव प्राप्त हों।

२१६—यह कलह प्रिय होगा तथा प्रेतादिकों द्वारा पीड़ि भी किया जावेगा।

२१७—यह आदमी कुबुद्धि वाला तथा पूर्वजों की मा मर्यादा का नष्ट करने वाला होता है। इसके उदय होने पर आदमी कोई असाधारण निन्द्य कर्म करे।

२१८—खड़े सर्प वाला आदमी अपने समान किसी को न जाने न किसी का आदर सत्कार करे, सदैव दूसरों को नी दिखाने की घात में रहे।

२१९—यह आदमी स्त्री के नाम से ज्यो

करे व बड़ा काम करे तो लाभ और सफली-भूत हो, अन्यथा नहीं इसके उदय होने पर स्त्री की मौत हो।

२२०—यह आदमी नीच सेवी व धनी हो।

२२१—यह कुमार्गी व निन्द्यकर्म करे यह धनी अवश्य हो।

२२२-सदैव दूसरों के आश्रित रहे उदय होने पर धन मान सभी का नाश हो।

२२३—यह आदमी सदैव नीचों को मित्र बनावे और नीच कर्म करे, उदय होने पर यह जाति व कुल धर्म के विरुद्ध कार्य करे। यह जाति-भ्रष्ट होता है। इसका जाति से बहिष्कार करना चाहिये।

२२४—यह शान्त व शिष्ट स्वभाव का होता है। जहां रहे, वहां अपने साथ सबका कल्याण करे। यह श्रेष्ठ आदमी होगा।

२२५—यह उच्च पदाधीश होगा।

२२६—यह अति सरल निष्ठावान व धैर्यवान तथा सुयोग्य चार पुत्रों वाला होता है।

२२७—यह दो सुयोग्य पुत्रों वाला हो। यह असाध्य होता है।

२२८—यह सुन्दर विचारों वाला तथा इन्द्रियजीत रहेगा।

२२६—यह आदमी जिसके अँगूठे के नखों से यवालय खेती हो वह धनी होता है। प्रथम उँगली वाला रोगी होता है।

चौथा अध्याय

भिन्न भिन्न ग्रहों के गुण वाले व्यक्ति

गुरु के गुण वाले—

सामान्य कद मजबूत बनावट रंग साफ मांस से भरा

हुआ, आँखें बड़ी, चेहरे पर मुस्कराहट पुतली बड़ी गोल और साफ पलक मोटी बरोंनी लम्बी बाल लम्बे मोटे और मुड़े हुये भौंह कमानीदार नाक मुँह बड़ा, ओठ मोटा गोल मांस से भरा हुआ ठुड्डी लम्बी शरीर में बाल अधिक और साथ में पसीना अधिक आता है वे खामोशी से शान के साथ चलते हैं उँगली समकोण होती हैं। वाणी भी साफ मधुर होती हैं।

स्वास्थ्य-पित्त प्रकृति, रङ्गीन मिजाज, गठिया अकसर होती हैं। खूब खाने पीने वाले और इन्द्रियों के वशीभूत बुरी वासना नहीं होती। गुरु का शासन सिर फेफड़ा व गले पर है। इसे बहुधा फेफड़े व गले में शिकायत होती है।

मानसिक शक्ति—जन साधारण का कार्य करने वाले, ऊँचे पद पर पहुँचने वाले और विशेष आत्माभिमानी अतिथि सत्कारी अच्छे भोजन के खाने व खिलाने के शौकीन नेक स्वभाव उदार चित्त धन खूब खर्चने वाले और हर नीच और कंजूसी के कार्य से घृणा करने वाले होते हैं। धार्मिक और शान के साथ बाहरी सजधज के साथ रीति रसम को करने वाले राजसी ठाठ और पुरानी रिवाज को मानने वाले कानून और हुकम की पाबन्दी करने वाले शान्ती चाहने वाले परन्तु धोखा और दङ्गों से घृणा करने वाले और जो उनके प्रियतम को तंग करे उनसे लड़ने वाले होते हैं वे सहज ही प्रसन्न हो जाते हैं और मित्रता निभाते हैं।

यदि अशुभ चिन्ह वाले हों तो घमंडी किफायतशार स्वार्थी शेखीबाज होते हैं तथा उनकी ६० वर्ष की आयु होती है।

शनि के गुण वाले

लम्बे, पतले, पीले बाल का चेहरा लम्बा गालों में गड्ढे,

हड्डियां मोटी भौंहे काली जुड़ी हुई आंखें छोटी धसी काली और रञ्जीदा होती हैं। आँखों की सफेदी कुछ पीली कान बड़े नाक पतली और नुकीली नथने कुछ खुले हुये होते हैं। मुँह बड़ा ओठ पतला दाँत सुन्दर जो जल्दी खराब होते हैं। दाढ़ी काली ठुड्डी लम्बी और कष्टदायक होते हैं। और गर्दन लम्बी होती है। उँगलियाँ लम्बी गठीली और अँगूठे का पहला पोर ज्यादा बड़ा और चपटा होता है। वाणी भद्दी धीमी होती है। शनी के खराब किस्म के लोगों के बाल थोड़े और ज्यादा पतले किस्म के होते हैं। अपनी शकल का लापरवाह होता है।

स्वास्थ्य—उनके टांग और पैरों में चोट लगती है, शनि वाले बहुत से लफंगे होते हैं। ज्यादातर मेलनकोलिया, जो दीवानगी की तरह होती हैं ग्रसित होते हैं। वे पानी से घृणा करते हैं, और गन्दे रहते हैं। शनी का अधिकार कान दांत व पिंडली पर है। इस लिये पित्त वात व्याधि व रोगी होता है। दांत कष्ट देने के बाद जल्द गिरते हैं, गिरने से आत्मघात से दबने की घटना होती है।

मानसिक शक्ति - वे शक्ति, गमगीन, गम्भीर, धर्म में दृढ़ किन्तु कट्टर सङ्गीत व गणित के प्रेमी बुद्धिमान होते हैं। वे अपने तरीके से खुश होते, और समयानुसार धार्मिक विषय पर बहस करते हैं गुप्त विद्याओं के प्रेमी होते हैं। वे आज्ञाकारी नहीं होते और दूसरों को भी भड़काते हैं। काले रङ्ग की वस्तु पसन्द होती है। और जीवन के प्रतिदिन आनन्द के सहायक नहीं होते, और दूसरों की सङ्गत पसन्द नहीं होती है। कड़े मिजाज के होते हैं। वे कम खर्च और कन्जूस होते हैं। सुस्त एकान्त प्रिय और अकसर मनुष्यों से घृणा करते हैं, सख्त दिल लड़के बच्चों को सताने

वाले होते हैं। जेल में ज्यादातर ऐसे ही मनुष्य जाते हैं। शनी के पर्वत का प्रभाव हो शनी की अँगुली कमजोर हो तो वह आदमी स्वार्थी, चिड़चिड़ा, रुपालूवाद विवाद या झगड़े करने वाला भयानक दश मन और धूर्त होता है। ७० वर्ष की आयु होती है।

सूर्य के गुण वाले

सूर्य के प्रभाव वाले भड़कीले स्वभाव वाले, कारीगर सुन्दरता के प्रेमी होशियार और समझदार होते हैं।

मामूली कद के, कुछ ऊँचे सुन्दर सुरुचि रंग अच्छी चमक वाले, ज्यादातर, माथा ऊँचा, परन्तु चौड़ी आँखें, बड़ी बादाम की शक्ल की चमकती हुई, बोली साफ और मीठी पुतली भूरे रंग की और बौरानी लम्बी होती है। गाल गोल और मजबूत, नाक सीधी और भौंह सुन्दरता से मुड़ी हुई होती है। मुँह बड़ा नहीं होता, आवाज भारी, लेकिन मधुर और ठुडी गोल उभड़ी हुई नहीं होती, गर्दन लम्बी, मान से युक्त और सुन्दर मुडी हुई और शरीर में बाल नहीं होते। वे मजबूत कम होते हैं। उसके शरीर में चरबी ज्यादा नहीं होती, उँगलां चिकनी और समकोण वाले, अँगूठा औसत और दूसरा पोर कुछ बड़ा होता है। हथेली और अँगुलियाँ करीब करीब बराबर और अनामिका गठीली होती है।

स्वास्थ्य स्थान अच्छा होता है। आशावादी होता है। आग से भय वाला, बुद्धिमान् और किसी किस्म की बुराई की तरफ नहीं जाता।

सूर्य की प्रधानता वाले को नेत्र विकार जोड़ों व रीढ़ की हड्डी तथा हृदय में पीड़ा होना सम्भव है। सूर्य का प्रभाव नेत्र रीढ़ और हृदय पर होता है।

अशुभ हाथ वाले अन्धे हो जाते हैं और अपनी जन्मभूमि से दूर जाकर मरते हैं। दिल की धड़कन बुखार का आना और लू लगने का भय होता है।

मानसिक शक्ति-आन्तरिक ज्ञान और कम महनत से हर बात सीखते हैं। वे नई ईजाद बड़ी होशियारी और चतुरता से करते हैं। प्रकृति और हुनर के प्रेमी होते हैं। और सुन्दर वस्तु और सम्मान की इच्छा रखते हैं। वे शीघ्र ही लोगों को आकर्षित करते हैं और मित्रता तथा शत्रुता पैदा कर लेते, वे बहुत से मामलों को चाहे जिस किस्म के हों आसानी से समझते हैं। और और अकसर ऊंची जगह पर पहुंच कर धन पैदा करते हैं। इनकी कमजोरी यह है कि वे अपने मन की बात को जल्दी और साफ साफ कह देते हैं। धर्म में वह जिद्दी नहीं होते आसानी से विश्वास कर लेते हैं। और कुछ शक नहीं रह जाता। आन्तरिक शक्ति से वह गुप्त विद्यायें सीख लेते हैं, और उनकी दिमागी शक्ति कठिन समस्याओं को हल करने में अधिक रहती है। उनका स्वभाव खुश मिजाज दयावान, और सुन्दरता को ही चाहता है।

सूर्य वर्ग वाला चित्रकारी से घिरा रहना पसन्द करता है। धार्मिक कार्यों में धूमधाम व संगीत पसन्द करता है, और पीला रङ्ग पसन्द करता है।

स्त्रियाँ उनके सीधे स्वभाव को ताना देती हैं और वह अक्लमंद खाविन्द नहीं होता है। वह नाराज होता और तुरन्त ही शान्त हो जाता है। यह कभी ईर्षा नहीं रखता और खराब दुशमन को मित्र बनाता है। लेकिन उसकी तेजी इस कदर डाह पदा करती है कि उसके मित्र कम होते हैं। वह स्वच्छ वायु और व्यायाम पसन्द करता है। वह भारी सफ़र करने वाला होता है।

उसमें घमन्ड नहीं होता और न अभिलापा ही होती है। उत्तम प्रकार की इच्छा होती है।

बुद्ध के गुण वाले

बुद्ध की प्रधानता वाले व्यवसाय कार्य की योग्यता प्रत्येक विषय में प्रवेश करने की शक्ति होती हैं।

ये कद के छोटे गठीले प्रसन्न मुख कुछ लम्बा चेहरा और काठी के अच्छे होते हैं। रङ्ग हलका काला, वाल अखरोट के रङ्ग के समान आखिर में घूमे हुये. चमड़ा मुलायम और चेहरे का रङ्ग जल्द बदलने वाला और माथा उठा हुआ होता है। ठोढ़ी छोटी बालों से ज्यादा काली, भौंह पतली मुड़ी हुई जड़ी हुई होती है। आँखें गहराई में बैठी हुई तेज चुभती हुई और कभी-कभी चंचल, पीला, सफेद और पलकें पतली होती हैं।

नाक लम्बी सीधी गोलशिरा, होंट पतले, ऊपर का भाग भरा हुआ मुँह आमतौर से आधा खुला हुआ, दाँत छोटे और हड्डी लम्बी और नुकीली, कभी कभी मुड़ी हुई होती हैं।

गर्दन व कंधा मजबूत, सीना चौड़ा पट्ट वाजू गठीले। हड्डियां छोटी और आवाज कमजोर होती है।

हाथ बड़े, हथेली लचीली उँगलियां मिले झुले किस्म की बुद्धि की उँगलियां हमेशा नौकीली होती है। उँगलियां चिकनी सिर्फ बुध का पहिला पोर गठीला, अँगूठा लम्बा और खास कर दूसरा पोर लम्बा होता है।

अशुभ दांतों में काले रङ्ग का चंचल धसी हुई आँखें वाल सुन्दर नहीं होते। हाथ अति ढीला उँगलियां लम्बी और पीछे मुड़ी होती है।

स्वास्थ्य—घबड़ाहट वाला स्वभाव जिगर और हाजमा

कमजोर हाथ और बाजू में चोट या कष्ट और अक्सर टांगों में भी कष्ट होता है।

बुद्धि मस्तिष्क, कलेजा. गुरदा पर बुद्धि का शासन है। इससे मनुष्य को उन्माद वाणी रुकने व कलेजा तथा गुरदे सम्बन्धी रोग होते हैं।

मानसिक शक्ति—कार्य में और ख्यालात में जल्द बाजी खेलकूद में होशियार और व्याख्यान देने में चतुर, इन्सान की पहिचान और अच्छे इन्तजाम करने वाले होते हैं नयेर मनसूबे के संचालक और अपने साथियों पर प्रभाव वाले होते हैं। जीवन के चरित्र को भली प्रकार जानने वाले गणितज्ञ वैदिक और गुप्त विद्या के ज्ञाता, हुनर और साहित्य में आनन्द लेने वाले और व्यौपार में धन उपार्जन की सोचने वाले होते हैं। ऐसे पुरुष डाक्टर लेखक हिसाबी व्यौपारी तथा वकील होते हैं। उस की बहस वकालत के साथ तर्कयुक्त होती हैं। यह जोरदार और नकल करने की शक्ति, प्रेमी, प्रसन्नचित. हँसने वाला, यात्रा का अभिलाषी और प्राकृतिक सुन्दरता का उपासक होता है। परिश्रमी बातूनी, चंचल, समझदार आशावान होते हैं। वे सदा चौकन्ने और अन्तर्ज्ञान की शक्ति रखते हैं। ८० वर्ष की आयु होती है।

जब अशुभ हाथ हो तो धोकेबाज अविवेकी चालाक द्रोही झूठा दगाबाज और हर बात का जानकारक बनता है और लोगों को धोखा देने के लिये और मूर्खता युक्त होता है। कभी २ अपने मनसूबों पर इतना विश्वास करता है। कि खुद धोखे में पढ़ कर मुसीबत उठाता है। चोरी को तथा अपने लाभ की फिक्र ज्यादा रहती है।

मंगल के गुण वाले

मंगल के वर्ग वाला रीति रस्म नहीं मानता, साहसी व उद्योगी होता है।

खुरदरा (लाल) चमड़े वाला, चौरस कन्धा, पहिला पोर अँगूठा गोल, चपटा और उँगली के तीसरे पोर भीतर उठे हुये होते हैं। कुछ ऊँचा मजबूत छोटा, मोटा सिर खुले भौंह, गोल चेहरा वाली छोटी बड़ी चमकीली आँखें भूरे रङ्ग की होठ और लाल छीटों से युक्त, मुँह बड़ा, पतला, होट नीचे का मोटा, दांत छोटे, भौंह सीधी मोटी होती है। नाक लम्बी नोंक वाली चोंच की तरह ठुड्डी ऊपर उठी, डाढ़ी सख्त, कान छोटे पर शिर से दूर गाल मोटे ठुड्डी उठी गर्दन छोटी मजबूत, सीना उठा हुआ कंधा चौड़ी जांघ,छोटी टांग, सुन्दर चाल शान के साथ तेज रफतार, आवाज कठोर या भारी होती है। हाथ सख्त मोटा, उँगली छोटी, अँगूठे का पहिला पोर दूसरे से बड़ा होता है। हर काम में उतावले होते हैं।

अशुभ हाथ वाले का छोटा कद, फूला मुँह,बड़ी डरावनी शक्ल, भौंह चढ़ी हुई, आवाज घुरघुराहटदार, कान लम्बे हाथ छोटे मोटे होते हैं।

स्वास्थ्य—संजीदा मिजाज, खूनकी खराबी, और चर्मरोग अन्दरूनी विकारों की सूचना देते हैं। लड़ाई झगड़े में चोट खाता है क्योंकि वह लड़ाका स्वभाव का होता है। स्वयम् ही अपनी लड़ाई लड़ा करता है। और अशुभ हाथ वाला विषयी क्रोधी शराबी बेचैन हो तो भयंकर वार करने वाला जिससे जेल या फांसी की सजा पाता है। बहुधा नीची संगत में जाता है और रुचि भी हुआ करती है।

मंगल के स्वभाव वाले पुरुषों को तीव्र ज्वर तथा अन्य भीतरी अङ्गों के रोग। और अग्नि सम्बन्धी घटनायें होती हैं।

मानसिक शक्ति—यह उदार हृदय का गर्व करने वाला दाता और सच्चा मित्र होता है। धन अपने व पराये के लिये

बरबाद करता है और निडर होता है अतिशय शक्ति वाला सत्र वाला और हद दर्जे के थकान या खतरे में डाल देने वाला, कामयाब हर मामले में होता है। यह प्रेम के मार्ग में जुर्रत का कार्य करने वाला और किसी की दलील को न सुनने वाला और खाने-पीने में शौकीन होता है। सरकस, मेंडों की लड़ाई, भयानक खेल पसन्द करने वाला होता है। घमन्ड वाला, शानशौकत वाला और हमेशा आगे आगे चलने वाला, शान्त चित्त से कार्य करने वालों को घृणा से देखने वाला और यदि चित्रकार हो तो लड़ाइयों व जंगल के शिकारों का चित्र बनाने वाला और यदि गवैया हो तो फौजी गान,नाच इत्यादि, यदि साहित्य-प्रेमी हो तो युद्ध के किस्से कहने वाला होवे। यह सरदार होता है। और भीड़ में प्रशंसा का पात्र बनता है। यात्रा करना या घर के बाहर रहना पसन्द करता है। चमकीला लाल या नीला रङ्ग पसन्द करता है। अशुभ हाथ वाला कातिल डाकू भारी बदमाश होता है।

आयु ७० वर्ष की होती है। ऐसे की मृत्यु अकसर शस्त्र या अग्नि से होती है। चन्द्र की प्रधानता वाले कल्पना, एकांतवास, उदासीनता, कविता, गुप्त रहना, भविष्य सम्बन्धी स्वप्न देखते हैं।

चन्द्र के गुण वाले

लम्बा कद, गोल चौड़ा सिर, कनपटी के ऊपर भौंहें थोड़ी होती है। सफेद रङ्ग मुलायम मांस बड़े पुट्ठे और पतले बाल शरीर पर बाल नहीं होते नाक छोटी और सिरे पर गोल होती है। मुँह छोटा, ओठ मटा दांत बड़े पीले रङ्ग के बेतरतीब और जल्दी खराब हो जाते हैं मसूड़े अकसर पीले रङ्ग के होते हैं।

आँखें गोल बड़ी और उठी हुई पुतली चमकती भूरे रङ्ग की होती हैं। पलकें बड़ी और मोटी ठुडी बड़ी और चर्बीदार और कान शिर के पास चपटे होते. हैं गर्दन लम्बी माँस युक्त और कई झुरियां होती हैं सीना मांस से भरा, ढीला बदनुमा होता है। पेट निकला हुआ टांगे भारी टखने के पास मोटा पैर बड़ा होता है। अंगुली छोटी चिकनी होती है। अंगूठे का पहला पोर औसत दर्जे से कम होता है। बोली धीमी, बेजान के होती है।

अशुभ हाथों में बदबूदार पसीना चर्म पर सफेद दाग भी होते हैं, पाखण्डी धोखेबाज इर्षालू अयोग्य असंतुष्ठ अन्ध विश्वासी होते हैं। स्वास्थय खून की कमी लगतार काम करने को शक्ति नहीं होती। हमेशा बड़े सोच विचार में रहता है और स्वास्थ की चिन्ता हमेशा लगी रहती है लकवा, मिर्गी मूर्छा का भय रहता है। डूबने का भय, किडनी ब्लैडर जननेन्द्रिय गठिया और आंतड़ियों की बीमारी रहती है चन्द्र प्रधानता वाले को जल घर यचत्रा उन्मादादि तथा जल सम्बन्ध की घटना होती है।

मानसिक शक्ति - चंचल अविश्वास विचारों में तन्मय हो जाने वाले खुद गरज और घूमने के सहायक होते हैं। शक्की ज्यादातर और भावुक कविता साहित्य और गाना पसन्द करते हैं, चन्द्र गुण वाले आदमी शकल में और स्वाद में कम सखुन होते हैं। स्त्रियाँ नेक,चलन कामुक और प्रेमी की भक्त होती हैं। एक कार्य में कम लगने वाले और वायदा करके पूर्ण नहीं करते वेदांत में सुखी होते हैं लेकिन कार्य में नहीं लगते। खूब खाते हैं पानी कमपीते हैं। गहरा नशा पसन्द करते हैं उनको सफेद और जर्द रङ्ग पसंद होता है। अकसर व्यापार ना पसंद करते हैं। चित्रकारी के प्रेमी होते हैं। रंग गहरा सफेद,

पीला पसन्द होता है। वायु से बजने वाले जैसे अलगोजा बाँसुरी पसन्द करते हैं।

अशुभ हाथ वाले बेपरवाह मूर्खता युक्त बातूनी चुगलखोर अक्सर नट खट और वास्तविक कामी नहीं होते सिर्फ नई खलबली पैदा करने वाले होते हैं। वह बेशरम खुदगरज गुस्ताख होते हैं।

शुक्र के गुण वाले

स्वरूपवान इन्द्रियों के सभी सुखों को पसन्द करने वाले प्यार करने वाले तथा आकर्षण रखने वाले होते हैं। रूप सुन्दर सफेद रंग गुलाबी लिये हुये मुलायम और नाजुक औसत दर्जे से ऊचा गोल चिकने भौं हैं सुन्दर झुकी हुई और तंग होती हैं। बाल काले लम्बे और बहुतायतसे होतेहैंमुलायम तथा लहरदार हो भूरे हो या काले बाल हो आयु के साथ नहीं बदलने वाले होते हैं नाक सुडौल लम्बी नौक छड़ पर चौड़ी लेकिन सुन्दर और सिर पर गोल होती है।

आंखें बड़ी स्वच्छ और सुन्दर मीठी चितवन कुछ उठी हुई और भूरे रंग की होती है पुतली चौड़ी पलकें रेशम की तरह उम्दा और नीली नसें दिखाई पड़ती हैं।

मुंह छोटा सुडौल ओठ लाल कुछ ही मोटा, खास कर नीचे का ओठ और दांत चिकने घने सुन्दरता से सजे हुये। ठुडडी लम्बी गोल, कान छोटे नाजुक शक्ल के, गर्दन साफ शानदार तास से युक्त कन्धे तंग और सुन्दरता के साथ उतार चढ़ावदार सीना जो चौड़ा नहीं होता परन्तु स्वस्थ और भरा हुआ होता है। कमर पतली होती है। हाथ मुलायम छोटा चिकनी अँगुलियाँ तुल्य, पोर मोटा और अंगूठा छोटा होता है।

वाणी मधुर आकर्षण करने वाली होती हैं।

हाथ अस्वस्थ सफेद रंग, का गढ़ी आंखें, गाल ललाई लिये भारी चपटी नाक ओठ बहुत मोटे खास कर नीचे वाला बड़ा तथा बड़ा पेट, चलने में मुश्किल, आवाज भारी हाथ ढीला भद्दा और बद शकल अंगुली मोटी चिकनी और छोटी होती है।

स्वास्थ्य—मजबूत प्रसन्नचित्त प्रेम से उत्पन्न होने वाली बीमारी के शिकार और गुप्त इन्द्रियां में कष्ट होता है। प्रमेह आतसक की बीमारी होती है। शुक्र का अधिकार जनेनद्रिय पर हो इससे हिस्टरियां व स्त्रियों के अन्य रोग होते हैं।

मानसिक शक्ति—प्रसन्न चित्त सोहबतदार दूसरों को प्रसन्न करने का इच्छुक और सब का प्रिय, हाजमा उत्तम लेकिन बहुत खाने पीने में वाला नहीं हो सुगंध गाना बजाना प्रकृति की सुन्दरता पसंद और कामी होता है। और कामिनी उसके जीवन में विशेष असर डालती है। सचाई पसंद अकसर धोखा खाता है। जल्द क्षमा कर देता है। यह लड़ाई दंगा ना पसन्द करता है और प्रेमी के लिये सब कुछ करने को तैयार होता है और अगर लेखक या चित्रकार हो तो लोगों के दिल को खींच लेता है। यात्रा प्रिय जवाहिरात रेशमी वस्त्रादि संग्रह, करने का प्रेमी और सुगंधी व पुष्पों में आनन्द आता है गुलाबी व नीला पीला रंग पसंद करता है बाजों में बड़ी सारंगी पसंद करता है। अशुभ हाथ में शक्की व्यभिचारी फिजूल खर्च पागल गन्दे अश्लील विचार और परिणाम में जेल होती है।

———

ज्योतिष की पुस्तकें

कर्मविपाक भाषा टीका—इसमें तीनों जन्मों के वृतांत का विषय हैं अतः इसके होने पर भृगु संहिता की आवश्यकता नहीं रहती। अत्यन्त उपयोगी होने से अवश्य संग्रह कीजिये सजिल्द की० ५)

ज्योतिषसार भाषा टीका—इसमें सम्पूर्ण महूर्त, जन्मपत्रज्ञान, वर्ष ज्ञान आदि बहुत से विषयों का संग्रह हैं। इसके द्वारा शीघ्र ज्योतिषी हो सकता है। मू० सजिल्द ३॥)

महूर्त चिन्तामणि—इसमें ज्योतिष विषयक संपूर्ण शास्त्रार्थ और सब प्रकार का सूक्ष्म गणित लिखा है। की० ३॥)

भृगुप्रश्नावली (कुंजी सहित मूल्य १॥)

त्रिकालज्ञ ज्योतिष—बहुत प्रसिद्ध पुस्तक है। इसमें ज्योतिष शास्त्र के समस्त अङ्गों को बड़ी सरल भाषा में उदाहरण देकर समझाया गया है। लगभग २०० पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का मू० २) मात्र

ज्योतिष सर्व संग्रह	२)	मुहूर्त गणपति भा० टी०	४)
विवाह पद्यति	१)	हनुमान ज्योतिष	॥)
शब्द रुपावली	॥)	बड़ा वशीकरण विद्या	१॥)
रेखा विज्ञान	।=)	राशि माला	≡)
लग्न चन्द्रिका	२)	जातका लंकार	॥।)
लघु पाराशरी	॥)	भविष्य फल	॥)
चमत्कार चिंतामणि	१)	व्यापार विज्ञान जंत्री	।=)
शीघ्रबोध भा० टी०	१।)	ज्योतिष सर्व संग्रह	२)

स्वास्थ्य एवं चिकित्सा

यह निर्विवाद सत्य है कि आज की बढ़ती हुई बीमारियों और दुर्बल शरीरों का कारण स्वास्थ्य विषयक ज्ञान की कमी है।

चित्र १
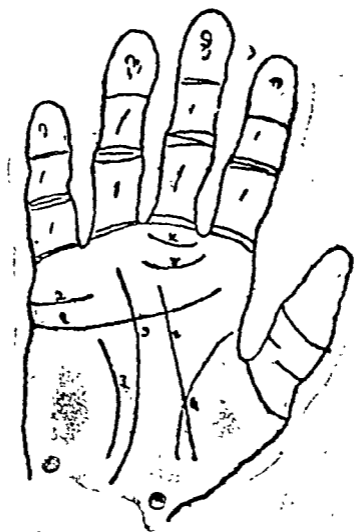
इस चित्र को देखकर विभिन्न रेखाओं का सही स्थान मालूम होगा। बिना रेखा ज्ञान किये हाथ की रेखाओं की स्थिति का पता नहीं लग सकता।

चित्र २
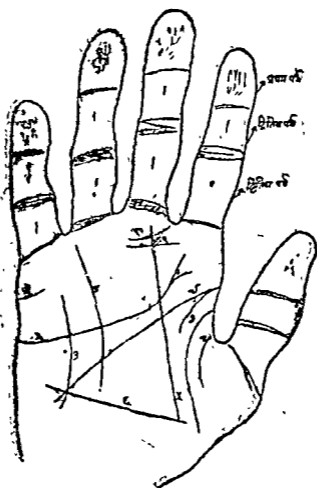
इस चित्र में तमाम रेखाओं की स्थिति को देखकर यह याद करने की कोशिश कीजिये कि कौन रेखा किस किस स्थान से गुजरती है।

चित्र ३
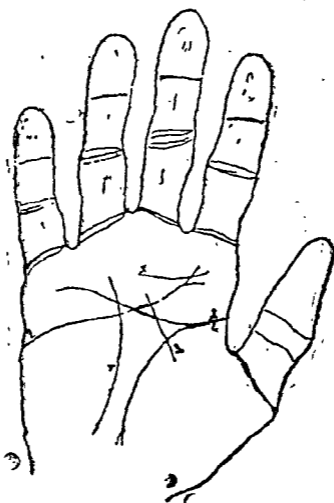
इन रेखाओं को एक दूसरे से मिलने पर अपना एक नवीन क्षेत्र बनाना पड़ता है। उनका जीवन के भविष्य पर क्या असर पड़ता है? यह जानने के लिये इन रेखाओं का ज्ञान पूरी तरह करना जरूरी है।

चित्र ४
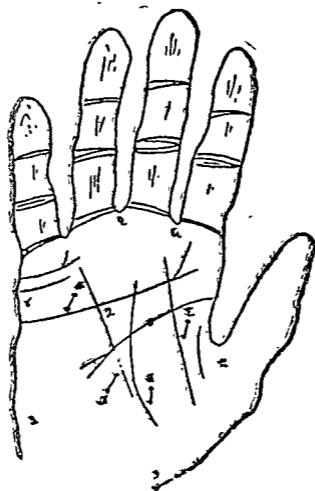
ग्रहों के स्थान से निकलने, गुजरने व मिलने से रेखाओं पर क्या असर पड़ता है ? इसकी जानकारी के लिये इनको जानना बहुत जरूरी है।

चित्र ५
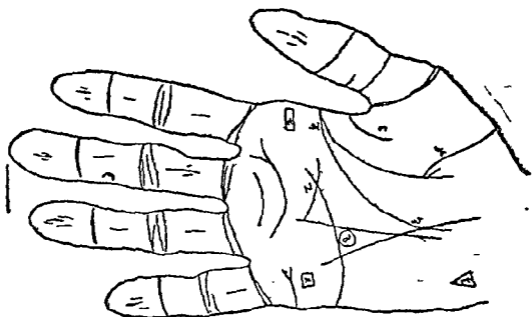
त्रिभुज, वृत, और वर्ग की स्थिति किस स्थान पर होने से जीवन घटना पर क्या प्रभाव हो सकता है। इसकी जानकारी के लिये पूरा हाल जान लेना परम आवश्यक है।

चित्र ६
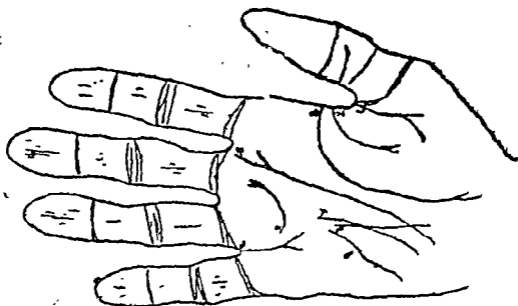
रेखाओं की विभिन्न स्थिति जो बहुत कम हाथों में देखी जाती हैं उनका अध्यन करो।

चित्र ७
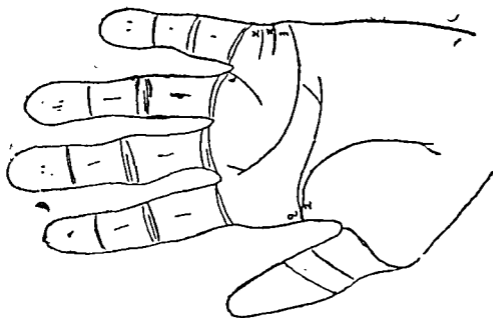
जीवन रेखा, हृदय रेखा और मस्तक रेखा के मिलन का क्या असर होता है। यह जानना अति आवश्यक है। इसकी स्थिति ही इसमें दी गयी है।

चित्र ८
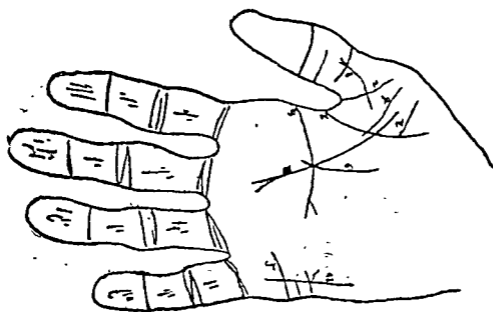
जीवन रेखा और मस्तक रेखा के निकास को गौर से देखो।

चित्र ९
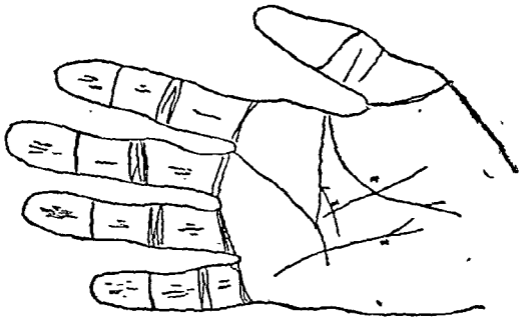
सर्प जिह्वाकार जीवन रेखा, मस्तक रेखा और स्वास्थ्य रेखा को देखो।

चित्र १०
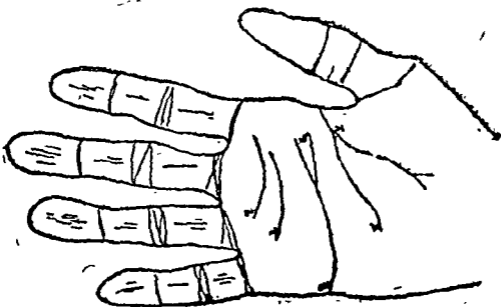
सर्प जिह्वाकार जीवन रेखा और हृदय रेखा की स्थिति को देखो।

चित्र ११
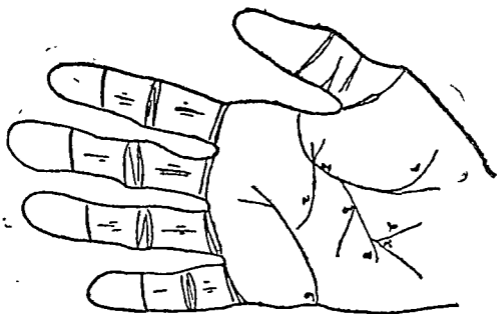
जीवन रेखा, मस्तक रेखा तथा रेखाओं से मिलने वाली चुटपुट रेखाओं को देखो।

चित्र १२
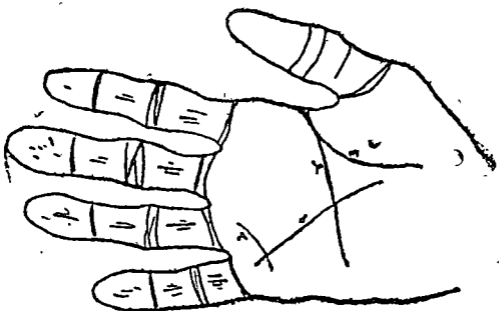
सम्मिलित होकर निकलने वाली जीवन रेखा और मस्तक रेखा को देखो।

चित्र २३
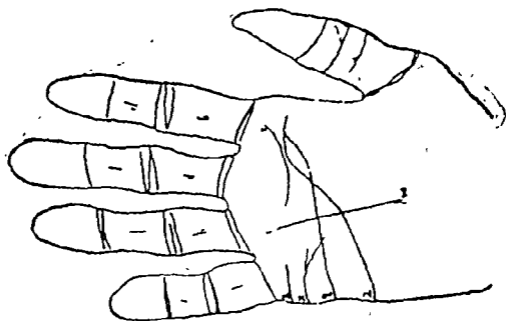
हृदय रेखा किस स्थान से निकलती है और कहां समाप्त होत है ? अन्य रेखाओं के मिश्रण का क्या फल होता है जानने लिये इस चित्र को गौर से देखना बहुत ही जरूरी है ।

चित्र २४
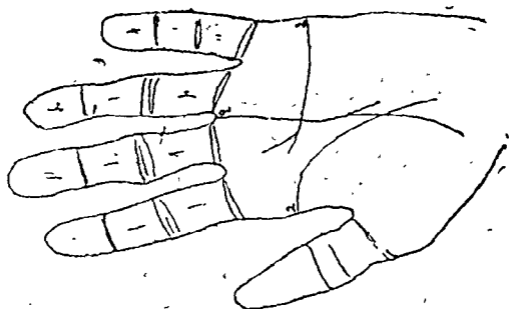
इन तीनों रेखाओं का अपना असर तो कुछ और है परन्तु उनके मिलने से एक और विषम अवस्था उत्पन्न हो जाती है उसको जानने के लिये इस चित्र को ध्यान से देखो ।

चित्र २५
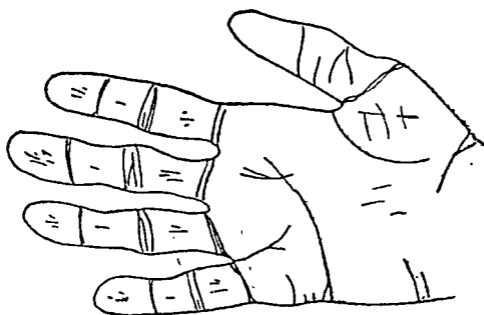
हृदय रेखा और विवाह रेखा से मिलने वाले प्रभाव को देखो।

चित्र २६
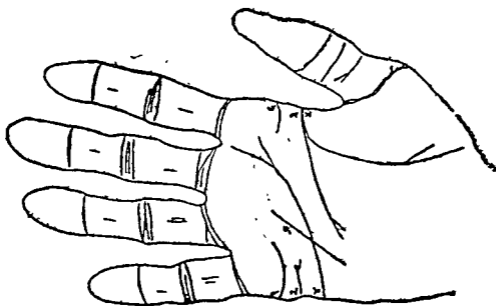
विवाह रेखाओं की स्थिति तथा उनके सम्पर्क में आने वाली रेखाओं के कारण पैदा होने वाली स्थितियों के कारण जो समस्यायें उत्पन्न होती हैं। उसके जानने को ऊपर वाले चित्र का पूर्ण ज्ञान बहुत ही जरूरी है।

चित्र १७

मणिबन्ध रेखाओं से निकलने वाली सर्प जिह्वाकार रेखाओं को देखो ।

१
२
३
४
५
६
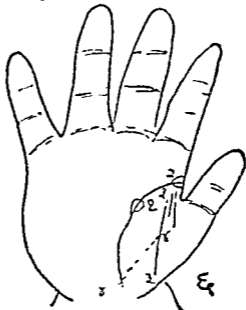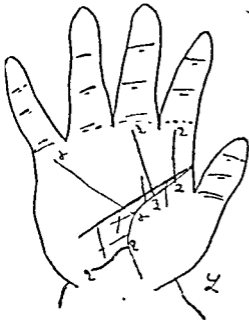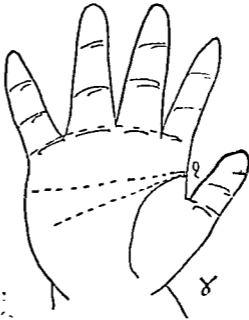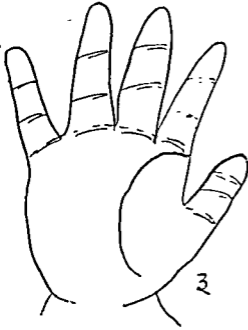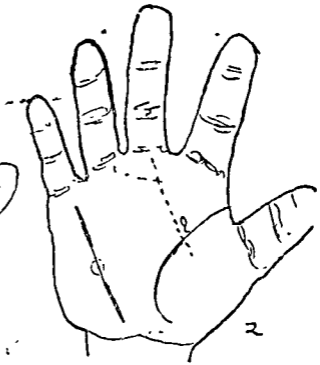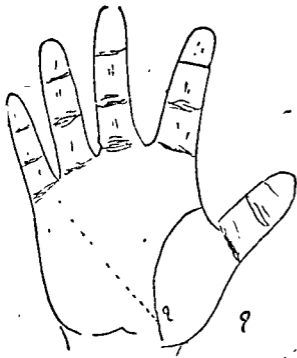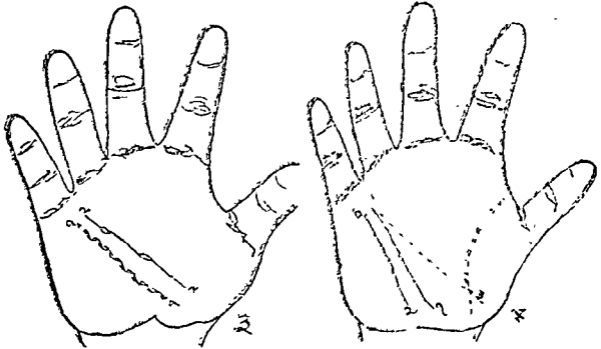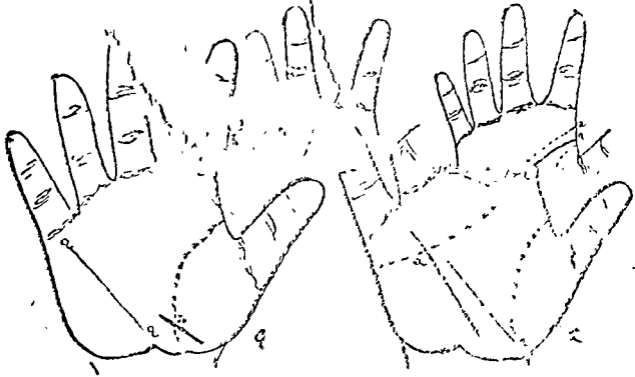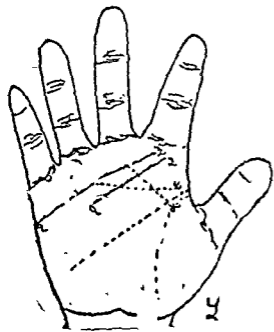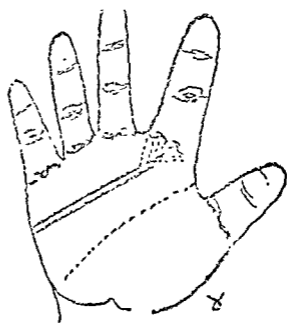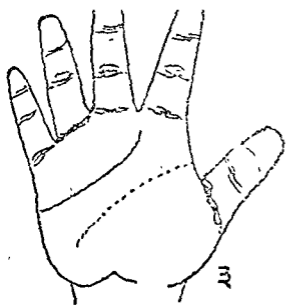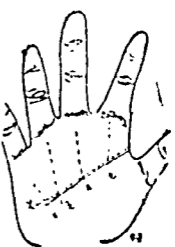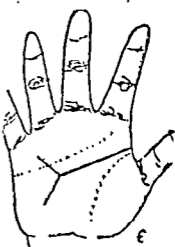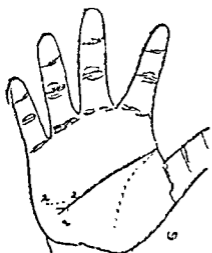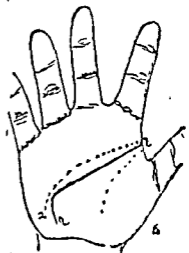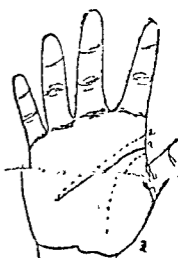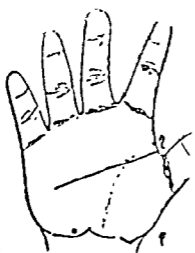
ज्योतिष-शास्त्र

※ पहला अध्याय ※

भारत अपने किसी भी विज्ञान पर गर्व कर सकता है तो वह ज्योतिष है। संसार के किसी भी देश में भारत के समान इस विज्ञान पर अन्वेषण नहीं हुये हैं। कई बार पाश्चात्य देशों ने इस बात की चेष्टायें कीं मगर उनका ज्ञान भारतीयों द्वारा किये गये अन्वेषणों से अधिक न बढ़ सका। संसार के समस्त देशों ने अपना हित समझते हुये ही भारत को ज्योतिष में अपना मुखिया माना और भारतीय ज्ञान को ही प्राप्त करने की चेष्टा की है।

संसार के समस्त विज्ञानों में ज्योतिष सबसे कठिन विषय है। इसका मूल कारण यह है कि यह विद्या केवल पुस्तकावलोकन से ही प्राप्त नहीं होती वरन् मनुष्य को अपने मस्तिष्क पर जोर डालना होता है और तब वह इस विद्या को कार्यान्वित कर सकता है।

यह सच है कि ज्योतिष शास्त्र के ज्ञाता बहुत ही कम मिलते हैं। इसका मुख्य कारण केवल यही है कि इसको सीखने के लिये अकथ परिश्रम, दीर्घ समय और तीव्र बुद्धि की आवश्यकता होती है। लगन के साथ वर्षों तक इस तरह विद्याभ्यास करने के बाद ही आदमी इसका ज्ञाता हो सकता है।

तीनों काल की बातें बताना, सूर्य चक्र, आदि नक्षत्रों की गति निकालकर ग्रहणों का पता लगाना और संसार में होने वाली आकस्मिक घटनाओं को जान लेना इस शास्त्र के ज्ञान द्वारा ही सम्भव हो सकता है ।

ज्योतिष शास्त्र के कई विभाग हैं। इतना बड़ा शास्त्र है, कि इसके हर प्रयोग को सीखने के लिए सैकड़ों वर्षों का समय चाहिये। इसलिये इसके कई विभाग हो गये हैं जिसका प्रयोग सीख कर उसी के द्वारा गति बताई जाती है।

ज्योतिष शास्त्र के मुख्य भाग हैं—

१—रमल प्रयोग।

२—स्वरोदय ।

३—सामुद्रिक।

४—जफर।

५—जातक इत्यादि।

इन विविध प्रकार के प्रयोगों द्वारा संसार भर की प्रत्येक चल अचल व प्राकृतिक बातों के भूत, भविष्य और वर्तमान के बारे में बताया जा सकता है । संसार नाशवान है इसलिये इसकी प्रत्येक वस्तु भी नाशवान है। जब तक हर वस्तु का नाश होता है उसकी जीवन लीला तीन कालों में होती है ।

तीनों काल हैं:—

१—भूत काल।

२—भविष्य काल।

३—वर्तमान काल ।

जब वस्तु का नाश हो जाता है तो उसकी जीवन लीला का एक काल ही रह जाता है वह है भूत काल । संसार का

इतिहास ही भूत काल के कारनामों से भरा पड़ा है। सच तो यह है कि इतिहास का दूसरा ही नाम भूत काल की लिखित घटनाओं का कोष कहा जाय तो किसी हद तक ठीक होगा।

१—भूतकाल—जीवन के वह दिन या वह समय जो गुजर गया हो उसे ही भूतकाल कहते हैं। अतीत की घटनायें इस काल का मुख्य अङ्ग हैं।

२—भविष्य काल—जीवन के वह दिन या वह समय जो आने को है जिस समय की मनुष्य कल्पना करता है उसे भविष्य काल कहते हैं।

३—वर्तमान काल—जीवन का वह दिन या समय जो व्यतीत हो रहा हो; जिस समय में गुजरते हुए भूत के बारे में अतीत की घटनायें सोची जा सकती हैं और भविष्य की घटनाओं का ख्याल किया जा सकता है।

ज्योतिष शास्त्र के विभागों में सबसे सरल भाग सामुद्रिक ही है। सामान्य मनुष्य आसानी से इसका अध्ययन कर सकता है क्योंकि इसके अध्ययन में गणित आदि अन्य विज्ञानों की आवश्यकता भी नहीं है और न विशालकाय यंत्रालयों की ही जरूरत महसूस होती है। मनुष्य अपने में अधिक मस्त रहता है और वह हर समय अपने भविष्य को जानना चाहता है। अतः सामुद्रिक ज्ञान द्वारा वह अपने भविष्य को जान सकता है।

आशायें निराशायें तो मनुष्य के जीवन संघर्ष का परिणाम होते हैं। मगर फिर भी मनुष्य अपने हर कार्य के विषय में यह जानना चाहता है कि उसे सफलता प्राप्त होगी अथवा नहीं? इन्हीं कारणों से वह ज्योतिष की शरण लेता है।

सामुद्रिक द्वारा मनुष्य स्पष्ट रूप से अपने हृदय में उठने वाले प्रश्नों का हल प्राप्त कर सकता है। यह सरल और जिज्ञासा को शान्त करने की क्षमता रखता है इस कारण ज्योतिष के अन्य भागों की अपेक्षा सामुद्रिक का प्रयोग अधिक होने लगा है।

सामुद्रिक द्वारा—

१—हस्त देखकर मनुष्य के जीवन के तीनों काल का विवरण बताया जा सकता है।

२—पैर देख कर भी मनुष्य के जीवन के तीनों काल का विवरण बताया जा सकता है।

३—मनुष्य की आकृति और मस्तक देखकर उसके जीवन के तीनों काल का विवरण बताया जा सकता है।

हाथ देख कर बताने की क्रिया सबसे अधिक सरल और प्रचलित है। इसका एक मात्र कारण यही है कि यह रेखाओं द्वारा जाना जाता है। हस्त परीक्षा के लिये जानना आवश्यक है कि—

१—हाथ में चार उङ्गलियाँ और अँगूठा होता है। किसी किसी के छः ङ्उलियाँ अंगूठा सहित होती हैं। उन्हें छङ्गा कहा जाता है। सामुद्रिक शास्त्र द्वारा हस्त परीक्षा करते समय चार उङ्गलियाँ और एक अंगूठे के बारे में ही विचार किया जाता है छठीं उङ्गली या अँगूठे को वैसे ही छोड़ देते हैं। उसका असर पड़ता है परन्तु उसका निश्चित विषय नहीं।

२—कलाई से ऊपर के भाग को हाथ कहते हैं। हस्त परीक्षा करते समय:—

(अ) हथेली।

(ब) चार उङ्गलियाँ ।

(स) अँगूठा

इन तीन चीजों को देखा जाता है । इन्हीं के द्वारा तमाम हाल मालूम होता है । चारों उङ्गलियाँ अँगूठे और हथेली में बहुत सी रेखायें होती हैं। यह रेखा भाग्य देखते समय काम में आती हैं ।

चारों उङ्गलियों और पाँचवे अँगूठे में तीन लाइनें होती हैं। इन्हीं तीनों लाइनों को सार्गिक रेखा कहा जाता है । सार्गिक रेखायें उङ्गलियाँ तथा अँगूठे को तीन पर्वों में विभजित करती हैं ।

१—सब से ऊपर वाले पर्व=प्रथम पर्व कहते हैं ।

२—बीच वाले पर्व को=मध्यम पर्व कहते हैं ।

३—सबसे नीचे वाले को=तृतीय या अन्तिम पर्व कहते हैं ।

प्राकृतिक नियम द्वारा इन पर्वों का अधिक महत्व है । अगर उङ्गलियों को पर्व में विभाजित नहीं किया गया होता तो वह हाथ कंकरीट उठाने वाले फावड़े की तरह होता और हम लिखने, उठाने या किसी भी काम के लिये पूरी तरह अयोग्य होते । तमाम उङ्गलियाँ और अँगूठों में तीन जोड़ हैं, जिनकी सहायता से हर काम आसानी से किया जा सकता है, और किया जाता है ।

हथेली इन उङ्गलियों और अँगूठे का मुख्य केन्द्र है । ईश्वर ने तो हथेली को उङ्गलियां और अँगूठे की सहायता के लिये बनाया पर सामुद्रिक शास्त्र ज्ञाताओं ने इसका सब से अधिक महत्व रखा है ।

पुरुष का सीधा और स्त्री का बांया हाथ देख कर ही फलादेश कहा जा सकता है ।

दूसरा अध्याय

हस्त परीक्षा

हाथ देखने वाले का कर्तव्य है कि वह जितना ज्ञान रखता है उतना ही हाथ देख कर फलादेश को कहे। वह अपने चित्त को शान्त रखे, रेखाओं तथा अन्य आवश्यकीय बातों को गौर से परखे और अगर उसे कहीं भी शंका हो तो उसे उचित है कि वह शान्त ही रहे और उस विषय पर मौन ही रहे। किसी का हाथ देख कर फल बताने में उसे सावधानी से काम लेना चाहिये और एक-एक शब्द सोच २ कर कहना चाहिए। अशुभ बात को स्पष्ट नहीं कहना चाहिये क्योंकि किसी की आशा को नष्ट कर देना प्राण-हरण से भी अधिक दुःखदायी होता है। जिस प्रकार वैद्य रोगी की दशा से उसकी मृत्यु सन्निकट जान कर भी उससे नहीं कहता कि रोगी मरने ही वाला है उसी प्रकार हाथ देखने वाले को भी उचित है कि वह अशुभ बात जानकार भी स्पष्ट न करे वरन् हेर-फेर करके उसे सचेत अवश्य कर दे।

विश्वास मनुष्य को सबल बनाने में भी सहायक होता है और दुर्बल बनाने में भी। प्रयोग के लिये आप किसी हृष्ट-पुष्ट मनुष्य से कह दीजिये कि उसकी तन्दुरुस्ती घट रही है और यह बात कहिये इस ढङ्ग से कि वह, यह सच समझ ले कि उसकी तन्दुरुस्ती घट रही है। बस कुछ ही दिनों में आप देखेंगे कि वह सचमुच दुबला पतला क्षीण-काय हो जायगा।

यह सत्य है कि आदमी पर उसके मस्तिष्क का गहरा प्रभाव पड़ता है। उज्जवल भविष्य की बात सुनकर वह उत्साहित

हो जाता है। उसका अन्तः करण प्रसन्नता से नाच उठता है और वह अधिक उत्साह और चतुरता के साथ अपने काम में लग जाता है। अन्धकारमय भविष्य की बात सुनते ही आदमी का दिल टूट जाता है। उसका उत्साह समाप्त हो जाता है और वह दुःखी हृदय से जीवन यापन करने लगता है। अतः हाथ देखने वाले को यह उचित है कि फलादेश कहते समय पूरी सावधानी रखे और अशुभ फलादेश को स्पष्ट कहने की बजाय संकेतों द्वारा ही समझाने का प्रयत्न करे तो अति उत्तम है।

हाथ दिखाने वाले को चाहिये कि भविष्यवक्ता के उपदेशों को मन लगाकर सुने, जो उसके अनुकूल हो और जितना साहस प्राप्त हो, उतना स्वीकार करे तथा अच्छे विचारों को गृहण करे और आने वाली घटना के लिए पहिले से ही ऐसा प्रयत्न करे कि उसका परिणाम ज्यादा अशुभदायक न हो तथा शुभ फल जो आने वाले हैं उनको भी याद रखे। सब चिन्ता को चित्त से हटाकर हाथ दिखाना चाहिये।

मन एकाग्र कर काम, क्रोध, लोभ मोहादि से रहित होकर फल, पुष्प, दक्षिणादि लेकर अति विनयपूर्वक खुद गुरू के पास जाकर पदार्थ भेंट कर अपना हाथ दिखाते समय हाथ जल से धोकर दिखाना चाहिए।

हस्त परीक्षा कराते समय किसी तीसरे व्यक्ति को अपने पास नहीं रहने देना चाहिए, न साथ में लेकर जाना चाहिए, क्योंकि परीक्षक और अधिकारी की एकाग्रता में बाधा पड़ेगी। उसके अलावा कोई दुर्गुण की बात होगी तो तीसरे व्यक्ति पर प्रकट हो जायगी और स्वयं अधिकारी भी दोषपूर्ण सत्य को अस्वीकार कर देगा।

आवश्यकीय नियम

हस्त-रेखा देखने वालों को चाहिये कि पहिले पुरुष के दाहिने हाथ और स्त्री के बांये हाथ से शुभाशुभ फल कहें। साथ ही साथ पुरुष के दाहिने भाग और स्त्री के बांये भाग के सभी लक्षणों को देखना चाहिए। यदि पुरुष के दाहिने अङ्ग में चोट लगने का, फोड़े का, लाल या काला तिल मसा या घाव का चिन्ह हो तो शुभ और स्त्रियों के उक्त लक्षण बांये भाग में हों तो शुभ जानना चाहिए।

पहिले मणिबन्ध उसके बाद दोनों हाथों को देखना और पृष्ट भाग देखना। उसके बाद हथेली और ऊपर की रेखा अँगुष्ठ, अँगुली, अँगुलियों के नख के लक्षण क्रम से देखना।

स्त्री स्वभाव वाले पुरुष का बांये हाथ और पुरुष स्वभाव वाली स्त्री का दाहिना हाथ देखना चाहिए। क्योंकि स्त्री स्वभाव वाले पुरुष का बांया हाथ दाहिनेसे वली और पुरुष स्वभाव वाली स्त्री का दाहिना हाथ बांये हाथ की अपेक्षा वली होता है।

वालक चौदह वर्ष का होता है तब तक उसकी प्रकृति स्त्री स्वभावानुसार होती है। इससे वालक के वाम हस्तको प्रधान और दक्षिण हस्त को गौण मान कर परीक्षा करनी चाहिये।

फल कहने में शीघ्रता नहीं करनी चाहिए। खूब सोच-विचार कर सब लक्षणों को मिला कर कहना चाहिये।

स्थिर चित्त होकर हाथ देखना चाहिये। ऐसा न करने से भूल होने की सम्भावना रहती है। क्योंकि मनुष्य के हाथ मनुष्य की जन्मकुण्डली है। ठीक तौर से देखा जाय तो ठीक फल बताया जायेगा। इससे दिखाने वाले और देखने वाले दोनों

को सावधान और एकाग्रचित होकर हस्तरेखा का निरीक्षण करना आवश्यक है।

मनुष्य के बांये हाथ से लक्ष्मी, राज्य, वाहनादि का विचार और दाहिने हाथसे ज्ञान,ऐश्वर्य पुत्रादि का विचार करना चाहिए।

बड़े प्रातःकाल, सायंकाल, रात्रि में, मध्यान्ह में, जहाँ हँसी हो, यात्रा समय, सवारी में और रास्ते में बिना फल-फूल या द्रव्य के नहीं देखना चाहिए।

धूर्त, मूर्ख, पण्डित और दरिद्री को सभा में देखना निषेध है। सुन्दर स्निग्ध विहंसित मुख वाले सुन्दर पुरुष का हाथ देखना उचित है। विवाह रोग, मृत्यु इत्यादि की रेखाओं को दोनों हाथों में ध्यानपूर्वक देखना चाहिये। हाथ स्वाभाविक दशा में होना चाहिए। हाथ मजबूती से पकड़ो और रेखा इस तरह दबाओ कि रक्त प्रवाह करे। तब मालूम होगा कि रेखा किस तरफ बढ़ने वाली है।

पूर्व रेखाओं पर मत प्रकट करने के पहिले हाथ की बनावट पर अवश्य ध्यान देना चाहिये। हथेली सख्त है या कोमल। अँगूठे का ऊर्ध्व भाग सीधा, मुड़ा लम्बा छोटा या ऊपर से नोकदार या गोल है और अँगुलियां किस ओर झुक रहीं हैं।

देवता तथा तीर्थ

हथेली के अग्र भाग में लक्ष्मी, मध्य में सरस्वती और मूल में ब्रह्म देव का स्थान है अंगूठे के नीचे ब्रह्मतीर्थ, कनिष्ठा के मूल में प्रजापति तीर्थ, उंगलियों के अग्रम भाग में देवतीर्थ तथा अंगूठे और तर्जनी के बीच में पितृ तीर्थ हैं।

———

हाथ के सात भेद हैं :—

(१) समकोण (२) चमसाकार (३) दार्शनिक (४) कलाकार या व्यवसायिक (५) निकृष्ट (६) आदर्शवादी विषम (७) या मिश्रित।

समकोण हाथ

हाथ सात प्रकार के होते हैं जिसमें से समकोण हाथ सब से श्रेष्ठ है और उपयोगी भी हैं। इसको समकोण इसलिये कहते हैं कि यह चौकोर शक्ल का होता है और इसमें कलाई और उँगलियों के बीच हथेली और उँगलियाँ अलग अलग नाप में समकोण की तरह होती हैं। उँगलियाँ सपाट मुलायम और नीचे हथेली के पास सुडौल होकर जड़ी होती है। मध्यमा उँगली के नीचे की गाँठ आकार में कुछ बड़ी होती है इस प्रकार के हाथ में प्राय नाखून छोटे और चौकोर होते हैं।

उस प्रकार के स्वभाव वाले मनुष्य स्वभाव से ही नियमित व्यवहार वाले स्वभाव के कोमल मिलनसार उत्साही सब के साथ नम्रता का वर्ताव करने वाले, आज्ञाओं का पालन करने वाले असभ्यता के व्यवहार को सहन न करने वाले होते हैं। बिना अधिकार वह किसी को बीच में बोलता हुआ देख चिढ़ जाते हैं और स्वयं भी किसी के बीच में नहीं बोलते हैं। वे झगड़ालू नहीं होते हैं शान्ति तथा समझौते को विशेष चाहते हैं ऊँचा पद पाने की इच्छा करते हैं। अभिमानी नहीं होते और उन पुरुषों को जो असभ्य हैं अभिमानी हैं तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं। उनमें कल्पना शक्ति का लगभग अभाव सा होता है परन्तु अपने लक्ष साधन में एकाग्र और उत्साही होने के कारण प्राय: अपने सभी कार्यों में सफल हो जाया करते हैं। वे क्रियात्मक अध्ययन तथा विज्ञान से विशेष प्रेम करते हैं। घर के कार्यों में भी

स्नेह रखते हैं । वे प्रतिज्ञा का पालन करने वाले, मित्रता को निभाने वाले, उद्देश्य के पक्के और व्यापार में नीतिमान तथा सच्चे होते हैं। वे प्रेम में दिखावा नहीं करते। उँगलियाँ यदि गठीली और समकोण के आकार की हों तो सत्यवादी और शांति स्वभाव वाले होते हैं। जिनकी उँगलियाँ चिकनी और मस्तक रेखा झुकी हों तो वे सुन्दर वस्त्र पहिनने वाले साफ-सुथरे होते हैं। तर्कशक्ति अधिक होती है। और अपना बहुत सा समय किसी बात को सिद्ध करने में व्यय कर देते हैं, यही एक दोष है। यदि कनिष्ठ उँगली टेढ़ी होती है तो उनमें कुछ दोष होता है उस दोष को छोड़ने के लिये ऐसे हाथ वाले से कहना चाहिये।

चमसाकार हाथ

चमसाकार हाथ की उँगलियाँ मुड़ी हुई टेढ़ी होती हैं। हथेली एक हाथ में कलाई के पास अधिक और उँगलियों के पास कम चौड़ी, तो दूसरे में अँगुलियों के पास अधिक और कलाई के पास कम चौड़ी होती है।

यदि चमसाकार हाथ उँगलियों के मूल में चौड़ा हो तो विशेष कार्य-शील तथा व्यवहार कुशलता को व्यक्त करता है। यदि ऐसा पुरुष आविष्कार करता है तो अपनी बुद्धि उस आविष्कार को कार्य रूप में परिणित करने के लिए लगाता है और जीवन उपयोगी पदार्थों का निर्माण करता है। यदि हाथ मणिबन्ध की ओर ज्यादा बड़ा होता है तो ऐसे पुरुषों की बुद्धि संसार के कार्यों में उन्नति करने की तरफ होती है। यदि धार्मिक होगा तो नये प्रकार से पूजा या कीर्तन का प्रचार करने का अभिलाषी होगा और अपनी थोड़ी सी भक्ति से संसार भर में हल-चल मचा देने का साहस रखता है। ऐसे व्यक्तियों का

संसार में होना आवश्यक है क्योंकि उन्नति के मार्ग के पथ प्रदर्शक होते हैं।

यदि हाथ मजबूत और सख्त होता है। मजबूत और सख्त हाथ में उँगलियों का गाँठदार होना मनुष्य के परिश्रमी और उद्यम-शील होने का लक्षण है। वे कभी सुस्त नहीं बैठते, कुछ न कुछ करते ही रहते हैं। यदि शरीर से कुछ न करेंगे तो मन से गम्भीर बातें सोचेंगे। एक क्षण बेकार नहीं बैठ सकते। वे साहसी और प्रयत्नशील होते हैं। स्वतन्त्र कार्य करने की शक्ति होती है। स्वतन्त्र विचार शक्ति ही उनको दूसरों के विचारों का विरोध करने के लिए बाध्य करती है।

सरल हाथ के मनुष्य शासन करने के इच्छुक होते हैं। वह किसी के दबाव में रहना पसन्द नहीं करते हैं और लड़ाई-झगड़ा करने वाले, साहसी योधा और विप्लवी होते हैं। ऐसे लोगों में यह आदत होती है कि जहाँ चार आदमी बैठे हों, वहाँ पहुंचकर एक नई बात छेड़ देते हैं जिससे उन लोगों में खल-बली पड़ जाती है। और ऐसे लोग कुछ न कुछ नवीन विचार तथा नव-जीवन के अग्रणी होते हैं।

उँगलियाँ गाँठदार हों तो मनुष्य परिश्रमी और स्वभाव में सरल, क्रोध कम करने वाले और बोलचाल के नम्र होते हैं। शरीर फुर्तीला होता है। घोड़े की सवारी शिकार खेलना, निशाना मारना दौड़ने कूदने के काम वे अधिक पसन्द करते हैं।

यदि उँगलियाँ गाँठदार न होकर चिकनी हों तो दस्तकारी को अच्छा समझते हैं, और दूसरों को सलाह देते हैं। परन्तु वे स्वयं कोई कुशल कलाकार नहीं होते। यदि उँगलियाँ चिकनी होने के साथ लम्बी भी हों तो पेड़, पौधे, खेती के काम में रुचि अधिक पाई जाती है।

दार्शनिक हाथ

दार्शनिक हाथ प्रायः लम्बा गठीला, कोणाकार, बीच से झुका हुआ होता है। उँगलियाँ हड्डीसी, जोड़ उभड़े हुए तथा नख लम्बे होते हैं। इस प्रकार का हाथ सहज ही में पहचाना जा सकता है।

इस प्रकार का व्यक्ति बिखरी हुई सम्पत्ति को संग्रह करने के स्थान पर बिखरे हुए गुणों को संग्रह करता है। तीव्र—अभिलाषी होता है। ये स्वभाव के विलक्षण, माया की सीमा से परे होते हैं, और उनके विचार पवित्र और उच्च होते हैं। स्वाभिमानी होने के कारण यह गम्भीर अधिक रहते हैं। घनिष्ट मित्रों की संख्या अधिक नहीं रहती, धनी कम देखे गए हैं। धनी हुए तो धन को परोपकार में लगाने वाले होते हैं। मनुष्य जाति से प्रेम करना उनका स्वाभाविक गुण होता है। विचारों के इतने स्वतन्त्र और स्पष्ट होते हैं कि जब तक पूरा प्रमाण न मिले तब तक ये शङ्का करते रहते हैं। ऐसे हाथ विशेपतया ब्राह्मण, योगी तथा ईश्वर साक्षात करने वालों के देखे जाते हैं। इस प्रकार के हाथों में यह ध्यान देने योग्य है कि उँगलियों की उन्नत ग्रन्थि विचारवान मनुष्यों का मुख्य चिन्ह समझी जाती है। जब कि समतल चिकनी नौकीली उँगलियाँ उसके विपरीत होती हैं।

इस प्रकार के हाथ वाले किसी खास विषय के विद्यार्थी होते हैं और अपने आपको दूसरे लोगों से बिलकुल भिन्न रखना पसन्द करते हैं। और यदि प्रचारक हुये तो असाधारण बातों का प्रचार करते हैं। ऐसे लोग शान्ति गूढ़-विचार वाले, सावधान, साधारण बोलचाल में भी हर बात खूब सोच समझ कर कहते हैं।

कलाकार या व्यवसायिक हाथ

हाथ की उँगलियाँ ऊपर सिरे पर पतली, मूल में भरी हुई और मोटी होती हैं। हाथ की लम्बाई चौड़ाई मध्यम प्रकार की होती है। इस प्रकार के हाथ वाले अपने विचारों में निर्बल होते हैं। धैर्य बिलकुल नहीं होता और इतनी जल्दी थक जाते हैं, कि अपने सङ्कल्प को शायद ही कभी पूरा कर सकते हैं। किसी काम के करने में शीघ्रता करना और फिर उसे बिना समाप्त किए ही छोड़ बैठना उनका स्वभाव होता है। किसी काम का परिणाम नहीं सोचते। मन में विचार आते ही हर काम करने को उद्यत हो जाते हैं। वे बातचीत करने में चतुर होते हैं। और किसी भी विषय के अर्थ को शीघ्र ही समझ जाते हैं। यह बहुत बोलने वाले होते हैं। इन पर दूसरों का प्रभाव बहुत जल्दी पड़ता है और छोटी-छोटी बातों पर नाराज हो जाते हैं। तनिक सी बात को बढ़ा देने का गुण इन में अधिक होता है। स्वभाव चञ्चल, विचार अस्थिर होता है। क्रोध आने पर अपने आपे से बाहर हो जाते हैं। और क्रोधावेश में उन्हें कुछ भी ज्ञान नहीं रहता है। जो मुँह पर आता है कह डालते हैं-दूसरों के साथ उदार होते हैं। परन्तु जहाँ अपने लाभ और स्वार्थ का प्रश्न आता है वहाँ रूखे और स्वार्थी बन जाते हैं। प्रेम के बारे में यहाँ तक दृढ़ होते हैं कि यदि किसी से प्रेम हो जाय तो अन्त तक निभाते हैं। कोई भी व्यक्ति उन्हें साधारण सी बातों में चिढ़ा सकता है। ये दान में शीघ्र रुपया देने के लिए प्रभावित किए जा सकते हैं। यदि हाथ लम्बे मुलायम तथा भारी हों तो धोका देना झूँठ बोलना मक्कारी धूर्तता आदि बुरे लक्षण पाये जाते हैं।

ये अपनी वासनाओं को मिटाने के लिए ही किसी के साथ

सम्बन्ध करते हैं गृहस्थी से प्रेम कम होता है और अपना बहुत सा समय मित्रों के साथ चुहल करने में व्यतीत करना अधिक पसन्द करते हैं। कर्ज लेकर देना नहीं आता, बातों का जमा खर्च अच्छा करते हैं।

हाथ गाँठदार हो तो सुन्दरता के प्रेमी होते हैं दुष्ट भाव से नहीं। देखने में सुन्दर आकार वाला मोटा--छोटा हो तो धनी होने की लालसा लगी रहेगी और अनेकों प्रकार के प्रयत्न करते हैं परन्तु भाग्य न होने के कारण सब प्रयत्न विफल होता है। और कभी २ मुसीबत में फँस जाते हैं। ऐसे हाथ वाली स्त्रियाँ खुशामद पसन्द और प्रेम के बारे में अज्ञानी और उतावली होती हैं और बिना समझे बूझे प्रेम करने लग जाती हैं।

निकृष्ट हाथ

निकृष्ट हाथ आवश्यकता से अधिक मोटा भारी भद्दे आकार वाला होता है। हाथ खुरदरा अंगुलियाँ और नाखून छोटे और रेखाऐं भी कम, प्रायः अंगूठा छोटा मोटा और लगभग चौकोर होता है, ऐसे हाथ मन्दबुद्धि और दुष्टप्रकृति लोगों के देखे गए हैं। और उनकी बुद्धि पाशविकता की ओर प्रभावित रहती है स्वभाव के क्रोधी, कम हिम्मत वाले, क्रोध आने पर जो मुँह में आता है, कह डालते हैं।

सदा इच्छाओं के दास बने रहते हैं। और वासनाओं की तृप्ति में पशुओं का सा बर्ताव करते हैं। जितनी अधिक बड़ी हथेली होगी उतना ही अधिक पाशविक शक्ति का प्रभाव होगा। ऐसे हाथ वाले खाना पीना, सोना और धन के लिये मरना जानते हैं उनको किसी प्रकार की शुभ इच्छाऐं नहीं होतीं।

आदर्शवादी या विषम हाथ

आदर्शवादी हाथ देखने में सुन्दर लम्बा, तंग अंगुलियाँ सिरे पर अधिक पतली और उतनी ही नोंकदार नाजुक, सिरे पर उभरी हुई और नाखून लम्बे बादामी बनावट के होते हैं। अँगुलियाँ ऊपर से पतली और लम्बी होकर नीचे की ओर से मोटी होती हैं।

इस प्रकार के हाथ वाले काल्पनिक तरह तरह के मन्सूबे बांधने वाले होते हैं पर कुछ कर नहीं पाते, प्रबन्ध करने में अयोग्य होते हैं। समय का उपयोग नहीं जानते इससे उद्यमी नहीं बन सकते। परिश्रमी के साथ काम करने का साहस नहीं करते। स्वभाव के शान्त और सन्तोषी होते हैं। उनपर जो थोड़ी भी कृपा करता है उसका वे झट भरोसा कर लेते हैं। न तो वे व्यवहार कुशल, और न तर्क शील होते हैं। उनको समय का, आज्ञाओं का नियमों का बिलकुल ध्यान नहीं रहता। वे दूसरों के प्रभाव में जल्द आ जाते हैं, शीघ्र भरोसा कर लेते हैं। और धोखा खाने पर बहुत दुःख मानते हैं। राग, रंग शोक दुःख का बहुत प्रभाव पड़ता है। रंगों से प्रेम होता है। इष्ट देव की पूजा अर्चना भजन संगीत समारोह उत्सव इत्यादि से प्रभावित होते हैं।

देवता से श्रद्धा और आराधना में तत्पर रहते हैं। कट्टर धार्मिक और इष्टदेव को प्रत्यक्ष देखने के अभिलाषी होते हैं।

मिश्रित हाथ

मिश्रित हाथ में प्रायः सभी हाथों के लक्षण होते हैं। पहिली उँगली नोंकदार, दूसरी झुकी हुई टेढ़ी, तीसरी समकोण

या अन्य प्रकार की हों, इस हाथ में समकोण चमसाकार या दार्शनिक सभी के लक्षण होते हैं।

ऐसे हाथ वाले का किसी काम को बिना पूरा किये छोड़ देना और फ़िर दूसरे काम में लग जाना स्वाभाविक गुण है। सफलता उनसे दूर सदा दूर ही रहती है।

यदि हाथ की उँगलियाँ समकोण होकर ऊपर से नोंकदार हों, तो धोखेबाज और दूसरों की आँख में धूल डालकर स्वार्थ सिद्ध करने वाले होते हैं। निकृष्ट और व्यवसायिक हाथ के लक्षण से बेपरवाह, दूसरे के सहारे काम करने वाले होते हैं। वे किसी विषय पर बात कर सकते हैं, पर उनका प्रभाव सुनने वाले पर नहीं पड़ता।

यह भी जान लेना आवश्यक है कि हाथ कोमल और कठोर भी होते हैं। कठोर हाथ परिश्रमी, जोशीला, धैर्यवान होने का लक्षण है। कोमल हाथ आरामपसन्द, आलसी और तनिक मुसीबत में घबरा जाने का लक्षण है। दाहिना हाथ बांये हाथ की रेखाओं को सही करताहै और जो स्वयम् उन्नति करके जीवन में परिवर्तन किया है उसे बतलाता है। इस हाथ को कर्ता कहना चाहिये। बांया हाथ जो कुछ पैदायशी खासियत है उसे बतलाता है। इसलिये इसको अकर्ता हाथ कहना चाहिये।

जब कोई रेखा दोनों हाथों में पाई जाती है तो उसका पूरा फल होता है और यदि कोई रेखा केवल दाहिने में पाई जाय तो उसका फल आधे से ज्यादा होता है और यदि सिर्फ बांये में पाई जाय तो उसका फल आधे से कम होता है। हाथ बड़े लम्बे, गठीली उँगली, अँगूठे की गाँठ मजबूत और उँगलियों के पोर एक दूसरे से कुछ बड़े हों या उपरोक्त कोई भी चिन्ह हो तो वह व्यक्ति किसी बात को पूरे विवरण के साथ

जानने की कोशिश करेगा । यदि हाथों में बहुत रेखा होवें तो चिड़चिड़ापन, तनिक बात में नाराज होजाना और उसे बहुत बढ़ा देना स्वाभाविक हो जाता है जिससे बेचैनी और स्वास्थ्य को हानि पहुँचती है । यह मानसिक चिंता और जल्द थक जाने की भी निशानी है ।

हाथ में गड्ढे का होना दुर्भाग्य का लक्षण है और लगातार जीवन में असफल होना बतलाता है ।

यदि हाथ का रंग लाल हो, अंगुलियां सटी हों, हथेली चिकनी मांस से भरी हुई, चमकीले लाल रंग के नख वाली बड़ी बड़ी अंगुलियां हों तो वह हाथ उत्तम दर्जे का होता ।

हथेली का रंग लाल हो तो धनी । नीले रंग का हो तो मदिरा सेवन करने वाला । पीले रंग का हो तो दुष्ट स्त्रियों में आसक्त रहने वाला । सफेद किंवा काले रंग का हो तो निर्धन होता है ।

हथेली ऊँची हो तो दाता, गोल हो तो धनी, ऊँची नीची हो तो निर्धन । मध्यम भाग गहरा हो तो कृपण होता है ।

लम्बे हाथ वाले क्रियाशील और काम नियमित रूप से करने वाले होते हैं ।

छोटेहाथ वाले बहुत सा समय सोच विचार में और तरह तरह के मनसूबे बांधने में व्यतीत करते हैं, छोटे हाथ वाले जितना चाहते हैं उतना करते नहीं और ऐसा सोचते हैं जो पूरा करना उनकी शक्ति से बाहर होता है । लिखते समय बड़ा बड़ा अक्षर लिखते हैं ।

हथेली और अंगुलियों की लम्बाई दोनों की एक समान बराबर हो तो शुभ जानना चाहिये । जिस कदर बड़ी छोटी हो उसी के अनुमान से भाग्य की कल्पना करनी चाहिये ।

३

❀ हथेली ❀
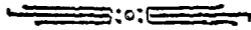
हथेली न बहुत संकुचित न बहुत चौड़ी होनी चाहिये।

हथेली चौड़ी हो तो उदार, अनुभवी और परिश्रमी होने का लक्षण है।

हथेली अधिक पतली सिकुड़ी हुई शुष्क और सख्त हो तो निरुत्साही डरपोक निर्बल बुद्धिहीन चरित्रहीन चंचल-स्वभाव और तनिक परिश्रम से थक जाने वाला होता है। लम्बी मुलायम हथेली मनुष्य को आलसी और आरामपसन्द प्रगट करती है।

हथेली अधिक भारी मोटी मुलायम बेढंगी हो तो वह मनुष्य का स्वार्थी इन्द्रियलोलुप व्यसनी और विषय-भोग में मग्न रहने वाला सिद्ध करती है।

कोमल ढीले हाथ वाला मनुष्य निरुत्साही आलसी काल्पनिक और आरामपसंद होता है। परिमित से छोटा करतल वाचाल मनुष्य का होता है। दृढ़ करतल वाला चंचल तथा योग्य प्रकृति वाला होता है। गहरी हथेली दुर्भाग्य का सबसे बुरा लक्षण है। यदि वह गहराई पितृ रेखा की तरफ झुकती हो तो

गृहस्थी सम्बन्धी कामों में निराशासूचक है । और रेखायें कोई रोग बतावें तो भयानक रोग का लक्षण है ।

यदि गहराई हृदय रेखा की तरफ हो तो इष्ट मित्रों की ओर से निराशा और कोई सहायता न मिलने की सूचना है ।

यदि गहराई भाग्य रेखा के नीचे पड़ती हो तो सांसारिक व्यवहार व्यापार रुपये पैसे के सम्बन्ध में बुरा फल बतलाती हैं । जिसके हाथ में हो उसका भाग्य डांवाडोल रहता है । वह जिससे लेता है उसको चुकाना मुश्किल हो जाता है और किसी को देने से रुपया पैसा इत्यादि मिलना कठिन हो जाता है ।

अँगुली और अँगूठा यदि शुभ सूचक हो तो इस प्रकार की हथेली के फल को रोक नहीं देते पर हाँ मध्यम् कर देते हैं ।

कोमल और मजबूत हथेली साहस, प्रबल इच्छा-शक्ति की सूचक है ।

सफेद हथेली होतो प्राणी खुदगरज आत्म-प्रशंसी पराये दुख में सहानुभूती नहीं रखता ।

पीली हथेली हो तो पित्त प्रकृति और सन्तप्त स्वभाव वाला होता है ।

काली हथेली हो तो दुखी निस्तेज कफ प्रकृति का और बहुत कोमल स्वभाव वाला होता है । अरुण वर्ण की हो तो धनी और उम्मीद रखने वाला होता है ।

भूरी हथेली हो तो निस्तेजता और पुरुषत्व हीनता की सूचक है ।

गुलाबी हथेली सबसे अच्छी होती है । यह तेजस्विता और न्याय बुद्धि होने की सूचना है ।

पाश्चात्य मत

यदि हथेली, पतली, संकरी और झुर्रीदार होती है तो वह कायरताकी द्योतकहै। वह यह स्पष्ट करतीहै कि ऐसी हथेली वाला मनुष्य क़ायर, डरपोक, कमजोर मस्तिष्क वाला होता है, उसका दृष्टिकोण छोटा होता है और वह बुद्धिमान भी नहीं होता। उसका चरित्र गहरायी शून्य होने के कारण उसमें स्फुर्ती, दिमागी शक्ति और नैतिकता की भी कमी रहती है। और यदि ऐसी हथेली के साथ उँगलियाँ लम्बी और पतली होती हैं तो वह उसकी विद्रोही भावनाओं की द्योतक होती है।

यदि हथेली, उँगलियों, अँगूठे और शरीर के आकार के अनुसार ही होती है और वह कड़ी न होते हुये भी स्थिर हो, उसमें लचक हो मगर झुर्रियां न पड़ें तो वह इस बात को प्रमाणित करती है कि ऐसी हथेली वाले प्राणी का मस्तिष्क स्थिर होता है। वह गुणाग्राही होता है। वह सर्व-प्रिय, बुद्धिमान् और शीघ्र ही तनिक सी प्रेरणा मिलते ही सुकार्य में लग जाने वाला होता है। मगर किसी प्राणी की हथेली अपने सुआकार से अधिक बड़ी होती है तो वह सिद्ध करती है कि इस प्रकार की हथेली वाला प्राणी अपने पर अत्यधिक विश्वास रखने वाला होता है। वह स्वार्थी और कांईया होता है। इस प्रकार की हथेली विशेषतः मणिबन्ध रेखा की ओर अधिक आकार में होती है।

यदि हाथ कड़ा है, हथेली उँगलियों की अपेक्षा लम्बी है तो वह प्राणी क्रूर और पशु-प्रकृति वाला होता है। हिंसा, हत्या की वह तनिक भी परवाह नहीं करता। इन गुणों का प्रभाव उस समय कम हो जाता है जब दूसरे लक्षण—जैसे कि मजबूत अँगूठा, और गहरी मस्तिष्क रेखा पायी जाती हो। हथेली

आकार में सामान्य होनी चाहिये और उँगलियों और अँगूठे के साथ मेल खाने वाली होनी चाहिये। यदि इसके विपरीत होती है तो उसके प्रभाव भी विपरीत ही होते हैं।

यदि हथेली कोमल और झुर्रीदार हो तो वह अज्ञानता और मूर्खता की द्योतक होती हैं। ऐसी हथेली वाला प्राणी दिमाग, शरीर से क्षीण होता है। वह विलासी और आराम तलब होता है और अपने आलस्य के कारण ही वह सुअवसरों को खो देता है।

यदि हथेली मोटी और स्थिर होती है और उसका रंग सफेदी की ओर अग्रसर होता प्रतीत होता है तो वह स्वार्थी, और अभद्र व्यवहार की द्योतक होती है।

यदि हथेली गहरी होती है तो वह दुर्भाग्य, हानि दुःख पूर्ण जीवन और जीवन के हर क्षेत्र में निराशा सिद्ध करती है।

उँगलियों की तरह हथेली के भी तीन भाग किये गये हैं। उन भागों को निम्न तीन श्रेणियों में विभाजित किया जाता है—

प्रथम भाग वह कहलाता है जो स्थान हृदय रेखा और उँगलियों के बीच में स्थित होता है। शेष दो भाग प्रत्येक भाग से भिन्न होते हैं और भिन्न २ हाथों को देखने पर ही उनको जाना जा सकता है।

उत्तर-पूर्वीय मतानुसार हथेली पर ग्रहों के स्थान को जानने के लिये।

आकृति को गौर से देख कर ग्रहों का स्थान देखना आवश्यक है। इन्हीं ग्रहों के आधार पर भूत भविष्य और वर्तमान बिगड़ता बनता है। गौर से देखकर सात ग्रहों को देखो। यह ग्रह एक दूसरे से काफी मिले जुले हैं। केवल गुरु को छोड़कर

छः ग्रह एक दूसरे की परिधि में जाकर अपना असर दिखाने से नहीं चूकते। गौर से देखने से पता चलेगा कि:—

सूर्य—तर्जनी और मध्यमा उँगली के मध्य भाग में इस का स्थान है। इसका क्षेत्र ऊपर से चौड़ा और नीचे की तरफ जाते २ सर्पाकार हो जाता है। तर्जनी से मध्यमा तक के तमाम भाग और मध्यमा के नीचे के कुछ भाग से लेकर यह नीचे की तरफ उतरता हुआ हथेली के मध्य भाग में जा पहुँचता है। इस के क्षेत्र में जितनी भी रेखाएं आती हैं उन पर—

आकृति

पाश्चात्य मतानुसार जिसे आजकल भारतीय ज्योतिषियों ने अपना लिया है। ग्रह-स्थानों की दशा और इनका वर्णन भाग २ में पढ़ें।

उन ग्रहों का भविष्य पर और मनुष्यकी जिंदगी पर गहरा प्रभाव होता है। कौन ग्रह हाथ के किस स्थान पर होता है इसका

जानना निहायत जरूरी है। इस चित्र में ग्रहों का पूरा विवरण मौजूद है। सब पर रेखाओं ग्रहोंका प्रभाव अवश्य पड़ता है। शनि भी तर्जनी की जड़ से कुछ दूर आकर इससे मिलता है।

शुक्र मुद्रिका रेखाओं पर इनके मिलने वाले स्थान का गहरा प्रभाव पड़ता है।

शनि—मध्यमा की जड़ से यह शुरू होकर तर्जनी की जड़ और अनामिका के पूर्ण भाग में से थोड़ा सा भाग छोड़कर यह समस्त क्षेत्र को घेर लेता है और अपना असर दिखाये बिना नहीं रहता। शनि का क्षेत्र यद्यपि सब ग्रहों से छोटा है परन्तु इस का महत्व सबसे अधिक है। इसका प्रभाव स्वास्थ्य, धन, भाग्य रेखाओं पर अधिक पड़ता है। पास ही वृहस्पति होने के कारण शनि उससे नहीं मिल सका मगर तर्जनी की जड़ के पास जाकर इसने सूर्य क्षेत्र के कुछ भाग पर अधिकार कर लिया है इसलिये उस स्थान से गुजरने वाली रेखाओं को बिना असर किये यह नहीं मानता। सूर्य के बलवान होते हुए भी यह चौध-ड़िया लगाए बिना नहीं चूकता।

वृहस्पति—अर्थात् गुरु समस्त नक्षत्रों में बलशाली है। तमाम शुभ काम इसी लगन में निकाले जाते हैं। कनिष्ठा का पूर्ण और अनामिका के बचे हुये क्षेत्र पर इसका पूर्ण अधिकार है। किसी अन्य ग्रह की ताकत नहीं है जो इसके क्षेत्र में आकर अपना प्रभुत्व जमा सके। इसका क्षेत्र सबसे ज्यादा बेतुका है। आकृति में देखने से मालूम होगा कि यह कनिष्टा से लेकर अँगूठे के नीचे के भाग तक जा पहुँचा है। क्षेत्र काफी उलटा सीधा होने पर भी अधिक महत्वपूर्ण है।

मंगल—इस ग्रह का क्षेत्र वृहस्पति से नीचे है। विवाह रेखा के निचले भाग से प्रारम्भ होकर नीचे की तरफ चलता

क्षेत्र बनाता हुआ यह शुक्र चन्द्र ग्रहों से मिलता हुआ चन्द्र—ग्रह के ऊपरी भाग में जाकर समाप्त हो जाता है। इसके क्षेत्र में से गुजरने वाली रेखाओं पर तीनों ग्रहों का प्रभाव बिना पड़े नहीं रहता। इसका क्षेत्र सबसे सीधा और सबसे लम्बा है। ऊपर की तरफ गुरु का स्थान है और नीचे की तरफ राहू का आसन है।

शुक्र—हथेली के निचले भाग में और अँगूठे की सामने वाली तरफ अर्ध गोलाकार क्षेत्र जहाँ कि मंगल से उसका मिलान होता है वही भाग शुक्र का है। मंगल के प्रभाव के कारण यह ऊपर नहीं बढ़ पाता और नीचे राहु के प्रभाव के कारण चन्द्र पर अपना प्रभाव नहीं कर सकता। इसका स्वभाव सदा से बहुत ही शान्त है मगर सदा ही से उदण्डता करते रहने के कारण हठी है।

चन्द्र—शुक्र और चन्द्र के बीच में राहु पड़ने के कारण एक दूसरे से अलग अलग हैं। मगर अधिक बलशाली होने के नाते चन्द्रमा के एक क्षेत्र पर अधिकार जमाये हुए हैं। दूसरी तरफ बुद्ध ने घेर रखा है। नीचे की तरफ राहु है। सब प्रकार घिरा रहने पर भी चन्द्र नुकीली परिधि बनाता हुआ वृहस्पति के क्षेत्र के पास होकर सूर्य के क्षेत्र तक पहुंच गया। गुरु के अधिक प्रभावशाली होने के कारण सूर्य को नहीं छू पाया। शनि और सूर्य के बीच में सर्प की तरह कुण्डली मारे हुए केतु बैठा है। नीचे चन्द्र के पास राहु है जो समय समय पर अपना प्रभाव अवश्य दिखाते हैं। सूर्य चन्द्र का प्रभाव अधिक होने के कारण उन्हें जैसे ही मौका मिलता है वह अपना प्रभाव बिना दिखाये नहीं मानते।

बुद्ध—अँगूठे के पास ही बुद्धका क्षेत्र है। यह सबसे सीधा और है। अधिक किसी को न तो छेड़ता है और न अपने प्रभाव द्वारा किसी को हानि पहुंचाना ही चाहता है। चन्द्र के

सम्पर्क में आकर और उसी के योग से कभी २ उग्र हो जाता है परन्तु उस उग्रता में भी किसी को हानि नहीं पहुँचाता।

आकृति को देख कर इन नक्षत्रों के क्षेत्रों को ध्यान से देख कर उनका स्थान ध्यान रखा जाना बहुत जरूरी है और उसके साथ ही यह भी मालूम कर लेना चाहिये कि कौन २ सी रेखाऐं इस स्थान में होकर गुजर रही हैं। जिस क्षेत्र से जो रेखा निकलती है और जिस क्षेत्र में होकर गुजरती है और जहाँ जाकर समाप्त होती है उस पर उन तमाम क्षेत्रों का असर जरूर पड़ता है। इसी वजह से इन क्षेत्रों में से आने जाने वाली रेखाओं को गौर से देख कर पता लगाना बहुत जरूरी है।

कर-पृष्ठ

हथेली के पिछले भाग को कर-पृष्ठ कहते हैं। यदि कर-पृष्ठ चौड़ा,कछुये की पीठ के समान अधिक उठा हुआ जिस पर नसें न दिखायी देती हों और रोंये भी अल्प ही हों वह अति उत्तम होता है।

रूखा, सिकुड़ा हुआ, नीचे दबा हुआ, चपटा और उभरी हुई नसों वाला कर-पृष्ठ यदि रोंगटों सहित हो तो वह अशुभ माना जाता है। यदि इस तरह का कर-पृष्ठ स्त्री का हो तो वह विधवा होती है, कामुक और विलासिनी होती है और उसकी प्रवृति अनाचार की ओर अधिक होती है। वेश्या का कर-पृष्ठ ऐसा ही होता है।

पाश्चात्य विद्वानों का कथन है कि यदि कर-पृष्ठ पर घने बाल हों तो प्राणी चचंल-हृदय,वाचाल, विलासी, अधिक आहार करने वाला और आलसी होता है। यदि कर-पृष्ठ पर बिलकुल भी रोंये न हों तो प्राणी डरपोक या नपुंसक होता है।

हथेली के साथ ही कर-पृष्ठ को भी देख लेना उचित है।

भाग—१

हस्त परीक्षा

चौथा अध्याय

अँगूठा—मनुष्य के हाथ में अँगूठा उतना ही महत्वपूर्ण होता है जितनी कि उँगलियाँ। शरीर विज्ञान वक्ताओं का कथन है कि अँगूठे का सीधा सम्पर्क रक्त धमनियों द्वारा सीधा मस्तिष्क से है। नाड़ी द्वारा मस्तिष्क से सम्बन्धित होने के नाते अँगूठा शरीर विज्ञान में जितना उपयोगी है उतना ही ज्योतिष के लिए भी।

अँगूठे दो प्रकार के होते हैं:—

१—सीधा, सुदृढ़।

२—कोमल और झुका हुआ।

सीधा सुदृढ़ अँगूठे वाला मनुष्य अधिक स्वेच्छाचारी तथा हठी होता है। ऐसे लोग आसानी से दोस्ती नहीं करते हैं और सफर में खामोश बैठे रहते हैं।

कोमल और झुके हुए अँगूठे वाला मनुष्य आसानी से अपरिचित मनुष्यों से सफर में मेल कर लेता है। ऐसे अँगूठे वाले संसार में अधिक हैं।

यदि ऊपर का जोड़ मुड़ा हो तो दूसरे के कहने में आजाता है और दूसरों के फायदे के लिए खुद नुकसान उठाते हैं। और

प्राय: धन को व्यर्थ के कामों में बरबाद करते हैं उपकार के बहाने दूसरों के धोखे में आ जाते हैं और अपना धन दे डालते हैं या स्वयं बर्बाद करते हैं।

यदि अँगूठा पहले जोड़ के नीचे दूसरे जोड़ पर झुक रहा हो तो ऐसा मनुष्य समय को अपने अनुकूल या प्रतिकूल देख कर विचार बदलता है। किसी के कहने में नहीं आता। वह आसानी से किसी से धोखा नहीं खा सकता और जहाँ रुपये पैसे का सवाल सामने आता है वह सावधानी से काम लेता है और प्राय: रूखापन प्रगट करता है।

जिनका अँगूठा बहुत मोटा, सिरे पर गोल और चौड़ा होता है वे उग्र और जानवरों की तरह बेसबब जिद वाले और थोड़ी बातों में जोश में आ जाने वाले होते हैं। मरने मारने को तैयार हो जाते हैं। ऐसे लोगों से सावधानी के साथ व्यवहार करना चाहिए।

यदि अँगूठा बीच में पतला हो तो मनुष्य होशियार, जल्दबाज और चतुर होता है। मौका पाकर अवसर को नहीं छोड़ता और अपना काम निकाल लेता है। सोच विचार में समय नष्ट नहीं करता।

अँगूठा लचीला हो तो मीठे रागों के गाने की शक्ति प्रगट होती है। नुकीला अँगूठा हो तो चापलूसी पसन्द होता है।

अँगूठे के गुणों पर विचार करते समय हाथ, अँगुलियों की बनावट, मह स्थानों पर और एक निगाह मस्तक रेखा पर डालकर फल कहना चाहिए। क्योंकि इनके अच्छे होने से स्वभाव में बहुत कुछ परिवर्तन हो जाता है और फल कहते समय गलती हो जाने का भय नहीं रहता। नीचे लिखे नियमों को ध्यान में रखने से अँगूठे के पहचानने में और फल कहने में विशेष सुविधा होती है।

अँगूठे के आकारः—

१—लम्बा सामान्य आकार वाला।
२—छोटा, मोटा और कुरूप।
३—अधिक नोंकदार।
४—वर्गाकार, सिरे पर मोटा।
५—बीच में पतला।
६—मध्य भाग मोटा, जोड़ भद्दा।
७—ऊर्ध्व भाग अधिक पतला।
८—अगला हिस्सा अधिक मोटा।
९—सिरे का भाग गोल।

उसका फलः—

१—बुद्धिमान एवं चतुर।
२—मूर्ख एवं क्रोधी।
३—अस्थिर, डावांडोल, तीक्ष्ण, स्वभाव।
४—हठी एवं स्वेच्छाचारी।
५—निर्बल विचार शक्ति वाला, परन्तु दूरदर्शी।
६—अदूरदर्शी, अविवेकी।
७—लगन का कच्चा।
८—धूर्त, क्रूर, हठी, झगड़ालू।
९—हिंसक, तुनकमिजाज और हमेशा लड़ने मरने को तैयार।

ध्यान देकर देखने से इन नौ प्रकार के अँगूठों को जाना जा सकता है और उसी के अनुसार फलादेश भी कहा जा सकता है।

यह कहना अत्युक्ति नहीं कि उँगलियों की सहायता बिना कोई कार्य नहीं हो सकता। मनुष्य के हाथ में चार अँगुली और पांचवाँ अँगूठा है, यदि इन उँगलियों को अँगूठे की सहायता

न हो तो हर काम करने में मनुष्य असमर्थ होता है इसलिये अँगुलियों की अपेक्षा अँगूठा अत्यन्त लाभदायक है। इसलिये इसका वर्णन करना उचित है इससे मनुष्य की इच्छा-शक्ति तथा तर्क-शक्ति का ज्ञान होता है।

अँगूठा ऊँचा उठा हुआ माँस से भरा हुआ गोल आकृति का हो तो उत्तम फल देने वाला होता है, तथा टेढ़ा बांका छोटा चपटा हो तो सुख सौभाग्य का नाशक होता है।

चौड़ा फैला हुआ अँगूठा हो तो दुखी स्त्री हीन और यदि स्त्री का अँगूठा ऐसा होतो विधवा होती है। जिस स्त्री के पांव का अँगूठा पूरी तरह से गोल शक्ल का हो तो वह पतिव्रता होती है।

जब मनुष्य तर्क-शक्ति का प्रयोग करता है तो अक्सर वह सब अँगुलियों को भीतर दबा के अँगूठे को ऊपर रखता है, और जब मनुष्य क्रोध करता है तब उसकी विचार शक्ति नष्ट हो जाती है। जब वह दूसरों को मारने को मुट्ठी बांधता है, अँगुलियों के भीतर अंगूठा दबा कर घूंसा लगाने की तैयारी करता है याने विचार शक्ति क्रोध के आवेश में नष्ट होने पर अँगूठा अंगुलियों के अन्दर हो जाता है, और जब विचार शक्ति जागृत होती है तो अँगूठा बाहर रहता है। इससे यह ज्ञान होता है कि अँगूठा इच्छा शक्ति को बतलाता है। जब तक इस शक्ति का शरीर और मन पर अधिकार रहता है तब तक वह अँगुलियों के भीतर नहीं रहता है। इससे यह साफ प्रगट है कि अंगूठा मुख्य और अति महत्व का है। अंगुष्ठ में दो ही पोर होते हैं। तीसरा पोर शुक्र के ऊपर के भाग की हड्डी में होता है। मनुष्य का स्वभाव जानने के लिये अंगूठा बहुत उपयोगी है। अंगूठे के मुख्य तीन भाग हैं:—पहिला प्रेम, दूसरा तर्क, तीसरा इच्छा-शक्ति।

अधो भाग प्रेम का है । मध्य भाग विचार-शक्ति है और ऊर्ध्व भाग यानी नाखून वाला भाग इच्छा-शक्ति का है। इन तीनों में जो भाग बड़ा हो उसी के मुताबिक उस भाग का गुण बढ़ जाता है।

ऊर्ध्व भाग यदि बड़ा हो तो स्वेछाचारी व हठी होने की शक्ति विचार-शक्ति से अलग होती है। इस भाग के छोटे होने से आत्मा निर्बल होती है और अपनी शक्ति पर विश्वास नहीं होता है। स्वभाव चञ्चल और विचार कमजोर होते हैं।

मध्य भाग यदि ऊर्ध्व भाग से बड़ा हो तो विचार-शक्ति अधिक बली होती है। और ऐसा पुरुप किसी निश्चय पर नहीं पहुंचता है। सोच विचार में समय नाश करता है और अवसर को गवां देता है । ऐसे लोग प्राय; वहमी और कुकर्मी देखे गये हैं । यदि मध्य और ऊर्ध्व भाग बराबर हो तो अधिक उपयोगी है। अपना काम खूब सोच विचार कर करता है और अपने सभी कामों में सफल होता है ।

अधोभाग प्रेम का स्थान है । जब यह भाग लम्बा हो तो प्राणी अपनी कामुक वासनाओं पर अधिकार रखता है । और यदि यह भाग छोटा और मोटा हो तो काम वासनायें विशेष पाशविक रूप में होती हैं।

पाश्चात्य मत

अब हम पाश्चात्य ज्योतिप शास्त्रियों के मतानुसार अंगूठे को तीन भागों में विभाजित करते हैं। उनका कहना है कि जिस प्रकार अंगुलियो में तीन पोर होते हैं उसी प्रकार अंगूठे में भी तीन पोर होते हैं। और प्रत्येक भाग अपना गुण स्पष्ट करता है ।

सर्व प्रथम भाग आत्म शक्ति, निर्णय शक्ति और दूसरों पर शासन करने की क्षमता को स्पष्ट करता है। दूसरा भाग तर्क-वितर्क, दूरदर्शिता और उत्तम दृष्टिकोण का प्रतीक है। तृतीय भाग प्रेम, सहानुभूति और विलासपूर्ण प्रकृति का द्योतक है।

अंगूठे को पूर्णतया परखने के लिये हथेली को अपनी ओर करो ताकि यह ज्ञात हो सके कि हथेली के ऊपर अंगूठा किस अवस्था में स्थिर रहता है। यदि अंगूठा ऊपर की ओर सीधा रहता है तो यह सिद्ध होता है कि ज्ञान की मात्रा अल्प ही है और गुण ग्राह्यता बहुत ही कम है। यदि अंगूठा अधिक चौड़ा है और नीचे की ओर झुका हुआ होता है तो यह सिद्ध होता है कि प्राणी में मानवता के समस्त गुण विद्यमान् हैं, वह उदार, स्वतंत्रता का उपासक और दूसरों के प्रति दया पूर्ण व्यवहार करने वाला है। यदि अंगूठा छोटा होता है तो वह अच्छे गुणों को कम करता है मगर इस प्रकार के अंगूठे बहुत कम देखे जाते हैं।

अंगूठों की बनावट विभिन्न प्रकार की होती हैं। उनका वर्गीकरण निम्न रूप से किया जाता है—

१—प्रारम्भिक (Elementary)—इस तरह के अंगूठे की कोई निश्चित आकृति नहीं होती है। वह केवल मांस के एक टुकड़े के समान हाथ से जुड़ा हुआ भद्दा सा प्रतीत होता है और दोनों जोड़ों की स्थिति का सहज ही अनुमान लगाना मुश्किल होता है। इसकी आकृति से ही स्थूल शरीर, रूखा व्यवहार और पाशविक प्रकृति का जाना जाता है।

२— भीरु (Nervous)—इस प्रकार के अंगूठे पतले होते हैं और उनको देखने से ऐसा लगता है कि इस पर बहुत

अधिक भार रहा है अतः इस तरह का चपटापन उसका विशेष लक्षण है। इस भांति के अँगूठों के सिरे विभिन्न प्रकार के होते हैं। नियमानुसार तो वह कोमल और झुर्रीदार होते हैं मगर वह अपने चपेटपन द्वारा ही पहचाने जाते हैं। इस तरह के अँगूठों से स्पष्ट होता है कि चपटे अँगूठे वालों में स्फूर्ति और शक्ति अधिक होती है।

३-चौड़ा अँगूठा Broad Thumb—इस प्रकार का अँगूठा उपर्युक्त दोनों तरह के अँगूठों से भिन्न होता है और यदि उसे पीछे से देखा जाये या नाखूनों की ओर से तो उसका आकार स्पष्ट रूप से चौड़ा दिखाई देता है और देखने से ही स्वस्थ और मजबूत दीखता है। चौरस अँगूठा दृढ़ निश्चय, और स्वस्थ गठे हुए शरीर का द्योतक है। इससे स्पष्ट होता है कि ऐसे अँगूठे वाला प्राणी लगन का पक्का और धुनी होता है।

४-मजबूत अँगूठा Strong Thumb—इस तरह का अँगूठा बिलकुल एकसी मोटाई का होता है और कोमल होता है। इसका सिरा चौरस होता है। इसके नाखून चिकने और स्वच्छ रङ्ग के होते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि इस तरह के अँगूठे वाला प्राणी आत्म-शक्ति का दृढ़ होता है और उसमें तर्क, वितर्क की शक्ति भी अधिक होती है। राजनीतिज्ञ, पक्की धुन और बुद्धिमता, स्थिर विचार, विचार पूर्ण तर्क और धैर्य इसके प्रमुख गुण हैं।

५-पैडिल की आकृति वाला अँगूठा Paddle Shaped Thumb—इस प्रकार के अँगूठे को देखने से यह स्पष्ट होता है कि आत्मिक शक्ति वाला भाग नाखून की ओर से देखने में चौड़ा प्रतीत होता है मगर यह हर तरफ चौड़ा नहीं रहता। न तो यह पतला होता है और न यह चौड़ा ही होता है। इससे प्रतीत होता है कि आत्मिक शक्ति के साथ २ प्राणी दृढ़ निश्चय

वाला होता है और यदि बढ़ाव अधिक होता है तो वह धूर्तता और मक्कारी को स्पष्ट करता है। यद्यपि इसकी लम्बाई कम होती है मगर पैंडिल की सी शक्ल से इसमें शक्ति आ जाती है।

६–लचकीला अँगूठा Flexible Thumb–जोड़ों पर झुकाव के द्वारा यह स्पष्ट होता है कि प्राणी फिजूल खर्च, चतुर, बुद्धिमान,उदार,सुहृद और कलात्मक होता है। चौरस सिरा,स्पष्ट भाग्य रेखा, शनि ग्रह का स्पष्ट योग यदि मनुष्य के हाथ में और पड़ा हो तो उसका फल अति उत्तम होता है।

७–कड़ा अँगूठा Stiff Thumb—यह स्वयम् ही खड़ा और हाथ के साथ भी खड़ा रहता है और यह स्पष्ट करता है कि प्राणी कर्मशील, सामान्य ज्ञानी, कम खर्च और चतुर होता है। शान्त, सजग, विचारशील, विश्वस्त और गुण ग्राहता आदि गुणों को इस प्रकार का अँगूठा स्पष्ट करता है।

८–मिश्रितअँगूठा Clubbed Thumb–इस प्रकार के अँगूठे को एक बार देखकर कभी भी नहीं भुलाया जा सकता है। उसका ऊपरी भाग मोटा होता है, और उसके नाखून छोटे होते हैं और सत्य तो यह है कि यह भाग भरी गोल गेंद की भांति प्रतीत होता है। इससे स्पष्ट है कि प्राणी अत्यन्त धूर्त, और बदमिजाज,हमेशा विरोध की भावना से पूर्ण और मक्कार होता है।

९–अधिकांश में पाया जाने वाला अंगूठाGenerally

लम्बे अँगूठे सुडौल उँगलियों को शक्ति प्रदान करते हैं और छोटे अँगूठे उनकी कार्यशक्ति को बढ़ा देते हैं। लम्बे अँगूठे कलात्मक गुणों को कम करते हैं और नोकदार सिरे उनमें वृद्धि करते हैं। लम्बे अँगूठे जिनके सिरे चौरस होते हैं कर्मशील बनाने में सहायक होते हैं मगर चौरस सिरे वाले छोटे अँगूठे प्राणी को बकवादी बनाते हैं और कर्मशीलता से दूर खींचते हैं।

५

हाथ की उंगलियां।

हर मनुष्य के हाथ में चार उंगलियाँ होती हैं। अक्सर ऐसा भी देखा गया है कि किसी के हाथ में पांच भी होती हैं। पाचवीं उँगली किसी पें मिली होती है या हथेली के किसी भाग में उठी हुई होती है। सामुद्रिक शास्त्र में पाँचवी उंगली का कुछ महत्व नहीं माना गया। उसका परिणाम उसी उंगली की तरह होती है जैसा कि उसकी पास वाली उंगली का।

चारों उंगलियां एक दूसरे से भिन्न होती हैं। वह आकृति ही में भिन्न नहीं होतीं वरन् उनका महत्व और सामुद्रिक शास्त्रीय फल भी भिन्न होते हैं। अँगूठे की तरफ से उंगलियों का नामकरण विचार करने से सामुद्रिक शास्त्र द्वारा उनके नाम इस प्रकार हैं:—

१—तर्जनी।
२—मध्यमा।
३—अनामिका।
४—कनिष्टा।

न० १ चित्र को गौर से देख कर इनके नाम स्मरण करना और उनका अध्ययन करना जरूरी है।

प्राकृतिक ढंग से ही उंगलियों की या समस्त शरीर की बनावट है और सामुद्रिक शास्त्र ज्ञाताओं ने उसी प्राकृतिक ढङ्ग से अपना काम निकालने के लिए विविध प्रकार के फल मिलने को

व्यवस्था करली है। प्रत्येक आदमी की उंगलियों का गठन दूसरे की उंगलियों के गठन से भिन्न होगा। गठन पर ही फल निर्भर होता है।

फल भिन्न हो सकता है परन्तु कुछ भाग गठन में ऐसे हैं जो तमाम उंगलियों में समान होता है। गठन कैसी ही हो परन्तु उनकी बनावट भिन्न नहीं हो सकती। जैसे:—

१—हर आदमी की उंगली में प्रत्येक उंगली के तीन भाग होते हैं। मामूली भाषा में उसे पोर और सामुद्रिक भाषा में युग कहते हैं।

चित्र—१

तर्जनी सबसे पहली मध्यमा सबसे बड़ी, अनामिका उससे छोटी और कनिष्ठा सबसे छोटी उंगलियों को कहते हैं। ज्योतिष शास्त्र में उंगलियां इन्हीं नामों से परिचित हैं।

२—प्रत्येक उंगली के ऊपर वाले भाग में एक चिन्ह होता है। इस चिन्हका उल्लेख किया जायगा। अधिकतर यह चिन्ह शंख, चक्र या गदा के होते हैं। हर उंगली के चिन्ह भिन्न हो सकते हैं या सबके एक ही हों।

३—प्रत्येक उँगली दूसरीसे कुछ दूर होगी हथेली परसेजहां कि उंगलियों की जड़ होती है दूसरी उँगली उस जड़ से कुछ दूर होगी। पास पास या एक ही स्थान पर जड़ होना बिल्कुल असम्भव तो नहीं वरन् बहुत कम ही देखा गया है।

४—उँगली के प्रथम पोर के पिछले भाग में नाखून होता है। इसी नाखून के ऊपर सुन्दरता निर्भर करती है। लम्बी, चपटी भद्दी उँगलियां नाखून की बनावट के ऊपर ही निर्भर होती हैं।

५—उँगलियों की युग धारा रेखायें कटी हुई होती हैं। पोर भी बीच में कटे फटे होते हैं। किसी की उँगलियां साफ नहीं होतीं।

उँगलियों को गौर से देखने के बाद उनके युगों में राशियों का वास जानना निहायत जरूरी है। प्रत्येक युग में राशियों का वास होता है। पूर्वी सामुद्रिक ज्ञाताओं तथा परिचमी सामुद्रिक शास्त्र ज्ञाताओं का इस विषय में मत भेद है। वह राशियों को भिन्न प्रकार से प्रत्येक युग के साथ मानते हैं और पूर्वी विभिन्न प्रकार से।

नीचे प्रत्येक उँगली के युग के हिसाब से राशियों का वास बताया गया है। पूर्वी और पाश्चात्य दोनों मत प्रस्तुत हैं। चित्र—२ पर देखने से प्रत्यक्ष हो जावेगा कि प्रत्येक उंगली के प्रत्येक युग में किस राशि का वास होता है।

पूर्वी मतानुसार:—

कनिष्ठा में तुला, वृश्चिक और धन।

व्यवस्था करली है। प्रत्येक आदमी की उंगलियों का गठन दूसरे की उंगलियों के गठन से भिन्न होगा। गठन पर ही फल निर्भय होता है।

फल भिन्न हो सकता है परन्तु कुछ भाग गठन में ऐसे हैं जो तमाम उंगलियों में समान होता है। गठन कैसी ही हो परन्तु उनकी बनावट भिन्न नहीं हो सकती। जैसे:—

१—हर आदमी की उंगली में प्रत्येक उंगली के तीन भाग होते हैं। मामूली भाषा में उसे पोर और सामुद्रिक भाषा में युग कहते हैं।

चित्र—१

तर्जनी सबसे पहली मध्यमा सबसे बड़ी, अनामिका उससे छोटी और कनिष्ठा सबसे छोटी उंगलियों को कहते हैं। ज्योतिष शास्त्र में उंगलियां इन्हीं नामों से परिचित हैं।

२—प्रत्येक उंगली के ऊपर वाले भाग में एक चिन्ह होता है। इस चिन्हका उल्लेख किया जायगा। अधिकतर यह चिन्ह शंख, चक्र या गदा के होते हैं। हर उंगली के चिन्ह भिन्न हो सकते हैं या सबके एक ही हों।

३—प्रत्येक उँगली दूसरीसे कुछ दूर होगी हथेली परसेजहां कि उंगलियों की जड़ होती है दूसरी उँगली उस जड़ से कुछ दूर होगी। पास पास या एक ही स्थान पर जड़ होना बिलकुल असम्भव तो नहीं वरन् बहुत कम ही देखा गया है।

४—उँगली के प्रथम पोर के पिछले भाग में नाखून होता है। इसी नाखून के ऊपर सुन्दरता निर्भर करती है। लम्बी, चपटी भद्दी उँगलियां नाखून की बनावट के ऊपर ही निर्भर होती हैं।

५—उँगलियों की युग धारा रेखायें कटी हुई होती हैं। पोर भी बीच में कटे फटे होते हैं। किसी की उँगलियां साफ नहीं होतीं।

उँगलियों को गौर से देखने के बाद उनके युगों में राशियों का वास जानना निहायत जरूरी है। प्रत्येक युग में राशियों का वास होता है। पूर्वी सामुद्रिक ज्ञाताओं तथा पश्चिमी सामुद्रिक शास्त्र ज्ञाताओं का इस विषय में मत भेद है। वह राशियों को भिन्न प्रकार से प्रत्येक युग के साथ मानते हैं और पूर्वी विभिन्न प्रकार से।

नीचे प्रत्येक उँगली के युग के हिसाब से राशियों का वास बताया गया है। पूर्वी और पाश्चात्य दोनों मत प्रस्तुत हैं। चित्र—२ पर देखने से प्रत्यक्ष हो जावेगा कि प्रत्येक उंगली के प्रत्येक युग में किस राशि का वास होता है।

पूर्वी मतानुसार:—

कनिष्ठा में तुला, वृश्चिक और धन।

अनामिका में कर्क, सिंह और कन्या।
मध्यमा में मकर कुम्भ और मीन।
तर्जनी में मेष, वृष और मिथुन।

का क्रम से वास होता है। इन राशियों का फल पर प्रभाव गहरा पड़ता है इसलिये इनका पूरा पूरा ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है।

चित्र—न० २

एक उंगली में तीन पर्व होते हैं। पर्वों को पोर भी कहते हैं। प्रत्येक पर्व में एक राशि का होना आवश्यक है। कौन राशि किस पोर में है इनका जानना जरूरी है।

पाश्चात्य मतानुसार उन्होंने मासोंमें युगका विभाजन किया है प्रत्येक युग में एक मास होना पाया जाता है। प्रत्येक युग में दिये हुई नम्बरों के हिसाब से मासों का विवरण निम्न प्रकार है :—

१—मार्च	पूर्वी	राशि	मेष
२—अप्रैल	,,	,,	वृष
३—मई	,,	,,	मिथुन
४—दिसम्बर	,,	,,	मकर

५—जनवरी	,,	,,	कुम्भ
६—फरवरी	,,	,,	मीन
७—जून	,,	,,	कर्क
८—जुलाई	,,	,,	सिंह
९—अगस्त	,,	,,	कन्या
१०—सितम्बर	,,	,,	तुला
११—अक्टूबर	,,	,,	वृश्चिक
१२—नम्बर	,,	,,	धन

उपर्युक्त प्रकार हाथ की चारों उँगलियां ऋतु अनुसार बिभाजतकी गई हैं पाश्चात्य विद्वानों का कहना है कि:—

तर्जनी में वसन्त ऋतु का बास होता है।
मध्यमा में शीत का वास होता है।
अनामिका में ग्रीष्म का बास होता है।
कनिष्टा में हेमन्त बिराजमान रहता है।

प्रत्येक उँगली में एक ऋतु विराजमान है और उंगली प्रत्येक पुरा एक मास का द्योतक है। पश्चिमी तथा पूर्वी विद्वान दोनों ही चार ऋतुओं की गणना करते हैं केवल भारत वर्ष ही में छः ऋतुयें होती हैं इसके विपरीत संसार के तमाम देशों में केवल चार ही ऋतु होती हैं। इस कारण से चार ऋतुओं का ही विचार रख कर सामुद्रिक शास्त्र की गणना की गई है।

प्रत्येक मनुष्य की उंगली भिन्न प्रकार की होती है। हर आदमी की उंगली दूसरे की उंगली से भिन्न होती हैं। अधिकतर निम्नांकित प्रकार की उंगलियाँ पाई जाती हैं:—

१—बिलकुल सीधी तथा चौरस—इस तरह की उंगलियाँ विशेपकर स्त्रियों तथा पुरुषों के हाथ में होती हैं। इस लक्षण वाली उँगलियाँ जड़ से लेकर चोटी तक एक सी सीधी होती हैं। उनके

तीनों युग बराबर मोटे होते हैं न तो वह किसी तरफ विशेष झुकी होती हैं और न उनका कोई भाग ही किसी स्थान पर मोटा होता है।

२–**पतली चौरस परन्तु टेढ़ी उंगलियाँ**–कई लोगों की उंगलियाँ पतली और चौरस होती हैं। उनका झुकाव आगे, पीछे, दायें, बायें चाहे जिस ओर हो सकता है।

३––**पतली, परन्तु गोलाई लिये हुए**–कुछ लोगों की उंगलियाँ पतली तो अवश्य होती हैं, परन्तु वह कुछ २ गोलाई लिये हुए होती हैं। कुछ लोगों की उंगलियाँ तो कमान की तरह गोलाई लिये हुए तक देखी गई हैं। मगर अक्सर कम गोलाईदार उंगलियाँ ही अधिक देखने को मिलती हैं।

४––**नीचे से जड़ तो मोटी परन्तु चोटी पतली**––कुछ उंगलियों की जड़ें तो मोटी होती हैं परन्तु उनकी चोटी पतली होती है। वह जैसे २ चोटी की तरफ बढ़ती हैं पतली दिखाई देने लगती हैं।

५––**बिलकुल सीधी परन्तु मोटी उंगलियाँ**––उंगलियाँ बिलकुल सीधी हों परन्तु वह काफी मोटी हो सकती हैं। जड़ भी मोटी हो और उनकी चोटी भी मोटी हो सकती है। शुरू से लेकर अन्त तक वह मोटी ही दिखाई देती हैं।

६––**जड़ के पास मोटी और बीच में पतली**––जड़ के पास मोटी होने वाली उंगलियों को गठीली कहते हैं। इनकी गांठें बिलकुल साफ ही दिखाई देती हैं। बीच के पर्व गांठों की बनिस्बत पतले होते हैं।

७––**लचकीली उंगलियाँ**––कुछ उंगलियाँ ऐसी होती हैं जो बहुत लचकदार हैं, जरा से झटके से वह लचक हो जाती हैं

हैं। वह आगे पीछे दोनों तरफ मोड़ी जा सकती हैं। उनके ऊपर वाले पोर पीछे की तरफ मोड़े जा सकते हैं।

अन्य कई तरह की उंगलियाँ भी हो सकती हैं. परन्तु वह काफी कम तादाद में पाई जाती हैं। इसलिये उनका उल्लेख ठींक नहीं होगा। समय समय पर जैसी २ उंगलियाँ देखने को मिलती हैंउनका सबका फल ऊपर लिखी उंगलियों के अनुसार ही बताया जा सकता है। ऊपर लिखी भिन्न प्रकार की उंगलियों के गुणों के अनुसार उनके फल दिये जाते हैं।

१ बिलकुल सीधी तथा चौरस—यह उंगली जड़ से लेकर चोटी तक बिलकुल सीधी ही होती है। वह अधिकतर पतली देखने में सुन्दर होती है। उनके नाखून भी सुन्दर और चमकदार होते हैं। अधिकतर इस प्रकार की उंगलियाँ स्त्रियों तथा नाजुक मिजाज पुरुषों के हाथों में पाई जाती हैं। इस प्रकार की उंगलियों को देखकर नीचे लक्षणों को मिलाते हुए उनका फल कहना चाहिये:-

साधारणतया तो उंगलियाँ बिलकुल सीधी ही दिखाई पड़ेंगी मगर जब उनको मिलवाया जायगा तो उनमें अन्तर अवश्य दिखाई देगा। हो सकता है कि इस प्रकार की उंगलियोंमें अन्तर कम हो। जैसा भी अन्तर हो उसका वैसा ही फल होता है।

तमाम उंगलियों को मिलाने से विस्तृत छिद्र दिखाई पड़े तो दरिद्रता का लक्षण माना जाता है। बड़े २ स्पष्ट छिद्र दरिद्रता के द्योतक होते हैं।

कनिष्ठा और अनामिका के बीच में छिद्र न हो तो वृद्धावस्था में सुखी होगा और यदि थोड़ा अन्तर हो तो वह स्वतंत्र प्रिय पुरुष होगा या स्त्री होगी। पतली व चौरस उंगलियों के छिद्र या तो होते ही नहीं और यदि होते हैं तो वह बहुत ही कम होते हैं और मुश्किल से ही दिखाई देते हैं

ध्यान रखा जाता है। अतः ग्रह और उनके विषय की ज्ञातव्य होने वाली सभी बातों को जान लेना अति हितकर है।

ग्रह नौ होते हैं—

ग्रहों का फल
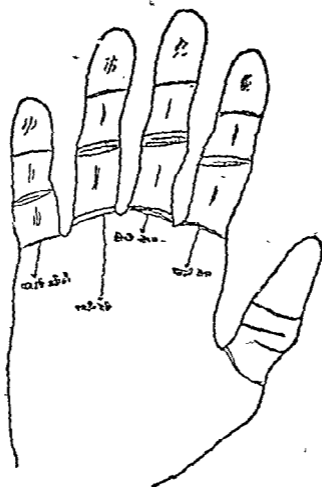
१—सूर्य
२—चन्द्र
३ भौम
४—बुद्ध
५—गुरू
६—शुक्र
७—शनि
८—राहु
९—केतु

इन नव ग्रहों में से सामुद्रिक शास्त्री केवल सात ग्रहों को ही मानते हैं। वह राहु और केतु को छोड़ देते हैं। अतः इन सात ग्रहों के स्थान हर मनुष्य के हाथ में होते हैं। यह तमाम

ग्रह अपने निश्चित स्थान पर होते हैं केवल मंगल अर्थात भौम कभी २ हट कर दूसरे स्थान पर होता है। पिछले परिच्छेद में हम हथेली के विषय में उल्लेख करते समय उनके स्थानों का जिक्र तो कर आये हैं मगर अब हम उनके गुणों के बारे में उल्लेख करेंगे।

अनामिका उँगली के मूल में सूर्य का पर्वत होता है।

१. सूर्य—राज्य-मान प्रतिष्ठा, कला कौशल, विद्या, धर्म, तीर्थ, कीर्ति, सुन्दर वस्तुओं से प्रेम, साहित्य कविता, चित्र कारी, सङ्ग तराशी आदि कलाओं की प्रशंसा, अधिक ऊँचा नाम पाने की अभिलाषा।

चन्द्र का पर्वत मङ्गल पर्वत के नीचे मणि-बंध पर्यन्त तक कहलाता है।

• चन्द्र—आंतरिक पीड़ा, मन सम्बन्धी समस्त विचार, मातृ-सुख, कृषि, स्त्री, धनादि विचार, शुद्ध प्राकृतिक सुन्दरता का उपासक और देखने की चाह, साहित्य कविता से प्रेम, अधिक ऊँचा गहरे विचारों में डूबा रहना। मस्तक रेखा अच्छी न हो तो प्रभाव भयङ्कर। चन्द्रमा शुक्र दोनों ऊँचे एक दूसरे के पास हों तो विषय वासना अधिक प्रायः व्यसनी।

मङ्गल के पर्वत दो स्थानों में होते हैं—एक बुद्ध के पर्वत के नीचे हृदय रेखा से चन्द्र के पर्वत तक, दूसरे इसी के सामने शुक्र के ऊपर और जीवन रेखा के उदय स्थान के नीचे होता है।

३. भौम—[मंगल] बल-पराक्रम अग्निमास, फोड़ा-फुन्सी आदि रुधिर विकार, विवाद में जय। बृहस्पति, शुक्र के बीच में जीवन रेखा के भीतर मुसीबत के समय बुद्धि से काम लेने वाला, साहसी अधिक ऊँचा हो तो

झगड़ालू एवं उपद्रवी । बुद्ध-चन्द्रमा के बीच में सहन शीलता सत्याग्रही अपने ऊपर अधिक सन्तोषी ।
कनिष्ठा उँगली के मूल में बुद्ध का पर्वत होता है ।

४. बुद्ध-विद्या, बुद्धि, वाणिज्य, काव्य, शिल्प सौभाग्यादि अनेक शुभफल, देशाटन से प्रेम, विचारों में चंचलता, दूसरे से अधिक बोलना झगड़ना और मस्तिष्क रेखा सीधी हो तो विज्ञान व्यापार में उन्नति होती है ।

तर्जनी के मूल के नीचे रहने वाले पर्वत को गुरु का पर्वत कहते हैं ।

५. गुरु—मान, प्रतिष्ठा, धर्म, विवाह, धन धन्यादि समस्त शुभ-फल । उच्च पद पाने की इच्छा,स्वभिमान,उत्साह, न्याय-प्रिय । छोटी-जिम्मेदारी पसन्द नहीं । यदि अधिक ऊँची हो स्वयं प्रशंसा, अधिकार की इच्छा न्याय के लिये नहीं ।

शुक्र का पर्वत अगुंष्ठ से मणिवन्ध तक फैला हुआ रहता है ।

६. शुक्र—विवाह, प्रताप, सौंदर्य, स्त्री सुख, काव्य कला, प्रमोद, इत्यादि । ज्ञान अधिक ऊँचा, रुधिर का प्रवाह उतना ही अधिक, तन्दुरुस्त, इच्छा, प्राबल्य, प्रेम लालसा नहीं, नम्र प्रेमी ।

मध्यमा उँगली के मूल के नीचे रहने वाले पर्वत को शनि का पर्वत कहते हैं ।

७. शनि—क्लेश, दुख, अनेक पीड़ा, व्यसन द्यूत, पराभव, इत्यादि विविध कष्ट । खामोशी, एकान्त वास, चतुरता प्रायः ऊँचे दर्जे की गान विद्या से प्रेम, किसी बात पर घन्टों बहस करने की आदत प्रायः तत्वज्ञान,

अध्यात्मवाद की रुचि। अस्वाभाविक रूप से ऊँचा हो तो प्राय: उदास, निराशा से घिरे रहना, बुरे २ विचार, किसी से बात करने को जी नहीं चाहना। बृहस्पति और चन्द्र ऊँचा हो तो तीर्थ में मृत्यु।

ग्रहों से फल विचार

सूर्य से आत्मा पिता का प्रभाव, नैरोग्य, शक्ति और सम्पति या शोभा को विचारें। रक्त वस्त्र, वन पर्वत, पराजय।

चन्द्र से मन बुद्धि, राजा की प्रसन्नता, माता, संपदा को विचारें। यशोदय।

मङ्गल से बल, रोग, गुण, भूमि, पुत्र, कुटुम्ब, जागीर, ख्याति को विचारें। सेनापतित्व, विजय, ज्युडिशियल अधिकार।

बुध से विद्या, बन्धु, विवेक, मामा, मित्र, वाक्शक्ति को विचारें। सन्तित, वेदान्त इतिहास, गणित।

गुरु से प्रजा, धन, तन, पुष्टि, पुत्र और ज्ञान को विचारें। आन्दोलनकारी बुद्धि।

शुक्र से पत्नी, वाहन, आभूषण, काम, क्रीड़ा, सौख्य को विचारें। व्यापार, गायन शास्त्र, इन्द्रजाल विद्या ज्योतिषविद्या।

शनि से आयु, जीवन-मरण कारण, सम्पत्ति और विपत्ति को विचारें। शूल रोग, नौकर चाकर।

राहू से बाबा को और केतु से नाना को विचारें।

ग्रहों के सम्बन्ध में ज्ञातव्य

ग्रहों के नाम

सूर्य—हेलि, तपन, दिन कृत भानु, पूषा, अरुण, अर्क, रवि।
चन्द्र—शीतद्युति, उड़पति, ग्लौ, मृगाङ्क, इन्दु, चंद्र शशि, सोम
मंगल—आर, वक्र, क्षितिज, रुधिर, अंगारक, क्रूरनेत्र।

बुध—सौम्य, तारातनय, बुध, वित, बोधन, इन्द्रपुत्र।
बृहस्पति—मंत्री, वाचस्पति, सुराचार्य देवत्र्य, जीव।
शुक्र—काव्य, सित, भृगुसुत, अच्छ, २ पुजितै, दानवेज्य आरफ
शनि—छायासुन, तरिणतनय, कोण, कौण, शनि, आर्कि मंद।
राहू सर्प, असुर, फणि, तम, सैहिमेय।
केतु—ध्वज, शिखी गुलिक, मनि।

शुभाग्रह

पूर्णचन्द्र, बृहस्पति, शुक्र, बुध, शुभाग्रह, कहलाते हैं यह सुख देते हैं।

करतल में जहाँ २ गृह बेठे हैं वहीं यदि टिके रहें तो शुभ फल कहना चाहिये। जो ग्रह दक्षिण की तरफ टिके हों यदि उत्तर में बैठे हों और जो ग्रह पूर्व भाग में बैठे होवे यदि पश्चिम में चले जाँय तो सब ग्रह विपरीत फल को देते हैं।

पाप ग्रह

क्षीण चन्द्रमा, शनि, सूर्य, केतु, मंगल पाप ग्रह कहलाते हैं बुध पाप ग्रह के साथ पापी ग्रह हो जाता है। यह सब पापी ग्रह हैं। शुभ कार्य में यदि कोई कार्य करते समय यह ग्रह पड़े तो वह कार्य निषेध हैं।

ग्रहों के स्वरूप

सूर्य-प्रतापशाली चौकोर देह वाला, काला या लाल रङ्ग वाला, सिंगरफ के रङ्ग के समान आँख वाला, और सतोगुणी होता है।

चन्द्र—संचारशाली, कोमल वाणी वाला, ज्ञानी अच्छी चितवन वाला, सुन्दर तथा पुष्ट अंगों वाला, बुद्धिमान गोल आकार वाला, कफ व वात वाला होता है।

मंगल—क्रूर दृष्टि वाला, जवान, उदारशील, पित्त प्रकृति अति चंचल, पतली कमर, लाल गोरे अङ्ग, कामी,तमोगुणी तथा प्रतापी होता है।

बुध—दूध के समान शरीर वाला, दुबला, साफ बोलने वाला, हँसमुख रजोगुणी, हानि करने वाला, धनी, कफ, वापी, प्रतापी और विद्वान् होता है।

गुरु—बड़े शरीर वाला, पीतवर्ण, कफी, पीली आंखें तथा बाल, बुद्धिमान, सर्व गुणयुक्त,अति बुद्धिमान, शोभायुक्त और सतोगुणी होता है।

शुक्र—श्याम, घुंघराले बाल वाला, सुन्दर अङ्ग वाला, अच्छे नेत्र वाला, कफी, कामी, रजोगुणी, सुख बल और रजोगुण की शान वाला होता है।

शनि—कर्कश बोल तथा सुडौल अङ्गों वाला, दुबला,कफी, वादी, दांत बड़े, सुंदर पीले नयन, आलसी और तमागुणी होता है।

मनुष्य के भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वभाव बता देने में उपर्युक्त ज्ञान अति आवश्यक है। जितने तादाद में अमुक ग्रह की स्थिति हाथ में देखे उसी कदर फल कहना चाहिए।

ग्रहों के मित्रादि।

सूर्य के मित्र—मंगल, चन्द्र, गुरु।
शत्रु—शुक्र, शनि, राहु और केतु। बुध सम है।
चन्द्र के मित्र—सूर्य, बुध,। शत्रु कोई नहीं है।
गुरु, मंगल, शुक्र, शनि सम हैं।
मंगल के मित्र—सूर्य चन्द्र गुरू।
,, शत्रु—बुध। शुक्र, शनि सम हैं।

बुध के मित्रु—सूर्य, शुक्र।
,, शत्रु—चन्द्र।
शुक्र, शनि. मङ्गल, गुरू सम हैं।
गुरू के मित्र—सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, मित्र हैं।
,, शत्रु—शुक्र बुध। शनि सम है।
शुक्र के मित्र—शनि, बुध, मित्र, हैं।
,, शत्रु—सूर्य, चन्द्र, सूर्य। मंगल सम है।
शनि के मित्र—शुक्र, बुध, मित्र हैं।
,, शत्रु—सूर्य, चन्द्र मंगल। गुरू सम हैं।
राहू शनि की बड़ी मित्रता है।
चन्द्र और गुरु की बड़ी मित्रता है।
मंगल और सूर्य की बड़ी मित्रता है।
सूर्य और राहु की बहुत शत्रुता है।
गुरु और शुक्र की बड़ी शत्रुता है।
चन्द्र; बुध की बड़ी शत्रुता है।
सूर्य शनि की शत्रुता है

ग्रहों का शुभाशुभा विचार

ग्रहों की शत्रुता और मित्रता का ध्यान रखना निहायत जरूरी है। इससे जब हाथ में एक ग्रह को दूसरे की तरफ झुकता देखें तो फल का विचार करते समय मैत्री और वैर के सम्बन्ध का गहरा असर जरूर पड़ता है। इन ग्रहों के फल विचार करते समय वर्षों की अवधि का ध्यान रखना अधिक आवश्यक है:—

सूर्य २२ वर्ष में फल देता है। २२-२४
चन्द्र २४ वर्ष में फल देता है। २२-२५
मंगल २८ वर्ष में फल देता है। २८ ३२
बुध ३२ वर्ष में फल देता है। ३२-३५

गुरु १६ वर्ष में फल देता है। १६-२२
शुक्र २५ वर्ष में फल देता है। २५-२८
शनि ३६ वर्ष में फल देता है। ३६-४२
राहु ४२ वर्ष में फल देगा है। ४२-४८
केतु ४८ वर्ष में फल देता है। ४८-५४

जो ग्रह अपने स्थान में हो उसी वर्ष निश्चय सुख,भाग्योदय होता है। जो ग्रह जहाँ है वहीं यदि टिका रहे तो शुभ फल जानना चाहिए। यदि ग्रह दक्षिण की तरफ हो तो और उत्तर की ओर बैठे अथवा जो पूर्व में हो और पश्चिम की तरफ जावे तो विपरीत फल जाना चाहिये। जहाँ उँगलियाँ हैं उसे पूर्व दिशा, जहाँ कन्जा है उसे पश्चिम दिशा, जहाँ अँगूठा है उसे उत्तर दिशा और जहाँ चन्द्रमा है दक्षिण दिशा जानना चाहिए। मङ्गल सूर्य प्रवेश काल में, शनि चन्द्र अन्त में फल देते हैं।

ग्रह-कृत कष्ट

सूर्य अग्नि रोग, ज्वर वृद्धि, क्षय, अतिसार आदि तथा राजा, देवता, किंकरों से और ब्राह्मणों से कष्ट हो और चित्तमें दोष होता है।

चन्द्र—पांडु रोग, कमल, पीनस, स्त्री द्वारा रोग देवता आदि से व्याकुल होता है।

मङ्गल—बीज दोष, कफ, हथियार, अग्नि वाले रोग, गिलटी, फोड़ा, घाव, दरिद्रता से पैदा हुए रोग, स्थूल रोग तथा वीर शैवगण, भैरवादि गण से भय उत्पन्न होता है। शरीर में भय का संचार रहता है।

बुध—गुदा रोग, उदर, दृष्टिपात, कुष्ट, मन्दाग्नि, शूल, संग्रहणी आदि तथा मन विकार से पैदा हुए भूत-पिशाचों से भय होता है।

गुरु—आचार्य, गुरू, ब्रह्मणादि से शाप दोष, गुल्म रोग होता है।

शुक्र—स्त्रियों के विकार से प्रमेह रोग या अपनी प्यारी स्त्रियों के दोष से अन्य शीघ्रता से फैलने वाले रोग बदन में घर लेते हैं। उनसे कष्ट होती है।

शनि—दारिद्रय, अपने कर्म, चोर पिशाच. संधि रोगों में क्लेश देता है। इसकी अवधि में अनेक तरह की पीड़ायें तथा व्याधायें सम्मुख उत्पन्न होती हैं।

राहु—मिरगी, मसूरिका, रज्जु, छींक या क्षुधा दृष्टि-रोग, कीड़े, प्रेत, पिशाच, कुष्ट, भूत, अरुचि और वहुत ही भय प्रद रोग होते हैं। इस ग्रह के फल अति हानिकारक और व्याधिदायक हैं। सदैव इसकी शान्ति का उपाय सोचना चाहिए।

केतु—खाज, मरीचिका, शत्रु, कीड़ों का रोग और छोटी जाति वालों और आचारहीन पुरुषों को शारीरिक तथा मानसिक कष्ट होता है।

ग्रहों के रङ्ग तथा वर्ण

सूर्य का तांबे का वर्ण या श्याम।
चन्द्र का सफेद वर्ण।
मङ्गल का लाल वर्ण या गोरा।
बुध का हरित वर्ण या श्याम।
गुरु का पीला वर्ण या गोरा।
शुक्र का कबरा वर्ण या सफेद।
शनि का कशा वर्ण या काला।
राहु का नीला वर्ण।
केतु चित्रित वर्ण वाला होता है।

ग्रहों के द्रव्य ।

१—सूर्य का ताँवा ।
२—चन्द्र का रजत ।
३—मंगल का ताँवा ।
४—बुध का सुवर्ण ।
५—गुरु का काँसा ।
६—शुक्र का रूपा ।
७—शनि का लोहा ।

ग्रहों के रत्न ।

१—सूर्य का माणिक ।
२—चन्द्र का मोती ।
३—मंगल का मूंगा ।
४—बुध का गारुत्मन ।
५—शुक्र का हीरा ।
६—शनि का नीलम ।
७—राहु का गोमेद ।
८—केतु का वैडूर्य ।

ग्रहों के रत्नों का ज्ञान आवश्यक है। जिस ग्रह की चाल अनिष्ट कारक जान पड़े तो उस गृह की शांति के लिये उस ग्रह के रत्न को पहनना अति आवश्यक है। रत्न की मुंदरी बनवाकर उस ग्रह की उङ्गली में नीचे की तरफ झुका कर पहनने से उसका असर अच्छा होता है। तमाम पीड़ा शांत होती रहती है और ग्रह को शान्त कर के रत्न सुख शांति ला। ताहै

आठवाँ अध्याय

चिन्ह ज्ञान

मनुष्य के हाथ को देखते समय आप अनेकों प्रकार के चिन्ह देखेंगे। हाथ की हथेली पर, उंगलियों के सिरों पर अर्थात् सर्वोपरि पर्व में, उंगलियों की जड़ों में और रेखाओं के ऊपर: नीचे या आस पास।

सामने वाले चित्र में दी हुयी तालिका में देखकर इन

चिन्हों की बनावट को पहचान लेने से हाथ देखते समय इन चिन्हों को भी विचार में रखकर फलादेश कहने में सरलता होती है।

हाथ में होने वाले विशेष चिन्ह हैं—

१–गुणाक, २–वृत, ३–वर्ग, ४–द्वीप, ५–रेखाजाल अर्थात् कटी फटी रेखा, ६–दाग, ७–अर्धचन्द्र, ८–कोण, ६ – चतुष्कोण, १०–त्रिभुज, ११––पर्वत, १२––शङ्ख, १३—सीपी, १४—चक्र, १५—नक्षत्र ।

१–गुणाक

एक आड़ी दूसरी रेखा के मिलने से गुणाक बनता है। यह अँग्रेजीके अक्षर ×की तरह होताहै। प्रायःइसका फल अशुभ होता है। परन्तु किसी किसी अवसर पर शुभ फल दायक है।

सूर्य और शनि के पर्वतों के बीच में हो तो दुःख होता है और इज्जत न वट्टे में मिल जाय ऐसी चिन्ता रहती है।

बृहस्पति के पर्वत पर हो तो धनी के यहाँ व्याह और सुखमय जीवन होने की सूचना है। यह देख लेना चाहिए कि कोई रेखा काट तो नहीं रही है। यदि ऐसा हो तो फल विपरीत होता है। यदि हल्का हो तो मस्तक पर जख्म होगा।

शुक्र के स्थान में भयानक; प्रेम या दुःखदाई विवाह की सूचना देता है।

यह चिन्ह शनि व सूर्य पर्वत के नीचे मस्तक पर हो तो भारी घातक फल का लक्षण है।

हृदय रेखा पर प्रेमी के वियोग होने की सूचना है। बुध के स्थान पर बेईमान और चोर स्वभाव होनेका लक्षण है। मजाकिया स्वभाव, रोजगार और समाज में चतुरता प्रदान करता है और धोखेबाज होने का लक्षण है।

चन्द्र के पर्वत पर यह चिन्ह हो तो झूंठा ठग और पानी में डूब जाने का भय बताता है।

चन्द्र स्थान पर बीच में हो तो गठिया रोग की सूचना देता है। विवाह रेखा पर हो तो दम्पति में से एक की एकाएक मृत्यु की सूचना स्पष्ट करता है।

बुध की अँगुली के तीसरे पोर में हो तो अविवाहित रहने की सूचना है।

यदि बुध के पर्वत पर यह चिह हो और कनिष्ठा अँगुली टेढ़ी हो तो चोर होता है। चोर की हृदय रेखा शनि के पर्वत तक ही जाती है।

शनि के स्थान पर हो तो भाग्य में बाधा उत्पन्न करने की सूचना है और स्वास्थ्य सम्बन्धी चिंता बताता है।

मङ्गल के स्थान पर गुरू के नीचे लड़ाई झगड़ा करने वाला क्रोध में आकर भयङ्कर प्रहार कर डालने वाला होता है और मारपीट में चोट लगाने का भय होता है और आत्मघात करने की इच्छा बताता है।

मङ्गल के क्षेत्र में उन्नति बाधा डालने वाला होता है।

मङ्गल के मैदान में बुधके स्थान नीचे भारी विरोध होने की सूचना है और शत्रु भय भी होगा।

सूर्य के स्थान पर धार्मिक प्रवृत्ति की सूचना है, परंतु धन पाने में गुरू के स्थान पर धनी और सुखदायी विवाह की सूचना है। और कुटुम्ब संबंधी संतोष भी देता है।

सूर्य के स्थान पर यश और धन की प्राप्ति की सूचना है, परन्तु धन से सन्तुष्ट न होने की भी है चाहे जितना धन प्राप्त हो जावे। अपनी सम्पत्ति तथा देवयोग से प्रसिद्धि प्राप्ति की चिंता होती है।

शनि के स्थान पर बिजली से आघात और सर्प के काटने के भय की और लकवा होने की सूचना है। यदि चतुष्कोण का चिन्ह हो तो रक्षा होती है।

बुध के स्थान पर झूँठा और चोर स्वभाव होने का लक्षण है। यदि शुभ हाथ में हो तो साहित्यक उन्नति करता है और दूसरों के ख्यालात को जल्दी ग्रहण करने वाला होता है।

यदि स्त्री के अँगूठे के दूसरे पोर में नक्षत्र हो तो धनवान होने की सूचना है।

मंगल के मैदान में हो तो रण में जय देता है और कभी अति क्रोध में प्राण देता है। ऐसा मनुष्य खून करने को नही चूकता और शस्त्र से मृत्यु का भय रहता है।

जीवन रेखा पर मस्तक सम्बन्धी रोग बतलाता है।

यदि शनि के स्थान पर भाग्य रेखा के पास हो तो जोश में आकर मृत्यु, या भारी अपयश का कारण होता है।

शुक्र रेखाओं के बीच में भयानक आतंक की बीमारी का सूचक है, जिससे मृत्यु होवे।

यदि चन्द्र के नीचे स्थान पर हो तो जलन्धर रोग होवे।

यदि चंद्र के स्थान पर हो और प्रभाविक-रेखा से जुड़ा हो जो जीवन रेखा से मिली हो या शुक्र के स्थान पर हो तो हिष्टीरिया या पागलपन अतिशय दर्जे का होता है।

जीवन-रेखाके पास यह चिन्ह राजदर्बारमें अभियोग लगने का चिन्ह है। भाग्य-रेखा पर यह चिन्ह अनर्थ का कारण होता है।

भाग्य-रेखा के प्रारम्भ में यह चिन्ह हो तो माता-पिता के रहते भी मनुष्य दुःखी रहता है और साथ ही चिन्ह शुक्र स्थान पर भी हो तो लड़कपन में ही माता-पिता का विनाश होता है।

—:o:—

चित्र-६
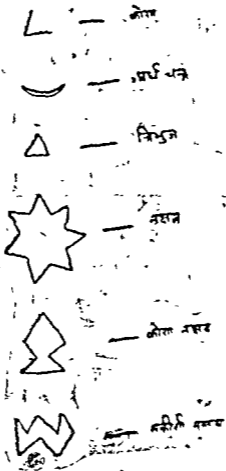
चित्र-७

२—वृत

यह गोल और भीतर से पोला होता है। रेखाओं पर इस चिन्ह का होना अशुभ व भाग्य हानि कारक होता है। परन्तु ग्रहों के पर्वतों पर होना शुभ फलदायक है।

गुरु के स्थान में वृत्त कामयाबी, शान शौकत इज्जत और नामवरी का फल देता है।

सूर्य के स्थान में यश हर कार्य में सफलता और धन देता है। उसका जीवन क्रम आनन्द से बीतता है। यदि सूर्य-रेखा अच्छी न हो तो आँखों में कष्ट होता है।

चन्द्र के स्थान में एकाएक मौत की सूचना है। सम्भव है जल में डूब जाने से मृत्यु हो।

शनि के स्थान में खनिज पदार्थों के व्यापार में सफलता पाने की सूचना है।

जीवन रेखा पर हो तो आँख में रोग या आँख खो बैठने की सूचना है। जिससे निराशा होती है और व्यापार व दस्तकारी में हानि करता है।

यदि स्त्री के हाथ में हो तो वह स्त्री धन के लोभ से अनेको पुरुषों के प्राण लेने में नहीं चूकेगी। ऐसी स्त्री चाहे कितनी ही सुन्दर हो उससे बचे रहना चाहिये।

ऐसे कई छोटे छोटे चिन्ह बुध के स्थान में हो तो अस्वाभाविक बुराई का चिन्ह है।

यदि चन्द्र के स्थान में ऊपर भाग में हो तो अंतड़ियों में कष्ट और नीचे हो तो ब्लैडर या स्त्रियों की जननेन्द्रि में कष्ट होता है।

मस्तक रेखा पर यह चिन्ह मस्तक को आघात पहुँचने का लक्षण है।

आयु तथा मातृ-रेखा के बीच में यह चिन्ह हो या भाग्य रेखा के समीप हो तो यकायक मृत्यु हो जाने का लक्षण है। अक्सर लोगों के हाथ में एक बड़ा गुणा का चिन्ह होता है। जो आयु और मातृ रेखा से मिलता है, यह डमरू की शक्ल का होता है। यह याचना वृति या किसी संस्था से सहायता पाने की सूचना है। इसीलिये इस चिन्ह को छोटे गुण के चिन्ह से जो अक्सर बीच में होता है नहीं मिला देना चाहिये।

इसके भीतर यदि लाल दाग हो तो गर्भवती के चिन्ह हैं।

यदि यह चिन्ह मध्य में हो दूसरों से झगड़ा होने का लक्षण है, जिसमें कसूर ज्यादातर उसी का होगा जिसके हाथ में चिन्ह है।

यदि दोनों हाथों में यह चिन्ह हो तो मारे जाने का लक्षण है। यदि कई चिन्ह हों तो दुर्भाग्य की सूचना है।

यदि इसकी शाखायें किसी खास रेखा को न छुएं तो मुकद्दमे में जीत जाने का चिन्ह है वरना हार होगी।

यदि अर्ध-चन्द्र इसके भीतर हो तो स्वास्थ्य और शक्ति की सूचना है और हर प्रकार से उन्नति का लक्षण है।

३—वर्ग

समकोण चतुर्भुज चौकोना होता है। इससे अक्सर अशुभ घटनाओं रोगों विघ्न भयों व सब संकटों से रक्षा होती है। यह चिन्ह शुभ फलदायक है। यह किसी रेखा के पास होने से भयानक खतरे व बीमारी से बचाता है।

यह शुभ चिन्ह है। यदि गुरू के स्थान में हो तो खतरों से या रोगों से बचाता है। और अमन चैन देता है। शासन-शक्ति

और समाज में गिरने से बचाता है। और प्रतिष्ठावान होने का लक्षण है।

यदि शनि के स्थान में हो तो भारी मुसीबत से रक्षा होवे और यदि इसके बीच में नक्षत्र हो तो जान से मारे जाने से रक्षा होती है। यदि इसके चारों कोनों पर लाल दाग हों तो अग्नि से रक्षा होती है। यह शुभ फल सूचक है।

यदि सूर्य के स्थान पर हो तो व्यापारिक शक्ति बढ़ाने वाला है।

यदि बुध के स्थान पर हो तो भारी धन की हानि से बचाता है और यश मान प्रतिष्ठा देता है।

ऊँचे मंगल के दोनों स्थान से शरीर की चोट से रक्षा करता है और शुभ सूचक है।

चंद्र के स्थान में डूबने तथा हर संकट से बचाता है।

यदि किसी टूटी हुई जीवन रेखा को जोड़ रहा हो तो रोग से बचाता है। यह वर्ग दाहिने हाथ में टूटी हुई जीवन-रेखा को जोड़ रहा है और भारी रोग से बचा कर प्राण रक्षा करता है।

शुक्र और मङ्गल के स्थान पर चतुष्कोण हो तो कारागार सेवन कराता है।

यदि शुक्र पर्वत पर अखण्ड सुन्दर हो तो किसी प्रेमिका के प्रेम में फँस जाने से बेइज्जती या अन्य प्रकार की विपत्ति से बचाता है। यदि यह खंडित हो तो जेल की सम्भावना होती है।

इसका विपरीत चिन्ह जेल यात्रा का है। अँगुली में चार पर्व हो तो भी जेल होती है।

यदि हाथ के मध्य में हो तो श्रेष्ठ और धन, यश, का स्वामी होता है।

४–द्वीप

यह अक्सर जौ के सदृश होता है। यह यदि खड़ा हो तो अशुभ और आड़ा हो तो प्राय शुभ फल दायक होता है।

द्वीप का चिन्ह एक अशुभ चिन्ह है।

वृहस्पति के स्थान पर द्वीप अपयश के भागी होने की सूचना है। इस चिन्ह वाला पुरुष झगड़ालू होता है।

हृदय रेखा पर नाजायज प्रेम और निराशा मयी सूचना का द्योतक होता है।

यदि बुध की अंगुली के नीचे हृदय रेखा पर हो या बुध पर्वत पर हो तो नाजायज प्रेम किसी रिश्तेदार से होना बताता है। लफंगा बेईमान और चोर होता है।

शुक्र के स्थान पर प्रेम में उत्पात का होना बताता है। और किसी बड़े हितैपी को नाराज कर देने की सूचना है।

भाग्य-रेखा पर किसी व्यक्ति से लुभाये जाने की सूचना है। स्त्री के हाथ में हो तो पुरुष से और पुरुष के हाथ में हो तो स्त्रीसे लुभाये जाते हैं।

सूर्य-रेखा पर या सूर्य के स्थान पर अपयश आने की सूचना है।

विवाह-रेखा पर वियोग होने की सूचना या अलग अलग पति-पत्नी के रहने की सूचना है।

जीवन और मस्तक रेखा की जोड़ पर द्वीप हो तो प्रेम में झगड़ा होने की सूचना है। यह बात एक समय एक बंगाली सज्जन का हाथ देखते समय बताई गई थी, तो उसने इसे कबूल किया और कहा कि उसने प्रेम के झगड़े में आकर आत्महत्या करने का प्रयत्न किया था जहर खा लिया था पर भाग्यवश बचगया।

जीवन रेखा पर द्वीप बीमारी की सूचना देता है।

मस्तक रेखापर मस्तक सम्बन्धी रोग बतलाता है जैसे सिर दर्द, आधासीसी सिर में चोट स्मरण शक्ती का नाश इत्यादि।

यदि वह मस्तक रेखा के नीचे के भाग में हो तो असवर्ण अर्थात् गैर जाति के पुरुष से स्त्री और असवर्ण स्त्री के रूप पर पुरुष मोहित होता है।

भाग्य और मातृ-रेखा पर द्वीप हो भाग्य रेखा टेढ़ी हो तो उस व्यक्ति का विवाह नहीं होता है।

भाग्य रेखा के शुरू में द्वीप का चिन्ह हो तो थोड़ी अवस्था में माता पिता का वियोग होता है। कोई कोई विद्वान् इस चिन्ह को वर्णसंकर की उत्पत्ति वाला मनुष्य होता है, ऐसा कहते हैं और कोई स्त्री के हाथ में हो तो उसे प्रलोभन देकर भगाये जाने का चिन्ह बताते हैं। लेखक ने उपरोक्त चिन्ह देखकर इस चिन्ह के उपरोक्त फल बताये हैं और उन्हें सत्य पाया है।

५—रेखा-जाल

छोटी २ आड़ी और सीधी रेखाओं की आपस में मिलने से जाली के समान चिन्ह होता है यह विघ्नकारक और बुरा फल तुरन्त देता है जिस स्थान पर होता है उसके शुभ फलों को नष्ट कर देता है।

चंद्र के स्थान में कंजूसी, आत्महत्या की तरफ रगवत और अति सोच विचार वाला पुरुष तथा उदासी चिन्ता भय भाग्य हानि और दुख होने का लक्षण है।

बुध के नीचे मंगल के स्थान पर एकाएक मृत्यु या भयानक खतरे की या आत्महत्या की सूचना है।

शुक्र के पर्वत के ऊपर मङ्गल के पर्वत पर हो तो कोर्ट में विवाह होने की सूचना है।

शुक्र के स्थान पर अति कामी व्यभिचारी होने की सूचना है।

उसको जेल या पागल खाना वगैरह में जाने का होता है। यदि जाल चौड़ा हो तो गुप्त रीति से अन्य स्त्रियोंपर आसक्त होता रहने वाला होता है।

सूर्य के स्थान पर शक्की कुटिल मंद बुद्धि और ओछापन की सूचना है। और बड़प्पन का गर्व करने वाला अप्राप्य की प्राप्ति करने वाला होता है।

शनि के स्थान पर दुर्भाग्यवान् तथा व्यभिचारी होने की सूचना है। और जेल जाने की सम्भावना है।

बुध के स्थान पर वेईमान और चोर स्वभाव का सूचक है। कभी कभी गबन के मामले में मृत्यु होती है।

गुरु के स्थान पर स्वार्थी उपद्रवी निर्दयी और घमंडी होने का लक्षण है और सामाजिक तथा विवाह कार्य में बाधा होती है।

मंगल के स्थान में मौत होने की सूचना है। इसके नीचे भाग में हो तो अंतड़ियों की बीमारी और अक्सर पेट की बीमारी होती है।

रेखाओं का यह जाल जिस स्थान पर होगा उसका विरोध करके उसमें एक विलक्षणता पैदा कर देता है। यदि हमारी इच्छा शक्ति प्रबल हो तो बहुत कुछ इसके बुरे फलों को कम करने में समर्थ होता है।

६—दाग़

बिंदु, तिल, डाड़ वाडगाड़ किसी भी जगह रेखा पर काला, नीला, लाल, सफेद, गुलाबी रंग का विन्दु हो तो अशुभ फल दायक है। इस चिन्ह के फल को पूर्वीय शास्त्री शुभ और पश्चात्य अशुभ मानते हैं।

बृहस्पति के स्थान पर काला दाग अपयश और धन हानि का सूचक है।

बुध के नीचे मङ्गल के स्थान पर मुकद्मे में जायदाद नाश करने का लक्षण है। यदि दोनों हाथ पर न हो तो कुछ सम्पति बच जावेगी।

चन्द्र स्थान पर दिवालिया होने का लक्षण है। हिष्टीरिया आदि के भी लक्षण हैं।

जीवन रेखा पर आंखों का कष्ट और भारी रोग का भय सूचक है

मस्तक-रेखा पर शनि के नीचे दांतों में कष्ट होवे, आंखकी बीमारी और स्नायुविक कमजोरी का लक्षण है।

शनि के स्थान पर बुरे कर्म होने की सम्भावना है।

सूर्य के स्थान पर अपयश और समाज में गिर जाने का भय है।

बुध के स्थान पर रोजगार में हानि की सूचना है। बड़ा होवे तो जंघा की हड्डियों में चोट लगने की सूचना है। बेई-मान, लफंगा, चालाक तथा चोर होता है।

यदि ऊँचा मङ्गल के स्थान में हो तो किसी झगड़े या लड़ाई में चोट लगने का लक्षण है।

यदि यह शुक्र के स्थान में हो तो घातक बीमारी की सूचना है जो प्रेम का परिणाम होगी। किसी परम हितैषी को नाखुश कर देने की सूचना है।

स्वास्थ्य रेखा पर ज्वर होने को सूचना है।

जीवन रेखा पर नीले रंग का दाग जान से मारे डाले जाने का भय या विष से मरने की सूचना है।

यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि यदि दाग सफेद हो तो शुभ सूचना है।

७–अर्ध चन्द्र

सूर्य के स्थान पर चुगलखोरी की आदत और आँखों को कष्ट होमा है। यदि अनामिका अंगुली के तीसरे पोर में हो तो दरिद्रता और बदकिस्मती की सूचना देता है।

बुध और चन्द्र के बीच में हो तो गुप्त विद्या जैसे ज्योतिष इत्यादि की शक्ति वाला होना बतलाया है।

चन्द्र के स्थान पर हो तो जल में डूबने का भय रहता है।

८–६–कोण

चन्द्र स्थान पर कोण हो तो डूबने का भय होता है मणिबंध पर अनायास सम्मान पूर्वक वृद्धावस्था में धन प्राप्ति होता है।

चतुष्कोण यह मस्तक रेखा और हृदय रेखा के बीच के भाग का नाम है।

यदि यह चिकना हो और रेखायें न हों तो धैर्यवान, शांत व वफादार होने का लक्षण है। यदि हथेली की तरह चौड़ा हो तो स्पष्टवक्ता होने की सूचना है। यदि बराबर चौड़ी जगह हो तो स्वतन्त्र विचार वाला और कभी-कभी मूर्खता के साथ व्यवहार का होना आवश्यक बताता है।

यदि शनि के स्थान में ज्यादा चौड़ा हो तो नेकनामी की तरफ से बेपरवाह स्वभाव वाला होता है।

यदि सूर्य के स्थान में ज्यादा चौड़ा स्थान हो तो दूसरे की राय पर विशेष रूप से भावुक होता है।

यदि कम चौड़ा होवे तो कंजूसी और कमीनेपन का लक्षण है।

यदि बीच में कम चौड़ा हो तो लोभ कृपणता और धोखेबाजी की प्रकृति का चिन्ह है।

यदि वह चौड़ा अधिक हो तो व्यर्थ धन का खर्च करना या फिजूल खर्ची पाया जाता है। यदि बुध के स्थान के नीचे चौड़ाई में कुछ फर्क पड़ गया हो तो वृद्धावस्था में किफायतशारी की ओर ध्यान देगा। यदि बहुत ही कम चौड़ा हो तो ईर्षा, तंग ख्याली और धर्मान्ध होने के लक्षण हैं।

यदि यह जगह तंग हो और गुरु की जगह उभड़ा हो तो अत्यन्त धार्मिक विचार वाला सन्यासी हो जाने का लक्षण है।

यदि अधिक तंग हो और बुध का स्थान उठा हो या अशुभ रेखाऐं हों तो झूठ बोलने की आदत होती है।

यदि तंग हो, बुध और मङ्गल का स्थान उठा हो तो बेईमान प्रकृति होने का लक्षण है।

यदि बहुत छोटी रेखायें इसके भीतर हों तो चिड़चिड़ापन और कम बुद्धि का लक्षण है।

यदि कोई रेखा इसमें से निकल कर सूर्य-स्थान को जावे तो किसी बड़े मनुष्य की रक्षा से कामयाबी होने की सम्भावना है।

यदि कोई रेखा शाखा वाली आड़ी पड़ी हो तो बदमिजाज और असमय पर कार्य करने वाले होते हैं।

यदि गुणक चिन्ह और हृदय-रेखा को छूता हो तो किसी व्यक्ति का भारी असर होगा। पुरुष हो तो स्त्री का और स्त्री हो तो पुरुष का असर होगा।

यदि यह चिन्ह मस्तक रेखा को छूता हो तो वह व्यक्ति-प्रेमी के ऊपर भारी असर पैदा करेगा।

यदि यह शनि स्थान के नीचे हो तो गुप्त विद्याओं में

जैसे ज्योतिष इत्यादि में प्रेम होगा।

यदि यह न हो और हृदय-रेखा कटी हो तो ऐसी हालत में सख्त मिजाज वाला और दिल की धड़कन वाली बीमारी का लक्षण है।

यदि मस्तक रेखा ऊपरकी ओर उठी हो तो व लज्जा शीलता का लक्षण है। ऐसा मनुष्य दूसरों का उपकार करने में ज्यादा प्रसन्न रहता है यहाँ तक अपनी बुराई करने वाले के साथ भी भलाई करने से आगापीछा नही करता। यदि कोई काम करने का इकरार करता है तो उसे भूल जाता है। समय बीतने पर झूंठा कहलाता है गोया कि वह वादे को पूरा करने की कोशिश करता है परन्तु अनिश्चित स्वभाव से वह पूरा नहीं कर पाता।

शुक्र के स्थान में चतुष्कोण को काटने वाली रेखायें जिस मनुष्य के हाथ में होती है उस पर किसी अन्य व्यक्ति का किसी समय हृदय और मस्तक पर प्रभाव पड़ता है।

प्रथम कोण

यह मस्तक-रेखा और जीवन-रेखा से बना होता है। यदि स्वच्छ साफ न्यून हो तो सभ्य और बुद्धिमान्, शुद्ध चरित्र होने का लक्षण है। छोटा और चपटा यानी फैला हो तो असभ्य मंद-बुद्धि तथा आलस्य-पूर्ण होने का लक्षण है।

यदि शनि की अँगुली के नीचे हो तो कपट, धोखेबाजी पाई जाती है। यहाँ पर और भी ज्यादा कम चौड़ा हो तो कार्य में कुशल होता है परन्तु इश्क का माद्दा पाया जाता है। भद्दा, चौड़ा हो तो कंजूस और दूसरों के हित की परवाह न करने वाले का लक्षण है।

यदि भद्दे तौर पर मस्तक रेखा से स्वास्थ्य रेखा मिले और

जीवन रेखा से अलग हो तो भयानक स्वतन्त्र कार्य करने वाला आत्मविश्वासी होता है।

दूसरा कोण

यह मस्तक-रेखा और स्वास्थ्य रेखा से बनता है साफ शुद्ध हो तो बुद्धिमान और दीर्घजीवी हो, चौड़ा और भारी हो तो आलसी अनुदार और घबराहट वाला हो, यदि किसी बालक के हाथ में यह कोण अच्छा न हो यानी कम चौड़ा हो तो उसके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिये क्योंकि ऐसे बालक की बुद्धि स्वयं तीव्र होवेगी परन्तु स्वास्थ्य की तरफ से चिंता होगी।

तीसरा कोण

जीवन-रेखा और स्वास्थ्य रेखा से बनता है। यदि यह स्वच्छ हो और नीचे जीवन-रेखा के पास हो यानी मिलता हो तो स्वास्थ्य अच्छा होगा। दीर्घ आयु और कारबार में कामयाबी चिन्ह है।

यदि अधिक पास हो तो शरीर कमजोर और धन संचय करने की इच्छा प्रबल होगी।

यदि अधिक पास हो तो आलस्य, अशुद्ध विचार, निर्बल शरीर होने का सूचक होता है।

१०—त्रिभुज

त्रिकोण के आकार का त्रिभुज होता है। यह शुभ फल-दायक है।

गुरुके स्थान पर लोकहित कार्य करने वाला और रियासत

में विशेष पद पर अधिकारी होने का सूचक होता है। शनि के स्थान पर ज्योतिष सामुद्रिक, मंत्र तंत्र और गुप्त विद्याओं का जानकार होता है। यदि तीसरे पोर पर नक्षत्र शनि की अँगुली पर हो तो इस विद्या का दुरुपयोग करता है।

सूर्य के स्थान पर हो तो शिल्प विद्या का अच्छा जानकार होता है। विज्ञान-द्वारा अनुसंधानों या औषधि के कार्य में उन्नति करता है।

बुध के स्थान पर होने से शुभ लक्षण है, वैज्ञानिक, व्यवसायी सेवा, विद्वता के कार्य में सफलता होती है राजनीतिज्ञ और अच्छा वक्ता होता है।

मङ्गल के स्थान पर बुध के पर्वत के नीचे चीर-फाड़ के काम में होशियार होता है। गुरु के नीचे मङ्गल पर्वत पर हो तो कुशल सेनापति और दृढ़ निश्चय वाला होता है।

शुक्र के स्थान पर स्वार्थवश प्रेम में फंस जाने का सूचक है और गणित का जानने वाला होता है।

मङ्गल के स्थान में सैनिक कार्यों में कुशलता प्रदान करने वाला होता है।

इन्द्र के स्थान पर गुप्त विद्या का ज्ञान तथा जादूगरी आदि कामों में रूचि रखने वाला होता है।

भाग्य-रेखा के आदि में यदि त्रिकोण हो तो थोड़ी अवस्था में माता-पिता का वियोग होता है।

पितृ-रेखा पर त्रिकोण हो तो मनुष्य पैतृक सम्पति का अधिकारी होता है।

मातृ-रेखा में त्रिकोण हो तो ननिहाल की सम्पति प्राप्त होती है।

यदि आयु-रेखा पर त्रिकोण हो तो पुरुषार्थ से धन,भूमि, वाटिका, वाहन तथा अनेक ऐश्वर्य सामग्री प्राप्त करता है।

यदि मणिबंध रेखा पर त्रिकोण हो तो वृद्धावस्था में सम्मान के साथ धन को भी प्राप्त करता है।

यदि भाग्य रेखा पर त्रिकोण हो तो 'अनायास ही धन की छोटा प्राप्तिका योग होता है। यदि त्रिकोण हेतो थोड़ा धन और बड़ा हो तो अधिक धन प्राप्त होता है।

बड़ा त्रिभुज

यह जीवन रेखा, मस्तक रेखा और स्वास्थ्य रेखा के मिलने से बनता है। चौड़ा और स्पष्ट हो तो सदाचारी, उत्साही, उदार होने का लक्षण है।

बड़ा साफ और स्वच्छ रङ्ग का हो तो भाग्यवान, दीर्घजीवी और हिम्मत का लक्षण है। छोटा हो तो कायरता, चरित्रहीनता, कमीनापन, ओछी प्रकृति का सूचक होता है।

११—पर्वत

हाथ में उठे हुए स्थान को पर्वत कहते हैं। इन पर्वतों को एक ग्रह का नाम दिया हुआ है और वही उस ऊँचे उठे हुए स्थान का मालिक ग्रह माना गया है। चित्र में तर्जनी के मूल के नीचे जिस स्थान पर 'गु' अक्षर लिखा है वह गुरु का पर्वत है और उस जगह का मालिक बृहस्पति है। इसी तरह मध्यमा के नीचे 'श' अक्षर जिस जगह है, वहाँ शनि का पर्वत है और उस स्थान का मालिक शनिश्चर है। तथा अनामिका अँगुली के नीचे जिस जगह पर 'सू' अक्षर लिखा है, वह सूर्य की जगह है और इस जगह का मालिक सूर्य है। वैसे ही कनिष्ठा के मूल

के नीचे 'बु' अक्षर जहाँ है वह बुध की जगह है, और बुध के नीचे जहाँ 'म' अक्षर है वह मङ्गल की जगह है। मङ्गल के नीचे 'च' अक्षर है इस जगह को चन्द्र का पर्वत कहते हैं। चन्द्र के सामने ही अंगुष्ट के मूल में नीचे जिस जगह 'शु' अक्षर है वहां शुक्रका आधिपत्य है। शुक्र के ऊपर जहाँ 'म' अक्षर लिखा है वह मङ्गलका दूसरा स्थान है, और इसका मालिक मंगल ग्रह गया है।

इन पर्वतों की कल्पना पाश्चात्य देश में अतिशय प्रचलित है और फल के कहने में बहुत ही महत्व दिया है।

गुरु

गुरु का पर्वत अच्छा उठा हो तो कुटुम्ब में प्रीति, उच्चाभिलाषी यश की इच्छा वाला और आत्म-भिमानी होता है। सत्य वक्ता, चतुर पंडित, पुत्र, पौत्र, धन धान्यादि होता है।

यदि यह पर्वत नीचे दबा हो तो स्वार्थी और दुराचारी है। चर्म, रोग से, तथा शुभ-गुण रहित होता है।

यदि पर्वत अधिक उठा हो तो अहङ्कारी, अन्यायी और अधिकार पाने की इच्छा वाला होता है और बड़ेर अक्षर लिखता है। स्वार्थी, ठग, धूर्त, अपव्ययी, निर्दयी होता है।

गुरु का पर्वत शनि की तरफ झुका हो तो आत्मनिष्ठवान होता है।

शनि

शनि का पर्वत अच्छा उठा हो तो शान्त-स्वभाव, मितभाषी गुप्त विद्याओं का ज्ञाता, सदाचारी, स्नेही, एकान्त-वासप्रिय, सदाचारी, खेती बगीचा का शौक रखने वाला, स्त्रियों में प्रीत कम करने वाला होता है। अक्षर छोटे नजदीक लिखने वाला होता है।

यदि यह पर्वत नीचे दबा हो तो बकवादी व्यभिचारी और झूठा होता है। दुःखी, जुआरी, व्यसनी, मूर्ख और अल्पायु होती है।

यदि यह पर्वत सामान्य उठा हो तो वात रोग, दन्त रोग, बदहजमी होती है। निष्ठुर, नीच, अपवित्र, आत्महत्या चाहने वाला, उदर, वायु तथा मूत्राशय रोग युक्त होता है।

शनि का पर्वत सूर्य की ओर झुका हो तो शिल्प कार्य में उदासीन होगा।

इस पर्वत पर आड़ी रेखायें हो तो लकवा रोग होता है।

सूर्य.

यदि सूर्य का पर्वत ऊपर उठा हो तो कारीगरी में प्रवीण, साहित्यवेत्ता, विद्वान् लेखक, देशभक्ति, पराक्रमी, चतुर, उच्चाभिलाषी, उदार,प्रतिष्ठा आदि गुणों से युक्त होता है। यश की इच्छा, प्रेमी, शुद्धता के साथ सौन्दर्य प्रियता और दयालु होता है और सामान्य अक्षर स्पष्ट लिखता है।

सूर्य का पर्वत नीचे दबा हो तो सुस्त, मंद, दुश्चरित्र, बुद्धि, निर्दयी विलासी होता है। यदि सूर्य रेखा प्रबल हो तो यह गुण नहीं होता पूर्वोक्तशुभ फलों से रहित होता है।

यदि सूर्य का पर्वत अधिक उठा हो तो बकवादी,गर्वीला, डाह करने वाला, लोभी, कान का कच्चा, आराम तलब और हुनर जानने वाला होता है।

बुध

यदि बुध का पर्वत अच्छा उठा हो तो साहसी बुद्धिमान, विनोदी, बहादुर, घूमने और दृश्य देखने का शौकीन, धैर्ययुक्त, कष्ट की चिन्ता न करने वाला और छोटे अक्षर लिखता है। यह

व कारीगरी में चतुर अल्पावस्था में विवाह सुन्दर स्त्री युक्त, वाणिज्य में कुशल होता है।

यदि बुध का पर्वत नीचे दबा हो तो रोज नाखुश रहने वाला होता है, और सब फल विपरीत होते हैं।

यदि बुध का पर्वत अधिक उठा हो तो पाजी, ठग,लुच्चा झूंठा झगड़ा करने वाला होता है।

यदि बुध का पर्वत मंगल की तरफ झुका हो तो स्वयं प्रसन्न रहने वाला होता है। परन्तु दूसरे के दुःखों की पर्वाह नहीं करता है। यदि सूर्य की ओर झुका हो तो अच्छा वक्ता और चिकित्सा में निपुण होता है।

मंगल

पहिले मंगल का पर्वत बुध के पर्वतके नीचे ज्यादा नीचा हो तो धर्म पर निष्ठा नहीं होती। अन्यायी और कठोर सैनिक होता है। कोने निकले हुए अक्षर लिखता है।

मंगल का स्थान उच्च हो तो। उदार, प्रतापी, पराक्रमी, हठी, युद्ध प्रिय. व्यवसायी, बली, क्रोधी, विचार रहित, ग्रहकलह के कारण दुःखी होता है।

यदि यह पर्वत नीचे दबा हो तो साहस और शान्ति का अभाव होता है दूसरा मंगल का पर्वत गुरु के पर्वत के नीचे उठा हो तो साहसी, धैर्यवान् आत्म विश्वासी होता है।

यदि अधिक उठा हो तो संकोची और जिद्दी झगड़ालू होता है।

यदि दोनों ही पर्वत ऊँचे उठे हों तो डरपोक और छिछोरा होता है। रुधिर विकार तथा अग्निमान्द्य युक्त होता है।

यदि बुध के पर्वत की ओर झुका हो तो अच्छी सलाह देने वाला होता है।

चन्द्र

चन्द्र का पर्वत अच्छा उठा हो तो सदाचारी, दयालु, कल्पना करने वाला संगीत प्रिय और सुन्दर दृश्य देखने का शौकीन, रसिक, मधुर भाषी, लेखक दयावान, भ्रमणशील, थोड़ी उमर में विवाह करने की इच्छा वाला मातृ सुत्र, कृषी, सुखी धनधान्यादि युक्त होता है। कविता के लिखने का गुण होता है। उल्टे अक्षर यानी दाईं ओर से वांई ओर को मुड़े हुए लिखता है।

यदि दबा हुआ हो तो प्रकृति फल, कल्पना शक्ति का अभाव, क्षणिक बुद्धि वाला और असन्तोषी होता है।

यदि अधिक उठा हो तो आलसी आत्म-हत्या का अभिलाषी, उदासीन, झूंठा और व्यसनी होता है। शुक्र तथा उदर सम्बन्धी रोग होता है।

जब मणिबन्ध की तरफ झुका हो तो दिन में स्वप्न देखने वाला और हवा में महल बनाने वाला होता है।

चन्द्र के पर्वत पर तारों के समान चिन्ह हो तो त्रास और यदि तीन बिन्दु एक साथ हों तो क्षय रोग होता है।

शुक्र

शुक्रका पर्वत अच्छा उठावदार हो तो सदाचारी कारीगर, स्त्रीप्रिय विलासी, उदार, प्रभावशाली, आत्म भिमानी, चिकित्सक होता है, परोपकारी, संगीत का प्रेमी, अक्षर सुन्दर साफ सुडौल और एक समान लिखता है।

यदि अधिक उठा हो तो व्यभिचारी, निर्लज्ज, अहंकारी, विषयी होने का लक्षण है और अक्सर कान से सुनाई कम पड़ता है या कोई कर्ण रोग होता है।

यदि इस पर्वत का अभाव हो तो सुस्त और स्वार्थी होता है। विपरीत फल और शुक्र रोग वाला होता है।

यदि मणिबन्ध की ओर झुका हो तो नाचने का शौकीन होता है।

राहु

गुरु और शुक्र के बीच में राहु का स्थान है। उच्च हो, तो चिन्ता शील, तार्किक, गुप्त भेदों को छिपाने वाला उपदेशक, विश्वास-घाती, धोखेबाज़, नीच से नीच कर्म द्वारा धन प्राप्त करने वाला होता है।

भिन्न हो तो बड़ों की सम्पति नाश करने वाला, झगड़ालू, अपव्ययी उदर, इन्द्रीय रोग युक्त होता है।

दो पर्वतों का फल

यदि गुरु का पर्वत दबा हो। और शनि का उठा हो तो दूसरों से घृणा करने वाला होता है।

गुरु का पर्वत और चन्द्र का पर्वत उठा हो और बुध का पर्वत दबा हो, तो सोचेगा खूब पर सफल नहीं होगा। गुरु और मंगल का पर्वत उठा हो तो लुच्चा और दिखावे के लिये प्रसन्न होगा पर एकान्त में उदासीन होगा।

शनि और गुरु के पर्वत उठे हों तो विचारवान, मशहूर और सज्जन होता है।

यदि ऐसा ही चिन्ह स्त्री के हाथ में हो तो हिस्टीरिया का रोग होता है।

शनि और बुध के पर्वत उठे हों तो लुच्चा होता है और एकान्त में सुस्त, उदास और समाज में प्रसन्न चित्त वाला होता है।

शनि और मङ्गल के पर्वत उठे हों तो क्रोधी, विषयी मिथ्या भिमानी होता है।

शनि और शुक्र का पर्वत उठा हो तो वेदान्ती, गुप्त विद्या का प्रेमी, भोगी और धार्मिक होता है।

शनि व चन्द्र का पर्वत उठा हो तो स्वाभिमानी और काल्पनिक होता है।

सूर्य और बुध का पर्वत उठा हो तो वक्ता, समझदार शास्त्र का जानने वाला और बुद्धिमान होता है।

सूर्य, मङ्गल या शनि का पर्वत उठा हो तो मिलनसार परोपकारी और शान्तिमय होता है।

सूर्य और गुरु का पर्वत उठा हो तो न्यायप्रिय और दयावान् होता है।

बुध और गुरु के पर्वत उठे हों तो समाज का प्रेमी तथा खेल तमाशे का प्रेमी होता है।

बुध व मङ्गल के पर्वत ही केवल उठे हों तो मजाक पसन्द करने वाला होता है।

बुध और शुक्रके ही पर्वत उठे हों तो मजाकिया और प्रसन्न चित्त वाला होता है।

बुध और मंगल के पर्वत उठे हों तो विनोदी लड़कियों का मित्र और पशु-पक्षी का शौकीन होता है।

मङ्गल और सूर्य उठे हो तो सच्चा सदाचारी और ज्ञानी होता है।

शनि और मङ्गल के पर्वत उठे हों तो द्वेष करने वाला है।

दोनों मङ्गल पर्वत उठे हों तो भूमिका लाभ होता है।

चन्द्र और बुध का पर्वत उठा हो तो भाग्यवान् और बुद्धिमान् होता है।

चन्द्र और शुक्र का पर्वत उठा हो तो काल्पनिक और सुख भोगने वाला होता है।

चन्द्र और शनि का पर्वत उठा हो तो डरपोक और काल्पनिक शक्ति कम होती है।

गुरु और शुक्र का पर्वत उठा हो तो चापलूसी को पसंद करने वाला और उन्नति करने वाला होता है।

१२–शंख

अँगुलियों के अग्र भाग पर शंख, चक्र, और सीपीं की आकृति के चिन्ह होते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं। बामावर्त बायें तरफ मुँह वाले। दक्षिणावर्त दाहिनी तरफ मुँह वाले। शंख अपनी ही आकृति का होता है। चक्र गोल बीच में कटा होता है। शंख जल्दी नहीं दिखाई देते, खास कर हाथ से कार्य करने वालों के निशान घिस जाते हैं। इसलिए दोपहर में और हो सके आतशी शीशा से देखना चाहिए।

जिसके हाथ में एक शंख हो अध्ययन शील, शूरवीर होता है।

जिसके हाथ में दो शंख, हों तो दरिद्र या साधू।

जिसके हाथ में तीन शंख हों वह स्त्री के लिए झुकता है। रोता है, धूर्त है।

जिसके हाथ में चार शंख हों वह राजा के समान सुखी हो या दरिद्र भी होता हैं।

जिसके हाथ में पाँच शंख हों वह विदेश में प्रभुता पावे। माननीय होगे।

जिसके हाथ में छः शंख हों वह बड़ा बुद्धिमान होवे।

जिसके हाथ में सात शंख हों वह दरिद्र होवे। आठ वाला सुख से जीवन बिताता है।

नौ शंख वाला हिजड़ा या स्त्री केसे स्वभाव वाला होताहै। दस शंख वाला राजा या योगी होता है।

१३–सीपी

जिसके हाथ में एक सीपी हो वह राजा हो और यदि एक ही जगह दो सीपी हों तो वह दरिद्री होता है।

जिसके हाथ में दो सीपी हों तो अमीर होता है तीन सीपी हों तो योगी हो।

चार सीपी हों तो दरिद्र हो। पाँच सीपी हों तो धनी हो।

छः सीपी हों तो योगी हो। सात सीपी हों तो दरिद्र हो। आठ सीपी हों तो धनी हो। नौ सीपी हों तो योगी हो। दस सीपी हों तो दरिद्र हो।

१४–चक्र

जिसके हाथ में एक चक्र हो तो चतुर हो। दो चक्र हो तो सुन्दर हो। तीन चक्र हों तो ऐय्याश, विलासी हो। चार चक्र हों तो दरिद्र हो। पांच चक्र हों तो ज्ञानी हो छः चक्र हों तो पंडितों में चतुर हो। जिसके हाथ में सात चक्र हों पहाड़ों पर विहार करने वाला। आठ चक्र हो ता राजा हो। दस हों तो राजा का सेवक हो। तर्जनी में चक्र हो तो प्रतापी राजा होता है। अंगुलियों में होने से भ्रमण करने वाला होता है। जिसके चारों अंगुलियां में एक शंख चक्र गदा हो तो वह ईश्वर के तुल्य माननीय होता है।

दाहिने हाथ के अंगूठे के मध्य में चक्र तो शुक्ल पक्ष में और दिन में जन्म होता है। बायें हाथ के अंगूठे में यह हो तो कृष्ण पक्ष में रात के समय जन्म होता है। और दोनों हाथों में अंगूठा में यह हो तो कृष्ण पक्ष में दिन में जन्म होता है।

दाहिने हाथ के अंगूठे में यदि यह हो तो गुप्तेन्द्रिय के दाहिने ओर तिल और बांये हाथ में अंगूठे पर यह हो तो गुप्त इन्द्रिय के बांये ओर तिल होता है।

अंगूठे में मूल में जितने चक्र हों उतने ही उसके पुत्र होते हैं। जिसका अंगूठा छोटा होता है उसमें इच्छा शक्ति कम होती है और वह साफ़ नहीं लिख सकता है।

१५—नक्षत्र

यह तारे के समान होता है। यह अच्छा लक्षण नहीं है इससे चिंता. संताप, मुसीबत और दुःख होता।

वर्ग के अन्दर नक्षत्र हो तो भयानक खतरे से रक्षा हो जाने की सूचना है।

चन्द्र स्थान पर नक्षत्र हो तो झूठा, रोग ग्रसित और पानी में डूबने की सूचना है।

यदि मङ्गल के स्थान पर बुध के नीचे हो तो हत्या करने वाले विचार और किसी जंगली जानवर से चोट लगने की सूचना है।

मङ्गल के स्थान में यदि यह चिन्ह हो तो रेलवे, भूडोल से हानियाँ व चोट लगती हैं।

शुक्र के स्थान पर हो तो किसी स्त्री से कष्ट पाने की और निराशा का योग होता है या दुःखदायी विवाह होने की सूचना है, किसी सम्बन्धी की मृत्यु की सूचना है।

यदि दाहिने हाथ पर तारा हो तो पिता की मृत्यु बाल्यावस्था में होती है। यदि यही चिन्ह बांयें हाथ पर शुक्र के पर्वत पर हो तो बाल्यावस्था में माता की मृत्यु जानना। यदि किसी रेखा पर शुक्र के स्थान पर तारा हो तो किसी सम्बन्धी या सनेही के आफत में फँसने या भाग्य हानि की सूचना है।

नौ शंख वाला हिजड़ा या स्त्री केसे स्वभाव वाला होताहै। दस शंख वाला राजा या योगी होता है।

१३–सीपी

जिसके हाथ में एक सीपी हो वह राजा हो और यदि एक ही जगह दो सीपी हों तो वह दरिद्री होता है।

जिसके हाथ में दो सीपी हों तो अमीर होता है तीन सीपी हों तो योगी हो।

चार सीपी हों तो दरिद्र हो। पाँच सीपी हों तो धनी हो।

छः सीपी हों तो योगी हो। सात सीपी हों तो दरिद्र हो। आठ सीपी हों तो धनी हो। नौ सीपी हों तो योगी हो। दस सीपी हों तो दरिद्र हो।

१४–चक्र

जिसके हाथ में एक चक्र हो तो चतुर हो। दो चक्र हो तो सुन्दर हो। तीन चक्र हों तो ऐय्याश, विलासी हो। चार चक्र हों तो दरिद्र हो। पांच चक्र हों तो ज्ञानी हो छः चक्र हों तो पंडितों में चतुर हो। जिसके हाथ में सात चक्र हों पहाड़ों पर विहार करने वाला। आठ चक्र हो तो राजा हो। दस हों तो राजा का सेवक हो। तर्जनी में चक्र हो तो प्रतापी राजा होता है। ग्रंगुलियों में होने से भ्रमण करने वाला होता है। जिसके चारों अंगुलियां में एक शंख चक्र गदा हो तो वह ईश्वर के तुल्य माननीय होता है।

दाहिने हाथ के अंगूठे के मध्य में चक्र तो शुक्ल पक्ष में और दिन में जन्म होता है। बायें हाथ के अंगूठे में यह हो तो कृष्ण पक्ष में रात के समय जन्म होता है। और दोनों हाथों में अंगूठा में यह हो तो कृष्ण पक्ष में दिन में जन्म होता है।

दाहिने हाथ के अंगूठे में यदि यह हो तो गुप्तेन्द्रिय के दाहिने ओर तिल और बांये हाथ में अंगूठे पर यह हो तो गुप्त इन्द्रिय के वांये ओर तिल होता है।

अंगूठे में मूल में जितने चक्र हों उतने ही उसके पुत्र होते हैं। जिसका अंगूठा छोटा होता है उसमें इच्छा शक्ति कम होती है और वह साफ़ नहीं लिख सकता है।

१५—नक्षत्र

यह तारे के समान होता है। यह अच्छा लक्षण नहीं है इससे चिंता, संताप, मुसीवत और दुःख होता।

वर्ग के अन्दर नक्षत्र हो तो भयानक खतरे से रक्षा हो जाने की सूचना है।

चन्द्र स्थान पर नक्षत्र हो तो झूठा, रोग ग्रसित और पानी में डूबने की सूचना है।

यदि मङ्गल के स्थान पर बुध के नीचे हो तो हत्या करने वाले विचार और किसी जंगली जानवर से चोट लगने की सूचना है।

मङ्गल के स्थान में यदि यह चिन्ह हो तो रेलवे, भूडोल से हानियाँ व चोट लगती हैं।

शुक्र के स्थान पर हो तो किसी स्त्री से कष्ट पाने की और निराशा का योग होता है या दुःखदायी विवाह होने की सूचना है, किसी सम्बन्धी की मृत्यु की सूचना है।

यदि दाहिने हाथ पर तारा हो तो पिता की मृत्यु वाल्यावस्था में होती है। यदि यही चिन्ह वांयें हाथ पर शुक्र के पर्वत पर हो तो वाल्यावस्था में माता की मृत्यु जानना। यदि किसी रेखा पर शुक्र के स्थान पर तारा हो तो किसी सम्बन्धी या सनेही के आफत में फँसने या भाग्य हानि की सूचना है।

भाग्य-रेखा के ऊपर और मस्तक रेखा के नीचे बाईसिकल से चोट लगने की सूचना है।

हृदय रेखा पर दिल की बीमारी बतलाता है।

यह चिन्ह बुध के स्थान में हो तो जहर से मृत्यु की सूचना है।

उच्च मङ्गल के स्थान में हो तो आंखों को चोट पहुँचे ऐसा योग कहा गया है।

शुक्र के स्थान पर नक्षत्र का होना बीमारी की सूचना देता है।

दूसरा भाग

हस्त रेखायें

पहला अध्याय

रेखा विचार

सामुद्रिक-शास्त्र रेखाओं को पढ़कर ही जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का ज्ञान कराता है। मनुष्य की हस्त रेखायें उसके जीवन पर प्रमुत्व रखती हैं और अब हम उन्ही रेखाओं के विषय में वर्णन करेंगे तथा उनको पढ़ने का ढङ्ग बतायेंगे।

मनुष्य की हथेली, उसके आस पास अनेकों आड़ी तिरछी रेखायें होती हैं। वह तमाम रेखायें अपना विशेष महत्व रखती हैं। वैसे तो यह रेखायें समय २ बनती बिगड़ती रहती हैं और परिस्थितियों के अनुसार अपनी लम्बाई कम और अधिक भी करती रहती हैं। मगर फिर भी उनकी अपनी एक भाषा है जिस से वह प्राणी के जीवन की अनेकों बातों को स्पष्ट करती हैं।

इन रेखाओं के निकास और विलुप्त होने के स्थान के साथ ही साथ उनके नाम और उनकी चाल के विषय में अवश्य जान लेना चाहिये।

हथेली में वैसे तो अनेकों रेखायें होती हैं मगर उनमें जो अपना विशिष्ट स्थाम रखती हैं वह हैं—

१—जीवन रेखा
२—स्वास्थ्य रेखा
३—हृदय रेखा
४ मस्तक रेखा
५—भाग्य रेखा
६—सूर्य रेखा
७—विवाह रेखा
८—सन्तान रेखा
९—मणि-बन्ध रेखा
१०—चुट पुट रेखाएं-शुक्र मुद्रिका आदि।

इन रेखाओं का विरह वर्णन जो अगले अध्यायों में

किया गया है उनके साथ के चित्रों को देखकर उनकी स्थिति को पूर्ण तया जान लेना चाहिये।

ऊपर कही हुई रेखायें सभी हाथों में पायी जाती हैं। इन रेखाओं की विना जानकारी के हस्त परीक्षा करना सम्भव नहीं है। इनके विभिन्न नाम, स्थिति तथा ग्रह प्रभावों को जानना अति आवश्यक है।

१. जीवन रेखा–अगूंठे के ऊपर और तर्जनी उंगली के नीचे वाले स्थान से प्रारम्भ होकर शुक्र नक्षत्र के क्षेत्र को घेरती हुई मणिबन्ध रेखा की ओर चलती है। यह गोलाकार होती है और उसके अन्दर की ओर सामनान्तार रूप से चलने वाली एक और रेखा होती है उसे मङ्गल रेखा कहते हैं।

२. स्वास्थ्य रेखाः–जीवन रेखा के विलुप्त होने के आस पास ही के स्थान से प्रारम्भ होकर, यह रेखा कनिष्ठा उँगली के मूल में स्थापित बुध ग्रह के क्षेत्र में जाकर समाप्त होती है। अक्सर प्राणियों के हाथ में इस रेखा का अभाव होता है। ऐसे प्राणी पूर्ण स्वस्थ्य देखे गये हैं। स्वास्थ्य रेखा का हाथ में न होना अच्छा समझा जाता है।

३. हृदय रेखाः–तर्जनी उँगली के मूल में स्थापित बृहस्पति ग्रह के नक्षत्र ही से यह रेखा प्रारम्भ होती है और मस्तक रेखा के साथ २ चलती हुई हथेली की दूसरी तरफ जाकर कनिष्टा उँगली से कुछ नीचे उतर कर विलुप्त हो जाती है। इनकी अन्य स्थितियाँ भी हैं मगर वह सूक्ष्मताके साथ इस रेखा वाले अध्याय में पूर्णतया व्यक्त की गई है।

४. मस्तक रेखाः–जीवन रेखा के आस पास या उसके साथ ही के स्थान से यह रेखा निकलती है और हथेली के मध्य

सेभाग रेखा होती हुई चन्द्र ग्रह के क्षेत्रमें जाकर समाप्तहो जाती है। इस रेखा की स्थिति बहुत कम बदलती है और इसका प्रभाव अन्य छोटी रेखाओं द्वारा अन्य रेखाओं के स्पर्श आदि पर पड़ता है।

५. भाग्य रेखा:—यह रेखा मणि बन्ध रेखा के ऊपर ही मध्य भाग के आस पास से निकलती है और मध्यमा उँगली के क्षेत्र में जाकर समाप्त होती है। इसकी लम्बाई निश्चित नहीं होती। कभी तो यह मस्तक रेखा हृदय रेखा आदि को काटती हुई ऊपर की ओर बढ़ती जाती है और कभी यह थोड़ी ही दूर जाकर हथेली के मध्य भाग में समाप्त हो जाती है।

६. सूर्य रेखा:—इस रेखा के प्रारम्भ होने के कई स्थान हैं जिनका पूर्ण विवरण इस रेखा वाले अध्याय में दिया गयाहै। मगर वैसे यह रेखा चन्द्र स्थान से लेकर हथेली के मध्य भाग के ही आस पास से प्रारम्भ होती है और निरन्तर आगे बढ़ती हुई कनिष्ठा उँगली के नीचे बुध देव के स्थान पर जाकर समाप्त होती है। इसका प्रभाव भाग्य रेखा पर विशेष पड़ता है।

७. विवाह रेखा:—हृदय रेखा जहाँ जाकर प्रायः समाप्त होती है उसके ऊपर ही से बुध के क्षेत्र के निचले भाग से यह रेखा प्रारम्भ होती है और छोटी लम्बाई में आगे बढ़कर विलुप्त हो जाती है। यह आवश्यक नहीं कि प्राणी के हाथ में केवल एक ही विवाह रेखा हो। कई विवाह रेखायें भी हो सकती है।

८. सन्तान रेखायें:—विवाह रेखा के ऊपर ही आड़ी या खड़ी छोटी रेखाओं को विवाह रेखा कहते हैं। प्राणी के हाथ में यदि विवाह रेखा है तो यह आवश्यक नहीं कि सन्तान रेखा भी हो। सन्तान रेखाओं का होना न होना प्राणी के भाग्य पर निर्भर होता है। जो निःसन्तान होते हैं उनके यह रेखायें नहीं होतीं।

६. मणिबन्ध रेखायें:—हथेली के नीचे जहाँ वह कलाई के साथ जुड़ती है वह रेखायें होती हैं। वैसे तो तीन रेखायें होती हैं मगर अनुभवों द्वारा यह सिद्ध हो चुकी है कि बहुत से प्राणियों के हाथ में तीन होती हैं और कुछ प्राणियों के हाथ में केवल दो होती हैं और कुछ प्राणियों के हाथ में केवल एक ही होती है। बिना माणिबन्ध रेखा वाला प्राणी आज तक नहीं देखा गया। यह रेखायें कलाई को घेरे रहती हैं और स्पष्ट होती हैं। हथेली की ओर से कलाई को देखने पर यह घड़ी की चेन भांति दृष्टिगत होती हैं।

१०. फुटकर रेखायें—शुक्र मुद्रिका आदि:—इन चुट पुट रेखाओं में शुक्र मुद्रिका का विशेष महत्व है। यह धनुषाकार होती है। यह तर्जनी और मध्यमा उंगली के मध्य वाले भाग से आरम्भ होकर कनिष्ठा और अनामिका उंगली के बीच वाले भाग्य में जाकर समाप्त होती है।

शनि मुद्रिका दुर्भाग्य बताने वाली रेखा है। यह शनि के स्थान को काटती है और इस प्रकार भाग्य को गिराती है।

गुरु मुद्रिका तर्जनी के मूल में स्थापित बृहस्पति ग्रह क्षेत्र को घेरती हुई दिखाई देती है। मगर यह रेखा बहुत कम पायी जाती है।

निकृष्ट रेखा—यह रेखा चन्द्र स्थान से प्रारम्भ होकर शुक्र के स्थान तक धनुषाकार होकर जाती है।

रेखाओं के विषय में यह जानना आवश्यक है कि इनका ज्ञान करने के लिये, रेखा–सम्बन्धी दो चार नियम या केवल एक या दो बार पुस्तक को पढ़ना ही पर्याप्त न होगा। किसी भी विषय का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना कोई साधारण कार्य नहीं है वरन् कठिन ही है। इसके साथ साथ उस विषय को पूर्ण रूप से जानने

के लिये कुछ समय की भी आवश्यकता होती है। मनुष्य को उन रेखाओं का ज्ञान–जो उसकी शारीरिक, मानसिक और अन्य मानवी शक्तियों के विकास तथा जिसके फल स्वरूप मनुष्य को प्रारब्ध का ज्ञान होता है, का जानना अत्यन्त आवश्यक है। इस विषय का ज्ञान किसी गम्भीर से गम्भीर विषय के ज्ञान से भी कहीं अधिक महत्त्व रखता है। इस विषय का ज्ञान मनुष्य के जीवन से विषय रूप से सम्बन्ध रखता है। जैसा कि पहिले कहा जा चुका है कि यह विषय इतना सरल नहीं है जो कि आसानी से और कहानी की तरह से पढ़कर समझाजा सके। इस लिये विद्यार्थियों को चाहिये कि इस विषय का अध्ययन करने के लिये और इसका अभ्यास करते समय, दृढ़, विचार शील और गम्भीर बनना चाहिये। इसके लिये एकाग्र चित्त होना अत्यावश्यक है।

इस विषय के ज्ञान के लिये अधिक समय की आवश्यकता होती है, परन्तु यह न समझना चाहिये कि यह समय व्यर्थ गया या निरर्थक रहा, वल्कि इसके विपरीत जितना अधिक समय लगेगा उतना ही अधिक ज्ञान प्राप्त होगा।

यदि देखा जाय तो हाथ की रेखाओं की पुस्तक पढ़ना ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार से प्रकृति की पुस्तकों का पढ़ना है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है यह उस पुस्तक को पढ़ना है जिसका कि प्रत्येक पन्ना जीवधारी मनुष्य, जिसके पृष्ठ जीवन और मृत्यु और जिसके शब्द मनुष्य की वह चमकती हुई आशायें हैं जिनको लेकर वह अपने जीवन के कार्य क्षेत्र की ओर अग्रसर होता है।

इन सब वातों को ध्यान में रखकर प्रत्येक विद्यार्थी धीरे धीरे इस विषय को पूर्ण रूप से समझ सकता है और इसको

अपने जीवन में कार्य रूप से परिणित कर सकता है मनुष्य को यह बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिये कि वह किसी भी चीज को जानने के लिये किसी किसी किताब या किसी विशेष मनुष्य पर ही निर्धारित न रहना चाहिये वरन उसे अपनी स्वयं की बुद्धि का भी उपयोग करना चाहिये। किसी भी विद्या में पारांगत होने के लिये आवश्यक है कि अपनी बुद्धि और विवेक का भी सहारा लिया जाये और साथ ही शास्त्रीय नियमों का भी पालन करे।

रेखायें लम्बी, छोटी और समान भी होती हैं अतः उनके विषय में जानकारी रखने के लिये आवश्यक है कि रेखाओं का परिमाण भी ध्यान में रखा जाये।

रेखा–परिमाण

१४ यव के बराबर सूर्य रेखा श्रेष्ठ होती है। ६ से १३ यव तक मध्यमा एसी रेखा वाला प्राणी स्थूल बुद्धि वाला होता है ६ यव से कम हो तो मन्द बुद्धि की सूचना है। १५ यव के ऊपर हो या बराबर हो तो उत्तम, होती है और राजयोग की सूचक है। इससे कम हो तो उसे खण्ड रेखा कहते हैं।

१ यव का नाप १० वर्ष के बराबर है। इसलिये लम्बी रेखाओं का नाप लम्बे यव से और छोटी रेखाओं का नाप बड़े यव से करना चाहिये। सूर्य रेखा को छोटी रेखा में गिनना चाहिये। इससे इसे भी बड़े यव से नापना चाहिये। फाँकदार और शाखायुक्त रेखा ज्यादा शुभ समझी जाती है। क्योंकि यह लक्षण रेखा के गुण को बढ़ा देता है। हृदय रेखा से ऊपर जाने वाली रेखायें आशा जनक और नीचे जाने वाली रेखायें निराशा जनक होती हैं।

मनुष्य के हाथ में अक्सर दो-तीन वर्षो में नई छोटी २ रेखायें उदय होती हैं जो आने वाले शुभाशुभ की सूचना देती हैं। रेखा का पीलापन होना खून की कमी बताता हैं।

गहरी और लाल रङ्ग की रेखायें आवेश में आने, निर्दयता और गर्म मिजाज की सूचना है।

विनाश युक्त याने छिन्न-भिन्न रेखायें अपने शुभ फल को नहीं देती हैं।

कुशा के समान अग्र भाग वाली सुन्दर रेखाओं वाले प्राणी दरिद्र नहीं होते हैं।

मूल यानी भाग्यादि शुभ रेखाओं के न होने से मनुष्य सुखी नहीं रहते। पितृ-रेखा से वायु प्रकृति समझना चाहिये। जो रेखा प्रधान हो उसका ही गुण कहना चाहिये। जीवन, मस्तक और हृदय रेखायें क्रम से पुरुष स्त्री और नपुंसक तथा नभचर, थलचर और जलचर सूचक हैं। क्रम से सतोगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी भी हैं।

जीव रेखा को ऊर्ध्व लोक, मस्तक रेखा को मृत्यु लोक और हृदय रेखा को पाताल लोक, कहते हैं। बायें और दाहिने हाथ से गमन और आगमन का विचार करना चाहिये यानी बायें हाथ में जीवन रेखा साफ हो तो पितृलोक से आया है और दाहिने हाथ में हो तो मरने के बाद पितृलोक में जायगा।

रेखायें।

मनुष्य का जीवन तीन भागों में बाँटा जा सकता है—

१—जीवन, जो जीवन-रेखा होता है।

२—प्रेम, हृदय रेखा से ज्ञात से ज्ञात होता है।

३—दिमाग शक्ति की जानकारी मस्तक रेखा से ज्ञात होती है।

इन रेखाओं का विस्तृत वर्णन अगले अध्यायों में किया गया है।

दूसरा अध्याय

जीवन रेखा

नं० १ चित्र के देखने से जीवन रेखा की वस्तुतः स्थिति का ज्ञान हो सकता है। इस रेखा की स्थिति के विषय में स्पष्ट रूप से इतना जान लेना पर्याप्त होगा कि जीवन रेखा तर्जनी और अंगूठे के बीच के स्थान से प्रारम्भ होकर शुक्र के स्थान तक जाती है। मनुष्य के स्वास्थ्य और जीवन मृत्यु के प्रश्नों के विषय में तो यह स्पष्ट करती है मगर इसके साथ ही इसका महत्व अन्य रेखाओं के ऊपर भी रहता है क्योंकि मनुष्य के जीवन मरण का प्रश्न ही सबसे अधिक महत्व का होता है। उदाहरण के तौर पर हो सकता है कि किसी मनुष्य के हाथ में राजा बनने का योग तो है मगर उसकी आयु २० वर्ष से अधिक नहीं ऐसी दशा में जीवन रेखा का प्रभाव उसकी भाग्य रेखा के प्रभाव को क्षीण कर देगी।

जीवन रेखा की आकृति देखकर प्राणी के स्वास्थ्य और उसकी आयु तथा मृत्यु के बारे में बताया जा सकता है। रेखा की लम्बाई, स्पष्टता और उसके तोड़ मोड़ों का प्रभाव अवश्य पड़ता है। हर प्राणी अपनी आयु जानने की लालसा रखता है अतः वह ज्योतिषी से अवश्य पूछता है कि "मेरी आयु कितनी है ?"

इस प्रश्न का उत्तर बहुत कठिन है। रेखा पर आयु तो लम्बी होती नहीं और न ऐसा कोई माप ही है। जिससे आयु

को बताया जा सके। अकाल मृत्यु के चिन्ह भी अक्सर जीवन रेखा पर नहीं होते। सीधी, साफ, गहरी और कम टूटी हुयी लम्बी जीवन रेखा को देख कर सहज ही ६० या ७० वर्ष की आयु बतायी जा सकती है। मगर हो सकता है कि ऐसे लक्षण वाली रेखा होते हुए मनुष्य किसी दुर्घटना का शिकार हो जाये और मृत्यु को प्राप्त हो सो ऐसी दशा में मस्तक रेखा को भी जीवन रेखा के साथ ही समझ लेना आवश्यक है।

ठीक तो यही है कि समस्त रेखाओं का विचार कर लेने के बाद ही जीवन रेखा को देखना चाहिये और उसके फलों को कहना चाहिये। मनुष्य का जीवन रोगों के बिना अपूर्ण ही रहता है। ऐसा कोई प्राणी इस संसार में पैदा नहीं हुआ जो किसी न किसी रोग का शिकार न हुआ हो और इससे फल स्वरूप जीवन रेखा अवश्य ही कटी हुयी होगी अतः फल कहने से पहले इस प्रकार के कटे हुये स्थलों को गौर से देख लेना अति आवश्यक है वरना फल कहने में गलती हो सकती है।

अकाल मृत्यु के कारण और उसकी सम्भावना जानने के लिये मस्तक रेखा को अवश्य देखना चाहिये और साथ ही स्वास्थ्य रेखा को इस कारण देखना चाहिये कि अगर मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक है तो वह दीर्घ जीवी होगा और उसका स्वास्थ्य यदि ठीक नहीं तो वह शीघ्र ही मौत को प्राप्त होगा। स्वास्थ्य रेखा की स्पष्टता और लम्बाई दोनों की तुलना जीवन रेखासे करनी चाहिये और यदि दोनों रेखा एक दूसरे से किसी स्थान पर मिल जायें तो मिलने वाले स्थान को आयु का स्थान समझ कर और अनुमान तथा गणना करके मनुष्य को उसकी आयु बता देना चाहिये। यह पहले ही कहा जा चुका है कि

किसी भी प्राणी को उसकी आयु के विषय में निश्चित रूप से बताना बहुत कठिन है जितना कुछ भी बताया जा सकता है वह केवल गणना और अपने अनुमान द्वारा ही। (चित्र नं० १ पर नं० १ वाली बिन्दुदार रेखा को देखो)

अक्सर देखा गयाहै कि जीवन रेखा अपने निश्चित स्थान से निकल कर शुक्र के स्थान को घेर लेती है। उसकी लम्बाई, गहराई और स्पष्टता भी ठीक ही होती है मगर तब भी उसकी आयु अधिक नहीं होती। वैसे तो इस तरह के लक्षण वाले हाथ वाला प्राणी सौ वर्ष की आयु को प्राप्त होना चाहिये मगर वह ५० वर्ष ही में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। उसका एक मात्र कारण यही होता है कि उस प्राणी की जीवन रेखा जहाँ बहुत ही स्पष्ट और गहरी होती है उसी क्षेत्र से गुजरती हुई उसकी स्वास्थ्य रेखा क्षीण और अस्पष्ट होती है और यह भी हो सकता है कि जहाँ स्वास्थ्य रेखा गहरी हो वहां कोई द्वीप हो। इन दशाओं में ही प्राणी पूर्ण आयु को प्राप्त किये बिना ही मृत्यु को प्राप्त होता है। (चित्र नं० २ पर दोनों रेखाओं की मोटाई देखो तथा स्वास्थ्य रेखा पर पड़े द्वीप को देखो)

यह भी देखा गया है कि अनेकों छोटी २ रेखायें हथेली के अन्य भागों से निकल कर हाथ की रेखाओं को छूती हैं या काटती हैं। यह चुट पुट रेखायें भी अपना विशिष्ट महत्व रखती हैं। जीवन रेखा को अगर इस प्रकार की कोई छोटी रेखा यदि शनि के स्थान से निकल कर काटती हुई निकल जाये तो इस प्रकार की रेखा का प्राणी के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। हो सकता है कि वह अकाल मृत्यु की सूचक भी हो। अतः शनि के स्थान से निकलने वाली इन छोटी रेखाओं को भी ध्यान में

रखना भी आवश्यक है। (चित्र नं० १ की बिन्दु वाली रेखा व नं० १ के स्थल को देखो)

पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि शरीर रोगों का घर है और प्राणी मात्र के शरीर में विभिन्न प्रकार के जीव पनपते रहते हैं अतः इन जीवों में अनेकों जीव ऐसे होते हैं कि वह स्वास्थ्य पर बुरा असर डालते हैं। इन जीवों के कारण ही यह चुट पुट रेखायें पनपती हैं और अपना अस्तित्व बताती हैं। इस विचार से प्राणी को उचित है कि यदि उसके हाथ में इस प्रकार की रेखायें हों तो उसे सावधान रहना चाहिये और अपने शरीर के तन्तुओं का ज्ञान प्राप्त करके उन रोग कारी तन्तुओं के विनाश का उपाय करना चाहिये। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मत है कि परम्परागत तन्तुओं के अलावा सब तन्तुओं का विनाश सहज ही हो सकता है और मनुष्य को निरोग बनाया जा सकता है। यदि ज्योतिषी प्राणी को इस फल को बतादे तो हाथ दिखाने वाला आने वाली स्वास्थ्य सम्बन्धी आपदाओं से सजग हो जाये और अपने जीवन तथा स्वास्थ्य की रक्षा कर सके।

जीवन रेखा को देख कर मृत्यु अथवा स्वास्थ्य के विषय में अपना निर्णय देने से पहले चाहिये कि दोनों हाथ की रेखाओं को गौर से देखा जाये। हो सकता है कि सीधी हाथ की रेखा तो पूर्ण हो मगर बांयें हाथ की रेखा मध्य ही में टूट गयी हो तो ऐसी अवस्था में फलानुसार सीधे ही हाथ की रेखा को माना जायगा मगर बाँयें हाथ की रेखा का फल भी जीवन पर बिना पड़े न रहेगा। जिस स्थान पर बांयें हाथ में जीवन रेखा टूटी है उसके अनुमान पर ही से यह जान लेना चाहिये कि अनमानतः उसी समय अवश्य भयङ्कर कोई रोग होगा अथवा अकाल मृत्यु की सम्भावना होगी। यदि दोनों हाथों की रेखा एक ही स्थान

पर टूटे और और टूटी हुई रेखा का रुख शुक्र के स्थान की ओर हो तो प्राणी की मृत्यु निश्चित है।

पहले ही कहा जा चुका है कि जीवन रेखा स्पष्ट और गहरी तथा लम्बी दीर्घ आयु होने की द्योतक है। हर प्राणी के हाथ में विभिन्न प्रकार की रेखायें होती हैं। कुछ गहरी लम्बी और स्पष्ट होती है कुछ टूटी होती हैं, कुछ कटी हुई होती हैं और कुछ रेखायें ऐसी होती हैं जिनकी बनावट जन्जीर की तरह होती हैं। यदि किसी प्राणी का हाथ कोमल हो और उस की जीवन रेखा जन्जीर दार हो तो वह हमेशा रोगी रहेगा। उसका स्वास्थ्य कभी ठीक नहीं रह सकेगा। मगर आगे चलकर यदि स्वास्थ्य रेखा ठीक हो गयी हो तो उसका स्वास्थ्य भी धीरे २ ठीक हो जायेगा।

यदि जीवन रेखा निश्चित स्थान से निकलने की वजाय तर्जनी उंगली के नीचे से प्रारम्भ होकर वृहस्पति के क्षेत्र को पार करके नीचे को अग्रसर हों तो ऐसी रेखा वाला प्राणी अवश्य ही उच्च पदाधिकारी, यशस्वी, विद्वान् आदि होगा। चित्र नं० ३ में जीवन रेखा का निकास देखो।

जीवन रेखा के निकलने के स्थान ही के आस पास ही से मस्तक और हृदय रेखायें प्रारम्भ होती हैं। जीवन और मस्तक रेखायें तो अक्सर एक दूसरे से मिल भी जाती हैं मगर अक्सर यह भी देखा गया है कि निकलने के स्थान पर ही यह तीनों रेखायें मिल जाती हैं। इस प्रकारसे इन नीचे रेखाओं का आपस में मिलना मनुष्य के लिये ठीक नहीं होता है। इस प्रकार का लक्षण यह स्पष्ट करता है कि इस प्रकार की रेखाओं युक्त हाथ वाला प्राणी अपनी ही मौत का स्वयम् ही कारण होता है। वह अपनी उत्तेजना को नहीं सम्भाल पाता है और आवेश में

आकर आत्म हत्या कर लेता है, पानी में कूद कर जान गवा देता है, आग लगा कर अपने शरीर को जला देता है या किसी ऊंचे स्थान से गिर कर अपनी जीवन लीला को समाप्त कर डालता है। वैसे तो इस तरह तीनों रेखा मिली हों ऐसे हाथ बहुत ही कम देखने में आते हैं मगर फिर भी यह ध्यान रखना ही चाहिये कि यदि इस प्रकार का हाथ हो तो उसका यह फल होता है। (चित्र नं० ४ का नं० ६ स्थल देखो)

साधारण तया जीवन रेखा और मस्तक रेखा आपस में मिली होती हैं। इसका एक मात्र कारण यही है कि इनके निकलने का स्थान एक ही है और इनके आस पास से अनेकों रेखायें छोटी निकलती है और यह चुट पुट रेखायें इस प्रकार हाथ को घेरती हैं कि यह दोनों ही रेखाओं को शाखायुक्त कर देती हैं और आपस में मिला देती हैं। यदि इस प्रकार की मिली हुयी रेखायें आगे चल कर हथेली के मध्य के पहले ही विलग हो गयी हैं तो उनका फल शुभ होता है। ऐसी रेखाओं वाला प्राणी अपने संकल्प पर दृढ़ रहता है, अपने काम में सावधान और सतर्क रहता है, हर बात को सहज ही समझ लेता है मगर उसमें आत्म विश्वास की मात्रा भी अधिक होती है। इसके विपरीत यदि यह दोनों रेखायें अपने निकास के स्थान ही से अलग निकली हों तो प्राणी बेपरवाह होता है वह पढ़ने लिखने में रुचि नहीं रखता और अपनी ही दुनियाँ में मस्त रहता है। इसके विपरीत यदि इन दोनों रेखाओं के मध्य में समान अन्तर हो तो ऐसा प्राणी दूरदर्शी, यश की कामना वाला साहसी और उत्साही होता है। (चित्र नं० ५ में बिना नम्बर वाली रेखाओं को देखो)

मनुष्य के हाथ में जितनी भी मुख्य रेखायें हैं उनमें से

अनेकों रेखाओं में से बहुत सी शाखायें निकल हथेली के अन्य भागों की ओर जाती हैं और विभिन्न रेखाओं को छूती हैं या उनको काट कर निकल जाती हैं। इस प्रकार की इन शाखाओं का भी अपना विशेष महत्व होता है।

जितनी भी शाखायें जीवन के मध्य से प्रारम्भ होकर नीचे की ओर अग्रसर होती हैं उनका महत्व यह होता है कि इस प्रकार की रेखा युक्त प्राणी उग्र स्वभाव का होता है। वह यात्रा का शौकीन होता है मगर क्रूर होता है। अपने मन का डरपोक होता है और वह आलसी भी होता है। मादक द्रव्यों का सेवन भी वह खूब करता है और परिश्रम से हमेशा डरता है। इस प्रकार के लक्षण अच्छे नहीं होते। (चित्र नं० ५ में १-१ वाली रेखा को देखो)

यदि यह शाखायें वृहस्पति के स्थान की ओर अग्रसर होती हैं तो उनका प्रभाव ही बदल जाता है। वह लाभ और उन्नति की सूचक होती है। उच्च स्थान में वृहस्पति होने के कारण प्राणी समाज में उच्च स्थान प्राप्त करता है, उसको यश प्राप्त होता है. और उसके अधिकारों की वृद्धि होती हैं। (चित्र नं० ५ में २-२ वाली रेखा को देखो)

इसी तरह यह शाखायें जिस ग्रह की ओर जाकर समाप्त होती हैं उसी तरह के लक्षण उसमें विद्यमान् होने लगते हैं। दैव प्रभाव को ही जानकर इस बात को कहना चाहिये।

जब इस प्रकार की रेखा जीवन रेखा को छू कर शनि की ओर जाती है तो उसका फल होता है कि ऐसी रेखा वाला प्राणी अपने व्यक्ति गत साधनों द्वारा उन्नति को प्राप्त होगा। यह रेखा सूर्य की ओर जाती है तो उसका फल होता है कि प्राणी अपने सुकर्मों द्वारा अवश्य यश को प्राप्त करेगा और संसार में

उन्नति करेगा। (चित्र नं० ५ में ३–३ वाली रेखा को देखो)

इस तरह की रेखा जब बुध की ओर अग्रसर होती है तो उससे स्पष्ट होता है कि ऐसी रेखा वाला प्राणी अवश्य ही अपने व्यापार और कलात्मक कार्य में सफलता प्राप्त करेगा। (चित्र नं० ५ में ४–४ वाली रेखा को देखो)

ऐसा भी अक्सर देखा गया है कि हथेली के मध्य भाग को पार कर के जीवन रेखा दो भागों में विभाजित हो जाती है। इस प्रकार शाखायुक्त जीवन रेखा दो भागों में विभाजित हो जाती है। इस प्रकार शाखायुक्त जीवन रेखा का प्रभाव होता है कि प्राणी सुदूर प्रदेशों की यात्रा करेगा, वह यात्रा में अधिक दिलचस्पी लेगा।

जीवन रेखा गहरी, लम्बी और स्पष्ट होते हुये भी यदि उस पर द्वीप का चिन्ह है तो इस प्रकार की रेखा वाला प्राणी सदैव अस्वस्थ ही रहेगा क्योंकि जीवनरेखा पर द्वीप का चिन्ह रोग का सूचक होता है। यदि इस प्रकार का द्वीप उस स्थान पर हो जहां से जीवन रेखा प्रारम्भ होती है तो प्राणी के जन्म पर सन्देह किया किया जाता है। इस प्रकार के लक्षण वाला प्राणी अपने माता पिता की जायज सन्तान नहीं होता। मगर ऐसी दशा में फल कहने वाले को सतर्क रहना चाहिये। मां का वास्तविक चरित्र जानकर अपने जन्म की अपवित्रता का ध्यान करके प्राणी को दुःख होता है ऐसी दशा में जब तक किसी के जन्म इतिहास के विषय में विशेष ज्ञान न हो कभी कुछ नहीं कहना चाहिये। (चित्र नं० ५ में नं० २ के स्थल पर द्वीप के चिन्ह को देखो)

जीवन रेखा के प्रारम्भ होने के स्थान के आस पास ही से अनेकों छोटी बड़ी रेखायें प्रारम्भ होती हैं। यह रेखायें चुट पुट

होती हैं। अधिक लम्बी भी नहीं होती और न अधिक गहरी ही होती हैं। इन चुट पुट रेखाओं में एक तो मङ्गल रेखा होती है जो जीवन रेखा के सामान्तर ही चलती है। अन्य रेखायें छोटी २ होती हैं जो थोड़ी ही दूर जाकर समाप्त हो जाती हैं। इन रेखाओं को ज्योतिप शास्त्रियों ने प्रभुत्व रेखायें कहा है। यह रेखायें मङ्गल रेखा के साथ २ जीवन रेखा के भीतर की ओर होती है। इनको देखकर सहजही कहा जा सकता है कि ऐसी रेखा वाला प्राणी अपने विशिष्ठ प्रभुत्व से अपने शासकीय वर्ग पर आधिपत्य रखता है। इस प्रकार की जितनी भी रेखायें होंगी उससे प्राणी का प्रभुत्व उतने ही लोगों पर होगा। यह रेखायें जितनी स्पष्ट, गहरी और लम्बी होंगी उतनी ही देर तक प्राणी का प्रभुत्व स्थायी रहेगा। (चित्र नं० ६ में ३-३ तो मङ्गल रेखा हैं और उसके पास वाली विना नम्बर वाली चुट पुट रेखायें हैं)

यह बताया ही जा चुका हैकि जीवन रेखा के सामानान्तर एक अन्य रेखा जो प्रारम्भ होती है उसे मङ्गल रेखा कहते हैं। मङ्गल रेखा बहुधा मङ्गल के स्थान से प्रारम्भ होती और जीवन रेखा के सामान्तर चलती हुयी या तो जीवन रेखा के साथ २ उसके अन्त तक ही जाती है अथवा बीच ही में समाप्त हो जाती है। प्रारम्भ में गहरी स्पष्ट होती हुयी भी अगर अन्त तक या पहले ही समाप्त हो जाये तो उसका फलादेश कहने में कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता है। इस प्रकार की रेखा को दूसरी जीवन रेखा भी कहते हैं।

मङ्गल रेखा का प्रभाव मनुष्य के स्वास्थ्य और जीवन की आयु पर अवश्य पड़ता है। ऐसी रेखा वाला प्राणी रोगों से मुक्त रहता है। जीवन रेखा यदि आगे चलकर अस्पष्ट

था टूट जाये मगर मंगल रेखा स्पष्ट और गहरी हो तो ऐसी रेखा वाला प्राणी असाध्य रोग का शिकार तो होता है मगर उस रोग से उसकी मृत्यु नहीं होती। जीवन रेखा के टूट जाने से अकाल मृत्यु हो जाने का योग होता है मगर जब मंगल रेखा स्पष्ट और लम्बी हुगी है तो उसके प्रभाव से प्राणी इस तरह की अकाल मृत्यु से भी बच जाता है।

इतना सब होते हुये भी गृह स्वामी मंगल अपना प्रभाव बिना दिखाये नहीं रहता। मंगल का स्वभाव है कि मनुष्य चिड़ चिड़ा शीघ्र ही क्रोध और आवेश में भर जाने वाला और उग्र स्वभाव का होता है। वह कलह कर डालता है मगर उसके दिल में मैल नहीं होता और वह कपटी भी नहीं होता।

मंगल रेखा में अक्सर शाखा भी होती है। यदि किसी प्राणी के हाथ में मंगल रेखा से प्रारम्भ होने वाली कोई शाखा है और जीवन रेखा को काटती हुयी मणि बन्ध रेखा की ओर अग्रसर होती है तो जिस स्थान पर यह शाखा जीवन रेखा को चाहती है वह स्थान प्राणी की मृत्यु की अवधि बताता है। इस प्रकार की शाखायुक्त मंगल रेखा वाला प्राणी अदूरदर्शी, जल्दबाज होता है और अपने इन गुणों के कारण ही बैठे बिठाये कोई न कोई विपत्ति मोल ले बैठता है। (चित्र नं० ६ में ४-४ वाली बिन्दु दार रेखा को देखो)

वैसे तो जितनी भी रेखा को काटती है उन सब का परिणाम यही होता है कि वह प्राणी के जीवन में बाधायें उत्पन्न करती हैं। समय २ पर ऐसे प्राणी को बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार जीवन रेखा को काटने वाली रेखाओं को देख कर सहज ही कह देना चाहिये कि इस प्रकार रेखा युक्त हाथ वाला प्राणी अपने सहायकों कर्मचारियों आदि से सदा उत्पीड़ित रहेगा।

इस प्रकार की रेखायें जब जीवन रेखा को काट कर हाथ की अन्य रेखाओं को काट कर अन्य रेखाओं को छु ेंगी उसका प्रभाव छूने वाली रेखा के प्रभाव के अनुकूल ही होता है।

१—विवाह रेखा को छूने वाली रेखा विवाहित जीवन में अनेकों बाधायें उत्पन्न करती हैं।

२—भाग्य रेखा को छूने वाली रेखा के प्रभाव से प्राणी को व्यापार में घाटा, धन्धे का बिगाड़, नौकरी का छूटना या मुकदमा लगता है।

३—मस्तक रेखा को काटने या छूने वाली रेखा विकृति मस्तक अथवा पागलपन की द्योत्तक होती है।

४—स्वास्थ्य रेखा को छूने या काटने वाली रेखा का प्रभाव यह होता है कि प्राणी का स्वास्थ्य बुरा होता है और वह अनेक रोगों का शिकार हो जाता है।

इसी तरह अन्य रेखाओं के विषय में उन रेखाओं के गुणों के अनुसार ही फल कहना चाहिये।

यदि किसी प्राणीके हाथकी रेखायें ऐसी हों जो शुक्रकेस्थान से प्रारम्भ होकर जीवन रेखा के साथ ही साथ नीचे की ओर चलें तो ऐसी रेखाओं का प्रभाव मनुष्य के प्रेम पर पड़ता है। इस प्रकार की रेखाओं वाला प्राणी प्रेममय होता है। उसका जीवन हर घड़ी रोमान्स की खोज करता है और ऐसे प्राणी बिना रोमान्स के जीवित नहीं रह पाते हैं। उनका व्यवहार ही प्रेममय होता है। इस तरह के लोगों के जीवन में अनेकों घटनायें भी आती हैं अतः जिन प्राणियों के हाथ में यह रेखाऐं नहीं होती वह शांत प्रकृति और निश्चितता का जीवन व्यतीत करते हैं। प्रेम की व्यथायें उन्हें व्यथित नहीं कर पाती हैं।

जीवन रेखा जिस प्राणी के हाथ में लम्बी, गहरी और

स्पष्ट होती हैं वह दीर्घआयु और स्वस्थ होता है। द्वीप, शाखा-युक्त जीवन रेखा कष्टदायक होती है। इस प्रकार की रेखा होने से प्राणी का जीवन कम होता है, उसकी मृत्यु अचानक भी हो सकती है और वह आरोग्य भी नहीं रह पाता।

जीवन रेखा यदि किसी स्थान पर टूट जाये तो वह अकाल मृत्यु की सूचक होती है। द्वीप यदि जीवन रेखा या स्वास्थ्य रेखा पर हो तब भी अकाल मृत्यु होती है। यदि किसी प्राणी के हाथ में जीवन रेखा टूट रही हो तो ऐसे प्राणी के दोनों हाथ की रेखाओं को देखना चाहिए। अक्सर ऐसा देखा गया है कि प्राणी के बायें हाथ में जीवन रेखा टूटी होती है और सीधे हाथ में जुड़ी होती है ऐसी दशा में भयङ्कर रोग अथवा अकाल-मृत्यु से प्राणी के जीवन की रक्षा हो सकती है। इसके विपरीत यदि दोनों हाथों ही में रेखाएं टूटी हों तो ऐसे प्राणी की अकाल मृत्यु निश्चित होती है।

यदि किसी प्राणीके हाथकी जीवन रेखा शाखायुक्त अथवा जंजीरदार हो और उसकी स्वास्थ्य रेखा भी शाखायुक्त तथा कटी फटी हो तो ऐसी दशा में इस तरह की रेखायुक्त प्राणी सदैव निर्बल और रोगी बना रहेगा। उसको कोई न कोई व्याधा घेरेही रहेगी।

जैसा की ऊपर बताया जा चुका है कि चुट-पुट रेखाएं जो जीवन रेखाओं के सामान्तर चलती हैं वह भी अपना प्रभाव अवश्य डालती हैं। शुक्र के ग्रह से प्रारम्भ हुई रेखाओं का प्रभाव होता है कि प्राणी को सिर दर्द तथा गृह सम्बन्धी व्याधायें तथा हृदय रोग घेरे रहते हैं।

जीवन रेखा यदि प्रारंभ में शाखायुक्त अर्थात सर्पनि-हाकार हो या अंत में वह इस तरह समाप्त होती है तो प्राणी

के लिये वह अशुभ होती है । इस प्रकार की आकृति यदि आरंभ में हो तो ऐसी रेखा वाला प्राणी स्वभाव से कमीना, तङ्ग-दिल, मिथ्याभिमानी आदि दोषों से परिपूर्ण होता है। इसके विपरीत यदि यह रेखा अन्त में इस प्रकार की आकृति धारण किये होती है तो प्राणी अपने जीवन के अन्त के दिनों में गरीब हो जाता है। प्रारम्भ के जीवन में वह चाहे जितना धन क्यों नहीं सञ्चय करे मगर उसकी वृद्धावस्था में उसके पास पर्याप्त धन नहीं रह पाता और वह धन के लिये परेशान ही रहता है ।

जिस व्यक्ति के हाथ में इस प्रकार का योग हो कि कुछ रेखायें जीवन रेखा के पास से प्रारम्भ होकर बाहर की ओर निकलें तो इस तरह की रेखाओं वाला प्राणी भ्रमण प्रिय होता है। वह देश देशान्तरों में भ्रमण करता है ; यात्राओं में उसकी रुचि होती है और उसे इस प्रकार के जीवन में आनन्द आता है । यदि यह रेखायें गहरी स्पष्ट और लम्बी भी हों तो यह निश्चिय है कि इस प्रकार की रेखा वाला प्राणी यात्रा में बड़े २ खतरे उठाने के बाद भी सकुशल स्वदेश लौट आयेगा । अकालमृत्यु से भी बच निकलेगा ।

जैसा कि पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि जीवन रेखा के साथ मिलकर यदि मस्तक रेखा हथेली के अर्धभाग तक जाती होतो उसका ये असर होताहै कि प्राणी शारीरिक शक्ति में निर्बल होता है और उसका स्वास्थ्य गिरा हुआ होता है। उनमें साहस नहीं होता और इस कारण वह अपने जीवनकी विषम परिस्थितियों में घबरा जाते हैं और हिम्मत हार बैठते हैं ।

अक्सर देखा गया है कि जीवन रेखा कुण्डली मारकर शुक्र के स्थान को घेर लेती है । इस प्रकार की जीवन रेखा का प्रभाव यह होता है कि प्राणी का शरीर अधिक पुष्ट होता है मगर

उसका मन दुर्बल ही बना रहता है। इसके कारण ऐसे प्राणी सदा उदास रहते हैं और जीवन भार समझते रहते हैं। मगर जब जीवन रेखा अँगूठे के पास होने के बजाय दूर होती है तो इस प्रकार की रेखा वाला प्राणी उत्साही, कर्मशील और विशाल हृदय वाला होता है।

कभी २ देखा गया है कि जीवन रेखा के पास से चुटपुट रेखा निकलकर बृहस्पति के स्थान की ओर अग्रसर होती हैं तो ऐसी दशा में उनका प्रभाव यह होता है कि इस प्रकार की रेखाओं वाला प्राणी उच्चाभिलाषी और उनकी पूर्ति के लिए हृदय से तत्पर रहने वाला प्राणी होता है।

यदि जीवन रेखा मस्तक रेखा से अधिक दूर है—यद्यपि यह दोनों एक ही स्थान से प्रारम्भ होती हैं मगर अक्सर इनमें अन्तर भी होताहै तो ऐसी स्थिति वाली रेखायुक्त प्राणी हिम्मत वाला, लगन का पक्का और महत्वाकांक्षी होता है।

इसके विपरीत यदि जीवन रेखा, हृदय रेखा, और मस्तक रेखा तीनों ही एक स्थान से साथ ही साथ निकलती हैं तो इस प्रकार की रेखाओं वाला प्राणी नासमझ, मूर्ख, बकवादी और अदूरदर्शी होता है। अक्सर देखा गया है कि इस प्रकार के प्राणी अपनी ही मूर्खता के कारण कभी २ अकालमृत्यु के ग्रास हो जाते हैं। उनमें आत्म-हत्या की प्रेरणा हमेशा जागृत रहती है और वह अपने प्राणों का विसर्जन कर ही डालते हैं।

जीवन रेखा यदि अपनी समाप्ति के स्थान पर अनेकों शाखा में विभक्त हो जाये तो इन चुटपुट रेखाओं का प्रभाव प्राणी के जीवन पर अच्छा नहीं पड़ता। यह रेखायें शरीर को रोगी बनाये रखती हैं। इस प्रकार की रेखा वाले प्राणी का स्वास्थ्य कभी अच्छा नहीं रहता।

यदि कोइ रेखा जीवन रेखा से प्रारम्भ हो कर तर्जनी के अन्त में स्थापित बृहस्पति के स्थान की ओर जाये तो उसका प्रभाव बड़ा लाभदायक होता है। इस प्रकार की रेखाओं से प्राणी को बताया जा सकता है कि उसके जीवन में सफलतायें हैं और उद्योग से लाभ प्राप्त होगा।

जब कोई रेखा जीवन रेखा से प्रारम्भ हो कर शनि के ग्रह की ओर जा रही हो तो उससे स्पष्ट होता है कि इस प्रकार की रेखा से युक्त प्राणी अपने उद्योग और उद्यमसे कोइ एसा साहायकसिक कार्य करेगा जिसके कारण उस की कीर्ति चारों ओर फैल जायेगी और हर प्राणी उसकी प्रशंसा करेगा। इस प्रकार की रेखा वाला प्राणी अवश्य ही यश और कीर्ति का भागी होता है एसा निश्चय है।

जीवन रेखा को यदि चुटपुट रेखायें काटती हैं तो वह रेखायें स्पष्ट करती हैं कि इनसे प्राणी के जीवन में बाधायें होती होती हैं और मनुष्य को अधिक परिश्रम करके अपने जीवन को सही रास्ते पर डालने की आवश्यकता होती है।

अक्सर देखा गया है कि मनुष्य के हाथ में जीवन रेखा के आस पास चौकोर वर्ग होता है। इस प्रकार का वर्ग शुभ फल का देने वाला होता है। यह वर्ग समय २ पर मनुष्य की रक्षा आने वाली आपत्तियों से करता है और शीघ्र ही लाभदायक फल दिखाता है।

पहले ही बताया जा चुका है कि रेखाओं पर भी दाग होते हैं। इन दागों को देख कर उनका गुण तथा अवगुण बताना चाहिये।